हिन्दी मन्त्रमहार्णव

मिश्र खण्ड

रामकुमार राय
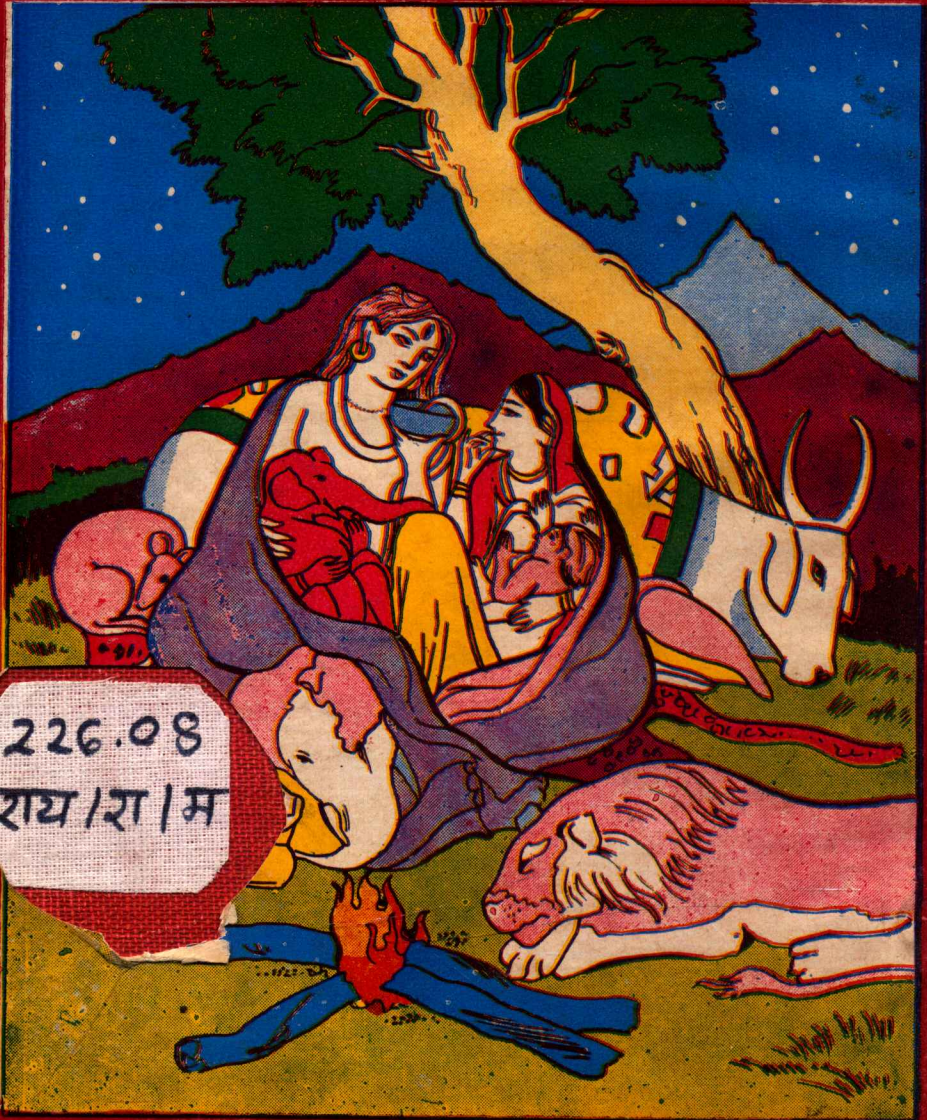
प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी
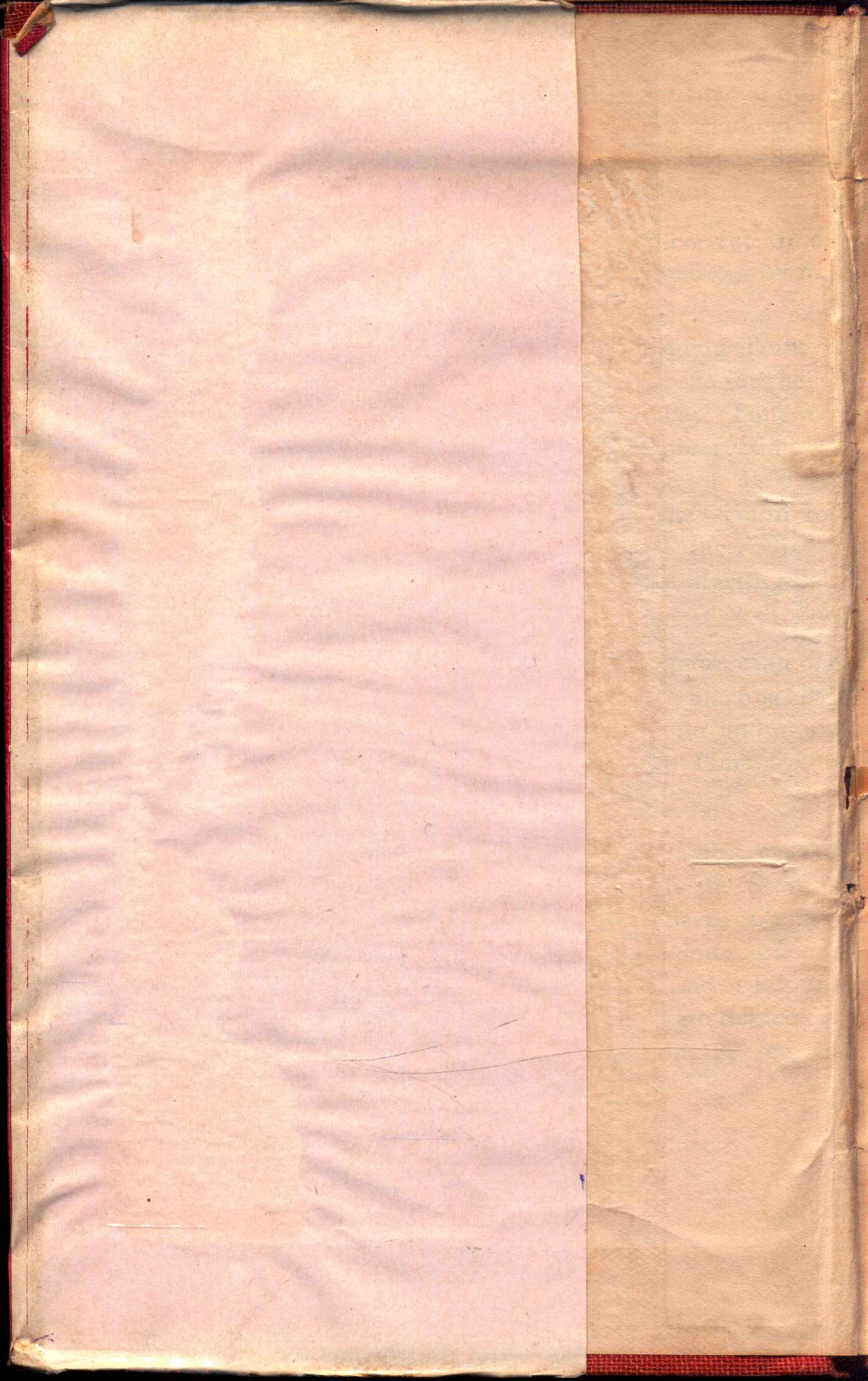
घोषणा-पत्र

१- पुस्तक का नाम .... हिन्दी मन्त्र महार्णव (मिश्र खण्ड)

२- विषय .... मन्त्र शास्त्र

३- लेखक / ~~प्रकाशक का नाम और पता~~ .... डॉ॰ रामकुमार राय

.... 74-A, जगतगंज, वाराणसी-221002

४- लेखक का प्रमाण-पत्र (निम्नलिखित)—

(क) मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरी उपर्युक्त रचना ~~मौलिक~~/अनूदित नवीन व्याख्या / प्रामाणिक अनुवाद के साथ प्रथम बार वर्ष १९८५ में प्रकाशित है।

(ख) कि मैं मूलतः उत्तर प्रदेश का निवासी हूं ~~या गत पांच वर्षों से उत्तर प्रदेश में कार्यरत~~ हूं।

(ग) संस्था का नाम ~~(यदि कोई हो)~~ / ~~में कार्यरत~~ हूं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त.

राम कुमार राय

तन्त्र ग्रन्थमाला नं० ८

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

(मिश्र खण्ड)

सम्पादक एवं अनुवादक

राम कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन

वाराणसी-२२१००२

Tantra Granthamala No. 8

Hindi Mantra Maharnava

(Mishra Khand)

Text with Hindi Translation
by
RAM KUMAR RAI

Prachya Prakashan
Varanasi-221002
1986

भूमिका

मन्त्रमहार्णव जैसे वृहत्तम ग्रन्थ को अनुवाद सहित प्रकाशित करने का संकल्प करते समय मैं इस कार्य की कठिनाइयों की कल्पना नहीं कर पाया था। कई बार ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हुई जब मैं न केवल निराश हुआ वरन अपने को अत्यन्त असहाय भी अनुभव करने लगा, परन्तु न जाने किस दैवी प्रेरणा और प्रोत्साहन के फलस्वरूप यह कार्य आगे बढ़ता रहा। आज इसके पूरा हो जाने को मैं केवल भगवान् की कृपा ही मानता हूँ।

पहले मैं इस ग्रन्थ के दो भाग—देवता खण्ड और देवी खण्ड—ही प्रकाशित करना चाहता था, किन्तु इन दोनों खण्डो को पाठक अत्यन्त उत्साहपूर्वक अपनाने के बाद मुझे इस तीसरे मिश्र खण्ड को भी शीघ्र पूरा करने के लिये निरन्तर लिखते रहे हैं, अतः इसे भी प्रकाशित करने का मुझे निर्णय करना पड़ा। इस भाग में मुख्यत षटकर्मों, यक्षिणियों, चेटकों तथा अन्यान्य काम्यकर्मों और कौतुकों आदि से सम्बद्ध विस्तृत और प्रामाणिक वर्णन होने के कारण, अनुवाद सहित प्रकाशित हो जाने पर इसके दुरुपयोग की आशङ्का से ही मैं इसके प्रकाशन से विरत रहना चाहता था। अतः आज इसके पूरा हो जाने पर मैं पाठकों से यही निवेदन करूँगा कि इसमें वर्णित प्रयोगों का केवल रचनात्मक कार्यों के लिये ही प्रयोग करें। इसमें दिये गये अनेक प्रयोग मेरे अनुभूत हैं और मेरा विश्वास है कि श्रद्धा तथा विश्वासपूर्वक जो भी इन प्रयोगों को करेगा उसे अवश्य सफलता मिलेगी।

ग्रन्थ के १२ वें तरङ्ग में दिये गये इन्द्रजाल कौतुकों को करते समय कुछ विशेष सतर्कता रखना चाहिये। प्राचीन विधियों से जो कौतुक बताये गये हैं उन्हें तो साधक तदनुसार कर सकते हैं, किन्तु जिनमें आधुनिक एसिडों तथा अन्य रासायनिक द्रव्यों के प्रयोग का उल्लेख है उन्हें साधकों को नहीं करना चाहिये क्योंकि एक ओर उन द्रव्यों के प्रयोग से जहाँ संकट उपस्थित हो सकता है, वहीं दूसरी ओर उनमें कोई चमत्कार नहीं है। उन द्रव्यों को मिलाने के परिवर्तन स्वरूप जो चमत्कार प्रतीत होते हैं उन्हें आज का विज्ञान आज अच्छी तरह जानता है। इतना ही नहीं विज्ञान की सहायता से आज कहीं अधिक आश्चर्यजनक चमत्कार किये जा सकते हैं। अतः इस तरङ्ग से

वर्णित चमत्कारों से अपढ़ व्यक्ति भले ही चमत्कृत हों, साधारण विज्ञान जाननेवालों के लिये भी इनमें कोई चमत्कार लक्षित नहीं होगा। साथ ही विज्ञान के ज्ञान से रहित प्रयोगकर्त्ता उल्लिखित रासायनिक द्रव्यों का स्पर्श करने आदि से संकट में पड़ सकता है। अतः पाठक ऐसे प्रयोगों से विरत रहें तो अच्छा होगा।

यहाँ मैं उन सब लोगों के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने इतने विशाल ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन में सहयोग दिया है।

श्री हिरामन तथा पं० रघुनन्दन शुक्ल के अथक परिश्रम से ही इस विशाल ग्रन्थ के तीनों भागों का मुद्रण इतने अल्प समय में हो सका है अतः मैं इन सज्जनों का आभारी हूं।

ग्रन्थ के तीनों भागों में लगभग ३०० से भी अधिक चक्रों के चित्रों को तथा टाइटिल के डिजाइनों को बनाने में मेरे पुत्र प्रदीप, राकेश और राजीव का भी सराहनीय योगदान रहा है। इन सब के सहयोग के बिना सम्भवतः मेरे लिये ग्रन्थ को पूर्ण रूप से प्रकाशित कर पाना प्रायः असम्भव होता। अतः मैं इन सब के प्रति भी हृदय से कृतज्ञ हूं।

अन्त में मैं पाठकों से एक बार पुनः अनुरोध करूंगा कि पुस्तक के केवल रचनात्मक प्रयोगों का ही अभ्यास करें जिससे उनका तथा उनके प्रयासों से मानव जाति का कल्याण हो सके।

पुस्तक में पाठकों को यदि त्रुटियाँ अथवा कमियाँ मिलें तो उन्हें मेरी अल्पज्ञता के कारण क्षमा करें।

राम कुमार राय

विषय-सूची

के भीतर से लौंग इलायची निकले, चाशनी बिगड़े, धान न सीझे, माली की डलिया में से फूल-फल बाहर निकल पड़े ४०८। घर में साँप दिखाई पड़े, बिना खूँटी की खड़ाऊँ पर चलना, तेल का घृत बने, जीमता हँसे, जीमता वमन करे, ओठ सफेद करना, धूआँ निकालना ४०९। पक्षी पकड़ना, जल बँधे-खुले, निज रूप कुरूप दिखाना, सभा के लोग दरिया की सैर करते दिखाई दें, अङ्ग में सूई छेदना, चरित्र दिखाई पड़ना ४१०।

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

(मिश्र खण्ड)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

मिश्रदेवतात्मक तृतीय खण्ड

प्रथम तरंग

स्वप्नसिद्धि तन्त्र

अथ स्वप्नवाराहीमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र महोदधि में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा ।[१] इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य स्वप्नवाराहीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः जगतीच्छन्दः स्वप्नवाराहीदेवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः ठः ठः कोलकं ममाभीष्टस्वप्नकथनार्थं जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ईश्वरऋषये नमः शिरसि १। जगतीच्छन्दसे नमो मुखे २। वाराहीदेवतायै नमो हृदि ३। ॐ बीजाय नमो गुह्ये ४। ह्रींशक्तये नमः पादयोः ५। ठः ठः कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। नमो वाराहि तर्जनीभ्यां नमः

---

१ दूसरे तन्त्र में एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है : 'ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्न दर्शय ठः ठः स्वाहा ।' इस मन्त्र को खाट पर ही १०० बार जपकर सोने से ११ दिन के भीतर ही प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलता है इसमें सन्देह नहीं है ।

२। घोरे मध्यमाभ्यां नमः ३। स्वप्नं अनामिकाभ्यां नमः ४। ठः ठः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्लीं हृदयाय नमः[२] १। नमो वाराहि शिरसे स्वाहा[३] २। घोरे शिखायै वषट्[४] ३। स्वप्नं कवचाय[५] हुं ४। ठः ठः नेत्रत्रयाय वौषट्[६] ५। स्वाहा अस्त्राय फट्[७] ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ॐ नमो दक्षिण पादे १। ॐ ह्लीं नमो वामपादे २। ॐ नं नमः लिङ्गे ३। ॐ मों नमो दक्षिणकट्याम् ४। ॐ वां नमो वामकट्याम् ५। ॐ रां नमः कण्ठे ६। ॐ हिं नमो दक्षगण्डे ७। ॐ घों नमः वामगण्डे ८। ॐ रें नमो दक्षनेत्रे ९। ॐ स्वं नमो वामनेत्रे १०। ॐ प्नं नमो दक्षकर्णे ११। ॐ ठं नमो वामकर्णे १२। ॐ ठं नमो दक्षनासापुटे १३। ॐ स्वां नमो वामनासापुटे १४। ॐ हां नमो मूर्ध्नि १५। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम् : ॐ **मेघश्यामरुचिं मनोहरकुचां नेत्रत्रयोद्भासितां कोलास्यां शशिशेखरामचलया दंष्ट्रातले शोभिताम्। बिभ्राणां स्वकराम्बुजैरसिलतां चर्मापि पाशं सृणिं वाराहीमनुचिन्तयेद्धयवरारूढां शुभालंकृतिम्॥ १॥ इति ध्यायेत्।**

इससे ध्यान के बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९। इति पूजयेत्।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ ह्लीं वाराहीयोगपीठायै नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर त्रिकोण के मध्य मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये ! अनुज्ञां देहि वाराहि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

खट्कोण केसरों में, आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र। नमो वाराहि शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। घोरे शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। स्वप्नं कवचाय हुम्। कवचश्रीपा० ४। ठः ठः नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रश्रीपा० ५। स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद षोडशदलों में पूज्य-पूजक के अन्तराल को प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त :

ॐ उच्चाटिन्यै नमः[८]। उच्चाटिनीश्रीपा० १। ॐ उच्चाटिनीश्वर्यै नमः[९]। उच्चाटिनीश्वरीश्रीपा० २। ॐ शोषिण्यै नमः[१०]। शोषिणीश्रीपा० ३। ॐ शोषिणीश्वर्यै नमः[११]। शोषिणीश्वरीश्रीपा० ४। ॐ मारिण्यै नमः[१२]। मारिणीश्रीपा० ५। ॐ मारिणीश्वर्यै नमः[१३]। मारिणीश्वरीश्रीपा० ६। ॐ भीषण्यै नमः[१४]। भीषणीश्रीपा० ७। ॐ भीषणीश्वर्यै नमः[१५]। भीषणीश्वरीश्रीपा० ८। ॐ त्रासिन्यै नमः[१६]। त्रासिनीश्रीपा० ९। ॐ त्रासिनीश्वर्यै नमः[१७]। त्रासिनीश्वरीश्रीपा० १०। ॐ कंपिन्यै नमः[१८]। कंपिनीश्रीपा० ११। ॐ कंपिनीश्वर्यै नमः[१९]। कंपिनीश्वरीश्रीपा० १२। ॐ आज्ञाविवर्तिन्यै नमः[२०]। आज्ञाविवर्तिनीश्रीपा० १३। ॐ आज्ञाविवर्तिनीश्वर्यै नमः[२१]। आज्ञाविवर्तिनीश्वरीश्रीपा० १४। ॐ वस्तुजातेश्वर्यै नमः[२२]। वस्तुजातेश्वरीश्रीपा० १५। ॐ सर्वसम्पादिन्यै नमः[२३]। सर्वसम्पादिनीश्रीपा० १६।

इस प्रकार षोडश शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलों में प्राचीक्रम और वामावर्त :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[२४] । ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ माहेश्वर्य्यै नमः[२५] । माहेश्वरी-श्रीपा० २ । ॐ कौमार्यै नमः[२६] । कौमारीश्रीपा० ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः[२७] । वैष्णवीश्रीपा० ४ । ॐ वाराह्यै नमः[२८] । वाराहीश्रीपा० ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः[२९] । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । ॐ चामुण्डायै नमः[३०] । चामुण्डाश्रीपा० ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः[३१] । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ।

इससे आठों देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राचीक्रम और वामावर्त :

ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः[३२] । असिताङ्गभैरवश्रीपा० १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः[३३] । रुरुभैरवश्रीपादुकां० २ । ॐ चण्डभैरवाय नमः[३४] । चण्डभैरव-श्रीपा० ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः[३५] । क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ उन्मत्तभैर-वाय नमः[३६] । उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५ । ॐ कपालभैरवाय नमः[३७] । कपाल-भैरवश्रीपा० ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः[३८] । भीषणभैरवश्रीपा० ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः[३९] । संहारभैरवश्रीपा० ८ ।

इससे आठ भैरवों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति चतुर्थावरण ।४।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[४०] १ । ॐ रं अग्नये नमः[४१] २ । ॐ मं यमाय नमः[४२] ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[४३] ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[४४] ५ । ॐ यं वायवे नमः[४५] ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[४६] ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[४७] ८ ।

इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[४८] ९ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[४९] १० ।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति पञ्चमावरण ।५।

फिर भूपुर के बाहर इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[५०] १ । ॐ शं शक्तये नमः[५१] २ । ॐ दं दण्डाय नमः[५२] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[५३] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[५४] ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[५५] ६ । ॐ गं गदायै नम[५६] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[५७] ८ । ॐ पं पद्माय नमः[५८] ९ । ॐ चं चक्राय नमः[५९] १० ।

इससे अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तिलमिश्रितनीलपद्मेन दशांशतो होमः । तत्तद्-

शांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तिलमिश्रित नीले पद्मों से दशांश होम होता है। फिर तत्तद्दशांश तर्पण-मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है :

लक्षं जपेद्दशांशेन नीलपद्मैस्तिलैः शुभैः। जुहुयात्पूर्वसम्प्रोक्ते पीठे सम्पूजयेदिमाम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धे मनुं मन्त्री काम्यकर्मणि योजयेत्। तर्पयेन्नारिकेलोत्थैर्जलैस्तीर्थोद्भवैरपि ॥ २ ॥ मानयेत्तरुणीवर्गान् सर्वकामार्थसिद्धये।

एक लाख जप और उसका दशांश तिल तथा नीले पद्मों से पूर्वोक्त पीठ पर होम करके पूजन सम्पन्न करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक को उसका काम्यकर्मों में प्रयोग करना चाहिये। नारियल के जल और तीर्थों के जल से तर्पण करना चाहिये तथा समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये तरुणियों का सम्मान करना चाहिये।

कृष्णपक्षेऽष्टमीघस्रे भूताहे वा कृतव्रतः ॥ ३ ॥ चतुष्पथान्नदीकूलद्वयात्कौलालवेश्मनः। मृदमानीय धत्तूररससंयुक्तया तया ॥ ४ ॥ रचयेत्पुत्तलीं रम्यामध्यास्य स्थापनान्विताम्। ततः प्रोक्ताम्बरे यन्त्रं नृकाकाजासृजा लिखेत् ॥ ५ ॥ चिताङ्गारयुतां योनिं षट्कोणं भूपुरान्वितम्। तदन्तर्मन्त्रमालिख्य वेष्टयेन्मनुनाऽमुना। वेष्टनमन्त्रो यथा।

कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को व्रत करके चौराहे से, नदी के दोनों किनारों से तथा कुम्हार के घर से मिट्टी लाये। उसमें धतूरे का रस मिलाकर उससे सुन्दर साध्य की पुतली बनाये और उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे। इसके बाद नरकाक के खून एवं चिता के अङ्गार से षट्कोण कर्णिका एवं भूपुरवाले यन्त्र को लिखना चाहिये। इसके बीच में स्वप्नवाराही का मन्त्र लिखकर मन्त्र से षट्कोण को वेष्ठित करना चाहिये। वेष्ठन का मन्त्र इस प्रकार है :

साध्यमुच्चाटय उच्चाटय शोषय शोषय मारय मारय भीषय भीषय नाशय नाशय शिरः कम्पय कम्पय ममाज्ञावर्तिनं कुरु कुरु सर्वाभिमतवस्तुजातं सम्पादय सम्पादय सर्वं कुरु कुरु स्वाहा।

अनेन वेष्ठितं कृत्वा कृतं देवोप्रतिष्ठितम् ॥ ६ ॥ पुत्तल्या हृदि विन्यस्य

यजेत्तामुक्तमार्गतः। तदग्रे प्रजपेन्मन्त्रं रात्रावेकान्तमाश्रितः ॥ ७ ॥ सहस्रं साष्टकं भूयः पूजयेत्तां समाहितः। एवं कृते नरा नार्यो राजानो राजवल्लभाः ॥ ८ ॥ सिंहा गजा मृगाः क्रूरा भवेयुर्वशगा ध्रुवम् ॥ ९ ॥

इससे वेष्टित यन्त्र में देवी की प्रतिष्ठा करके, उस यन्त्र को पुतली के हृदय में विन्यस्त करके पूर्वोक्त विधि से उसका यजन करे। उसके आगे रात्रि में एकान्त में एक हजार आठ बार मन्त्र का जप करे और फिर समाहित चित्त से उसकी पुनः पूजा करे। ऐसा करने से पुरुष, स्त्रियाँ, राजा तथा राजा के प्रियपात्र, सिंह, हाथी, मृग तथा अन्य क्रूर लोग भी निश्चित रूप से वश में हो जाते हैं।

अन्य प्रयोग :

चित्ते ध्यात्वा निजं कार्यं शयीत विजने व्रती। यथा भावि तथा देवी स्वप्ने वदति मन्त्रिणे। बहुना किमिहोक्तेन वाराहीष्टं प्रयच्छति ॥ १० ॥ इति पञ्चदशाक्षरवाराहीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

अपने कार्य का मन में ध्यान करके व्रती होकर एकान्त में शयन करने पर देवी साधक को भविष्य में होनेवाली घटनाओं की सूचना देती है। यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ, वाराहीदेवी अभीष्टों को प्रदान करती है। इति पञ्चदशाक्षरी वाराही मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ १ ॥

अथ स्वप्नेश्वरीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वद स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य स्वप्नेश्वरीमन्त्रस्य उपमन्युऋषिः बृहतीच्छन्दः स्वप्नेश्वरी देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ उपमन्यु ऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छन्दसे नमो मुखे २। स्वप्नेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। स्वप्नेश्वरि तर्जनीभ्यां नमः २। कार्यं मध्यमाभ्यां नमः ३। मे अनामिकाभ्यां नमः ४। वद कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा २। कार्यं शिखायै वषट् ३। मे कवचाय हुम् ४। वद नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : ॐ वराभये पद्मयुगं दधानां करैश्चतुर्भिः कनकासन-स्थाम् । सिताम्बरां शारदचन्द्रकान्ति स्वप्नेश्वरीं नौमि विभूषणाढ्याम् ।१।

इससे ध्यान करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके '**ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः**' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९ ।

इससे पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्र-पात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर '**ॐ स्वप्नेश्वरीयोगपीठात्मने नमः**' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित कर पुनः ध्यान करे और मूल-मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके इस प्रकार आवरण पूजा करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ श्रीं हृदयाय नमः[1] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र । स्वप्नेश्वरि शिरसे स्वाहा[2] । शिरः श्रीपा० २ । कार्यं शिखायै वषट्[3] । शिखाश्रीपा० ३ । मे कवचाय[4] हुम् । कवचश्रीपा० ४ । वद नेत्र-त्रयाय वौषट्[5] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । स्वाहा अस्त्राय फट्[6] । अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर '**पूजितास्तर्पिताः सन्तु**' यह कहे । **इति प्रथमावरण ॥ १ ॥**

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि[७-१६] दशदिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों[१७-२६] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य रात्रौ लक्षं

जपेत् । जपदशांशेन बिल्वपत्रैर्होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मण-भोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च—लक्षं जपेद्बिल्वपत्रैर्जुहुयात्तद्दशांशतः । रात्रौ सम्पूज्य देवेशीमयुतं पुरतो जपेत् ॥ १ ॥ शयति ब्रह्मचर्येण भूमौ दर्भोत्तराजिने । देव्यै निवेद्य स्वं हार्दं सा स्वप्ने वदति ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति त्रयोदशाक्षरस्वप्नेश्वरी मन्त्रप्रयोगः ॥ २ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजन करके रात्रि में एक लाख जप करे। जप से दशांश बेलपत्रों से होम करना चाहिये। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि एक लाख मन्त्र का जप करे तथा उसका दशांश बेल के पत्तों से होम करे। रात्रि में देवी की पूजा करके उनके सामने दश हजार जप करे। फिर ब्रह्मचर्यपूर्वक भूमि पर दर्भ के आसन पर मृगचर्म आदि बिछाकर देवी से अपने हृदय की भावनाओं को निवेदित कर शयन करे। इस प्रकार करने से देवी निश्चित रूप से स्वप्न में सब कुछ बताती है। इति त्रयोदशाक्षर स्वप्नेश्वरी मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ २ ॥

दूसरे तन्त्र में २० अक्षरों का अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वद-वद स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य **विधानम्** ।

शुचिर्भूत्वा हविष्यान्नं भुक्त्वायुतं जपेत । सन्ध्याकाले पूजां कुर्यात् । स्वप्ने त्रैकालिकं शुभाशुभं तस्मै देवी कथयति वर्तमानं स जानाति । इति विंशत्यक्षर मन्त्रप्रयोगः ॥ ३ ॥

इसका विधान : पवित्र होकर हविष्यान्न खाकर दश हजार जप और सन्ध्याकाल में पूजा करे। इससे देवी स्वप्न में त्रैकालिक शुभ-अशुभ भावों को बताती है। वह वर्तमान को जानता ही है। विंशत्यक्षर मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ ३ ॥

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : चौका देकर जप के स्थान पर दीपक और बताशा रखकर २१ हजार मन्त्रों का जप करने और भोग को कुमारियों में बांट

देने पर स्वप्न में देवी प्रश्न का उत्तर देती हैं। एक लाख जप करने से स्त्री के रूप में प्रत्यक्ष आकर वर देती है—इसमें सन्देह नहीं है। एक महात्मा द्वारा उपदेशित यह अत्यन्त चमत्कारी मन्त्र है ॥ ३ ॥

अथ हनूमन्मन्त्रप्रयोगः।

१८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान :

पवित्र हो रक्तवस्त्र धारण कर रक्त आसन के ऊपर बैठे। हनुमानजी की रक्तचन्दन की प्रतिमा स्थापित करके उस मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा कर पञ्चोपचार पूजन करे, सिन्दूर चढावे और गुड के चूरमे का नैवेद्य लगावे। उस नैवेद्य को आठ पहर मूर्ति के सामने धरा रहने दे। जब दूसरे दिन नैवेद्य लगावे, उस समय पिछले दिन के नैवेद्य को उठाकर किसी पात्र में इकट्ठा करता जाय और अनुष्ठान पूरा होने के बाद किसी गरीब ब्राह्मण को दे देवे, अथवा पृथ्वी में गाड़ देवे। घृत का दीपक जलाये, निर्जनस्थान में रात्रि के समय ग्यारह सौ ११०० मन्त्र का जप करे और फिर मौन रहे। उसी पूजन के स्थान पर रक्तवस्त्र के ऊपर सो जावे। ऐसा करने से ग्यारह दिन के भीतर श्रीहनुमानजी महाराज रात्रि के समय ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण करके स्वप्न में साधक को दर्शन देते हैं, साधक के प्रश्न का यथोचित उत्तर देते हैं और साधक को अभिलषित वार्ता बताते हैं—इसमें सन्देह नहीं है। यह हमारा कई बार अनुभव किया हुआ सिद्ध प्रयोग एक महात्मा से मिला था। यह दुष्ट पुरुषों को देना योग्य नहीं है। इत्यष्टादशाक्षरहनूमन्मन्त्र-प्रयोग ॥ ४ ॥

अथ योजनगन्धा योगिनीमन्त्रप्रयोगः।

३४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

जोजनगन्धा जोगिनी। ऋद्धसिद्ध में भरपूर॥ मैं आयो तोय जाचणे। करजो कारज जरूर॥ इति चतुस्त्रिंशदक्षरो दोहारूपमन्त्रः।

इसका विधान :

गेहूं का आटा सवासेर, घृत ढाई पाव, चीनी ढाई पाव इनको कसार भूनकर तैयार कर ले। शनिवार को सूर्योदय से पहले जङ्गल में जाकर कीडीनगरा अर्थात् चींटा-चींटी के बिलों में थोड़ा-थोड़ा कसार गिराता जाय और मन्त्र बोलता जाय। जङ्गल में खूब घूमे। जब थक जाय तब किसी

वृक्ष के नीचे विश्राम करे। उसी समय निन्द्रावस्था प्राप्त होने पर एकाकी पुरुष या स्त्री आकर सामने खड़ा हो जायेगा और साधक के मनोप्सित कार्य को अच्छे स्पष्ट वचनों से बतायेगा। उसकी बात सब साधक को अच्छी तरह सुनाई पड़ेगी। यह ४ पहर का प्रयोग निराहार व्रत करके करना चाहिये। यह पहले ही दिन प्रश्न का उत्तर दे देता है इसमें कुछ सन्देह नहीं है। कई दिनों तक करने से तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। रात्रि को घर में आकर भोजन करना चाहिये। यह भी हमारा अनुभव सिद्ध प्रयोग है। इति चतुस्त्रिंशदक्षरयोजनगन्धा योगिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ ५ ॥

अथ चण्डयोगिनीमन्त्रप्रयोगः।

शिवचन्द्रिका में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं सः नमः श्मशानवासिनि चण्डयोगिनि स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः। घृताक्तं रक्तपुष्पैश्च पूर्णान्ते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपादान्तं क्षिपेद्गात्रं रात्रौ मन्त्रं समुच्चरेत्। यावन्निद्रावशं याति स्वप्नं दत्ते च सागता। वांछितं यच्छुभं किञ्चित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्धयति ॥ २ ॥ इति चण्डयोगिनीमन्त्रप्रयोगः।

पहले दश हजार जप करने के बाद घृतप्लुत रक्तपुष्पों से दशांश होम करे और होम पूर्ण होने पर पुनः जप करे। पाँव से शिर तक पूरे शरीर पर लेपन करे और रात्रि में मन्त्र का उच्चारण करे। जब साधक सो जाता है तब वह स्वप्न देने आ जाती है। वाञ्छित जो कुछ शुभ हो या जो सिद्ध न हो उस सबको बताती है। चण्डयोगिनी मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ ६ ॥

अथ मणिभद्रमन्त्रप्रयोगः।

३३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वकार्यसिद्धये मम स्वप्नदर्शनानि कुरु कुरु स्वाहा। इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान :

रात्रि के समय तेल का दीपक जलाये, उस दीपक में फूटी कौड़ी रक्खे, उसके सम्मुख ग्यारह सौ ११०० मन्त्र जपे और जप करने के बाद लाल कनेर के फूलों को १०८ बार मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके उन पुष्पों को ताँबे के डिब्बे में बन्द कर शिर के नीचे रखकर सो जावे। एक समय भोजन करे। ऐसा करने से ग्यारह ११ दिन के भीतर शुभाशुभ या जैसा होनेवाला हो

स्वप्न द्वारा अवश्य कहता है इसमें सन्देह नहीं । इति मणिभद्रमन्त्रप्रयोगः ॥७॥

अथ स्वप्नमातङ्गीमन्त्रप्रयोगः ।

२४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः स्वप्नमातङ्गिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा । इति चतुर्विंशत्यक्षरोमन्त्रः ।

इसका विधान :

दिन में निर्जल व्रत करके रात्रि के समय १०८ बार मन्त्र को जपकर भूखा ही सो जाने पर पहली ही रात्रि में स्वप्न हो जाता है । कई दिनों तक करने की आवश्यकता नहीं पड़ती । इति स्वप्नमातङ्गीमन्त्रप्रयोगः ॥ ८ ॥

अथ यक्षिणीमन्त्रप्रयोगः ।

१६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीवालीलं बाहुली क्षां क्षीं क्षं क्षैं क्षः स्वाहा । इति षोडशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पूर्वंमुखोऽयुतं जपेत् । एकभुक्तव्रतं कुर्यात् । जपान्ते कुशशय्यायां सुप्तः तदा शुभाशुभं स्वप्ने पश्येत् । इति यक्षिणीमन्त्र-प्रयोगः ॥ ९ ॥

इसका विधान : पूर्वमुख बैठकर १० हजार जप करे और एक काल भोजन का व्रत करे । जप के बाद कुश की शय्या पर सोने से स्वप्न में शुभाशुभ सब कुछ दिखाई पड़ता है । यक्षिणी मन्त्र समाप्त ॥ ९ ॥

अथ घण्टाकर्णीमन्त्रप्रयोगः ।

३० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ यक्षिणि आर्कार्षिणि घण्टाकर्णे घण्टाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा । इति त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रात्रौ सहस्रं जपेत् । एकादशदिनान्तरे स्वप्ने वदति न सन्देहः ॥ १० ॥

इसका विधान : रात्रि के समय एक हजार जप करे । ग्यारह दिन के बाद स्वप्न में देवी बोलती है—इसमें सन्देह नहीं है । घण्टाकर्णी मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ १० ॥

अथ कर्णपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ।

६५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है ।

ॐ नमः कर्णपिशाचिनि अमोघसत्यवादिनि मम कर्णं अवतरावतर

अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनि स्वाहा। इति पञ्चाधिकषष्ट्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : त्रिशूल का पूजन कर दिन में घृत का दीपक जलाकर ग्यारह सौ मन्त्र जपे। फिर रात्रि में इसी तरह त्रिशूल का पूजन कर घृत और तेल दोनों का दीपक जलाकर ग्यारह सौ मन्त्र जपे। ऐसा करने से ग्यारह ११ दिन के भीतर प्रश्न का उत्तर स्वप्न द्वारा अवश्य देती है इसमें सन्देह नहीं है। इति पञ्चषष्टयक्षरकर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोगः ॥ ११ ॥

दूसरे तन्त्र में ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकरिणि प्रवेषे अतीतानागतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा। इति षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : इस मन्त्र को आम्र के पट्टे पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से रात्रि के समय एक सौ आठ मन्त्र लिखकर मिटाता जाय। लिखते समय मन्त्र का उच्चारण भी करता जाय। अन्तवाले मन्त्र का पञ्चोपचार पूजन करके ग्यारह सौ ११०० मन्त्र का जप करे। फिर उस मन्त्र लिखे हुए पट्टे को सिरहाने रखकर सो जाय। ऐसा करने से इक्कीस दिन के भीतर साधक के प्रश्न का उत्तर यथोचित, ठीक-ठीक स्पष्ट वचनों से स्वप्न में देती है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। यह हमारा कई बार का अनुभवसिद्ध प्रयोग है, इसमें सन्देह नहीं मानना चाहिये। अगर इसको होली या दिवाली या ग्रहण से प्रारम्भ करके खाट के ऊपर ही पांच सौ मन्त्र जप कर सोया करे तो अवश्य ही साधक के प्रश्न का उत्तर देती है और कई तरह की बातें सूचित करती है। परीक्षा कर देखा जा सकता है। इति षट्त्रिंशदक्षर कर्णपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ १२ ॥

कामरत्न तन्त्र में २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि वद वद स्वाहा। इति षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः।[1]

अस्य विधानम् : पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृष्णकन्याभिमन्त्रितः। हस्तपादप्रलेपेन सुप्तौ वक्ति शुभाशुभम्। त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम्। इति षड्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोगः ॥ १३ ॥

इसका विधान : सर्वप्रथम मन्त्र का १० हजार जप करे। फिर कृष्ण कन्या

---

१. तत्रान्तरेऽपि : ॐ क्रीं सनामशक्तिभगवति कर्णपिशाचिनि चण्डरोपिणि वद वद स्वाहा। इति मन्त्रः।

अर्थात काले घीकुवार को अभिमन्त्रित करके इसके बाद उसका हाथ-पाँव में लेप करके सो जाय। तब त्रैलोक्य की सभी शुभाशुभ वार्ता के फल को यथावत कहती है। २६ अक्षरों का कर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोग समाप्त। १३।

दूसरे तन्त्र में २४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हंसोहंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्डवेगिनि स्वाहा। इति चतुर्विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कुष्ठकल्काभिमन्त्रितम्। हस्तपादप्रलेपेन स्वप्ने वक्ति शुभाशुभम्। त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ १ ॥ इति चतुर्विंशत्यक्षरकर्णपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ १४ ॥

इसका विधान : पूर्वोक्त क्रम से १० हजार मन्त्र का जप करके कूठ के कल्क को अभिमन्त्रित करके हाथ-पैर में लगाने से स्वप्न में शुभाशुभ कहती है। त्रैलोक्य में जो भी वार्ता होती है उसे यथावत बता देती है। २४ अक्षरों का कर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ १४ ॥

दूसरे तन्त्र में १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ नमो भवति चण्डकर्णपिशाचिनि स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कृत्वा होमं दशांशतः। घृताक्तैरक्तकुष्ठैश्च पूर्णान्ते च पुनर्जपेत् ॥ १ ॥ आपदान्तं लिपेद्गात्रं रात्रौ मन्त्रं समुच्चरेत्। यावन्निद्रावशं याति स्वप्नं दत्ते च सागता। वांछितं यच्छुभं किञ्चित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्ध्यति ॥ २ ॥ इति सप्तदशाक्षरकर्णपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ १५ ॥

इसका विधान : पूर्वक्रमानुसार १० हजार जप कर घृतमिश्रित लाल कूठ से दशांश होम और होम पूर्ण होने पर पुनः जप करे। फिर पैर पर्यन्त शरीर पर उसका लेप करे। रात्रि में मन्त्र का उच्चारण करे। जब साधक निद्रा के वशीभूत हो जाता है तब देवी स्वप्न में आती है और वाञ्छित जो भी शुभाशुभ है वह सिद्ध होगा या नहीं यह बताती है। १७ अक्षरों का कर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ १५ ॥

अथ चिंचिनीपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः।

१२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं चीं चिञ्चिनि पिशाचिनि स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पूर्वसेवायुतं जप्त्वा होमं कुर्यात्प्रयत्नतः। सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये ॥ १ ॥

इसका विधान : पूर्व क्रम के अनुसार इस मन्त्र का १० हजार जप करके प्रयत्नपूर्वक होम करना चाहिये। मन्त्र सिद्ध होने पर इष्टसिद्धि के लिये प्रयोगों को करे।

रोचनाकुंकुमक्षीरैः पद्ममष्टदलं लिखेत्। विरजस्के भूर्जपत्रे मायाबीजं दले दले ॥ २ ॥ लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं मन्त्रायुतं जपेत्। अतीतानागतं सर्वं स्वप्ने वदति देवता ॥ ३ ॥ इति द्वादशाक्षरचिंचिनीपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ १६ ॥

गोरोचन, कुंकुम और दूध से धूल आदि से रहित भोजपत्र पर अष्टदल पद्म लिखे। प्रत्येक दल पर मायाबीज (ह्रीं) लिखकर उसे सर पर धारण करके इस मन्त्र का दश हजार जप करे। इस प्रकार देवता स्वप्न में भूत और भविष्य सबका फल कहता है। इति १२ अक्षरों का चिञ्चनीपिशाचिनी मन्त्रप्रयोग ॥ १६ ॥

अथ चामुण्डामन्त्रप्रयोगः।

१३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरोमन्त्रः।

(दूसरे तन्त्र में मन्त्र यह है : ॐ ह्रां आगच्छागच्छ चामुण्डे ह्रीं स्वाहा)।

अस्य विधानम् : मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत्। पञ्चोपचारनैवेद्यैर्देवदेवीं प्रपूजयेत् ॥ १ ॥ साक्षसूत्रे करे धृत्वा पूर्वं सेवायुतं जपेत्। सूर्यकोटिसमां ध्यात्वा रात्रौ पाणितलं जपेत् ॥ २ ॥ अर्द्धरात्रे गते देवी वार्ता वक्ति शुभाशुभाम् ॥ ३ ॥ इति त्रयोदशाक्षरचामुण्डा मन्त्रप्रयोगः ॥ १७ ॥

इसका विधान : मिट्टी और गोबर से भूमि को लीपकर वहाँ कुछ बिछावे तथा पञ्चोपचारों और नैवेद्यों से देवी की पूजा करे। रुद्राक्ष की माला हाथ में लेकर मन्त्र का १० हजार जप करे और कोटि सूर्य की आभावाली देवी का ध्यान करके रात में जप करके सो जाय। तब आधी रात को आकर देवी स्वप्न में शुभाशुभ कहती है। १३ अक्षरों का चामुण्डामन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ १७ ॥

अथ रुद्रमन्त्रः।

३० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्मशानवासिने चण्डयोगिने स्वाहा । इति त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : करञ्जवृक्षमारुह्य जपेदष्टसहस्रकम् । तप्तं चाङ्गेर्घृताक्तैश्च दशांशं होममाचरेत् ॥ १ ॥ तप्तं चाङ्गेन कल्केन आपादान्तं विलेपयेत् । जपान्ते पूर्ववत्स्वप्ने कथयेत्सा शुभाशुभम् ॥ २ ॥ इति त्रिंशदक्षररुद्रमन्त्रप्रयोगः ॥ १८ ॥

इसका विधान : करञ्ज वृक्ष पर चढ़कर मन्त्र का ८ हजार जप करे । तदनन्तर घृतप्लुत चाङ्गेरी से जप का दशांश होम करे । इसके बाद चाङ्गेरी के गरम कल्क का पैर पर्यन्त शरीर में लेप करे । जप के अन्त में पूर्ववत् स्वप्न में आकर देव शुभाशुभ सब बताते हैं । ३० अक्षरों का रुद्रमन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ १८ ॥

दूसरे तन्त्र में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा । इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अलाबूमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम् । संग्राह्य मन्त्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् । मन्त्रेण मूर्ध्नि बध्नीयाद्वदत्येव शुभाशुभम् ॥ १ ॥ इत्यष्टादशाक्षररुद्रमन्त्रप्रयोगः ॥ १९ ॥

इसका विधान : लौकी तथा सर्पाक्षि की जड़ें पुष्यनक्षत्र में लाकर यत्न से अभिमन्त्रित करके लालसूत्र से बाँधकर सिर पर बाँध लेने से देव शुभाशुभ बताते हैं । १८ अक्षरों का रुद्रमन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ १९ ॥

दूसरे तन्त्र में तीन श्लोकों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन । इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वते ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः । क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति श्लोकत्रयात्मको मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् । ततः स्वप्नं दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् । अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ २० ॥

इसका विधान : स्नानादि करके विष्णु भगवान के चरणकमलों का स्मरण करके कुशासन की शय्या पर यथासुख बैठकर मन्त्र से एक सौ आठ

बार शिव की प्रार्थना करने के बाद सो जाय। तदनन्तर रात्रि में देखे स्वप्न को प्रातःकाल गुरु को बतावे अथवा स्वयं ही विचार करे ॥ २० ॥

अथ मुसलमानीमन्त्रः ।

बिस्मिल्ला हिर्रहेमानिर्रहीम : अल्लाहोरवीमहम्मदरसूलख्वाजेकीतस्वीरकुलाआलमहजूरमेजैगेमवक्वलल्यावैगेजरूर । इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : प्रथम अमल में करने के वास्ते १२५००० जपे। बृहस्पतिवार से प्रारम्भ करे और पश्चिम मुख बैठे। इस प्रकार करने से मन्त्र अमल में आ जाता है। पीछे ग्यारह सौ मन्त्र से लेकर ग्यारह हजार मन्त्र तक जितना हो सके नित्य जपे तो इक्कीस दिन के भीतर स्वप्न द्वारा प्रश्न का उत्तर अवश्य मिल जायेगा इसमें कुछ संदेह नहीं। परन्तु पेशाब करने के बाद इस्तिञ्जा अवश्य करे अर्थात् इन्द्री को मट्टी से साफ करे। बृहस्पतिवार के दिन कब्र पर जाकर रकाबी, फूल, अतर और मिठाई चढावे। धूप लोहबान की खेवे फकीरों को जिमावे। इन सब कामों के करने से मुसलमानी मन्त्र जल्दी ही फलीभूत होते हैं। सम्पूर्ण मुसलमानी मन्त्रों में उल्टी माला फेरनी पड़ती है। इस मन्त्र के द्वारा और भी प्रयोजन सिद्ध हो जाता है ॥ २१ ॥

अन्यः । बिस्मिल्लाहिर्रहेमानिर्रहीम् शमशैरतवरैलशलैआदमहजरतमहबूबसुभानी हाजर । इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : इस मन्त्र को १० हजार नित्य जपने से इक्कीस दिन के भीतर होनहार स्वप्न द्वारा कहे। इसमें भी इस्तिजादि करना योग्य है ॥ २२ ॥

अन्यः । याबासितो । इति चतुरक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पश्चिममुख हो चौमुखा दीपक जलाकर उलटी ३६० माला से तेंतीस हजार मन्त्र नित्य जपे तो ४१ दिन में मन्त्र सिद्ध हो जाता है। नित्य दश हजार पढ़कर सोया करे तो साधक के प्रश्न का उत्तर ठीक-ठीक देता रहेगा और बहुत सी बातें बतावेगा। यह बड़ा चमत्कारी अनुभव किया हुआ मन्त्र है ॥ २३ ॥

अथ नीलाम के वास्ते पीर का कलमा ।

मन्त्रो यथा : याजरव्वाजखिज्रगैतेराइलियास : लिल्लामकादिलचित्तमेरेपास । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : कूपे के ढाणे पर रात्रि के समय एकान्त स्थान में

लोहबान की धूप देता हुआ १०८ बार उल्टी माला से मन्त्र पढे तो २१ दिन के भीतर प्रत्यक्ष आकर उत्तर देता है इसमें संदेह नहीं है।

अथानेकमन्त्राः।

ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वदवद वाग्वादिनि स्वाहा। इति वागीश्वरी मन्त्रः॥ २४॥

क्लीं वदवद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा। इति चित्रेश्वरीमन्त्रः॥ २५॥

सें कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा। इति कुलजामन्त्रः॥ २६॥

ऐं ह्रीं श्रीं वदवद कीर्तीश्वरि स्वाहा। इति कीर्तीश्वरीमन्त्रः॥२७॥

ऐं ह्रीं अन्तरिक्षसरस्वति स्वाहा। इत्यंतरिक्षसरस्वतीमन्त्रः। २८।

ब्लूं वं वदवद त्रीं हुं फट्। इति नीलामन्त्रः॥ २९॥

ऐं हैं ह्रीं किणिकिणि विच्चे। इति किणीमन्त्रः॥ ३०॥

ह्सफ्रें ह्सौः ष्फ्रों ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः घटसरस्वति घटे वदवद तरतर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरुकुरु स्वाहा। इति घट-सरस्वतीमन्त्रः।

इत्यष्टौ मन्त्रान् स्वप्नार्थं जपेत्। ततः स्वप्नं दत्त्वा कार्यं कथयति। इति सरस्वत्यष्टकम्॥ ३१॥

इन आठ मन्त्रों का स्वप्नार्थ जप करने से देवी स्वप्न देकर उसमें कार्य को बताती है। इति सरस्वत्यष्टकम्॥ ३१॥

स्वप्नसिद्धितन्त्रे प्राकृतग्रन्थे : वन में कहीं वृक्षपै रूपारेल (अमर बेल) जुहोय ताके भांवरसातले लकडी लावै सोय लकडी लाय धूप देवता को दीजे आगलगाई धरसि रहाने को लाता के कर विचार सोजाई जैसी हो होतव्यता तैसी दीखै आय जोजो सांची होय सो सुपने में दरसाय॥ ३२॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे तृतीयभागे स्वप्नसिद्धि-
तन्त्रे प्रथमस्तरङ्गः॥ १॥

द्वितीय तरंग

यक्षिण्यादि तन्त्र

देव्युवाच । श्रुतं च साधनं सर्वं यक्षिणीनां सुखप्रदम् । कस्मिन्काले प्रकर्तव्यं विधिना केन वा प्रभो ॥ १ ॥ अत्राधिकारिणः के वा समासेन वदस्व मे ।

देवी बोली : हे प्रभो ! मैंने यक्षिणियों का सुखप्रद सब साधन सुना । किस समय और किस विधि से वह किया जाना चाहिये ? इसमें अधिकारी कौन लोग हो सकते हैं ? संक्षेप में आप हमें बतायें ।

ईश्वर उवाच । वसन्ते साधयेद्धीमान् हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ २ ॥ सदा ध्यानपरो भूत्वा तद्दर्शनमहोत्सवः । उज्जटे प्रान्तरे वापि कामरूपे विशेषतः ॥ ३ ॥ स्थानेष्वेकतमं प्राप्य साधयेत्सुसमाहितः । अनेन विधिना साक्षाद्भवत्येव न संशयः ॥ ४ ॥ देव्यास्तु सेवकाः सर्वे परं चात्राधिकारिणः । तारकब्रह्मणो भृत्यं विना ह्यत्राधिकारिणः ॥ ५ ॥ अग्निहोत्री विशेषेण साधयेद्यक्षिणीः शुभाः । सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः । भगिनी मातृपुत्रीस्त्रीरूपतुल्या यथेप्सिताः ॥ ६ ॥ तत्रादौ षट्त्रिंशद्यक्षिणीनामानि किङ्किणीतन्त्रे । अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम् । यस्मिन्सिद्धे मनुष्याणां सर्वे सिध्यन्ति हृच्छयाः ॥ ७ ॥

ईश्वर बोले : हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर धीमान् साधक को वसन्त ऋतु में यह साधन करना चाहिये । सदा ध्यान में तत्पर और उसके दर्शन की लालसा में उत्सुक होकर उजाड़ और सर्वथा सुनसान प्रदेश में विशेषकर कामरूप में शान्त चित्त होकर साधना करे । इस प्रकार साधन करने से निश्चित रूप से देवी साक्षात्कार का लाभ होता है । देवी का सेवक ही इस कार्य का अधिकारी है । जो ब्रह्मविद् हैं उन्हें इस कार्य का अधिकार नहीं है । विशेष करके अग्निहोत्री को शुभ यक्षिणियों का साधन करना चाहिये । समस्त यक्षिणियों का ध्यान शान्तचित्त होकर करना चाहिये । इनके सिद्ध हो जाने पर मनुष्यों के हृदय की सभी हार्दिक अभिलाषायें पूर्ण हो जाती हैं ।

षट्त्रिंशद्यक्षिणीनान्तु नामानि प्रवदाम्यथ। विचित्रा विभ्रमा हंसी भिक्षिणी जनरञ्जिका ॥ ८ ॥ विशाला मदना घण्टा कालकर्णी महाभया। माहेन्द्री शङ्खिनी चान्द्री श्मशानी वटयक्षिणी ॥ ९ ॥ मेखला विकला लक्ष्मी कामिनी शशपत्रिका। सुलोचना सुशोभाढ्या कपाली च विलासिनी ॥ १० ॥ नटी कामेश्वरी चैव स्वर्णरेखा सुसुन्दरी। मनोहरा प्रमोदा तु रागिणी नखकेशिका ॥ ११ ॥ नेमिनी पद्मिनी स्वर्णवती देवी रतिप्रिया। षट्त्रिंशतिश्च विख्याता यक्षिणीनां सुसिद्धिदा ॥ १२ ॥ किङ्किणीनाम्नि तन्त्रेऽस्मिञ्छम्भुना वै सुभाषिता ॥ १३ ॥

छत्तीस (३६) यक्षिणियों के नामों को मैं कह रहा हूं : १. विचित्रा, २. विभ्रमा, ३. हंसी, ४. भिक्षिणी, ५. जनरञ्जिका, ६. विशाला, ७. मदना, ८. घण्टा, ९. कालकर्णी, १०. महाभया, ११. माहेन्द्री, १२. शङ्खिनी, १३. चान्द्री, १४. श्मशानी, १५. वटयक्षिणी, १६. मेखला, १७. विकला, १८. लक्ष्मी, १९. कामिनी, २०. शशपत्रिका, २१. सुलोचना, २२. सुशोभाढ्या, २३. कपाली, २४. विलासिनी, २५. नटी, २६. कामेश्वरी, २७. स्वर्णरेखा, २८. सुसुन्दरी, २९. मनोहरा, ३०. प्रमोदा, ३१. रागिणी, ३२. नखकोशिका, ३३. नेमिनी, ३४. पद्मिनी, ३५. स्वर्णवती, ३६. रतिप्रिया। ये विख्यात सुसिद्धिप्रदा ३६ यक्षिणियाँ हैं। किङ्किणी नामक तन्त्र में शम्भु ने इसे कहा है।

षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने सूचनामाह। यदि षट्त्रिंशद्यक्षिणी समये न तिष्ठति तदा क्रोधसहितः क्रोधमन्त्रं पठित्वा क्रोधमुद्रयाऽऽकर्षयेत्। तदा शीघ्रमागच्छति। यदि नागच्छति अक्षिण मूर्ध्नि वा स्फुटति। तत्क्षणान्म्रियते महानरके पतति। क्रोधमन्त्रो यथा :

अब इन ३६ यक्षिणियों की साधना को बताता हूं। यदि इन ३६ यक्षिणियों में से कोई साधक के समय पर उपस्थित न हो तो क्रोधपूर्वक क्रोधमन्त्र को पढ़कर उसे क्रोध मुद्रा से आकर्षित करने पर शीघ्र आती है। यदि फिर भी नहीं आती तो उसकी आँख या मूर्धा फट जाती है, या तत्क्षण मर जाती है अथवा महानरक में गिर पड़ती है। क्रोधमन्त्र यह है :

ॐ जूं कट्टकट्ट अमुकयक्षिणि ह्लीं यः यः हुं फट्।

इस क्रोधमन्त्र का एक हजार जप करे। क्रोधमुद्रा इस प्रकार है :

मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत्। तर्जनीं प्रसार्याकुञ्चयेत्। एषा प्रतिहतक्रोधांकुशमुद्रा क्षणेन त्रैलोक्यमप्याकर्षयेत्।

मुट्ठी बाँध कर दोनों कनिष्ठाओं से उसे वेष्टित करे और तर्जनी को फैला

कर मोड़ लेवे। यह प्रतिहत क्रोधांकुश मुद्रा एक क्षण में ही त्रैलोक्य को आकर्षित कर लेती है।

अथ षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधने मुद्रादयः।

३६ यक्षिणियों के साधन में मुद्रा आदि।

समकरतलपाणिं कृत्वा मध्यमांगुल्यौ विपरीते अनामिकानिर्गते बाह्यतः संस्थाप्य तर्जन्यभिनिविष्टकनिष्ठागर्भसंस्थिता सर्वयक्षिणीनां परममुद्रा अनया बद्धमात्रया सर्वयक्षिण्य आगच्छन्ति। अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठेनावाहनं तत्र मन्त्रः :

हथेली को समतल करे, मध्यमा अंगुलियों को विपरीत करे, अनामिका को बाहर निकली हुई छोड़ कर तर्जनी को भीतर मुड़ी कनिष्ठा के अन्दर करे। यह मुद्रा सभी यक्षिणियों के लिये श्रेष्ठ कही गई है। इस मुद्रा को बाँधने मात्र से सभी यक्षिणियाँ आ जाती हैं। इस मुद्रा का बायें अंगूठे से आवाहन किया जाता है जिसमें मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं आगच्छ अमुकयक्षिणि स्वाहा ॥ १ ॥

अस्या एव मुद्राया वामांगुष्ठं विसर्जयेत्। तत्र मन्त्रः :

इस मुद्रा में बायें अगूठे से विसर्जित किया जाता है। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं गच्छामुकयक्षिणि शीघ्रं पुनरागमनाय स्वाहा ॥ २ ॥

मुष्टिं तर्जनीं मध्यमांगुलिं प्रसारयेत्। सर्वयक्षिण्यभिमुखीकरणमुद्रा। तत्र मन्त्रः :

मुट्ठी बाँध कर तर्जनी और मध्यमा अंगुली को फैलावे। यह सभी यक्षिणियों की अभिमुखीकरण मुद्रा है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ महायक्षिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ॥ ३ ॥

मुष्टिं कृत्वा प्रसार्याकुञ्चयेत्। सर्वयक्षिणीसान्निध्यकरणमुद्रा। तत्र मन्त्रः :

मुट्ठी बाँध कर फैलाये और फिर बाँधे। यह सभी यक्षिणियों की सान्निध्य-करण मुद्रा है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ कामेश्वरि स्वाहा ॥ ४ ॥

हस्तं घटाकारेण संस्थाप्य सर्वयक्षिणीहृदयमुद्रा। तत्र मन्त्रः : ह्रीं ॥ ५ ॥

हाथ को घड़े के आकार में स्थापित करने से सब यक्षिणियों के लिये हृदय मुद्रा बनती है। इसमें मन्त्र ह्रीं है।

मुष्टि कृत्वा तर्जनीं मध्यमां प्रसारयेत् । सर्वयक्षिणीगन्धपुष्पधूपदीप-मुद्रा । तत्र मन्त्रः :

मुट्ठी बाँध कर तर्जनी और मध्यमा को फैलाये । यह सब यक्षिणियों की गन्ध-पुष्प-धूप-दीप मुद्रा है । इसमें मन्त्र यह है ।

ॐ सर्वमनोहारिणि स्वाहा ॥ ६ ॥

इति ज्ञात्वा यक्षिणीं साधयेत् । तत्रादौ विचित्रासाधनम् । मन्त्रो यथाशिवार्चनचन्द्रिकोक्तः ।

इन प्रक्रियाओं को जानकर यक्षिणी का साधन करे । इसमें विचित्र-साधन पहला है । शिवार्चन चन्द्रिका में इसका १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विचित्रे चित्ररूपिणि सिद्धि कुरुकुरु स्वाहा । इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः ।

किङ्किणी तन्त्र में १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विचित्ररूपे सिद्धि कुरुकुरु स्वाहा । इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं वटवृक्षतले शुचिः । बन्धूक-कुसुमैश्चैव मध्वाज्यक्षीरमिश्रितैः । दशांशं योनिकुण्डे तु हुत्वा देवी प्रसीदति । विचित्रा साधकस्याथ प्रयच्छति समीहितम् । इति विचित्रा यक्षिणीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

इसका विधान : पवित्र होकर वटवृक्ष के नीचे मन्त्र का एक लाख जप करे । मधु, घी तथा दूध से मिश्रित बन्धूक के फूलों से योनिकुण्ड में दशांश होम करने से देवी प्रसन्न होकर अपने विचित्रा साधक को मनोवांछित फल देती है । विचित्रा यक्षिणी मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ १ ॥

अथ विभ्रमासाधनं शिवार्चनचन्द्रिकायाम् ।

शिवार्चन चन्द्रिका में विभ्रमा का साधन इस प्रकार है ।

इसका २३ अक्षरों का मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरुकुरु एह्येहि भगवति स्वाहा । इति त्र्यधिकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानं । जपेल्लक्षद्वयं मन्त्री श्मशाने निर्भयो मनुम् । दशांशं जुहुयात्साज्यं हुत्वा तुष्यति विभ्रमा । पञ्चाशन्मानुषाणां च दत्ते सा भोजनं सदा ।

इसका विधान : श्मशान में निर्भय होकर साधक मन्त्र का दो लाख

जप करे। फिर घी से जप का दशांश होम करे। इससे विभ्रमा यक्षिणी सन्तुष्ट होती है और वह सदा पचास मनुष्यों को भोजन देती है।

किङ्किणीतन्त्रोक्तविधानं यथा : घृताक्तगुग्गुलैर्होमे दशांशेन कृते सति। विभ्रमा तोषमायाति पञ्चाशन्मानुषः सह। ददाति भोजनं दिव्यं प्रत्यहं शङ्करो ब्रवीत्। इति विभ्रमासाधनम् ॥ २ ॥

किङ्किणी तन्त्र में विधान इस प्रकार है : घी से युक्त गुग्गुल से जप का दशांश होम करने से विभ्रमा प्रसन्न होकर प्रतिदिन ५० मनुष्यों के साथ दिव्य भोजन देती है—शङ्करजी ने ऐसा कहा है। विभ्रमा साधन समाप्त।२।

अथ हंसीसाधनं किङ्किणीतन्त्रे।

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार हंसी साधन।

इसका ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

हंसीहंसहांनेंहींस्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानं : प्रवेशे नग्नगः स्थास्नुर्लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः। पद्मपत्रघृतोपेतमन्ते होमं दशांशतः। प्रयच्छत्यञ्जनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम्। शुद्धश्चेत्तं च गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते। इति हंसीसाधनम् ॥ ३ ॥

इसका विधान : मन्त्र साधन के आरम्भ में पवित्र हो नङ्गे खड़े रहकर मन्त्र का १ लाख जप करे। तदनन्तर घी पुते कमल के पत्रों से जप का दशांश होम करने से हंसी यक्षिणी एक अञ्जन देती है जिसे आँख में लगाने से साधक भूमि में गड़े खजाने को देखता है। शुद्ध होकर यदि साधक उसे लेता है तो विघ्नों से कभी पराजित नहीं होता। इति हंसी साधन ॥ ३ ॥

अथ भिक्षिणीसाधनं किङ्किणीतन्त्रे।

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार भिक्षिणी साधन।

इसका १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं महानादे भिक्षिणि हां ह्रीं स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानं : त्रिपथस्थो जपेन्मन्त्रं लक्षसंख्यं दशांशतः। घृताक्तगुग्गुलैर्होमो भिक्षिणो चिन्तितप्रदा।

(एक मन्त्रान्तर यह है : ॐ ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं ह्रूं स्वाहा)

इसका विधान : त्रिपथ (तिराहा, अर्थात् जहां से तीन ओर मार्ग गया हो) पर मन्त्र का १ लाख जप कर उसका दशांश घृत प्लुत गुग्गुल से होम भिक्षिणी को चिन्तितप्रदा कर देता है।

शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमन्त्रः :

शिवाचन्द्रिका में मन्त्र यह है :

ऐं महामदे भीषणे ह्रां ह्रूँ स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान पूर्ववत है । इति भिक्षिणी साधन ॥ ४ ॥

अथ जनरञ्जिनीसाधनम् ।

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लें जनरञ्जिनि स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम । कदम्बाधो जपेन्मन्त्रं लक्षद्वयं च साधकः । घृताक्त-गुग्गुलैर्होमं देवी सर्वार्थदा भवेत् । इति जनरञ्जिनीसाधनम् ॥ ५ ॥

इसका विधान : कदम्ब के वृक्ष के नीचे साधक मन्त्र का २ लाख जप करे । तदनन्तर घृताक्त गुग्गुल से अथवा घृत, मधु और शकर से युक्त गुग्गुल से दशांश होम द्वारा देवी सर्वाथ देती है । इति जनरञ्जिनी साधन ॥ ५ ॥

अथ विशाला साधनं मन्त्रमहोदधौ ।

महोदधि के अनुसार विशाला साधन ।

ॐ ऐं विशाले ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा । इति दशाक्षरो मन्त्रः ।

यह दशाक्षर मन्त्र है । किङ्किणी तन्त्रोक्त मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

अस्य विधानं : चिञ्चातरोरधः स्थित्वा शुचिर्लक्षं जपेन्मनुम् । शतपत्रैर्दशांशेन जुहुयात्तोषिता ततः । रसं ददाति येनासौ नीरोगायुरवाप्नुयात् ।

इसका विधान : इमली के वृक्ष के नीचे पवित्र हो बैठकर मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये । तदनन्तर शतपत्रों (कमलों) से जप का दशांश होम करने से देवी सन्तुष्ट होकर रसायन औषधि साधकों को देती है जिससे वह नीरोग होकर १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है ।

शिवार्चन चन्द्रिकोक्त मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं विशाले द्रां द्रूं क्लीं एह्येहि स्वाहा ।

अस्य : विधानं : चिञ्चावृक्षतलेमन्त्रैर्लक्षमावर्तयेच्छुचिः । विशाला वितरेत्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् । इति विशालासाधनम् ॥ ६ ॥

इसका विधान : इमली के वृक्ष के नीचे पवित्र होकर १ लाख जप करे । इससे विशाला सन्तुष्ट होकर दिव्य रस-रसायन देती है । इति विशाला साधन ॥ ६ ॥

अथ मदनासाधनं किङ्किणीतन्त्रे ।

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार मदना-साधन । मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मदने मदने देवि मामालिङ्गय सङ्गं देहिदेहि श्रीः स्वाहा । इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

यह २२ अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानं : लक्षसंख्यं जपेन्मन्त्रं राजद्वारे शुचिः स्मृतः । साक्षीरमालतीपुष्पैः कृते होमे दशांशतः । मदनायक्षिणी सिद्धा गुटिकां तं प्रयच्छति । तया मुखस्थया दृश्यश्चिरंस्याददृशो भवेत् । इति मदना-साधनम् ॥ ७ ॥

इसका विधान : पवित्र होकर राजद्वार पर मन्त्र का १ लाख जप करे । तदनन्तर दूध सहित मालती के पुष्पों से जप का दशांश होम करने से मदना यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को गुटिका देती है जिसे मुख में रखने से चिरकाल तक दृष्य होता हुआ साधक अदृष्य हो जाता है । इति मदना-साधन ॥ ७ ॥

अथ घण्टायक्षिणीसाधनम् । किङ्किणीतन्त्रे :

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार घण्टायक्षिणीसाधन ।

२२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं पुरं क्षोभय क्षोभय भगवति गम्भीरस्वरे क्लें स्वाहा । इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : सुघण्टां वादयेन्मन्त्री जपेन्मन्त्रायुतद्वयम् । ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः । इति घण्टायक्षिणीसाधनम् ॥ ८ ॥

इसका विधान : साधक उत्तम घण्टा बजाये तथा मन्त्र का २० हजार जप करे । इससे साधक सारे संसार को दर्शन मात्र से क्षुब्ध कर देता है । इति घण्टायक्षिणी साधन ॥ ८ ॥

अथ कालकर्णीसाधनं किङ्किणीतन्त्रे ।

किङ्किणी तन्त्र के अनुसार कालकर्णी साधन ।

ॐ ल्वें कालकर्णिके टः टः स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

अस्य विधानम् । लक्षसंख्यमनुं जाप्य पलाशमलजैर्घनैः । मधून्मत्तः कृतो होमः कालकर्णी प्रसीदति । सौम्यधरास्यवदनभोगस्तम्भकरी भवेत् । सततं तां स्मरेद्विद्यां विविधाश्चर्यकारिणीम् । इति कालकर्णी-साधनम् ॥ ६ ॥

इसका विधान : मन्त्र का १ लाख जप करके मधु से युक्त धतूरे, और मरुआ की समिधाओं से दशांश होम करने पर कालकर्णी प्रसन्न होती हैं तथा सौम्य मुख, योग और स्तम्भन करनेवाली होती है। इस विद्या को सदा स्मरण रखना चाहिये। यह विविध प्रकार का आश्चर्य करनेवाली है। इति कालकर्णी साधन ॥ ६ ॥

अथ महाभयासाधनं। प्राकृतग्रन्थे।

प्राकृत ग्रन्थ के अनुसार महाभया साधन। दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

एक दूसरे मत से उक्त मन्त्र के 'फट्' के स्थान पर 'क्लीं' का उच्चारण करना चाहिये।

अस्य विधानम् : नरास्थिनिर्मितां मालां गले पाणौ च कर्णयोः। धारयेज्जपमालां च तादृशीन्तु श्मशानतः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं साधयेन्निर्भयः सुधीः। ततो महाभया सिद्धा ददात्येव रसायनम्। तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत्। वलीपलितनिर्मुक्तश्चिरजीवो भवेन्नरः। किङ्किणीतन्त्रे। अस्थिमालाधरो लक्षं श्मशाने प्रजपेन्मनुम्। ततो महाभया सिद्धा यच्छत्यस्मै रसायनम्। तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत्। वलिभिः पलितैर्मुक्तो नरश्चारोग्यमाप्नुयात्। इति महाभयासाधनम् ॥ १० ॥

इसका विधान : श्मशान से मनुष्य के अस्थियों को लेकर माला बनाये और उसे गले, हाथ तथा दोनों कानों में धारण करे। जप माला भी इसी प्रकार की अस्थियों से बनाना चाहिये। सुधी साधक निर्भय होकर मन्त्र का एक लाख जप करके साधना करे। इससे महाभया सिद्ध होकर रसायन देती है। इस रसायन का भक्षण मात्र करने से साधक पर्वतों को भी चलायमान कर देता है और शरीर पर झुर्रियों तथा बाल पकने के दोषों से मुक्त होकर मनुष्य चिरजीवी होता है। किङ्किणी तन्त्र में भी कहा गया है कि 'मगुष्य की अस्थियों की माला धारण करके श्मशान में एक लाख मन्त्र का जप करने से महाभया सिद्ध होकर साधक को रसायन देती है जिसके भक्षण मात्र से वह पर्वतों को भी चलायमान् कर देता है। उस रसायन से मनुष्य वलीपलित से मुक्त होकर नीरोग हो जाता है। इति महाभया साधन ॥ १० ॥

अथ माहेन्द्रीसाधनम् प्राकृतग्रन्थे :

प्राकृत ग्रन्थ में १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलुकुलु चुलुचुलु हंसः स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

किङ्किणी तन्त्र का १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ माहेन्द्रि कुलुकुलु हंसः स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : शक्रचापोदये लक्षं निर्गुण्डीतलमध्यगः। जपेन्मन्त्रं ततस्तुष्टा देवी पातालसिद्धिदा। इति माहेन्द्रीसाधनम् ॥ ११ ॥

इसका विधान : इन्द्रधनुष के उदयकाल में निर्गुण्डी-वृक्ष के नीचे बैठकर मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये। इससे सन्तुष्ट होकर देवी पाताल तक से लाकर सिद्धियाँ प्रदान करती है। इति माहेन्द्री साधन ॥ ११ ॥

अथ शङ्खिनीसाधनम् :

किङ्किणी तन्त्र में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

प्राकृत ग्रन्थ का १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं श्रां स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : मन्त्रायुतं जपेन्मन्त्री प्रातः सूर्योदये सति। मासमेकं जपेदेवं पूजां कुर्याद्दिनेदिने। शुद्धसंलिप्तपट्टे तु शुभ्रपुष्पैः सपायसैः। दशांशं होमयेत्साज्यैरिन्धनैः करवीरकैः। ददाति शङ्खिनी तुष्टा नित्यं रूप्यकपञ्चकम्। इति शङ्खिनीसाधनम् ॥ १२ ॥

इसका विधान : प्रातःकाल सूर्योदय होने पर साधक मन्त्र का १० हजार जप करे। इस प्रकार एक मास तक जप करते हुये शुद्ध लिपे हुये पट्ट पर मूर्ति बनाकर नित्य सफेद पुष्पों और खीर से पूजा करे। जप का दशांश घृतप्लुत कनेर की समिधाओं से होम करे। इससे प्रसन्न होकर शङ्खिनी नित्य पाँच रुपये देती है। इति शङ्खिनीं साधन ॥ १२ ॥

अथ चान्द्री (चन्द्रिका) यक्षणीसाधनम् : प्राकृतग्रन्थे।

प्राकृत ग्रन्थ में नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

एक भिन्न मत से दशाक्षर मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावद्दृश्येत चन्द्रमाः। प्रतिपत्पूर्व-

पूर्णान्तं तावल्लक्षमिमं जपेत् । अमृतं चन्द्रिका दत्ते पीत्वा यदमरो भवेत् । इति चन्द्रिकासाधनम् ॥ १३ ॥

इसका विधान : शुक्ल पक्ष में तब तक जप करना चाहिये जब तक चन्द्रमा दिखाई दे । प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा पर्यन्त मन्त्र का १ लाख जप करे । इससे चन्द्रिका अमृत देती है जिसका पान कर मनुष्य अमर हो जाता है । इति चन्द्रिकासाधन ॥ १३ ॥

अथ श्मशानीसाधनम् : किङ्किणीतन्त्रे :

पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हूँ ह्रीं स्फूं श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा । इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : चतुर्लक्षमितं मन्त्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः । नग्नो यत्तस्तदा तुष्टा पटं यच्छति यक्षिणी । तेनोद्यतो नरो देवि विचरेद्वसुधातले । निश्चयेनानुगृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते । इति श्मशानीसाधनम् ।

इसका विधान : पवित्र होकर साधक श्मशान में नङ्गा और जितेन्द्रिय होकर मन्त्र का चार लाख जप करे । इससे यह यक्षिणी सन्तुष्ट होकर वस्त्र देती है । हे देवि ! उस वस्त्र को धारण कर मनुष्य पृथिवी पर अदृश्य होकर विचरण करता है । वह निश्चय ही अनुग्रह करती है जिससे साधक विघ्नों से पराजित नहीं होता ॥ १४ ॥

अथ वटयक्षिणीसाधनम् ।

मन्त्र महोदधि में ३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा । इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य यक्षणीमन्त्रस्य विश्रवाऋषिरनुष्टुप्छन्दः यक्षणीदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ विश्रवा ऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । यक्षिणीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : एह्येहि अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । यक्षि यक्षि तर्जनीभ्यां नमः २ । महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः ३ । वटवृक्षनिवासिनि अनामिकाभ्यां नमः ४ । शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । कुरु कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : एह्येहि हृदयाय नमः १। यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा २। महायक्षि शिखायै वषट् ३। वटवृक्षनिवासिनि कवचाय हुम् ४। शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय बौषट् ५। कुरु कुरु स्वाहाऽस्त्राय फट् ६। इति हृदयादि षडङ्गन्यास।

मन्त्रवर्ण न्यास : ॐ ऐं नमः मस्तके १। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे २। ॐ ह्रिं नमः वामनेत्रे ३। ॐ यं नमः वक्त्रे ४। ॐ क्षिं नमः दक्षिणनासापुटे ५। ॐ यं नमः वामनासापुटे ६। ॐ क्षिं नमः दक्षकर्णे ७। ॐ मं नमः वामकर्णे ८। ॐ हां नमः दक्षस्तने ९। ॐ यं नमः वामस्तने १०। ॐ क्षि नमः वक्षस्थले ११। ॐ वं नमः दक्षिणपार्श्वे १२। ॐ टं नमः वामपार्श्वे १३। ॐ वृं नमः हृदि १४। ॐ क्षं नमः उदरे १५। ॐ निं नमः नाभौ १६। ॐ वां नमः ललाटे १७। ॐ सिं नमः भ्रुवोः १८। ॐ निं नमः दक्षकट्याम् १९। ॐ शीं नमः वामकट्याम् २०। ॐ घ्रं नमः दक्षोरौ २१। ॐ में नमः वामोरौ २२। ॐ सं नमः नाभौ २३। ॐ वें नमः दक्षिणजङ्घायाम् २४। ॐ सौं नमः वामजङ्घायाम् २५। ॐ ख्यं नमः दक्षजानुनि २६। ॐ कुं नमः वामजानुनि २७। ॐ रुं नमः दक्षमणिबन्धे २८। ॐ कुं नमः वाममणिबन्धे २९। ॐ रुं नमः दक्षिणकरे ३०। ॐ स्वां नमः वामकरे ३१। ॐ हां नमः मूर्ध्नि ३ । इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

ॐ अरुणचन्दनवस्त्रविभूषितां सजलतोयदतुल्यतनूरुहाम्। स्मरकुरङ्गदृशं वटयक्षिणीं क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ॥ १ ॥

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पूर्वादिक्रम से नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ कामदायै नमः १। ॐ मानदायै नमः २। ॐ नक्तायै नमः ३। ॐ मधुरायै नमः ४। ॐ मधुराननायै नमः ५। ॐ नर्मदायै नमः ६। ॐ भोगदायै नमः ७। ॐ नन्दायै नमः ८। मध्ये ॐ प्राणदायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक 'ॐ मनोहरा यक्षिणी योगपीठाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठमध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि क्रम से :

अग्निकोणे एह्येहि हृदयाय नमः[1] । हृदयश्रीपादुकां पजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । निर्ऋति० यक्षियक्षि शिरसे स्वाहा[2] शिरःश्रीपा० २ । वायव्ये महायक्षि शिखायै वषट्[3] शिखाश्रीपा० ३ । ईशान्ये वटवृक्ष निवासिनि कवचाय[4] हुं कवचश्रीपा० ४ । पश्चिमे शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] नेत्रश्रीपा० ५ । पूर्वे कुरुकुरु स्वाहा अस्त्राय फट्[6] अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद अष्टदलों में पूज्य-पूजक के मध्य में प्राची की कल्पना करके वामावर्त :

ॐ सुनन्दायै नमः[7] । सुनन्दाश्रीपा० १ । ॐ चन्द्रिकायै नमः[8] । चन्द्रिकाश्रीपा० २ । ॐ हासायै नमः[9] । हासाश्रीपा० ३ । ॐ सुलापायै नमः[10] । सुलापा० ४ । ॐ मद विह्वलायै नमः[11] । मदविह्वलाश्रीपा० ५ । ॐ आमोदायै नमः[12] । आमोदाश्रीपा० ६ । ॐ प्रमोदायै नमः[13] । प्रमोदाश्रीपा० ७ । ॐ वसुदायै नमः[14] । वसुदाश्रीपा० ८ ।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद भूपुर में पूर्वादि, क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[15] १ । ॐ रं अग्नये नमः[16] २ । ॐ मं यमाय नम.[17] ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[18] ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[19] ५ । ॐ यं वायवे नमः[20] ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[21] ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[22] ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[23] ९ । वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[24] १० ।

इससे दशदिक्पालों की पूजाकरे । फिर उसके बाहर दिक्पालों के समीप ही :

ॐ वं वज्राय नमः[25] १ । ॐ शं शक्तये नमः[26] २ । ॐ दं दण्डाय नमः[27] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[28] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[29] ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[30] ६ । ॐ गं गदायै तमः[31] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[32] ८ । ॐ पं पद्माय नमः[33] ९ । ॐ चं चक्राय नमः[34] १० ।

इसमे अस्त्रों की पूजा करे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः । बन्धूकपुष्पैर्दशांशतो होमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री वटाधः प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् । तदा सप्तदिनान्तरे सिद्धा भवति । मनोवांछितं ददाति । तथा च : लक्षद्वयं जपेन्मन्त्रं बन्धूकैस्तद्दशांशतः । एवमाराधितो मन्त्रः प्रयोगेषु क्षमो भवेत् । निर्मनुष्ये वने गत्वा न्यग्रोधाधस्तले जपेत् । प्रतिद्यस्रं तमस्विन्यां सहस्रं नियतेन्द्रियः । सप्तमे दिवसे प्राप्ते कृत्वा चन्दनमण्डलम् । तत्राज्य-

दीपं कृत्वाऽस्मिन् पूजयेद्वटयक्षिणीम् । तदग्रे प्रजपेन्मन्त्रं मनसीत्थं समाहितः । शृणोति नूपुरारावं मन्त्री गीतध्वनिं ततः । श्रुत्वैव प्रजपेन्मन्त्रं वीतत्रासश्च तां स्मरेत् । ततः प्रत्यक्षतो देवीमीक्षते सुरतार्थिनीम् । तत्कामपूरणात्सा तु ददातीष्टानि मन्त्रिणे । किंबहूक्तेन सर्वेष्टपूरणी वटयक्षिणी ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण दो लाख जप है । बन्धूक पुष्पों से जप का दशांश होम करना चाहिये । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक वट के नीचे प्रतिदिन एक सहस्र जप करे । तब सात दिन बाद यक्षिणी सिद्ध होती है और मनोवाञ्छित फल देती है । कहा भी गया है कि मन्त्र का दो लाख जप और उसका दशांश बन्धूक पुष्पों से होम करना चाहिये । इस प्रकार आराधित मन्त्र प्रयोगों में सक्षम हो जाता है । विजन वन में जाकर बट (बरगद) के नीचे जितेन्द्रिय होकर बैठे और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन से जप प्रारम्भ करे । सातवाँ दिन आने पर चन्दन से मण्डल बनावे, वहाँ घी का दीपक जलाकर उसमें वट यक्षिणी का पूजन करे । उसके आगे समाहित होकर मन में इस प्रकार जप करे तब साधक नूपुर की ध्वनि सुनता है । उसके बाद वह गीत की ध्वनि सुनता है । यह सुनकर भी भयरहित होकर मन्त्र को जपे और उस यक्षिणी का स्मरण करे । इसके बाद साधक प्रत्यक्ष सुरत चाहनेवाली उस यक्षिणी को देखता है । उसकी कामपूर्ति से वह साधक को अभीष्ट फल देती है । अधिक कहने से क्या लाभ, बट यक्षिणी समस्त अभीष्टों को प्रदान करनेवाली है ।

अन्यः शिवार्चनचन्द्रिकोक्तमन्त्रः ।

ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ।

किङ्किणीतन्त्रोक्तमन्त्रः ।

ॐ वटवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि एह्येहि स्वाहा ।

अस्य विधानम् : त्रिपथस्थो वटाधःस्थो रात्रौ मन्त्रं जपेत्सदा । लक्षत्रयं तदा सिद्धा स्याद्देवी वटयक्षिणी । वस्त्रालङ्करणे दिव्ये सिद्धि रसरसायनम् । दिव्याञ्जनञ्च सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति । इति वटयक्षिणीसाधनम् ॥ १५ ॥

इसका विधान : त्रिपथ (तिराहे) पर बट के नीचे बैठकर रात में सदा मन्त्र का तीन लाख जप करने से बट यक्षिणी देवी सिद्ध होती है और

प्रसन्न होकर वह दिव्य वस्त्र, अलङ्कार, सिद्ध रस-रसायन तथा दिव्य अञ्जन देती है। इति वट यक्षिणी साधन ॥ १५ ॥

अथ मेखलासाधनं।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा।

इसका पूजादिक सब विधान वट यक्षिणी के समान ही जानना चाहिये।

अस्य विधानम् : चतुर्दशाहपर्यन्तं मधूकाधस्तले शुभे। प्रजपेदयुतं नित्यं सहस्रं हवनं चरेत्। मधूकपुष्पैर्मध्वक्तैस्तत्काष्ठैश्च हुताशने। सन्तुष्टेवं कृते देवी प्रयच्छेदञ्जनं शुभम्। येनाक्तनेत्रो मन्त्री वै निधिं पश्येद्धरागतम्।

इसका विधान : चौदह दिन तक शुभ महुवे के वृक्ष के नीचे मन्त्र का नित्य दश हजार जप करे। महुवे की ही समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में मधु से सिक्त महुआ के फूलों से होम करे। इससे मदन मेखला यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को शुभ अञ्जन देती है जिसे आँखों में लगा लेने से साधक भूमि में गड़ी निधियों को देखता है।

किङ्किणी तन्त्रोक्त मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं मदनमेखले नमः स्वाहा।

अस्य विधानम् : मधुवृक्षतले मन्त्रं चतुर्दशदिनावधि। प्रजपेन्मेखलातुष्टा ददात्यञ्जनमुत्तमम्। इति मेखलासाधनम् ॥ १६ ॥

इसका विधान : महुवे वृक्ष के नीचे बैठकर चौदह दिन तक मन्त्र का जप करने से सन्तुष्ट होकर मदनमेखला यक्षिणी उत्तम अञ्जन देती है। इति मेखला साधन ॥ १६ ॥

अथ विकलासाधनम्।

प्राकृत ग्रन्थ में १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लें स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : निजगहे त्रिमासमध्ये लक्षं जपेत् करवीर पुष्पैर्दशांशतो होमः अथवा सुराधान्यतो होमः सिद्धिं ददाति।

इसका विधान : अपने घर में तीन महीने में एक लाख मन्त्र का जप जप करे। जप का दशांश कनेर के फूलों से होम करे। अथवा सुरा और अन्न से होम करे। इससे यक्षिणी सिद्धि देती है।

किङ्किणीतन्त्रोक्तमन्त्रः।

ॐ विकले ऐं द्रीं श्रीं क्लें स्वाहा।

अस्य विधानम् : मासत्रयमध्ये लक्षं जपेत् सिद्धाभवति मनोवांछितं च ददाति। इति विकलासाधनम् ॥ १७ ॥

इसका विधान : तीन मास में मन्त्र का एक लाख जप करने से देवी मनोवाञ्छित फल देती है। इति विकला साधन ॥ १७ ॥

अथ लक्ष्मीसाधनं।

दत्तात्रेय तन्त्र में १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : वटवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। महालक्ष्मी-यंक्षिणी च स्थिरा लक्ष्मीश्च जायते। अयुतं जपेत् सिद्धिः।

इसका विधान : वटवृक्ष पर चढ़कर एकाग्रचित्त हो जप करने से यह लक्ष्मी यक्षिणी और लक्ष्मी स्थिर हो जाती है। दश हजार जपने से सिद्धि प्राप्त होती है।

दूसरे तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं लक्ष्मीं वं श्रीं कमलधारिणि हंसः स्वाहा।

अस्य विधानम् : लक्षं जपेत् करवीरपुष्पदशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति रसायनं ददाति। इति लक्ष्मीसाधनम् ॥ १८ ॥

इसका विधान : एक लाख जप और जप का दशांश कनेर के फूलों से होम करना चाहिये। इससे लक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न होकर रसायन देती है। इति लक्ष्मीसाधन ॥ १८ ॥

अथ मानिनीसाधनं।

किङ्किणी तन्त्र में २४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं मानिनि ह्रीं एह्येहि सुन्दरि हसहसमिह सङ्गमहः स्वाहा। इति चतुर्विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : चतुष्पथे स्थितो लक्षं सपादं प्रजपेदणु। उवाहु-कुसुमैरक्तैर्होमयेद्घृतमिश्रितैः। मानिनी जायते सिद्धा दिव्यखङ्गं प्रयच्छति। तत्प्रभावेन लोकेऽस्मिन्नखण्डं राज्यमाप्नुयात्। इति मानिनी-साधनम् ॥ १९ ॥

इसका विधान : चौराहे पर बैठकर मन्त्र का सवा लाख जप और घृतमिश्रित लाल कमलों का होम करने से मानिनी यक्षिणी सिद्ध होती है और दिव्य खङ्ग देती है। उस खङ्ग के प्रभाव से साधक अखण्ड राज्य प्राप्त करता है। इति मानिनी साधन ॥ १९ ॥

अथ शतपत्रिकासाधनम् ।

किङ्किणी तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्लां शतपत्रिके ह्लां ह्लीं श्रीं स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : शतपत्रवनान्तस्थो लक्षसंख्यं जपेन्मनुम् । क्षीराज्यं होमयेद्यस्तु रससिद्धि च भूनिधीन् ।

इसका विधान : शतपत्र (कमल) के वन में बैठकर मन्त्र का एक लाख जप और घी-दूध का होम करने से साधक रससिद्धि तथा भूमि में गड़ा खजाना प्राप्त करता है ।

कमलवने सेवतीवने वा लक्षं जपेत् । यवघृतदशांशतो होमः । तदा सिद्धा भवति दिव्यरसायनं च ददाति । इति शतपत्रिकासाधनम् ॥२०॥

दूसरे तन्त्र के अनुसार कमल के वन में या सेवती (गुलाब) के वन में एक लाख मन्त्र का जप करे और यव-घृत से जप का दशांश होम करे । इससे शतपत्रिका यक्षिणी सिद्ध होती है तथा दिव्य रसायन देती है । इति शतपत्रिका साधन ॥ २० ॥

अथ सुलोचनासाधनम् ।

किङ्किणी तन्त्र में ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लौं सुलोचनादिदेवि स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : नदीतीरे स्थितो लक्षत्रयं मन्त्रं जपेदनु । घृतहोमे दशांशेन हुते देवी प्रसीदति । ददाति पादुकायुग्मं पदारूढो भुवस्तलम् । मनःपवनवेगेन याति चायाति वेगवत् । इति सुलोचनासाधनम् ॥२१॥

इसका विधान : नदी के किनारे बैठकर मन्त्र का ३ लाख जप और उसका दशांश घी से होम करने पर देवी प्रसन्न होकर साधक को एक जोड़ा पादुका (खड़ाऊँ) देती है जिससे साधक सारे भूमण्डल पर मनोवेग से गमनागमन कर सकता है । इति सुलोचना साधन ॥ २१ ॥

अथ सुशोभनासाधनम् ।

किङ्किणी तन्त्र में २२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभने देवि श्रीं क्षः स्वाहा । इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रक्तमाल्याम्बरो मन्त्री चतुर्दशदिनं जपेत् । ततः सिद्धिर्भवेद्देवि शोभना भोगदायिनी । इति शोभनासाधनम् ॥ २२ ॥

इसका विधान : लालवस्त्र तथा लालमाला पहनकर साधक चौदह

दिन तक जप करे। इससे सिद्धि मिलती है और शोभना देवी भोगों को प्रदान करती है। इति शोभना साधन ॥ २२ ॥

अथ कपालिनीसाधनम्।

किङ्किणी तन्त्र में २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लें क्लों हससकल ह्रीं फट् स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : महाव्रतधरो नित्यं कपालौदनभोजनः। लक्षद्वय-जपस्यान्ते कपालं लभते मुनिः। आकाशगमनं दूराच्छ्रवणं रूपवर्तनम्। दूरदर्शनमित्यादि साधकस्य प्रजायते।

इसका विधान : साधक नित्य महाव्रत को धारण करनेवाला होकर खोपड़ी में भात का भोजन करे। मन्त्र के दो लाख जप के बाद उसे कपाल मिलता जिससे आकाश गमन, दूरश्रवण, रूपपरिवर्तन, दूरदर्शन इत्यादि सिद्धियाँ साधक को प्राप्त होती हैं।

एक दूसरा मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं ह्रां कालि करालिनि ह्रौं क्षां क्षीं क्षौं फट्।

अस्य विधानम् : श्मशाने प्रतिदिनमष्टोत्तरशतं जपेत्। अजामांस-रक्तपुष्पेण बलिं दत्वा एवं कृते सप्तदिनान्तरे कपालिनी सिद्धा भवति मनोवांछितपदार्थं च ददाति। अग्निगुरुब्राह्मणेषु च व्ययं कृत्वा यदि पृथिवीं निखनेत् तदा रुष्टा भवति कदापि न ददाति। इति कपालिनी-साधनम् ॥ २३ ॥

इसका विधान : श्मशान में प्रतिदिन बकरे के मांस तथा लाल फूल से बलि देकर मन्त्र का १०८ बार जप करे। ऐसा करने से सात दिन के बाद कपालिनी यक्षिणी सिद्ध होती है और मनोवाञ्छित पदार्थ देती है। अग्नि, गुरु तथा ब्राह्मणों के निमित्त व्यय करने के बाद यदि पृथिवी को खोदे तो वह रुष्ट होती है और कभी कुछ नहीं देती। इति कपालिनी साधन ॥ २३ ॥

अथ विलासिनीसाधनम्।

किङ्किणी तन्त्र में २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विरूपाक्षविलासिनि आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लें स्वाहा। इत्यष्टविंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : सरस्तीरे जपेन्मन्त्रमर्द्धलक्षप्रमाणतः। घृतं च गुग्गुलैर्होमैर्देवी सौभाग्यदायिनी। इति विलासिनी साधनम् ॥ २४ ॥

इसका विधान : किसी सरोवर के तट पर मन्त्र का ५० हजार जप करने और घी तथा गुग्गुल के होम से देवी सौभाग्यदायनी होती है। इति विलासिनी साधन ॥ २४ ॥

अथ नटीसाधनम् ।

भूतडामर में सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा । इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : ततो वक्ष्ये महाविद्यां विश्वामित्रेण धीमता । ज्ञाता या साधिता विद्या बला चातिबला प्रिये । अशोकतलं गत्वा चन्दनेन सुमण्डलं कृत्वा मध्ये मूलं विलिख्य मूलेन देवीं समभ्यर्च्य धूपं च दत्वा ध्यायेत् ।

इसका विधान : हे प्रिये ! उसके बाद मैं महाविद्या का उपदेश दूँगा जिसे धीमान् विश्वामित्र ने जाना और सिद्ध किया था। इसे बला तथा अतिबला विद्या कहते हैं। अशोक के नीचे जाकर चन्दन से मण्डल बनाये और उसके मध्य में मूलमन्त्र लिखकर उससे देवी की पूजा करे। फिर धूप देकर इस प्रकार ध्यान करे :

ॐ त्रैलोक्यमोहिनीं गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम् । विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ।

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रं च दिनेदिने । मासान्ते दिवसं प्राप्य कुर्यात्तस्याश्च पूजनम् । अर्द्धरात्रे भयं दत्वा किञ्चित्साधकसत्तमे । सुदृढं साधकं ज्ञात्वा याति सा साधकालयम् । विद्याभिः सकलाभिश्च किञ्चित्स्मेरमुखी ततः । वरं वरय शीघ्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते । तच्छ्रुत्वा साधकश्रेष्ठो भावयेन्मनसा धिया । मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा प्रीतिभावतः । कृत्वा सन्तोषयेद्भक्त्या नटिनी तत्करोत्यलम् । माता स्याद्यदि सा देवी पुत्रवत्पालयेन्मुदा । स्वर्णशतं सिद्धिद्रव्यं ददाति सा दिनेदिने । अतीतानागतां वार्तां सर्वां जानाति साधकः । भार्या स्याद्यदि सा देवी ददाति विपुलं धनम् । अनाद्यैरुपहारैश्च ददाति कामभोजनम् । स्वर्णशतं सदा तस्मै सा ददाति ध्रुवं प्रिये । यद्यद्वांछति सर्वं च ददाति नात्र संशयः ।

इस प्रकार ध्यान करके प्रतिदिन मन्त्र का एक सहस्र जप और मास के अन्तिम दिन उस देवी का पूजन करना चाहिये। अर्धरात्रि को उस साधक को देवी कुछ भय देकर परीक्षा लेती है। जब उसे ज्ञात हो जाता है कि साधक सुदृढ है तब वह साधक के घर चली जाती है और समस्त विद्याओं

से युक्त वह किञ्चित मुस्कराहट के साथ कहती है कि 'जो तुम्हारे मन में हो वह वर माँग लो।' श्रेष्ठ साधक इसे सुनकर यदि मन में प्रेमभावना से माता, बहन या पत्नी की भावना कर भक्ति से उसे सन्तुष्ट करे तो नटिनी साधक की इच्छा के अनुरूप कार्य करती है। यदि माता के रूप में देवी की भावना की जाय तो वह प्रसन्नतापूर्वक पुत्रवत पालन करती हुई प्रतिदिन सौ स्वर्ण मुद्रायें तथा सिद्धिद्रव्य देती है। उससे साधक अतीत और अनागत सभी बातें जानता है। हे प्रिये! यदि यह देवी पत्नी होती है तो विपुल धन देती है। अन्नादि के उपहारों के साथ इच्छित भोजन प्रदान करती है और निश्चित रूप से साधक को सौ स्वर्ण मुद्रायें प्रतिदिन देती है। साथ ही साधक अन्य जो कुछ चाहता है उसे भी निश्चित रूप से देती है।

किङ्किणी तन्त्रोक्त १५ अक्षरों का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्: पूर्णाशोकतले गत्वा चन्दनेन सुमण्डलम्। कृत्वा देवीं समभ्यर्च्य धूपं दत्त्वा सहस्रकम्। मन्त्रमावर्तयेन्मासं सनक्तं भोजनं ततः। रात्रौ पूजा शुभा कार्या जपेन्मन्त्रं निशार्द्धके। नटी देवी समागत्य निधानं रसमञ्जनम्। ददाति मन्त्रिणे मन्त्रदिव्ययोगेन निश्चितम्।

इसका विधान: पूर्णिमा के दिन अशोक वृक्ष के नीचे जाकर चन्दन से मण्डल बनाकर देवी की पूजा करे और धूप देकर मन्त्र का एक सहस्र जप करे। यह जप एक मास तक करना चाहिये। रात में ही भोजन तथा शुभ पूजन करना चाहिये। अर्धरात्रि को चन्दन की माला से जप करे, तब नटी देवी आकर मन्त्र के दिव्य योग से साधक को 'निधान रस' नामक अञ्जन निश्चित रूप से देती है।

सिद्ध भाण्डागार में एक अन्य नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्: कुंकुमेन भूर्जपत्रे मण्डलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमन्त्रं विलिख्य गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना सम्पूज्य त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रं जपेत्। मासमेकं यावत् ततः पौर्णमास्यां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं प्रज्वालयेत् सकलरात्रिपर्यन्तं जपेत्। प्रभाते नियतसमये आगच्छति। सुन्दरम् आभूषणं ददाति नृत्यं करोति। इति नटीसाधनम् ॥ २५ ॥

इसका विधान: कुंकुम से भोजपत्र पर मण्डल बनाकर उसके बीच मूलमन्त्र लिखकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप और दीपादि से विधिपूर्वक पूजा

करके तीनों सन्ध्याओं में तीन सहस्र जप महीने भर करे। इसके बाद पूर्णमासी के दिन विधिवत् पूजा करनी चाहिये और घी का दीपक जलाना चाहिये। पूरी रात जप करना चाहिये। प्रातःकाल नियत समय में वह देवी आकर सुन्दर आभूषण देती है और नृत्य करती है। इति नटीसाधन।२५।

अथ कामेश्वरीसाधनम्।

भूतडामर तन्त्र में दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अथ ध्यानम् : कामेश्वरीं शशांकास्यां खेलत्खञ्जनलोचनाम्। मदालोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्रशिलीमुखाम्।

एवं ध्यात्वा भूर्जपत्रे गोरोचनया प्रतिमां विलिख्य तां देवीं पूजयेत्। घृतदीपं दत्त्वा शय्यामारुह्य एकाकी सहस्रं जपेत्। मासान्ते वा पूजयेत्। ततोर्द्धरात्रे नियतमागच्छति। आज्ञां देहीति भाषते। साधकस्य भार्या भवति। प्रतिदिनं शयने दिव्यालंकारं परित्यज्य गच्छति। परस्त्री परिवर्जनीया।

इस प्रकार ध्यान करके भोजपत्र पर गोरोचन से प्रतिमा बनाकर उस देवी की पूजा करे और घी का दीपक चढ़ाकर शय्या पर आकर अकेले ही एक सहस्र मन्त्र जप करे। महीने के अन्त में फिर पूजा करे। तब अर्धरात्रि के समय निश्चित रूप से आकर देवी कहती है कि 'आज्ञा दो' वह साधक की पत्नी हो जाती है और प्रतिदिन शय्या पर दिव्य अलङ्कारों को छोड़कर चली जाती है। इसमें परस्त्री से संसर्ग वर्जित है।

किङ्किणी तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरि स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : एकासने शुचौ देशे त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रकम्। मासमेकं जपेन्मन्त्रं तदन्तेऽर्चां समाचरेत्। पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः। रात्र्यामभ्यर्च्य तं मन्त्रं जपेन्मन्त्री प्रसन्नधीः। अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति। रसं रसायनं वित्तं वस्त्रालङ्करणानि च। स्त्रीभावे च यदा तस्यै दद्यात्पाद्यादिकं ततः। सुप्रसन्ना तदा देवी साधकं तोषयेत्सदा। अन्नाद्यै रतिभोगेन पतिवत्पालयेत्सदा। नीत्वा रात्रिं सुखैश्वर्यं दद्याच्च विपुलं धनम्। दत्त्वाऽलङ्कारदिव्यादीन्प्रभाते याति निश्चितम्। एवं प्रतिदिनं तस्य सिद्धिः स्यात्कामरूपिणः। इति कामेश्वरीसाधनम्।२६

इसका विधान : पवित्र देश में एक आसन पर बैठकर तीनों सन्ध्याओं में मन्त्र का तीन हजार जप करे। यह जप एक मास तक करे और मास के

अन्त में पुष्प, धूप, नैवेद्य तथा घी से पूर्ण दीपक से पूजा करे। रात में पूजा करके साधक 'तं' मन्त्र का जप करे। आधी रात व्यतीत होने पर देवी आकर रस-रसायन, धन, वस्त्र तथा अलङ्कार देती है। स्त्री के भाव से पूजा करने की दशा में पाद्यादि समर्पित करना चाहिये। इससे प्रसन्न होकर देवी साधक को सदा प्रसन्न रखती है और अन्नादि तथा रतिभोग से सदा पति के समान साधक का पालन करती है। रात में सुख-ऐश्वर्य प्रदान करते हुये विपुल धन देती है। प्रातः दिव्य अलङ्कारादि को निश्चित रूप से देकर जाती है। इस प्रकार उस कामरूपी देवी से साधक को प्रतिदिन सिद्धि प्राप्त होती है। इति कामेश्वरी साधन ॥ २६ ॥

अथ स्वर्णरेखासाधनम्।

उड्डीश तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वर्कंशल्मिलेसुवर्णरेखे स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : एकलिङ्गं समभ्यर्च्य खण्डकेनातिभाविता। पूर्वसन्ध्यां समारभ्य कृष्णादि सुमतिर्जपेत्। सहस्राष्टमितं मासं तदन्ते निशि भोजनम्। जपन्तं च पुनर्मन्त्रमर्द्धरात्रे प्रयच्छति। दिव्यालङ्करणं देवि निधानं निजमुत्तमम्। षण्मासं पूजिता दिव्यदेहं तस्य करोति सा। इति स्वर्णरखासाधनम् ॥ २७ ॥

इसका विधान : एकलिङ्ग महादेव के सम्मुख पूजन करके कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से प्रातःकाल मन्त्र का नित्य ८ हजार जप करे। फिर रात में भोजन करके अर्धरात्रि में जप करे। एक मास के बाद पुनः १५ दिन तक आधी रात को मन्त्र का जप करने से देवी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि में आकर द्रव्य और अलङ्कारादि प्रदान करती है। छः मास तक पूजन करने से दिव्य देह प्रदान करती है। इति स्वर्णरेखा साधन ॥ २७ ॥

अथ सुरसुन्दरीसाधनम्।

भूतडामरतन्त्रे : उन्मत्तभैरव उवाच। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीसाधनोत्तमम्। सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम्। अतिगुह्यं महाविद्या देवानामपि दुर्लभा। मासमभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशो भूधनाधिपः। तासामाद्य प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरि प्रिये। अस्या अभ्यर्चने चैव राजत्वं लभते नरः।

भूतडामर तन्त्र के अनुसार : उन्मत्त भैरव बोले : अब मैं उत्तम यक्षिणी साधन कहूंगा जो सभी अर्थों का साधन और प्राणियों को समस्त सिद्धियाँ प्रदान करनेवाला है। यह अत्यन्त गुह्य महाविद्या देवों के लिये भी दुर्लभ है। एक

मास तक इसकी साधना करके मनुष्य कुबेर और पृथिवी का राजा बन जाता है। हे सुन्दरि ! हे प्रिये ! यहाँ मैं पहले सरसुन्दरी का वर्णन करूँगा जिसकी पूजा करने से मनुष्य राजत्व प्राप्त करता है। इसका ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : प्रातः समुत्थाय स्नानादिकं समाप्य आचम्य। ॐ सहस्रार हुं फट्। इति दिग्बन्धनं कृत्वा मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मन्त्रेण षडङ्गं कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इसका विधान : प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर आचमन करने के पश्चात् 'ॐ सहस्रार हुं फट्' इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे। फिर मूल-मन्त्र से तीन प्राणायाम करके मन्त्र से षडङ्गन्यास करे। उसमें क्रम यह है :

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १। आगच्छ शिरसे स्वाहा २। सुर शिखायै वषट् ३। सुन्दरि कवचाय हुं ४। स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ आगच्छसुरसुन्दरि स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इदि हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम्।

इति ध्यात्वा मूलेन पाद्यादिकं शुभं दद्यात्। पुनर्धूपं तथा दीपं नैवेद्यं मूलमन्त्रतः। गन्धचन्दनताम्बूलं कर्पूररसशोभितम्। यतस्तु पूजयेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यं च दिनेदिने। सहस्रैकप्रमाणेन ध्यायेद्देवीं सदा बुधः। मासान्ते दिवसं प्राप्य बलिपूजां सुशोभनाम्। कृत्वा च प्रजपेन्नित्यं निशोथे याति सुन्दरी। सुदृढं साधकं मत्वा याति सा साधकालये। सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः। दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम्। सचन्दनं सुमनसो दत्त्वाभिलषितं वदेत्। मातरं भगिनीं वापि भार्यां वा भक्तिभावतः। यदि माता तदा वित्तं द्रव्यं च सुमनोहरम्। भूपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिनेदिने। पुत्रवत्पालितं लोके सत्यंसत्यं सुनिश्चितम्। स्वसा ददाति वित्तं च दिव्यं वस्तु तथैव च। दिव्यकन्यां समानीय नागकन्यां दिनेदिने। भ्रातृवत्पालितं लोके नामभिस्तु मनोगतैः। भार्या स्याद्यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा। राजेन्द्रं सर्वराज्ञा तु संसारे साधकोत्तमः। स्वर्गलोके च पाताले गतिर्भवति नान्यथा। यद्यद्ददाति सा देवि कथितुं नैव शक्यते। तया सार्द्धं च सम्भोगं यदि दैवात्करोति सः। अन्यस्त्रीगमनं त्यक्त्वा चान्यथा नश्यति ध्रुवम्।

इससे ध्यान करके मूलमन्त्र से शुभ पाद्यादि देवे। पुनः मूलमन्त्र से धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, कपूर और रस से शोभित ताम्बूल देवे। इस प्रकार प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में मन्त्र से पूजा करनी चाहिये। बुद्धिमान साधक एक सहस्र प्रमाण देवी का ध्यान करे। मास के अन्तिम दिन उत्तम बलि और पूजन के बाद नित्य जप करने से रात्रि में सुन्दरी आती है। साधक को सुदृढ़ जानकर वह साधक के घर जाती है और प्रसन्नचित्त सदा मुस्कराती हुई साधक के सम्मुख उपस्थित होती है। श्रेष्ठ साधक को चाहिये कि देवी को देखकर शुभ पाद्यादि और चन्दन सहित पुष्प समर्पित करके अपना अभीष्ट कहे। उस देवी के प्रति साधक को माता, भगिनी या पत्नी की भक्ति भावना रखनी चाहिये। यदि मातारूप की भावना है तो देवी धन, उत्तम, द्रव्य, राजत्व तथा साधक जो कुछ माँगता है वह सब प्रतिदिन देती है, तथा पुत्र की भाँति पालन करती है—मैं यह सत्य कहता हूं और यह सुनिश्चित है। यदि उसमें साधक बहन की भावना रखता है तो वह धन तथा दिव्य वस्तु देती है और प्रतिदिन एक दिव्य कन्या अथवा नागकन्या को लाकर देती है। साथ ही, भाई के समान पालन करती। साधक मन में जो भी भावना लायेगा उसी के अनुसार फल पायेगा। यदि देवी साधक की मनोहर पत्नी होती है तो वह श्रेष्ठ साधक संसार में श्रेष्ठ राजा हो जाता है। उसकी गति स्वर्ग और पाताल तक हो जाती है—यह असत्य नहीं है। यदि साधक अन्य स्त्रीगमन छोड़कर दैवात उसके साथ सम्भोग करता है तो वह जो कुछ देती है उसका वर्णन सम्भव नहीं है। अन्य स्त्रीगमन करने से साधक निश्चित रूप से नष्ट हो जाता हे।

किङ्किणी तन्त्रोक्त १३ अक्षरों का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छागच्छसुरसुन्दरि स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

मन्त्रसिद्धभाण्डागारोक्त १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छसुरसुन्दरि स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

प्राकृत ग्रन्थोक्त १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आगच्छसुरसुन्दरी स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : मूलमन्त्र से न्यास करके इस प्रकार ध्यान करे :

ॐ पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञामभयप्रदाम्।

इति ध्यात्वा। एकलिङ्गसमीपे पूजनं कृत्वा शर्कराज्यगुग्गुलोर्दशांशतो होमः। त्रिसन्ध्यं पूजयेत् त्रिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् मासाभ्यन्तरे आगतायै

चन्दनोदकेनार्घो देयः मातृ भगिनी भार्यां कृत्यं करोति यदा माता भवति सिद्धद्रव्यं ददाति यदि भगिनी भवति तदा देवकन्यादिकां भार्यामानीय ददाति यदि भार्या भवति तर्हि सर्वैश्वर्यं सर्वेषां परिपूरयेत्। वर्जयेदन्यस्त्रिया सह शयनम् अन्यथा विनश्यति।

इस प्रकार ध्यान करके एक लिङ्ग के समीप अथवा एक अन्य मत के अनुसार पवित्र गृह में जाकर शक्कर, घी और गुग्गुल से दशांश होम करे। तीनों सन्ध्याओं में पूजा करे। प्रतिदिन मन्त्र का तीन हजार जप करे। एक मास तक पूजा करने के बाद देवी के आने पर चन्दनोदक से अर्घ्य दे। वह माता, भगिनी अथवा पत्नी की भावना प्रदर्शित करती है। जब माता होती है तब सिद्ध द्रव्य देती है। यदि भगिनी (बहन) होती है तो देवकन्याओं आदि को लाकर पत्नी रूप में देती है। यदि पत्नी होती है तो सबको समस्त ऐश्वर्य देती है। इसमें अन्य स्त्री के साथ शयन वर्जित है, अन्यथा साधक विनष्ट हो जाता है।

तथा च किङ्किणी तन्त्रे। एकलिङ्गं महादेवीमिष्ट्वा गुग्गुलुयाघृतम्। जपेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यं च नित्यं च त्रिसहस्रकम्। मासमेकं समाख्यातं यक्षिणी सुरसुन्दरी। दत्त्वार्घं प्रणवं मन्त्री कृते सा त्वं किमिच्छसि। देवि दारिद्र्यदग्धोस्मि तन्मे नाशयनाशय। तस्मै ददाति सा तुष्टा निधानं चिरजीवितम्।

किङ्किणी तन्त्र में भी कहा गया है कि एकलिङ्ग और महादेवी की पूजा घी और गुग्गुल से करके नित्य तीनों सन्ध्याओं में तीन हजार जप करे। एक मास के बाद यक्षिणी सुरसुन्दरी आती है। उसे अर्घ्य देकर प्रणव से पूजन करने पर वह पूछती है : 'तू क्या चाहता है ?' तब इस प्रश्न का साधक को यह उत्तर देना चाहिये : 'हे देवि ! मैं दरिद्रता की अग्नि में जल रहा हूं उसे नष्ट करो, नष्ट करो'। तब वह यक्षिणी सन्तुष्ट होकर उसे खजाना तथा दीर्घायु प्रदान करती है।

मन्त्रकोशे लक्षजपः पञ्चामृतदशांशतो होमः अष्टमीतिथौ कुमारीपूजनं भूशय्या एकान्नं क्षाराम्लादि वर्ज्यं चिन्तितार्थं ददाति। इति विशेषः। इति सुरसुन्दरीसाधनम् ॥ २८ ॥

मन्त्रकोश में एक लाख जप कहा गया है। जप से दशांश पञ्चामृत से होम करना चाहिये। अष्टमी तिथि को कुमारी-पूजन, भूमि शयन तथा नमक खटाई से रहित एक काल में ही भोजन करना चाहिये। इससे देवी मनोवाञ्छित फल देती है—यह विशेष है। इति सुरसुन्दरी साधन ॥ २८ ॥

अथ मनोहरीसाधनम् ।

भूतडामरतन्त्रे : ततोन्यसाधनं वक्ष्ये निर्मितं ब्रह्मणा पुरा । मन्त्रो यथा :

भूतडामर तन्त्र में कहा गया है : इसके बाद मैं ब्रह्मा द्वारा निर्मित एक अन्य साधन बताऊँगा । इसका ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : नदीतीरं समासाद्य कुर्यात्स्नानादिकं ततः । पूर्ववत्सकलं कार्यं चन्दने मण्डलं लिखेत् । स्वमन्त्रं तत्र संलिख्यावाह्य ध्यायेन्मनोहराम् ।

इसका विधान : नदी के तट पर आकर स्नानादि से निवृत्त हो पूर्ववत् समस्त कार्य चन्दन के मण्डल में लिखे । अपना मन्त्र उसमें लिखकर मनोहरा देवी का आवाहन करे और तदनन्तर इस प्रकार ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दनगन्धमाल्याम् । चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां विचित्राम् ॥ १ ॥

एवं ध्यात्वा यजेद्देवीमगरुधूपदीपकैः । गन्धपुष्परसैश्चैव ताम्बूलाद्यैश्च मद्यतः । दत्वायुतं प्रतिदिनं जपेन्मन्त्रं प्रसन्नधीः । मासान्ते दिवसं प्राप्य कुर्यात्स जपमुत्तमम् । आनिशीथं जपेन्मन्त्रं ज्ञात्वा साधकनिश्चयम् । गत्वा च साधकाभ्याशे सुप्रसन्ना मनोहरा । वरं वरय शीघ्रं त्वं यस्ते मनसि वर्तते ।

इस प्रकार ध्यान करके अगर धूप, दीप, गन्ध, पुष्प, रस, ताम्बूल तथा मद्य से देवी का पूजन करे । प्रतिदिन प्रसन्नतापूर्वक साधक को दश हजार जप करना चाहिये । मास के अन्तिम दिन उत्तम जप करे । रात भर जप करने से सुमनोहरा साधक के निश्चय को जानकर उसके सामने प्रकट होकर कहती है कि 'शीघ्र वर माँगो । तुम्हारे मन में क्या है ?'

साधकेन्द्रोपि तां भक्त्या पाद्याद्यैरुपचारकैः । धूपं दीपं च नैवेद्यं योगिन्या अर्पयेन्मुदा । चन्दनोदकपुष्पेण फलेन च मनोहरा । ततोर्चिता प्रसन्ना स्यात्पुष्णाति प्रार्थितं च यत् । स्वर्णभारं साधकाय सा ददाति दिनेदिने । सावशेषं व्ययं कुर्यात्स्थिते सा तु न दास्यति । अन्यस्त्रीगमनं कृत्वा महापातकवान्भवेत् । सत्यं सत्यं पुनः सत्यं तवाग्रे सत्यमीरितम् । अव्याहतगतिस्तस्य भवतीति न संशयः ।

तब श्रेष्ठ साधक भक्तिपूर्वक पाद्यादि उपचारों, धूप, दीप, तथा

नैवेद्य सहर्ष अर्पित करे। चन्दनोदक, पुष्प तथा फल से पूजित होकर मनोहरा देवी प्रसन्न होकर प्रार्थित अभीष्ट को पूर्ण करती है। प्रतिदिन वह साधक को एक भरी सोना देती है। साधक को चाहिये कि वह सब का सब सुवर्ण प्रतिदिन व्यय भी करता रहे अन्यथा वह नहीं देगी। परस्त्रीगमन से साधक महापातकी हो जाता है। यह सत्य है, सत्य है, पुनः सत्य है। मैंने तुम्हारे समक्ष सत्य कहा है। इस साधन से साधक की गति अव्याहत हो जाती है—इसमें कोई भी संशय नहीं है।

इति ते कथिता विद्या सुगोप्या या सुरासुरैः। तव स्नेहेन भक्त्या च वक्ष्येऽन्यत्परमेश्वरि।

हे परमेश्वरि! देवों और दानवों को भी अत्यन्त गोपनीय विद्या मैंने तुम्हें बता दिया है। तुम्हारे स्नेह तथा भक्ति के कारण अब मैं दूसरी विद्या बताऊँगा।

भूतडामर तन्त्र में १० अक्षरों का अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छ मनोहरे स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

शिवार्चन चन्द्रिका में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

इसका ध्यान इस प्रकार है :

अथ ध्यानम् : कुरङ्गनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दनगन्धमाल्याम्। चीनांशुकीं पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामकरां विचित्राम्॥ १॥

अस्य विधानम्। भूतडामरतन्त्रे : नदीसङ्गमे गत्वा चन्दनेन मण्डलं कृत्वा अगरधूपं दत्वा एकमासोपरि आगतां तदा पूजयेत् चन्दनेनार्घ्यो देयः। पुष्पफलैरेकचित्तेनार्चनं कर्तव्यम्। अर्धरात्रे नियतमागच्छति। आगताया सत्यामाज्ञां देहि इति वदति। सुवर्णशतं च प्रतिदिनं ददाति।

भूतडामर तन्त्र में इसका विधान : नदी के सङ्गम पर जाकर चन्दन से मण्डल बनाये और अगर-धूप देकर एक मास बाद आयी हुई देवी की चन्दन से अर्घ्य देकर पूजा करे। पुष्पों और फलों से एकाग्रचित्त होकर पूजन करना चाहिये। आधी रात को देवी निश्चित रूप से आती है। आने पर 'आज्ञा दो' यह कहती है। सौ स्वर्ण मुद्रायें प्रतिदिन देती है।

शिवार्चनचन्द्रिकायां : नदीतीरे शुभे देशे चन्दनेन सुमण्डलम्। **विधिना पूजयेद्देवीं ततो मन्त्रायुतं जपेत्। त्रिसप्ताहं जपेदेवं प्रसादाद्धिर-**

मेत् खलु। दीनाराणां सहस्रैकं व्ययं कुर्याद्दिनेदिने। विना व्ययेन सा क्रुद्धा न ददाति कदाचन।

शिवार्चन चन्द्रिका में लिखा है कि नदी के तट पर जाकर शुभ देश में चन्दन से मण्डल बनाकर विधिपूर्वक देवी की पूजा करे। तदनन्तर मन्त्र का १० हजार जप करे। तीन सप्ताह तक इस प्रकार जप करे। जब देवी का प्रसाद प्राप्त हो जाय तब बन्द कर दे। प्रतिदिन १ हजार दीनार व्यय करना चाहिये। बिना व्यय किये वह क्रुद्ध हो जाती है और फिर कभी नहीं देती।

किङ्किणी तन्त्रे : आदौ षट्कोणरत्नेन लेखनीयं श्वेतवस्त्रं परिधेयं श्वेतासनं च। सप्तदिनैः प्रसन्ना भवति शतं दीनाराणां प्रतिदिनं ददाति। इति मनोहरीसाधनम् ॥ २९ ॥

किङ्किणी तन्त्र में कहा गया है कि पहले रत्न से षट्कोण लिखना चाहिये तथा श्वेतवस्त्र धारण करके श्वेत आसन पर बैठना चाहिये। सात दिनों में देवी प्रसन्न होकर प्रतिदिन तीन सौ दीनार देती है। इति मनोहरी साधन ॥ २९ ॥

अथ प्रमदासाधनम्।

मन्त्र महोदधि में सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं प्रमदे स्वाहा। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य प्रमदामन्त्रस्य मनुऋषिः गायत्रीच्छन्दः प्रमदा देवता ह्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मनुऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। प्रमदादेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं प्रं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं दें अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं स्वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः हां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ह्रां ह्रीं नमः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं प्रं नमः शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं मं नमः शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं दें नमः कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं स्वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः हां नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इससे न्यास करके इस प्रकार ध्यान करे :

ॐ केयूरमुख्याभरणाभिरामां वराभये सन्दधतीं कराभ्याम्। संक्रदनाद्यामरसेव्यपादां सत्काञ्चनाभां प्रमदां भजामि ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में आधारशक्ति से लेकर परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करके 'ॐ आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजन करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण। ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ बिलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये। ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये प्रमदे एह्येहि नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करे और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से इस प्रकार पूजा करे :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ ह्रां ह्रीं हृदयायै नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा[2]। शिरः श्रीपा० २। ॐ ह्रूं मं शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ह्रैं दें कवचाय हुं[4]। कवचश्रीपा० ४। ॐ ह्रौं स्वां नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रश्रीपा० ५। ॐ ह्रः हां अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर और मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे और 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त :

ॐ सुनन्दायै नमः[७]। सुनन्दाश्रीपा० १। ॐ चन्द्रिकायै नमः[८]। चन्द्रिकाश्रीपा० २। ॐ हासायै नमः[९]। हासाश्रीपा० ३। ॐ सुलापायै नमः[१०]। सुलापाश्रीपा० ४। ॐ मदविह्वलायै नमः[११]। मदविह्वलाश्रीपा० ५। ॐ आमोदायै नमः[१२]। आमोदाश्रीपा० ६। ॐ प्रमोदायै नमः[१३]। प्रमोदाश्रीपा० ७। ॐ वसुदैन्यकायै नमः[१४]। वसुदैन्यकाश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दशदिक्पालों[१५-२४] और वज्रादि आयुधों[२५-३४] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं षट्लक्षजपः। जपदशांशतो घृत होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री पुनर्निर्जने कानने रात्रौ प्रतिदिनमयुतं जपेत्। पायसेन प्रतिदिनं दशांशतो होमः। तदा त्रिसप्तदिवसे आगता इष्टं ददाति। तथा च : रसलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः। निर्जने कानने रात्रावयुतं नियतं जपेत्। सहस्रं पायसान्नेन हुत्वा शयनमाचरेत्। त्रिसप्तदिवसं यावदेवमाचरतो निशि। देवी दृग्गोचरा भूयाद्द्यादिष्टानि मन्त्रिणे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करने के बाद जप करे। इसका पुरश्चरण ६ लाख जप है। जप का दशांश घी से होम करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और सिद्ध मन्त्र से साधक पुनः निर्जन वन में रात में प्रतिदिन १० हजार जप और प्रतिदिन पायस से दशांश होम भी करे। ऐसा करने से २१ दिन में देवी आकर अभीष्ट फल देती है। कहा भी गया है कि ६ लाख जप और दशांश घी का होम करना चाहिये। निर्जन वन में रात में दश हजार जप और खीर से हवन करके शयन करना चाहिये। २१ दिन तक इस प्रकार करने पर रात में देवी दृष्टिगोचर होती है और तब वह साधक को अभीष्ट फल देती है।

मन्त्रमहोदधि में प्रमदा भेद से प्रमोदा साधन का मन्त्र इस प्रकार है :

ह्रीं प्रमोदे स्वाहा इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् : न्यासादिकं सर्वं उपरोक्तं ज्ञेयम्। सरितो निर्जने तीरे मण्डले चन्दनैः कृते। जपहोमौ विधायोक्तौ प्रमोदां पश्यति ध्रुवम्।

इसका विधान : इसका न्यासादि सब पूर्वोक्त ही जानना चाहिये।

नदी के एकान्त किनारे पर चन्दन से मण्डल बनाकर उक्त जप और होम करके साधक निश्चित रूप से प्रमोदा का दर्शन करता है।

किङ्किणी तन्त्र में अष्टाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अर्द्धरात्रे समुत्थाय सहस्रैकं जपेन्मनुम्। मासमेकं ततो देवी निधिं दर्शयति ध्रुवम्। इति प्रमदासाधनम्॥ ३०॥

इसका विधान : आधी रात को उठकर मन्त्र का एक सहस्र जप करे। इसके बाद देवी निश्चित रूप से निधि दिखा देती है। इति प्रमदासाधन।३०।

अथानुरागिणीसाधनम्।

भूतडामरतन्त्रे। महाविद्यां प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय। मन्त्रो यथा :

भूतडामर तन्त्र में अनुरागिणी साधन इस प्रकार है : मैं महाविद्या को कहता हूं, सावधान होकर सुनो। षोडशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छानुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा। इति षोडशाक्षरो मन्त्रः।

दूसरे मत से १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

मन्त्रसिद्ध भाण्डागार में १२ अक्षरों का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : कुंकुमेन भूर्जपत्रे देवीप्रतिमां विलिख्य तस्या उदरेऽष्टदलमालिख्य तन्मध्ये मन्त्रं विलिख्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत्।

इसका विधान : कुंकुम से भोजपत्र पर देवी की प्रतिमा लिखकर उसके उदर पर अष्टदल लिखे और उसके मध्य में मन्त्र लिखकर प्राण प्रतिष्ठा करके इस प्रकार ध्यान करे :

ॐ शुद्धस्फटिकसङ्काशां नानारत्नविभूषिताम्। मञ्जीरहारकेयूररत्नकुण्डलमण्डिताम्।

इससे ध्यान करके मूलमन्त्र से तीनों सन्ध्याओं में इस प्रकार अर्चन करे :

कुंकुमेन समालिख्य भूर्जे देवीं सलक्षणाणाम्। प्रतिपद्दिनमारभ्य पूजयेत्कुसुमादिभिः। धूपदीपविधानैश्च त्रिसन्ध्यं पूजयेन्मुदा। पूजनान्ते सहस्राणि त्रिसन्ध्यं परिवर्तयेत्। पूर्णिमां प्राप्य गन्धाद्यैः पूजयेत्साधकोत्तमः। घृतदीपं ततो धूपं नैवेद्यं च मनोहरम्। रात्रौ च दिवसे जाप्यं

कुर्याच्च सुसमाहितः। प्रभातसमये याति साधकस्यान्तिकं मुदा। प्रसन्नवदनो भूत्वा तोषयेदतिभोजनैः। देवदानवगन्धर्वविद्याधृग्यक्षरक्षसाम्। कन्याभिः रत्नभूषाभिः साधकेन्द्रे मुहुर्मुहुः। चर्व्यचोष्यादिकं द्रव्यं नित्यं ददाति सा ध्रुवम्। स्वर्गे मर्त्ये च पाताले यद्वस्तु विद्यते प्रिये। आनीय सा ददाति साधकाज्ञानुरूपतः। स्वर्णशतं सदा तस्मै ददाति सा दिनेदिने। साधकाय वरं दत्त्वा याति सा निजमन्दिरम्। तस्या वरप्रसादेन चिरञ्जीवी निरामयः। सर्वज्ञः सुन्दरः श्रीमान्सर्वेशो भवति ध्रुवम्। सार्द्धमासत्रयाद्देवि साधकेन्द्रो दिनेदिने। गुह्याद्गुह्यतरा विद्या तव स्नेहात्प्रकीर्तिता। इत्यनुरागिणीसाधनम् ॥ ३१ ॥

कुंकुम से भोजपत्र पर सभी लक्षणों से युक्त देवी की प्रतिमा लिखे। प्रतिपदा से आरम्भ कर पुष्प, धूप, दीप आदि विधानों से तीनों सन्ध्याओं में प्रसन्न मन से पूजन करे। पूजन के बाद तीनों सन्ध्याओं में नित्य एक हजार जप करे। पूर्णिमा के दिन गन्ध आदि से उत्तम साधक को पूजन करना चाहिये। फिर घी का दीपक तथा धूप और मनोहर नैवेद्य समर्पित करे। रात तथा दिन को भी शान्त चित्त से जप करे। प्रातःकाल देवी प्रसन्न होकर साधक के पास आती है। उस समय प्रसन्न हृदय से उसे भोजन से तृप्त करने पर वह देवों, दानवों, गन्धर्वों, विद्याधरों, यक्षों और राक्षसों की रत्नों से अलंकृत कन्यायें और चबाने तथा चूसनेवाली अनेक वस्तुयें साधक को निश्चित रूप से नित्य देती है। हे प्रिये! स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और और पाताल में भी जो वस्तु हो उसे साधक की आज्ञानुसार लाकर देती है। एक सौ स्वर्ण मुद्रायें भी प्रतिदिन लाकर साधक को देती है और फिर अपने घर चली जाती है। इस देवी के वर-प्रसाद से साधक नीरोग होकर चिरञ्जीवी होता है। साढे तीन मास में साधक प्रतिदिन उत्तरोत्तर सर्वज्ञ, सुन्दर, श्रीमान् तथा निश्चित रूप से सबका स्वामी हो जाता है। हे देवि! मैंने इस गुह्यातिगुह्य विद्या को तुम्हारे स्नेहवश तुम्हें बताया है। इत्यनुरागिणी साधन ॥ ३१ ॥

अथ नखकेशिकासाधनम्।

किङ्किणी तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्रीं नखकेशिके कनकावति स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : गत्वा यक्षगृहे मन्त्री नक्ताशी प्रजपेन्मनुम्। एकविंशे दिने जाते कुर्यात्पूजां यथाविधि। आवर्तयेत्ततो मन्त्रमेकचित्तोति-

संयतः । निशार्द्धे वांछितं कामं देवी तस्य प्रयच्छति । इति नखकेशिनी-साधनम् ॥ ३२ ॥

इसका विधान : यक्षगृह अथवा गन्धर्वगृह में या अपामार्ग के पास साधक रात में भोजन करके मन्त्र का जप करे । इक्कीसवें दिन यथाविधि पूजा करे । संयत होकर एकाग्रचित्त से साधक मन्त्र का जप करे तब आधी रात को आकर देवी उसे अभीष्ट फल प्रदान करती है । इति नखकेशिका-साधन ।। ३२ ।।

अथ नैमिनी (भामिनी) प्रियासाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा । इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : दिनत्रयं निराहारः सति सोमग्रहे जपेत् । यावन्मुक्ति ततो जप्त्वा लभेदिच्छितमुत्तमम् । इति नैमिनीसाधनम् ॥ ३३ ॥

इसका विधान : तीन दिन तक निराहार रहे । यदि चन्द्रग्रहण हो तो स्पर्श से मोक्ष पर्यन्त जप करे । ऐसा करने से देवी मनोवाञ्छित फल देती है । इति नोमिनीसाधन ।। ३३ ।।

अथ पद्मिनीसाधनम् ।

भूतडामर तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनिवल्लभे स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ।

मन्त्रसिद्ध भाण्डागार में नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छ पद्मिनि स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

किङ्किणी तन्त्र में सप्ताक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा । इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् । भूतडामरतन्त्रे मन्त्रसिद्धभाण्डागारे वा । कुंकुमेन भूर्जपत्रे प्रतिमां विलिख्य तस्य वक्षस्थले मूलमन्त्रं लिखित्वा ध्यायेत् ।

इसका विधान : (भूतडामर तन्त्र और मन्त्रसिद्ध भाण्डागार के अनुसार) : कुंकुम से भोजपत्र पर प्रतिमा लिखे और उसके वक्षःस्थल पर मूलमन्त्र लिखकर इस प्रकार ध्यान करे :

पद्माङ्गनां श्यामवर्णां पीनोन्नतपयोधराम् । कोमलाङ्गीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम् ॥ १ ॥

एवं ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपविधिना सम्पूज्य त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रं जपेन्मासमेकं यावत् । ततः पूर्णिमायां विधिवत् पूजा कर्तव्या घृतदीपं

प्रज्वालयेत् । सकलरात्रिपर्यन्तं जपेत् । प्रभाते नियतसमये आगच्छति साधकस्य भार्या भवति । तथा च : भूत्वा भार्या साधकं हि तोषयेद्विविधैः सुखैः । भोग्यैर्द्रव्यैर्भूषणाद्यैः पद्मिनी सा दिनेदिने । पतिवत्पालितं लोके नित्यं स्वर्गे च सर्वदा । त्यक्त्वा भार्यां भजेत्तां च साधकश्च सदा प्रिये ।

इससे ध्यान करके गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप तथा दीप से विधिपूर्वक पूजन करके तीनों सन्ध्याओं में एक मास तक ३ हजार जप नित्य करे । तदनन्तर पूर्णिमा के दिन विधिवत् पूजा करे और घी का दीपक जलाये । पूरी रात जप करना चाहिये । तब प्रातःकाल नियत समय पर देवी आती है और साधक की पत्नी बनती है । कहा भी गया है कि वह पद्मिनी पत्नी बनकर नाना प्रकार के सुखों, भोग्य द्रव्यों तथा भूषणादि से प्रतिदिन साधक को सन्तुष्ट करती है । पति के समान ही साधक का वह लोक तथा परलोक में सदा पालन करती है । हे प्रिये ! साधक को चाहिये कि अपनी पत्नी को छोड़कर वह इस देवी की सेवा करे ।

अथ किङ्किणीतन्त्रोक्तविधानम् ।

एकलिङ्गगृहस्थाने चन्दनेन सुमण्डलम् । कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेदत्र पद्मिनीम् । धूपं च गुग्गुलं कृत्वा जपेन्मन्त्रसहस्रकम् । मासमेकं ततः पूजा कृत्वा रात्रौ पुनर्जपेत् । अर्द्धरात्रे गते देवी दत्ते दिव्याञ्जनं शुभम् ।

एकलिङ्ग के स्थान में चन्दन से एक हाथ विस्तार का सुन्दर मण्डल बनाकर उसमें पद्मिनी का पूजन करे । गुग्गुल का धूप देकर एक मास तक नित्य मन्त्र सहस्र (अर्थात मन्त्र में सात वर्ण हैं अतः सात हजार) जप करे । तदनन्तर जागरण करके रात में पुनः जप करे । आधी रात को देवी दिव्य और शुभ अञ्जन देती है ।

पद्मिनीभेदेन पद्मावतीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में सप्ताक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ पद्मावति स्वाहा । इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । पञ्चमे वा दशांशतो होमः । तदा अष्टमहासिद्धीर्ददाति ।

इसका विधान : इसका पुरश्चरण १२ लाख जप है । पाँचवें दिन जप का दशांश होम करना चाहिये । ऐसा करने से देवी आठ महासिद्धियों को देती है ।

दूसरे मत के अनुसार ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

नानाचरणपद्मावति स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : दशलक्षजपः घृतगुग्गुलुयुतसेवतीपुष्पेण दशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति। अष्टभोगान् प्रतिदिनं ददाति। तण्डुलमाषान्नकलशमापूर्य तदग्रे जपं कुर्यात्। यद्दिने कलशेन्नं न दृश्यते तदा प्रसन्ना भूत्वा सिद्धिं ददाति।

इसका विधान : इस मन्त्र का दश लाख जप करना चाहिये। घी तथा गुग्गुल से युक्त सेवती (गुलाब) के फूलों से जप का दशांश होम करने से देवी प्रसन्न होकर आठ भोगों को प्रतिदिन देती है। तन्दुल, उड़द और अन्न से कलश को भरकर रखे और उसके आगे बैठकर जप करें। जब कलश में अन्न न दिखाई पड़े तब देवी प्रसन्न होकर सिद्धि देती है।

एक अन्य मत से ६३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावति आगच्छागच्छ कार्यं कुरुकुरु (जहां भेजूं वहां जावो जो मंगाऊं सो आनदेवो न आनदेवो तो श्रीपार्श्वनाथ की आन) सत्यमेव कुरुकुरु स्वाहा। इति त्र्यधिक षष्ट्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पूर्वाग्निकोणे मुखं वा कार्यम्। कार्तिककृष्णत्रयोदशीमारभ्य कार्तिकशुक्ला प्रतिपदा यावत् दिनत्रयं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् तदा सिद्धा भवति मनसेप्सितं पदार्थं समानीय साधकाय ददाति।

इसका विधान : पूर्व या अग्निकोण में मुख करना चाहिये। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तक तीन दिन तक प्रतिदिन एक हजार जप करना चाहिये। इससे देवी सिद्ध होकर साधक को मनोवाञ्छित पदार्थ लाकर देती है।

इन्द्रजाल में २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अर्द्धरात्रे मृत्तिकया मालया अष्टोत्तरसहस्रं जपेत्। मृत्तिकापात्रे घृतदीपं प्रज्वाल्य यवोपरि संस्थाप्य तदग्रे जपेत्। एवं कृते एकविंशतितमे दिने दर्शनं ददाति। इति पद्मिनीसाधनम् ॥ ३४ ॥

इसका विधान : आधी रात को मिट्टी की माला से मन्त्र का १००८ जप करें। मिट्टी के पात्र में घी का दीपक जलाकर यव के ऊपर रखकर उसी के आगे जप करना चाहिये। ऐसा करने से २१ वें दिन देवी दर्शन देती है। इति पद्मिनीसाधन ॥ ३४ ॥

अथ स्वर्णावती (कनकावती) मन्त्रसाधनम्।

मन्त्रसिद्धभाण्डागार में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कनकावति मैथुनप्रिये स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : वटवृक्षतलं गत्वा मद्यं मांसं च दत्त्वा सहस्रं जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्यात् । अष्टमरात्रौ सा सर्वालङ्कारसंयुता आगच्छति साधकस्य भार्या भवति । द्वादशजनानां वस्त्रालङ्कारभोजनानि ददाति ।

इसका विधान : वटवृक्ष के नीचे जाकर मद्य तथा मांस देकर मन्त्र का १ हजार जप करे । इस प्रकार सात दिन तक जप करने के बाद आठवें दिन रात के समय देवी समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर आती है और साधक की पत्नी बन जाती है । वह १२ व्यक्तियों को वस्त्र, अलङ्कार तथा भोजन देती है ।

किङ्किणी तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : बिल्ववृक्षतले कुर्याच्चन्दनेन सुमण्डलम् । यक्षिणीं पूजयेत्तत्र नैवेद्यमुपकल्पयेत् । ससामांसं सर्वतस्तस्मान्मन्त्रमावर्तयेद्बुधः । सहस्रमेकं जपेन्नित्यं यावत्सप्तदिनं भवेत् । अथागत्य ददात्यस्मै मन्त्रमञ्जनमुत्तमम् । जपप्रभावान्नरः पश्येन्निधानमविशङ्कितम् ।

इसका विधान : बेल के वृक्ष के नीचे चन्दन से उत्तम मण्डल बनाकर उस पर यक्षिणी का पूजन करे और नैवेद्य तैयार करे । बुद्धिमान साधक सस के मांस को चारों ओर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके बलि दे तथा सात दिन तक नित्य मन्त्र का १ हजार जप करे । तब आकर देवी साधक को उत्तम मन्त्र तथा अञ्जन देती है । जप के प्रभाव से साधक निःशङ्क होकर भूमि की निधियों को देखता है ।

भूतडामर तन्त्र में १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं रक्तवर्मणि आगच्छ कनकावति स्वाहा । इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैकमनाः प्रिये । गत्वा वटतलं देवीं पूजयेत्साधकोत्तमः । प्राणायामं षडङ्गं च माययाथ समाचरेत् । ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सावधनावधारय ।

हे प्रिये ! तू एकाग्रचित्त होकर इसका विधान सुन । उसके बाद मैं महाविद्या को बताऊँगा । साधक वटवृक्ष के नीचे जाकर देवी की पूजा करे । प्राणायाम और माया अर्थात् ह्रीं से षडङ्ग पूजा करे । मैं इसका ध्यान बता रहा हूं, तुम सावधान होकर सुनो :

अथ ध्यानम् : ॐ प्रचण्डवदनां गौरीं पक्वबिम्बाधरां प्रियाम् ।

रक्ताम्बरधरां रामां सर्वकामफलप्रदाम् ।

एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रमयुतं साधकोत्तमः । सप्ताहं तु समभ्यर्च्य अष्टमे विधिमाचरेत् । सद्यो मांसबलिं दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः । अर्घ्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यात्तस्यै दिनेदिने । कायेन मनसा वाचा प्रजपेच्च दिनेदिने । आनिशीथं जपेन्मन्त्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् । साधकेन्द्रं दृढं ज्ञात्वा याति सा साधकालये । साधकोपि च तां दृष्ट्वा दद्यादर्घ्यादिकं ततः । ततस्सपरिवारेण भार्या स्यात्कामभोजनैः । वस्त्रभूषादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमन्दिरम् । एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः । आत्मभार्यां परित्यज्य भवेत्तत्र विचक्षणः ।

इससे ध्यान करके साधकश्रेष्ठ को मन्त्र का १० हजार जप करना चाहिये । एक सप्ताह तक पूजा करके आठवें दिन सम्पूर्ण विधियाँ सम्पन्न करे और तत्काल मांस बलि देकर एकाग्रचित्त हो पूजा करे । उच्छिष्ट रक्त से प्रतिदिन अर्घ्य देना चाहिये । मन, वाणी तथा शरीर से प्रतिदिन जप करे । मनोहर बलि देकर रात भर जप करना चाहिये । श्रेष्ठ साधक को दृढ़निष्ठ जानकर तब देवी उसके घर जाती है । साधक को भी चाहिये कि देवी को देखकर उसे अर्घ्य देवे । तब वह साधक की भार्या हो जाती है. समस्त परिवार को मनोवाञ्छित भोजन देती है और अपने समस्त वस्त्रालङ्कारों को छोड़कर अपने घर चली जाती है । इस प्रकार वह नित्य साधक की आज्ञा के अनुरूप भार्या बनती है । बुद्धिमान साधक को चाहिये कि अपनी पत्नी को छोड़कर देवी में मन लगाये ।

एक अन्य मत के अनुसार १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कनकावति करवीरके स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : कृष्णपक्षाष्टमीमारभ्य अमावस्यापर्यन्तं प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत् । निम्बसमिधाज्यैर्दशांशतो होमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति तदा होमभस्माभिमन्त्रितं तेन तिलकं कुर्यात् । अदृश्योभवति । इति कनकावतीसाधनम् ॥ ३५ ॥

इसका विधान : कृष्णपक्ष की अष्टमी से लेकर अमावस्या पर्यन्त प्रतिदिन तीन हजार जप करना चाहिये । जप का दशांश नीम की समिधाओं तथा घी से होम करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । तब होम की भस्म को अभिमन्त्रित करके अपने भाल पर तिलक लगावे । इससे साधक अदृश्य हो जाता है । इति कनकावती साधन ॥ ३५ ॥

अथ रतिप्रियासाधनम् ।

भूतडामर तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुन्दरि स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

मन्त्रसिद्ध भाण्डागार में १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आगच्छ रतिकरि स्वाहा । इति दशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : श्वेतपटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रसर्वालङ्कारभूषितामुत्पलहस्तां कुमारीं ध्यायेत् ।

इसका विधान : श्वेत पत्र पर देवी का चित्र लिखकर सुनहरे वस्त्रालङ्कारादि से विभूषित करके कमल हाथ में लिये हुये कुमारी का इस प्रकार ध्यान करे :

अथ ध्यानम् । ॐ सुवर्णवर्णां गौराङ्गीं सर्वालङ्कार भूषिताम् । नूपुराङ्गदहाराढ्यां रम्यां च पुष्करेक्षणाम् ।

एवं ध्यात्वा गन्धाक्षतताम्बूलजातीफलैः सह कुमारीं मूलमन्त्रेण पूजयेत् । तथा च : एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं दद्यान्मूलेन साधकः । घृतदीपं तथा गन्धं पुष्पं ताम्बूलमेव च । मासान्ते दिवसं प्राप्य कुर्यात्पूजादिकं शुभम् । तावन्मन्त्रं जपेद्विद्वान् यावदायाति सुन्दरी । ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे याति निश्चितम् । साधकाज्ञानुरूपेण प्रयाति सा दिनेदिने । निर्जने प्रान्तरे देशे सिद्धा स्यान्नात्र संशयः । त्यक्त्वा भार्यां भजेत्तां तु अन्यायेन विनश्यति । मन्त्रसिद्धभाण्डागारे विशेषः । यदि भगिनी भवति तदा योजनमात्रात्स्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालङ्कारभोजनानि च ददाति ।

इससे ध्यान करके गन्ध, अक्षत, ताम्बूल तथा जायफल के साथ मूलमन्त्र से कुमारी की पूजा करे । कहा भी गया है कि इस प्रकार ध्यान करके साधक जप करे । मूलमन्त्र से घी का दीपक, गन्ध, पुष्प तथा ताम्बूल समर्पित करे । मास का अन्तिम दिन आने पर शुभ पूजा आदि करे । विद्वान साधक को चाहिये कि सुन्दरी के आने तक मन्त्र का जप करता रहे । साधक को दृढनिष्ठ जानकर रात में देवी निश्चित रूप से आती है । साधक की आज्ञा के अनुसार प्रतिदिन चली आती है । निर्जन एकान्त स्थान पर ही इससे सिद्धि मिलती है—इसमें कोई संशय नहीं है । अपनी पत्नी को छोड़कर साधक उसमें (देवी में) रमण करे अन्यथा नष्ट हो जाता है । मन्त्रसिद्ध भाण्डागार में विशेष रूप से यह कहा गया है कि यदि यह देवी बहन होती है तो एक योजन की दूरी से स्त्री लाकर देती है । साथ ही वस्त्र,

अलङ्कार तथा भोजन भी देती है।

किङ्किणी तन्त्र में आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्। शङ्खलिप्ते पटे देवीं गौरवर्णां धृतोत्पलाम्। सर्वालङ्कारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयेत्पुनः। जातीपुष्पैः सोपचारैः सहस्रैकं ततो जपेत्। सप्ताहं मन्त्रवांस्तस्याः कुर्यादर्चां सुभाषिताम्। अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति। पञ्चविंशतिदीनारान् प्रत्यहं सा प्रयच्छति ॥ ३६ ॥

इसका विधान : शङ्खलिप्त श्वेत वस्त्र पर गौरवर्ण, कमल हाथ में लिये समस्त अलङ्कारों से विभूषित दिव्य देवी का चित्र बनाकर जाती पुष्पों से उपचार पूर्वक पूजन करे और मन्त्र का १ हजार जप करे। साधक को चाहिये कि एक सप्ताह पर्यन्त इस देवी की सुभाषित पूजा करे। तब आधी रात व्यतीत होने पर आकर देवी पचीस दीनार प्रतिदिन देती है ॥ ३६ ॥

इति षट्त्रिंशद्यक्षिणीसाधनं समाप्तम्।

अथ यक्षिणीप्रसङ्गान्नानारूपयक्षणीसाधनप्रारम्भः।

यक्षिणी प्रसङ्ग में नाना यक्षिणीसाधन प्रारम्भ।

तत्रादौ धनदारतिप्रियायक्षिणीपञ्चाङ्गप्रारम्भः।

सबसे पहले धनदा रतिप्रिया यक्षिणी पञ्चाङ्ग प्रारम्भ होता है :

रुद्रयामले : प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम्। येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद्वद ॥ १ ॥

रुद्रयामल तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : शिर से प्रणाम कर गौरी श्रीशशिशेखर (शिव) से बोलीं : 'जिस कल्प से दरिद्रता का नाश हो उसे आप बतायें।'

श्रुत्वा गौरीवचः शम्भुः स्मितचारुशुभाननः। श्रृणु त्वं देवदेवेशि दारिद्र्यस्य विनाशकम् ॥ २ ॥ पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने। विद्या दारिद्र्यसंहन्त्री यक्षिणी पापखण्डिनी ॥ ३ ॥ तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुन्दरी। ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ॥ ४ ॥ निर्धनो वा महीपो वा विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात्। श्रुत्वा कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ॥ ५ ॥

गौरी के वचन को सुनकर शम्भु मुस्कराते हुये बोले : हे देवेशि ! तुम

दारिद्रच विनाशक कल्प को सुनो। प्राचीनकाल में ब्रह्मा ने इसे कुबेर को बताया था। यह दारिद्रच संहन्त्री यक्षिणी पापखण्डिनी विद्या है। इसलिये यह यक्षिणी सुरसुन्दरी नाम से विख्यात है। मनुष्य इससे निश्चित रूप से श्रेष्ठ निधियों का स्वामी बन जाता है। चाहे निर्धन हो या राजा, कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण के मुख से इस विद्या को सुनकर अथवा कुबेर के मुख से इसे जानकर परम धनवान् हो जाता है।

तच्छ्रुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति। कृपा ते विद्यते कान्त तदा त्वं मां प्रबोधय ॥ ६ ॥

इसको सुनकर गिरिजा देवी पुनः शिवजी से बोलीं : हे कान्त ! यदि तुम्हारी कृपा मुझ पर है तो आप इस विद्या को मुझे बतायें।

श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्या वाक्यमेवं प्रहस्य च। शम्भुः प्राहः न जानासि पार्वत्या मूर्तिरेव सा ॥७॥ यां श्रुत्वा याति रङ्कोपि भूपालत्वं न संशयः। विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ॥ ८ ॥ याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि सर्वदा। वर्षेणापि स्मरन्मन्त्रं भवेद्बहुधनो नरः ॥ ९ ॥ नो संस्पृशति दारिद्र्यं तार्क्ष्यं भोगकुलं यथा।

पार्वती के इस वाक्य को पुनः सुन हँसकर शिवजी बोले : क्या तुम नहीं जानती वह (विद्या) पार्वती की ही मूर्ति है जिसे सुनकर रङ्क भी राजा बन जाता है। इसमें संशय नहीं है। बहुत कहने से क्या लाभ ! इससे साधक विद्याधर बन जाता है। हे देवि ! तुम्हारा भक्त सदा लखपति हो जाता है। एक वर्ष तक मन्त्र का जप करता हुआ मनुष्य अत्यन्त धनवान् हो जाता है और दरिद्रता उसका उसी प्रकार स्पर्श नहीं करती जैसे साँपों का कुल तार्क्ष्य का स्पर्श नहीं करता।

अस्य मन्त्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वति ॥ १० ॥ नाङ्गन्यासः करन्यासो न छन्दो ऋषिदैवतम्। कुबेरस्य मतो नास्याः पूजापि क्रियते तथा। विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसम्भवे ॥ ११ ॥

हे पार्वति ! इस मन्त्र का उद्धार मैं कहूंगा, उसे सुनो। इसका न अङ्गन्यास है न करन्यास, न छन्द है, न ऋषि है और न देवता है। यदि कुबेर का मत न भी हो तो भी इसकी पूजा की जाती है। हे शैलपुत्री ! मैं इसकी विधि कहता हूं, सुनो। १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमन्त्रस्य कुबेरऋषिः पंक्तिच्छन्दः

श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा शक्तिः श्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरी-प्रसादसिद्धये समस्तदारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरीमन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे २। धनदेश्वरीदेवतायै नमो हृदि ३। धं बीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहा-शक्तये नमः पादयोः ५। श्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठि-काभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुं ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ॐ नमः शिरसि १। ॐ रं नमः मुखे २। ॐ श्रीं नमो दक्षिणनेत्रे ३। ॐ ह्रीं नमो वामनेत्रे ४। ॐ धं नमो दक्षिणकर्णे ५। ॐ धं नमो वा कर्णे ६। ॐ नं नमो दक्षनासापुटे ७। ॐ दें नमो वामनासापुटे ८। ॐ रं नमो हृदये ९। ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने १०। ॐ प्रिं नमो वामस्तने ११। ॐ यें नमो नाभौ १२। ॐ स्वां नमो गुह्ये १३। ॐ हां नमः पादयोः १४। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

पदन्यास : ॐ ॐ नमो मस्तके १। ॐ रं नमो मुखे २। ॐ श्रीं नमो हृदये ३। ॐ ह्रीं नमः कट्याम् ४। ॐ धं नमो हस्तयोः ५। ॐ धनदें नमो गुदे ६। ॐ रतिप्रिये नमो लिङ्गे ७। ॐ स्वाहा नमः पादयोः ८। इति पदन्यासः।

कवचन्यास : ॐ धनदायै नमः शिरसि १। ॐ मङ्गलायै नमो ललाटे २। ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये ३। ॐ त्रिनेत्रायै नमो दक्षिणनेत्रे ४। ॐ चञ्चलायै नमो वामनेत्रे ५। ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे ६। ॐ मंजु-

---

१ तन्त्रान्तरेपि मन्त्रो यथा : ॐ ह्रीं श्रीं मां देहि धनदे रतिप्रिये स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः। ॐ धं श्रीं ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो-मन्त्रः। ॐ रं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः। ॐ श्रीं श्रीं यक्षिणि हं हं हं स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः। ॐ ह्रीं ॐ मां मोचय मोचय स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः। इस प्रकार इस मन्त्र को अनेक रूपों में जानना चाहिये।

घोषायै नमो वामकर्णे ७। ॐ सुगन्धायै नमो दक्षिणनासापुटे ८। ॐ पद्मायै नमो वामनासापुटे ९। ॐ वाराह्यै नमः उर्ध्वोष्ठे १०। ॐ महामायायै नमः अधरोष्ठे ११। ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे १२। ॐ सुन्दर्यै नमो दन्तजाले १३। ॐ सरस्वत्यै नमो जिह्वायाम् १४। ॐ रुद्राण्यै नमश्चिबुके १५। ॐ चामर्यै नमः कण्ठजाले १६। ॐ वज्रायै नमः कण्ठपृष्ठे १७। ॐ हरिप्रियायै नमो दक्षस्कन्धे १८। ॐ कमलायै नमो वामस्कन्धे १९। ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते २०। ॐ अभयदायै नमो वामहस्ते २१। ॐ सुपट्टिकायै नमो दक्षांगुलीषु २२। ॐ उमायै नमो वामांगुलीषु २३। ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये २४। ॐ कामदायै नमः स्तनयोः २५। ॐ क्षुधायै नमः उदरे २६। ॐ महाबलायै नमः कट्याम् २७। ॐ धनुर्धरायै नमः पृष्ठे २८। ॐ कामप्रियायै नमो लिङ्गे २९। ॐ गुह्येश्वर्यै नमो गुदे ३०। ॐ चपलायै नमः ऊर्वो ३१। ॐ लीलायै नमो जानुनोः ३२। ॐ सर्वशक्त्यै नमो जङ्घयो ३३। ॐ भ्रामर्यै नमः पादयोः ३४। ॐ सर्वेश्वर्यै नमः सर्वाङ्गे ३५। इति कवचन्यासः।

ॐ ब्राह्म्यै नमः पूर्वे १। ॐ माहेश्वर्यै नमो दक्षिणे २। ॐ कौमार्यै नमः पश्चिमे ३। ॐ वैष्णव्यै नमः उत्त ४। ॐ वाराह्यै नमः ईशान्याम् ५। ॐ चामुण्डायै नमः आग्नेयाम् ६। ॐ कौबेर्यै नमः नैर्ऋत्याम् ७। ॐ वारुण्यै नमः वायव्याम् ८। ॐ ब्राह्म्यै नमः ऊर्ध्वम् ९। ॐ अनन्तायै नमः अधः १०।

इससे न्यास करके इस प्रकार ध्यान करे।

अथ ध्यानम् : ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रत्नपीठाधिरूढां ध्यायेत्तां यक्षिणीं वै परिमल कुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम्। पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्चीं कराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषाङ्गरागाम्॥ १॥

इससे ध्यान करे। तदनन्तर पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में 'ॐ आधारशक्त्यै नमः' इससे आधारशक्ति की पूजा करके अर्घ्य स्थापन करे और स्वर्णादि के पत्र पर चन्दन से यन्त्र लिखकर 'ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर पुनः ध्यान करे और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा तथा देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे।

पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि धनदे परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे।

इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे।

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ श्रां हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। ॐ श्रूं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ श्रैं कवचाय[४] हुं। कवचश्रीपा० ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय[५]। वौषट्। नेत्रश्रीपा० ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढकर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद दश दलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त :

ॐ महालक्ष्म्यै नमः[७]। महालक्ष्मीश्रीपा० १। ॐ पद्मायै नमः[८]। पद्माश्रीपा० २। ॐ श्रियै नमः[९]। श्रीश्रीपा० ३। ॐ हरिप्रियायै नमः[१०]। हरिप्रियाश्रीपा० ४। ॐ हरायै नमः[११]। हराश्रीपा० ५। ॐ पद्मप्रियायै नमः[१२]। पद्मप्रियाश्रीपा० ६। ॐ कमलायै नमः[१३]। कमलाश्रीपा० ७। ॐ अब्जायै नमः[१४]। अब्जाश्रीपा० ८। ॐ चञ्चलायै नमः[१५]। चञ्चलाश्रीपा० ९। ॐ लोलायै नमः। लोलाश्रीपा० १०।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दशदिक्पालों[१७-२६] तथा वज्रादि आयुधों[२७-३६] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनस्कारान्तं सम्पूज्य प्रवालमालामादाय हृदये धारयन् एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : इति ध्यानं विधातव्यं चन्दनेनानुलेपितम्। ताम्रपात्रे विधातव्यं मण्डलं सुमनोहरम् ॥ १ ॥ तत्र पूजा विधातव्या दिव्यैव हि मनो-

षिणा। भुक्ते वाप्यथवाभुक्त पायसान्नं निवेदयेत् ॥ २ ॥ रक्तप्रवालमाला तु कार्या साधकसत्तमैः। रक्तवस्त्रपरीधानो जपं कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ३ ॥ लक्षं जपेन्मन्त्रसिद्धिः पुरश्चर्यां समाचरेत्। घृताक्तेनेक्षुदण्डेन मधुना च दशांशतः ॥ ४ ॥ होमोऽपि च विधातव्यः क्षणाद्दारिद्र्यशान्तये। एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति ॥ ५ ॥ विनियोगं तथा कुर्यात्साधकः सुमनोरथान्। रात्रौ च जप्यते साष्टसहस्रं सप्तवासरान् ॥ ६ ॥ एतेनापि च सिद्धिः स्यात्पुरश्चर्याधिका प्रिये। किमस्ति दुर्लभं देवि साधयेद्यदि मानवः ॥ ७ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से नमस्कार पर्यन्त पूजन करके प्रवाल (मूंगे) की माला लेकर हृदय में धारण करके मन्त्रार्थ को स्मरण करता हुआ मन्त्र का जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तत्-दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उस सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि चन्दन से अनुलेपित्त करके ध्यान करें। ताम्रपत्र पर उत्तम मण्डल बनाना चाहिये और मनीषी को उसमें दिव्य पूजा करनी चाहिये। साधक ने भोजन किया हो या न किया हो उसे खीर का भोग लगाना चाहिये। लाल मूंगे की माला साधक को बनाना चाहिये और लाल वस्त्र का परिधान धारण करके यत्नपूर्वक मन्त्र जप करना चाहिये। एक लाख जप से पुरश्चरण पूरा होने पर मन्त्रसिद्धि होती है। क्षणमात्र में दरिद्रता के नाश के लिये गन्ने के टुकड़ों से घी, मधु और शक्कर के साथ दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को करने में समर्थ हो जाता है। साधक उत्तम मनोरथों तथा विनियोग को पूरा करे। सात दिन तक रात में एक हजार आठ मन्त्रों का जप किया जाता है। हे प्रिये ! इससे भी अधिक पुरश्चर्या से सिद्धि प्राप्त होती है। हे देवि ! यदि मनुष्य साधना करे तो दुर्लभ क्या है ?

दशकृत्वोथवा शौचं कृत्वा वापि कुचैलताम्। यत्स्मरेद्देवि विद्यां तां दारिद्रेणाभिभूयते ॥ ८ ॥ कामदेवं जपेत्पार्श्वं देव्याः प्रत्यहमादरात्। तेन देव्या महाप्रीतिर्वांछितार्थं ददाति सा ॥ ९ ॥ पूजान्ते च समायाति रात्रौ देवी धनेश्वरी। सर्वालङ्कारमुत्सृज्य दत्त्वा याति निजालये ॥१०॥ धनं च विपुलं दत्त्वा साधकस्य मनोरथान्।

चाहे दश बार शुद्धि करे या गन्दे वस्त्रों में रहे, हे देवि ! यदि इस विद्या को मनुष्य स्मरण करे तो वह दरिद्रता से पराजित नहीं होता। देवी

के पास कामदेव की स्तुति करने से देवी की अत्यन्त प्रीति होती है और वह अभीष्ट फल देती है। पूजा के अन्त में धनेश्वरी देवी आती हैं और सभी आभरणों को छोड़कर अपने घर चली जाती है। वह विपुल धन देकर साधक के मनोरथों को पूर्ण करती है।

पूजयित्वा महेशानि चन्दनेनावलेपनम् ॥ ११ ॥ दातव्यं सर्वदा तस्यै नित्यं दारिद्र्यशान्तये। स्वयमाहेति यक्षिणी यो मां स्मरति नित्यशः ॥१२॥ तस्य दारिद्र्यशमनं दासीवच्चकरोम्यहम्। कुतो दारिद्र्य-शङ्कास्य सहिकोटीश्वरो नरः ॥ १३ ॥

हे महेशानि दारिद्र्य के नाश के लिये पूजा करके चन्दन का अवलेपन उस देवी के लिये देना चाहिये। यक्षिणी ने स्वयं भी कहा है कि 'जो मेरा नित्य स्मरण करता है उसकी दरिद्रता का शमन मैं दासी के समान करती हूं। उसके लिये दरिद्रता की शङ्का तब कहाँ उठ सकती है? वह साधक तो करोड़ों का स्वामी हो जाता है।'

किङ्किणीतन्त्रे यथा : बहु किं कथ्यते देवि शिलायां जप्यते सदा। शतं वा दशकृत्वो वा सकृद्वापि च किं पुनः ॥१४॥ न भवेत्तस्य दारिद्र्य-मिति जानीहि पार्वति। चन्द्रसूर्यग्रहे वापि जप्यं दारिद्र्यमुक्तये ॥ १५ ॥ वित्तं दृष्ट्वाऽन्यलोकस्य जपेदष्टशतं मनुम्। तांस्तान् कामान्ददात्येव सदैव यदि जप्यते ॥ १६ ॥ यद्ययं जप्यते मन्त्रस्ततस्तुष्टा तमर्चयेत्। दरिद्राय स्वयं दत्ते गृहमायुश्च हेम च ॥ १७ ॥ येनासौ जप्यते मन्त्रः सदाभक्ति-पुरःसरम्। तस्य पुत्राश्च पौत्राश्च प्रपौत्राश्चापि तत्सुताः। दारिद्र्याभि-भवं यान्ति न कदाचिद्धि संशयः ॥ १८ ॥

इति रुद्रयामले पार्वतीश्वरसम्वादे रतिप्रियाधनदायक्षिणीपटलं समाप्तम्।

किङ्किणी तन्त्र में कहा गया है : हे देवि! बहुत क्या कहना! शिला पर सदा यह जप किया जाता है। यदि कोई सौ बार या दश बार या एक बार भी जप करे तो उसे दरिद्रता नहीं सताती। हे पार्वति! तुम इसे जानो। चन्द्रग्रहण या सूर्य ग्रहण में दारिद्र्यमुक्ति के लिये इसका जप करना चाहिये। दूसरे लोगों का धन देख कर आठ सौ मन्त्र का जप करना चाहिये। यदि सदैव जप किया जाय तो यह देवी सभी अभीष्ट फल देती है। यदि यह मन्त्र जपा जाय तो सन्तुष्ट हो देवी साधक की पूजा करती है और उस दरिद्र साधक को स्वयं गृह, आयु तथा सुवर्ण देती है। जो इस मन्त्र को भक्तिपूर्वक सदा जपता है उसके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र तथा पर-प्रपौत्र के पुत्र भी कभी

दरिद्रता द्वारा अभिभूत नहीं होते—इसमें कोई संशय नहीं है। इति रुद्रयामलोक्त पार्वतीश्वर संवाद के अन्तर्गत रतिप्रिया धनदायक्षिणी पटल समाप्त।

अथ धनदारतिप्रियायक्षिणीपद्धतिप्रारम्भः।

पुरश्चरणात् प्राक् तृतीय दिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चिताङ्गतया विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्माशक्तः ततः प्रायश्चिताङ्गपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्।

सबसे पहले पूर्वकृत्य बताते हैं : पुरश्चरण के तीन दिन पूर्व क्षौरादि कर्म कराकर प्रायश्चित्ताङ्ग स्वरूप विष्णुपूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध, होम तथा चान्द्रायणादि व्रत करे। व्रत करने में अशक्त होने पर गोदान तथा द्रव्यदान करना चाहिये। यदि सभी कर्मों में अशक्त हो तो प्रायश्चित्ताङ्ग-स्वरूप पञ्चगव्य का पान करे। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ १ ॥

इति पठित्वा : प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत्। तद्दिने उपवासं कुर्यात् अशक्तश्चेत् पयःपानं हविष्यान्नं एकभक्तिव्रतम्। पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा :

यह पढ़कर प्रणव से पञ्चगव्य पान करे और उस दिन उपवास करे। अशक्त हो तो दुग्धपान, हविष्यान्न-भोजन या एक काल भोजन का व्रत ले। पुरश्चरण के पूर्व दिन अपने देह की शुद्धि के लिये और पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिये दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे :

देशकालौ सङ्कीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीधनदेश्वरीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये।

इससे सङ्कल्प करके दश हजार गायत्री का जप करे। उसके बाद :

ॐ गायत्र्याऽऽचार्यंऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि १। गायत्रीछन्दस्तर्पयामि २। सवितारं देवं तर्पयामि ३।

इति तर्पणं कृत्वा तस्मिन् रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत्। तद्यथा : स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्।

इससे तर्पण करके उस रात देवता की उपासना तथा शुभाशुभ स्वप्न का इस प्रकार विचार करे : स्नानादि करके विष्णु के चरणकमलों का स्मरण करके कुशासन की शय्या पर सुखपूर्वक बैठकर वृषभध्वज से प्रार्थना करे।

उसमें मन्त्र यह है :

ॐ भगवन्देवदेवेशशूलभृद्वृषवाहन । इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः । क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥

इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्यात् । ततः स्वप्ने दृष्टेनिशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् । इति पूर्वकृत्यम् ।

इस मन्त्र से १०८ बार शिव से प्रार्थना करके सो जाय । इसके बाद रात में देखे गये स्वप्न को गुरु के समीप निवेदन करें अथवा स्वयं स्वप्न का विचार करे । इति पूर्वकृत्य ।

ततश्चन्द्रताराादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य पुरश्चरणदिवसे ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय प्रातःस्मरणं कृत्वा मूलमन्त्रादिशौचक्रियादन्तधावनादिकं च कृत्वा स्नानं कुर्यात् । तद्यथा : तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मन्त्रः ।

इसके बाद चन्द्रतारादि जिस दिन बलवान हो उस दिन उत्तम मुहूर्त में एकान्त देश में जपस्थान का निश्चय करके पुरश्चरण के दिन ब्राह्म मुहूर्त में उठकर प्रातःस्मरण करने के बाद मूलमन्त्र से शौचादि क्रिया तथा दन्तधावन आदि करके इस प्रकार स्नानादि करे : तत्काल कूएँ से निकाले गये जल से या उष्ण जल से स्नान करे (बासी पानी से नहीं) । ताम्रादि के बड़े पात्र में जल रखकर उसमें तीर्थों का आवाहन करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥

इत्यावाह्य । ऋतं च सत्यं० इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य स्नापयेत् एवं स्नानं कृत्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्तमरक्तवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात् ।

इससे आवाहन करके 'ऋतञ्च सत्यं' इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके स्नान करे । फिर सूखा सफेद कपास का उत्तम वस्त्र पहनकर सूर्य को अर्घ्य दे । उसमें मन्त्र यह है :

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ।

इत्यर्घ्यं दत्वा स्नानार्द्रं वस्त्रं परिपीडय आचम्य पञ्चत्रिपुण्ड्रं कृत्वा रक्तप्रवालमालां धारयेत् जपस्थाने गत्वा अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमवितस्तिमात्रान् दश कीलान्। ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्। इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्रयेत्।

इससे अर्घ्य देकर स्नान से भीगे वस्त्र को निचोड़कर आचमन करके पाँच त्रिपुण्ड लगाकर लालमूगे की माला पहने। तदनन्तर जपस्थान पर जाकर पीपल, गूलर या पलाश में से किसी की लकड़ी की एक-एक बित्ते की दश कीलें बनवा ले। इन कीलों को 'ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके :

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः। अपसर्प्यन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत्। ततस्तेषु। ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्। इति मन्त्रेण प्रत्येककीलं सम्पूज्य तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्।

इन दोनों मन्त्रों से दशों दिशाओं में दश कीलों को गाड़ दे। तदनन्तर 'ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्' इस मन्त्र से प्रत्येक कीलों की पूजा करके उनके बाहर भूतबलि दे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात्। इति भूतेभ्यो बलिं दत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत्।

इन दोनों मन्त्रों से दश दिशाओं में कीलों के बाहर उड़द और भात की बलि दे। इस प्रकार भूतों के लिये बलि देकर हाथ-पैर धोकर आचमन करे। इसके बाद :

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य। तत्र तावत् कुर्मंमुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात्। तत्र आसनाधो जलादिना त्रिकोणं कृत्वा। तत्र।

इस मन्त्र से मण्डप के भीतर प्रोक्षण करके वहाँ कूर्म के मुखस्थान पर बैठकर वहीं दीप स्थापन और जप करे। वहाँ आसन के नीचे जल आदि से त्रिकोण बनाकर :

ॐ कूर्माय नमः। ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः २। ॐ पृथिव्यै नमः ३।

इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य। तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि रक्तवर्णासनं आस्तीर्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण।

इससे गन्ध, अक्षत और पुष्पों से पूजा करके उसपर कुशासन, उस पर मृगाजिन और उस पर लाल वर्ण का आसन बिछाकर स्थापित तीनों आसनों के ऊपर क्रम से :

ॐ अनन्तासनाय नमः १। ॐ विमलासनाय नमः २। ॐ पद्मासनाय नमः ३।

इन तीन मन्त्रों से तीन-तीन दर्भ प्रत्येक आसन पर रक्खे। इस प्रकार आसन स्थापित करके उत्तराभिमुख बैठकर आसन शोधन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छन्दः आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।

इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से शिखा बाँधकर आचमन और प्राणायाम करके :

देशकालौ सङ्कीर्त्य श्रीधनदेश्वरीप्रीतये लक्षसंख्यात्मकजपपुरश्चरणमहं करिष्ये।

इति सङ्कल्प्य ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा प्रयोगोक्तन्यासादिकं विधाय ध्यानं कुर्यात्।

इससे सङ्कल्प करे। इसके बाद भूतशुद्धि से लेकर प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका तथा बहिर्मातृका न्यास सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से करके प्रयोगोक्त न्यासादि करें और उसके बाद इस प्रकार ध्यान करें :

अथ ध्यानम् : ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम्। मृणालकोमलभुजां केयूराङ्गदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलसदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम्। कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभयसमन्विताम् ॥२॥

रक्तवस्त्रपरीधानां ताम्बूलाधरपल्लवाम् । हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥ ३ ॥ ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवीं तां धनदादिकाम् । रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥ ४ ॥ अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिसहितां जपेत् । अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेर चामरद्वयम् ॥ ५ ॥

इससे ध्यान करें ।

अथ अर्घस्थापनम् ।

मूलमन्त्र के साथ 'फट्' लगाकर उससे प्रक्षालन करके मूलमन्त्र के साथ 'नमः' लगाकर उससे उसे भर कर और प्रणव के साथ गन्ध-पुष्प डालकर :

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥

इति तीर्थान्यावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तदुपरि किञ्चिन्मूलं जप्त्वा तज्जलं किञ्चित्प्रोक्षणीयपात्रे संस्थाप्य तेनोदकेनात्मानं जपोपकरणं मूलेन त्रिवारं चाभ्युक्ष्य पीठे यन्त्रं संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ।

इससे तीर्थों का आवाहन करके धेनुमुद्रा दिखाकर उसके ऊपर कुछ मूलमन्त्र का जप करके उस जल को प्रोक्षणी पात्र में स्थापित करके उस जल से अपना तथा जप के उपकरणों का मूलमन्त्र से तीन बार अभ्युक्षण करके पीठ पर यन्त्र स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे ।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ।

आचमन करके :

देशकालौ सङ्कीर्त्य श्रीधनेश्वरीनूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करे :

विनियोग : अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामयं वपुः प्राणाख्या देवताः आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्मिन्नूतनयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

इससे जल छिड़के । फिर यन्त्र को हाथ से ढककर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः ।

पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य जीव इह स्थितः ।

पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।

पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्रीधनदेश्वरी-

यन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवा-गत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

इससे प्राणों की प्रतिष्ठा करके संस्कार-सिद्धि के लिये पन्द्रह बार प्रणव की आवृत्ति करके :

अनेन श्रीधनदेश्वरीयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्सम्पाद-यामि ।

इति वदेत् । एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा तद्देशे मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य आवाहनं कुर्यात् । तद्यथा :

यह कहे । इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करके उस स्थान पर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके इस प्रकार आवाहन करे :

अक्षत लेकर :

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस ॥ १ ॥

यह कहकर, मूलमन्त्र पढ़कर, 'श्री धनदेश्वरि इहागच्छेहतिष्ठ' इससे आवाहन कर यह प्रार्थना करे :

स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता । प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बाल-वत्परिपालय ।

इति प्रार्थयित्वा । ॐ पद्मायै नमः । इति मन्त्रेण मध्ये सम्पूज्य गन्धादिपूजनं कुर्यात् । तद्यथा :

इससे प्रार्थना करके 'ॐ पद्मायै नमः' इस मन्त्र से मध्य में पूजा करके गन्धादि से इस प्रकार पूजन करे :

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि १ । हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि २ । यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि ३ । रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि ४ । वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ५ । सं सर्वात्मकं नमस्कारं समर्पयामि ६ ।

इससे पूजन करके योनिमुद्रा दिखाकर मूंगे की माला लेकर जप करे । फिर जप के अन्त में :

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे । ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ।

इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहसि स्थापयेत् । नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निधापयेत् । स्वयोनि-वद्गुप्तां कुर्यात् ।

इससे माला को शिर पर धारण करके गोमुखी को एकान्त में रख दे ।

अपवित्र अवस्था में उसका स्पर्श न करें, दूसरे किसी को न दे, और अपनी योनि के समान उसे गुप्त रक्खे।

ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः ऋष्यादिन्यासादिकं च कृत्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्तत्र मन्त्रः।

इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनामादि पढ़कर पुनः ऋष्यादिन्यास करें और पञ्चोपचार से पूजन के बाद पुष्पाञ्जलि दे। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।

यह कहकर मूलमन्त्र पढ़कर :

धनदेश्वरीरतिप्रियायै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर बद्धाञ्जलिपूर्वक क्षमापन का पाठ करे :

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिवे। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽर्हनिशं मया। दासोहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदेपदे। कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ४ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ५ ॥

इससे हाथ जोड़कर क्षमापन करके अर्घोदक से एक चुल्लू जल लेकर :

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादात् त्वयि स्थितिः। ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्य्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं श्रीधनदेश्वरीरतिप्रियायै समर्पयामि।

इससे जल समर्पण करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है।

अथ कुबेरमन्त्रः।

ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

अस्य पुरश्चरणं द्वादशसहस्रजपः। नक्तभोजनं क्षीरोदनेन। इति रतिप्रियाधनदायक्षिणीपद्धतिः समाप्ता ॥ २ ॥

इसका पुरश्चरण १२ हजार जप है। रात में दूध और भात से भोजन करना चाहिये। इति रतिप्रिया धनदायक्षिणी पद्धति समाप्त ॥ २ ॥

अथ श्रीधनदारतिप्रिया यक्षणीकवचप्रारम्भः।

रुद्रयामले : देव्युवाच। कथयस्व महादेव धनदाकवचं शुभम्। यच्छ्रुत्वा कवचं दुर्गं कुबेर इव भैरव ॥ १ ॥

रुद्रयामल के अनुसार, देवी बोलीं : हे महादेव ! शुभ धनदा कवच मुझे बतायें, दुर्ग के समान जिसे सुनकर मनुष्य कुबेर और भैरव के समान हो जाता है।

भैरव उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम्। दारिद्र्य-खण्डनं नाम सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ २ ॥

भैरव बोले : हे देवि ! सुनो मैं धनदा को प्रिय कवच कहता हूं। यह दारिद्र्यखण्डन नामक सर्वसौभाग्यदायक कवच है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीधनदायक्षिणीकवचमन्त्रस्य कुबेरऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीधनदा देवता रं बीजं श्रीं शक्तिः ह्लीं कीलकं श्रीधन-देश्वरीप्रसादसिद्धये मे दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदाकवचपाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ह्लीं कुबेरऋषये नमः शिरसि। ॐ ह्लीं पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ ह्लूं श्रीधनदादेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्लैं रं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्लौं श्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ह्लः ह्लीं कीलकाय नमः नाभौ। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुं। ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानम् : ॐ कुंकुमोदरगर्भाभां किञ्चिद्यौवनशालिनीम्। मृणाल-कोमलभुजां केयूरां गदभूषिताम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुच-विराजिताम्। कराभ्यां भ्राम्य कमलं वराभयसमन्विताम् ॥ २ ॥ रक्त-वस्त्रपरीधानां ताम्बूलाधरपल्लवाम्। हेमप्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनो-परि। इति ध्यात्वा कवचं पठेत् ॥ ३ ॥ ॐ तत्तुयं रक्षयेत्सर्वंशरीरं देवि सर्वतः। माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ॥ १ ॥ वह्निजाया पातु लिङ्गं मन्त्रं सर्वत्र रक्षतु। धनदा सर्वदा रक्षेत्पथि दुर्गे यमालये ॥ २ ॥ मञ्जुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम्। सुन्दरी दन्तजालं च कण्ठजालं च चामरी ॥ ३ ॥ भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद्दशदिक्षु सुपाठिका।

करालभैरवी पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ॥ ४ ॥ त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदङ्गं सर्वसङ्कटे । ओष्ठाधरौ महामाया रसनां चोरुदण्डयोः ॥ ५ ॥ अंगुलीषु तथा शक्तिर्जङ्घनं चैव चण्डिका । ब्रह्माणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ॥ ६ ॥ कौमारी पश्चिमे पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु । ऐशान्ये पातु वाराही चामुण्डा वह्निकोणके ॥ ७ ॥ कौवेरी नैर्ऋते पातु वायव्यां दुःखहारिणी । ऊर्ध्वं ब्राह्मी सदा पातु अधो दन्तान्सदावतु ॥ ८ ॥ ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत् । ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवि त्वां धनदायिकाम् ॥ ९ ॥ रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् । अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमि सहितां जपेत् ॥ १० ॥ अन्यहस्तं गतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् । भविष्यति महादेव्या मन्त्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ॥ ११ ॥ कदाचिद्यः पठेद्धीमान् न वै रोगो भवेद्ध्रुवम् । अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ॥ १२ ॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्तधनदायक्षिणीकवचं सम्पूर्णम् ।

अथ धनदायक्षिणीस्तोत्रं ।

रुद्रयामले : देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं सदाशिवम् । कृपया पार्वती प्राह शङ्करं करुणाकरम् ॥ १ ॥

रुद्रयामल में कहा गया है कि एक बार देवी पार्वती नीलकण्ठ, सदाशिव, करुणाकर देव शङ्कर के पास जाकर बोलीं ।

देव्युवाच । ब्रूहि वल्लभ साधूनां दरिद्राणां कुटुम्बिनाम् । दारिद्र्य-दलनोपायमञ्जसैव धनप्रदम् ॥ २ ॥

देवी बोली : हे वल्लभ ! सज्जन परन्तु दरिद्र कुटुम्बियों के दारिद्र्य-नाश के लिये तत्काल धनप्रद उपाय कृपा कर आप मुझे बतायें ।

पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः । उचितं जगदम्बासि तव प्रीत्याऽनुकम्पया ॥ ३ ॥ अत्यन्तं सानुजं रामं साञ्जनेयमथानुगम् । प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्येहं स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥ धनदाश्रद्दधानानां सद्यः सुलभ-साधनम् । योगक्षेमकरं प्रोक्तं सत्यं मे वचनं यथा ॥ ५ ॥ पठेत्तस्याग्रतो वापि ब्राह्मणो रसिकोत्तमः । धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ॥ ६ ॥

तब महेश्वर शिवजी पार्वती के इस वाक्य की प्रतिष्ठा करते हुये बोले : हे जगदम्बे ! तुमने ठीक ही पूछा है । मैं तुम्हारे प्रेम और अनुकम्पा को तथा भ्राता और हनुमान सहित श्रीराम को प्रणाम करके परम आनन्ददायक उत्तम स्तोत्र को कहूंगा । श्रद्धा रखनेवालों के लिये धनदा को तत्काल सुलभ-साधन एवं योग-क्षेमकारक कहा गया है । मेरा यह वचन सत्य है । उसके

आगे यदि रसिकोत्तम ब्राह्मण इस स्तोत्र को पढे तो उसे शीघ्र ही धनलाभ होकर उसकी दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमन्त्रस्य कुबेरऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीधनदेश्वरी देवता धं बीजं स्वाहा शक्तिः श्रीं कीलकं श्रीधनदेश्वरी-प्रसादसिद्धयर्थं दारिद्रयनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कुबेरऋषये नमः शिरसि। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। धनदादेवतायै नमः हृदि। धं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमः करसम्पुटे। श्रीधनदेश्वरीप्रसादसिद्धयर्थं दारिद्रयनाशाय स्तोत्रमन्त्रजपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचाय हुं। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानम् : ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां यक्षीं बालां स्मरामि परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम्। पीनोत्तुङ्गस्त-नाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकाञ्चीकराभ्यां भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरवि-वसनां रक्तभूषाङ्गरागाम्॥ ७॥

इससे ध्यान करके मानसोपचार से पूजन कर स्तोत्र का पाठ करें:

ॐ भूभवां सम्भवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतां शुभाम्। प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान् कामधेनुस्वरूपिणीम्॥ ८॥ धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते। सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम्॥ ९॥ धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे। त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम्॥ १०॥ रम्ये रुद्र-प्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये। शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि॥११॥ आरक्तचरणाम्भोजे सिद्धसर्वाङ्गभूषिते। दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्य-माल्योपशोभिते॥ १२॥ समस्तगुणसम्पन्ने सर्वलक्षणलक्षिते। जातरूप-मणीन्द्रादिभूषिते भूमिभूषिते॥ १३॥ शरच्चन्द्रमुखे नीले नीरनीरज-लोचने। चञ्चरीकं च भूवासं श्रीहारि कुटिलालके॥ १४॥ मत्ते भगवति मातः कलकण्ठरवामृते। हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्तचिन्तापहारिके॥ १५॥ रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने। क्वणत्कङ्कणमञ्जीरलसल्लीला-कराम्बुजे॥ १६॥ रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये। प्रयच्छ

प्रजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ॥ १७ ॥ मातरं वा विलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके। कृपया करुणासारे प्रार्थितं पुरया शुभे ॥ १८ ॥ वसुधे वसुधारूपे वासुवासववन्दिते। धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ॥ १९ ॥ ब्राह्मण्ये ब्राह्मणे पूज्ये पार्वतीशिवशङ्करे। श्रीकरे शङ्करे श्रीदे प्रसीद मयि किङ्करे ॥ २० ॥ स्तोत्रं दरिद्रयदावार्तिशमनं च धनप्रदम्। पार्वतीशप्रसादेन सुरेशशङ्करेरितम् ॥ २१ ॥ श्रद्धया ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति भक्तितः। सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद्ध्रुवम् ॥ २२ ॥ इति श्रीरुद्रयामले धनदारतिप्रियायक्षिणीस्तोत्रं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ विल्वयक्षिणीमन्त्र प्रयोगः।

ईश्वर उवाच। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यक्षिणीनां सुसाधनम्। यस्य सिद्धौ मनुष्याणां सर्वे सिध्यन्ति हृच्छयाः।

ईश्वर बोले : अब मैं यक्षिणियों को सिद्ध करने का साधन बताऊँगा जिसके सिद्ध होने पर मनुष्य के हृदय में रहनेवाली सभी अभिलाषायें सिद्ध हो जाती हैं।

२७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं स्वाहा। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : आषाढपूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः। सित्तेज्यवारेऽमौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणीं नरः। प्रतिपद्दिनमारभ्य श्रावणेन्दुबलान्विते। मासमात्रप्रयोगोऽयं निर्विघ्नेन विधिं चरेत्। निर्जने विल्ववृक्षस्य मूले कुर्याच्छिवार्चनम्। उपचारैः षोडशभी रुद्रपाठसमन्वितम्। त्र्यम्बकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पञ्चसहस्रकम्। दिवसेदिवसे कृत्वा कुबेरस्य च पूजनम्।

इसका विधान : आषाढ की पूर्णिमा के दिन क्षौरादि कराकर गुरुवार या शुक्रवार को मनुष्य यक्षिणी का साधन करे। श्रावण कृष्णप्रतिपदा से चन्द्रबल देखकर यह प्रयोग एक मास तक निर्विघ्न रूप से विधिवत पूरा करना चाहिये। निर्जन स्थान में बेल-वृक्ष के नीचे शिव की पूजा करे। षोडशोपचारों से रुद्रपाठ के साथ 'त्र्यम्बकं यजामहे' मन्त्र का ५ हजार जप करे। प्रतिदिन कुबेर की पूजा करे। फिर

यक्षराज नमस्तुभ्यं शङ्करप्रियबान्धव। एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणीं कुरु ते नमः।

इति मन्त्रं कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम्। ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी

भवेद्दिवा। रात्रेस्तु मध्यमे यामे विनिद्रोमितभोजनः। बिल्ववृक्षं समारुह्य जपेन्मन्त्रमिमं सदा। मूलमन्त्रस्य च जपं सहस्रत्रयसम्मितम्। कुर्याद्बिल्वसमारूढो मासमात्रमतन्द्रितः मध्वाऽमिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः। यक्षिणी बहुरूपा तु क्वचित्तत्रागमिष्यति। तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपसंसक्तमानसः। यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत्। तदा वरान् वै वृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान्। धनमानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकाम्। भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा। भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा। राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यायशोबलम्। एतदन्यद्यदिप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत्। चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वं दत्ते न संशयः। अशक्तस्तु द्विजैः कुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम्। सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेद्व्रतम्। तिस्रः कुमारिका भोज्याः परमान्नेन नित्यशः। सिद्धे धनादिकेनैव सदा सत्कर्म चाचरेत्। कुकर्मणि व्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छति नान्यथा। गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत्। प्रकाशे बहुविघ्नानि जायन्ते नात्र संशयः। प्रयोगश्चानुभूतोयं तस्माद्यत्नवदाचरेत्। निर्विघ्नेन विधानेन भवेत्सिद्धिरनुत्तमा। गोप्यं चेदं महत्तन्त्रं यस्मै कस्मै न दापयेत्। दुर्जनस्पर्शनाद् विद्या भवत्यल्पफला यतः॥ २॥

कुबेर के इस मन्त्र का १०८ बार जप करे। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहते हुये दिन में मौन रहकर हविष्यान्न का भोजन करना चाहिये। इसके बाद अर्द्धरात्रि में जागकर थोड़ा भोजन कर बेलवृक्ष के ऊपर बैठकर एक मास तक अतन्द्रित हो नित्य मूलमन्त्र का ३ हजार जप करे। मद्य-मांस की बलि देने के लिये इन वस्तुओं को नित्य ही पास रक्खे क्योंकि अनेक रूप धारण करके न जाने कब कोई भी यक्षिणी किसी भी दिन आ सकती है। उसे देखकर जप में संसक्त मनवाला साधक भय न करे। जिस दिन यक्षिणी बलि को ग्रहण करके वर देने का समर्थन करे उस दिन मनोनुकूल वर माँगे अथवा किसी स्त्री या पुरुष को लाने के लिये वर माँगे। उपरोक्त कही हुई बातों का वर माँगे अथवा जो कुछ इच्छा हो उसे माँगे। यदि यक्षिणी प्रसन्न हो गई है तो माँगे हुये वर देगी—इसमें कोई सन्देह नहीं है। यदि अशक्त हो तो ब्राह्मणों से यह सुरपूजित प्रयोग कराये अथवा ब्राह्मणों को साथ लेकर व्रत धारण करे और परमान्न (खीर) का नित्य तीन कन्याओं को भोजन कराये। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर सदा सत्कर्म का आचरण करे। कुकर्म में शक्ति लगाने से सिद्धि समाप्त हो जाती है अन्यथा उपयोगी बनी रहती है। यह

सब प्रयोग गुप्त विधि से करना चाहिये। इसे प्रकाशित नहीं करना चाहिये। प्रकाशित करने पर अनेक विघ्न उपस्थित होते हैं—इसमें कोई संशय नहीं है। यह प्रयोग अनुभूत है। इसलिये यत्नपूर्वक इसे करना चाहिये। निर्विघ्न विधानपूर्वक प्रयोग करने से उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है। इस महान तन्त्र को गुप्त रखना और ऐसे वैसे को नहीं देना चाहिये क्योंकि दुर्जन के स्पर्श से विद्या अल्प फलवाली हो जाती है।

अथ चन्द्रद्रवावटयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

शिवार्चन चन्द्रिका में १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णकारणे स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम्। मन्त्रिते सप्तभिर्मन्त्री काञ्जिके क्षालयेन्मुखम्। यामद्वयं जपेद्रात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी। रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्माण्यनेकधा। सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शङ्करोदितम्॥ २॥

इसका विधान : वटवृक्ष पर चढ़कर मन्त्र का एक लाख जप करे। सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कांजी से साधक मुख को धोये। रात में दो पहर तक जप करने से यक्षिणी वर देती है। साथ ही वह दिव्य रस-रसायन देती है और सभी कार्यों को सिद्ध करती है—यह शङ्करजी का कहा अन्यथा नहीं हो सकता।

दूसरे मत से १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। अन्य सब कृत्य पूर्ववत हैं।

अथ धनदापिप्पलयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं क्लीं धनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

एक दूसरे मत से १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरुकुरु स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अश्वत्थवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। धनदां यक्षिणीं चैव धनं प्राप्नोति मानवः। अयुतं जपेत्सिद्धिः।

इसका विधान : पीपल के वृक्ष पर बैठकर साधक धनदा यक्षिणी का

ध्यान करके एकाग्र मन से जप करे तो वह धन प्राप्त करता है। दस हजार मन्त्रजप से सिद्धि मिलती है।

एक दूसरे मत से ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अश्वत्थाधोद्वात्रिंशत्सहस्रं जपेत्। दधि दुग्धं च नैवेद्यं दत्त्वा सिद्धो भवति। ततो भूतप्रेतपिशाचादयो वश्या भवन्ति सेवां कुर्वन्ति यक्षिण्यधिपतित्वं भवति ॥ ३ ॥

इसका विधान : पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर मन्त्र का ३२ हजार जप करे। दही, दूध और नैवेद्य देने से मन्त्र सिद्ध होता है। इसके बाद भूत-प्रेत तथा पिशाचादि वश में हो जाते हैं और सेवा करने लगते हैं। इससे यक्षिणियाँ भी दासी हो जाती हैं।

अथ पुत्रदाआम्रयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरुकुरु स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : चूतवृक्षसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत् ॥ ४ ॥

इसका विधान : आम के वृक्षपर चढकर एकाग्र मन से जप करे। पुत्रहीन मनुष्य इससे पुत्र प्राप्त करता है—यह शङ्कर का कथन निष्फल नहीं होता। इस मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये।

अथ अशुभक्षयकरीधात्रीयक्षिणी मन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ऐं क्लीं नमः। इति चतुरक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : धात्रीमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। अशुभक्षय-कारिण्या यक्षिण्या मनुमुत्तमम्। अयुतं जपेत् ॥ ५ ॥

इसका विधान : आँवले के वृक्ष की जड़ पर बैठकर इस अशुभ का क्षय करनेवाली यक्षिणी के उत्तम मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये।

अथ विद्यादात्र्युदुम्बर यक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र के अनुसार ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : औदुम्बरंसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। भवेत्पुस्तक-संसिद्धिः सर्वविद्याश्चतुर्दश। अयुतं जपेत् ॥ ६ ॥

इसका विधान : गूलर के वृक्ष पर बैठकर एकाग्रचित्त से मन्त्र का

जप करना चाहिये। इससे पुस्तक की सिद्धि होती है और चौदहों विद्यायें प्राप्त होती हैं। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

अथ विद्यादात्रीनिर्गुण्डीयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सरस्वत्यै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : निर्गुण्डीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। विद्या प्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत् ॥ ७ ॥

इसका विधान : निर्गुण्डी की जड़ पर बैठकर एकाग्र मन से जप करें। इससे नित्य विद्या प्राप्त होती है। शङ्कर का यह कथन निष्फल नहीं होता। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

अथ जयाअर्कयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रसिद्ध भाण्डागार में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरुकुरु स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

दत्तात्रेय तन्त्र में इसका ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ जयं कुरुकुरु स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अर्कमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। यक्षिणीं च जयां नाम सर्वकार्यकरीं सदा। अयुतं जपेत् ॥ ८ ॥

इसका विधान : मदार की जड़ पर बैठकर एकाग्रचित्त होकर इस सर्वकार्यकरी जयायक्षिणी के मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये।

अथ सन्तोषाश्वेतगुञ्जायक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ जगन्मात्रे नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : श्वेतगुञ्जासमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। सन्तोषाख्या यक्षिणी तु ददाति वांछितं फलम् ॥ ९ ॥

इसका विधान : श्वेत गुञ्जा पर आरूढ़ होकर एकाग्रचित्त से जप करने से यह सन्तोषाख्या यक्षिणी वाञ्छित फल देती है।

अथ राज्यदातुलसीयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लीं क्लीं नमः। इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : तुलसीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। अकस्माद्राज्यमाप्नोति नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत् ॥ १० ॥

इसका विधान : तुलसी की जड़ पर बैठकर एकाग्रचित्त से जप करने से मनुष्य अकस्मात् राज्य प्राप्त करता है। शङ्कर का यह कथन निष्फल नहीं होता। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

अथ राज्यदाअङ्कोलयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रौं नमः। इति चतुरक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अङ्कोलवृक्षमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। राजाधिराजो भवति नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत्॥ ११॥

इसका विधान : अङ्कोल वृक्ष पर चढ़कर एकाग्रचित्त हो १० हजार जप करने से साधक राजाधिराज हो जाता है—शङ्करजी का यह कथन निष्फल नहीं हो सकता।

अथ कुशयक्षिणी मन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वाङ्मयायै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : कुशमूलसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत्॥ १२॥

इसका विधान : कुशा की जड़ पर बैठकर एकाग्रचित्त से दश हजार जप करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं—शङ्करजी का यह कथन निष्फल नहीं होता।

अथ अपामार्गयक्षिणीमन्त्रप्रयोगः।

दत्तात्रेय तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं भारत्यै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अपामार्गसमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। वाचां सिद्धिर्भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्। अयुतं जपेत्॥ १३॥

इसका विधान : अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ पर बैठकर एकाग्रचित्त से १० हजार जप करने से वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है—शङ्करजी का यह वचन निष्फल नहीं होता।

अथ क्षीरार्णवायक्षिणीसाधनम्।

प्राकृत ग्रन्थ में १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः। इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : निजगृहे द्वारवेदिकायां स्थित्वा रात्रौ पञ्चदशशतं जपेत् दशदिनान्तरे प्रसन्ना भवति घृतक्षीरदधिकदलीफलानि ददाति।१४

इसका विधान : अपने घर में रात के समय द्वार की वेदी पर बैठकर मन्त्र का पन्द्रह सौ जप करे। दश दिन में क्षीरार्णवा यक्षिणी प्रसन्न होती है और घी, दूध, दही तथा केला देती है।

अथ उच्छिष्टयक्षिणीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में १४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ जगत्त्रयमातृके पद्मनिभे स्वाहा । इति चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः ।

दूसरे मत के अनुसार १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

जगत्त्रयमातृके पद्मनिधे स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण सर्वावस्थायां पञ्चविंशतिसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् प्रसन्ना भवति अन्नवस्त्रेण परिपूर्णं करोति ॥ १५ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र का जप किसी भी अवस्था में (अर्थात स्नान करके अथवा बिना स्नान के, पवित्र अथवा अपवित्र अवस्था में, बैठे या लेटे, चलते-फिरते या उच्छिष्ट अवस्था में) २५ हजार जप प्रतिदिन करना चाहिये। इससे यक्षिणी प्रसन्न होकर अन्न-वस्त्र से परिपूर्ण करती है। मतान्तर के अनुसार पाचवें दिन जप का दशांश हवन भी करना चाहिये।

अथ चन्द्रामृतयक्षिणीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ गुलुगुलुचन्द्रामृतमयिअवजालितं हुलुहुलुचन्द्रनीरेस्वाहा । इति षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : गृहे वारण्य एकान्ते लक्षमेकं जपेन्मनुम् । पुष्पधूपादिभिः पूजां नित्यं कुर्यात्प्रयत्नतः । पञ्चामृतैर्दशांशेन हुते देवी प्रसीदति । दीनाराणां सहस्रेस्तु प्रत्यहं तोषयेत्सती ॥ १६ ॥

इसका विधान : घर में या वन में एकान्त स्थान पर मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये। पुष्प तथा धूप आदि से नित्य यत्नपूर्वक पूजा और जप का दशांश पञ्चामृत से होम करे। ऐसा करने से देवी प्रसन्न होकर प्रतिदिन १ हजार दीनार साधक को देकर सन्तुष्ट करती है।

अथ स्वामीश्वरीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : एकान्ते तु शुचौ देशे त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रकम् । मासमेकं जपेन्मन्त्री ततः पूजां समारभेत् । पुष्पधूपादिनैवेद्यैः प्रदीपैर्घृतपूरितैः । रात्रावभ्यर्चयेत्सम्यक्सुस्थिरः सुमनाः सुधीः । अर्द्धरात्रे गते

देवी समागत्य प्रयच्छति। रस रसायनं दिव्यं वस्त्रालङ्कारभूषणम् ॥१७॥

इसका विधान : एकान्त और पवित्र देश में तीनों सन्ध्याओं में नित्य तीन हजार जप एक मास तक करना चाहिये। इसके बाद पूजा आरम्भ करे। पुष्प, धूप, नैवेद्य और घी से पूर्ण दीपों से रात को सुस्थिर तथा उत्तम मन से युक्त होकर पूजन करे। आधी रात व्यतीत होने पर देवी आकर रस-रसायन, दिव्यवस्त्र, अलङ्कार तथा आभूषण देती है।

अथ महामायाभोगयक्षिणीसाधनम्।

प्राकृत ग्रन्थ में १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो महामायामहाभोगदायिनी हुं स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पञ्चसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् मिष्टान्नं भुक्त्वा पञ्चमे वा घृतं च तेन दशांशतो होमः ततो देवी प्रसन्ना भवति वरं ददादि सर्वस्त्रियः स्वस्त्री वा वश्या भवति राजमान्यो वश्यो भवति नृपतिश्च पञ्चमुद्राः प्रतिदिनं ददाति ॥ १८ ॥

इसका विधान : प्रतिदिन मन्त्र का पाँच हजार जप करने से देवी प्रसन्न होती है। पाँचवे दिन मिष्ठान्न या घी खाकर जप का दशांश होम करे। देवी प्रसन्न होकर वर देती है। उसकी कृपा से सभी स्त्रियाँ अथवा अपनी स्त्री वश में होती है। साधक राज्यमान हो जाता है। राजा भी वश में हो जाता है। देवी प्रतिदिन पाँच मुद्रायें देती है।

अथ त्यागासाधनम्।

शिवार्चन चन्द्रिका में २३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

अहो त्यागी महात्यागी अर्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं ह्रीं स्वाहा। इति त्रयोविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

एक दूसरे मत से २२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अहो त्यागि मम त्यागार्थं देहि मे वित्तं वीरसेवितं स्वाहा। इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं जपेत्त्यागात्प्रसीदति। ददाति चिन्तितानर्थांस्तस्मै भोगांश्च मन्त्रिणे ॥ १९ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र का चार लाख जप करने से त्यागा प्रसन्न होकर साधक को अभिलषित पदार्थ तथा भोग आदि देती है।

अथ सर्वाङ्गसुलोचनासाधनम्।

शिवार्चन चन्द्रिका में २२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कुवलये हिलिहिलि कुरुकुरु सिद्धिं सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा । इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लक्षत्रयं जपेन्मन्त्रं दशांशं गुग्गुलुं हुनेत् । लाक्षामुत्पलकं वाथ ध्यात्वा सर्वाङ्गलोचना । पट्टीपट्टे वा संलिख्य होमान्ते चिन्तिता सदा ॥ २० ॥

इसका विधान : मन्त्र का ३ लाख जप और जप का दशांश गुग्गुल से होम करना चाहिये । पट्टी या वस्त्र पर लाख से कमल लिखकर होम के अन्त में सदा सर्वाङ्गसुलोचना का ध्यान करना चाहिये ।

अथ भूतलोचनासाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ भूते सुलोचनेल्वम् । इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लक्षमुत्पलशाकोत्थं हुत्वा मन्त्रमिमं जपेत् । लक्षैकादशमावर्त्य हुत्वा मध्ये शशिग्रहे । अथवा मालतीपुष्पैर्हुत्वा भानुसहस्रकम् । भानुभुक्ते भवेद्यावत्पूर्णान्ते सिध्यति ध्रुवम् । सहस्रं तु जपाद्यन्ते सहस्राणां तु भोजनम् ॥ २१ ॥

इसका विधान : एक लाख कमल का हवन करके चन्द्रग्रहण में मन्त्र का ११ लाख जप करे । अथवा मालती के फूलों से सूर्यग्रहण में बारह हजार होम करना चाहिये । जब ग्रहण से सूर्य का मोक्ष होता है तब मन्त्र सिद्ध होता है । फिर सहस्रबार जपने से सहस्र मनुष्यों को भोजन प्राप्त होता है ।

अथ जलपाणिसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वलज्वल हुं ल्बुं स्वाहा । इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : शाकयूषपयःसक्तुभक्षः श्वेततमासने । देवतां पूजयेन्नित्यं जपेल्लक्षत्रयोदशम् । पायसं होमयेत्पश्चात्सहस्रैकेन सिध्यति । नित्यं लोकसहस्रस्य भोजनं सा प्रयच्छति । लक्षायुर्दिव्यवस्त्राणि दत्ते सा शङ्करोदिता ॥ २२ ॥

इसका विधान : शाक, यूष, दूध, सत्तू में से जो भी मिले उसे खाकर श्वेततम आसन पर देवता का पूजन करना तथा ३ लाख मन्त्र का जप करना चाहिये । इसके बाद खीर की एक सहस्र आहुतियों से होम करना चाहिये । इससे मन्त्र सिद्ध होता है और तब जलपाणि एक सहस्र व्यक्तियों को भोजन, लाख वर्ष की आयु तथा दिव्य वस्त्र देती है—ऐसा शङ्कर ने कहा है ।

अथ मातङ्गेश्वरीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मातङ्गेश्वर्यै नमोनमः । इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ।

एक भिन्न मत से मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ॐ क्लीं नमो मातङ्गेश्वरि नमः ।

अस्य विधानम् : घृतदीपसम्मुखे लक्षं जपेत् । तद्दशांशतो होमः । प्रसन्ना भवति स्त्रीभावे स्त्रीराजलक्ष्मीमहिषीत्यादिनानासमूहं ददाति ॥ २३ ॥

इसका विधान : घी के दीपक के सम्मुख एक लाख जप करना और उसका दशांश होम करना चाहिये । स्त्री भाव से पूजन करने से प्रसन्न होती है और स्त्री, राजलक्ष्मी, महिषी आदि नाना प्रकार की सामग्रियाँ देती है । एक दूसरे मत से १ लाख जप और तद्दशांश होम करने से देवी अन्न देती है ।

विद्यायक्षिणीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पञ्चविंशतिसहस्रं जपेत् । पञ्चमेवा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्ता भवति ॥ २४ ॥

इसका विधान : मन्त्र का २५ हजार जप और पाँचवे दिन जप का दशांश होम करना चाहिये । इससे विद्या प्राप्त होती है ।

अथ हटेलेकुमारीसाधनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो हटेलेकुमारि स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : द्विसहस्रं प्रतिदिनं जपेत् । ततः सप्तदिनान्तरे बन्धमुक्तो भवति । दुग्धाज्येन दशांशतो होमः कुमारीभोजनं च कुर्यात् । तदा प्रसन्ना भवति ॥ २५ ॥

इसका विधान : प्रतिदिन मन्त्र का २ हजार जप करना चाहिये । इसके बाद सात दिन में मनुष्य बन्धन से मुक्त हो जाता है । दूध और घी से जप का दशांश होम करना चाहिये । फिर कुमारियों को भोजन करने से देवी प्रसन्न होती है ।

अथ बन्दीसाधनम् ।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हिलिहिलि बन्दीदेव्यै स्वाहा ।

इसका विधान :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीबन्दीमन्त्रस्य भैरवऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः बन्दीदेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । बन्दीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । हिलि तर्जनीभ्यां नमः २ । हिलि मध्यमाभ्यां नमः ३ । बन्दी अनामिकाभ्यां नमः ४ । देव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

इसी प्रकार हृदयादिषडङ्गन्यास भी करे । इस प्रकार सब न्यास करके ध्यान करे :

सतोयपाथोदसमानकान्तिमंभोजपीयूषकरीरहस्ताम् । सुराङ्गना-सेवितपादपद्मां भजामि बन्दीं भवबन्धमुक्त्यै ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में 'आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठ देवताओं की पूजा करके जयादि आठ नव-पीठशक्तियों की पूजा करे । इसमें क्रम यह है :

पूर्वादिक्रमेण । ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये । ॐ मङ्गलायै नमः ९ । (बन्दी पूजन यन्त्र देखिये चित्र ७)

इससे पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपत्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जल-धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये बन्धे एह्येहि नमः ।

इस मन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके, प्राणप्रतिष्ठा करके और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान करे और फिर पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे : उसमें क्रम यह है :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ हृदयाय नमः[१] १। ह्रिलि शिरसे स्वाहा[२] २। ह्रिलि शिखायै[३] वषट् ३। बन्दी कवचाय[४] हुं ४। देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्[५] ५। स्वाहाऽस्त्राय फट्[६] ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त :

ॐ काल्यै नमः[७] १। ॐ तारायै नमः[८] २। ॐ भगवत्यै नमः[९] ३। ॐ कुब्जायै नमः[१०] ४। ॐ शीतलायै नमः[११] ५। ॐ त्रिपुरायै नमः[१२] ६। ॐ मातृकायै नमः[१३] ७। ॐ लक्ष्म्यै नमः[१४] ८।

इत्यष्टौ मातृकाः पूजयेत्। ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदश[१५-२४] दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि[२५-३४] च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्विलक्षजपः। पायसान्नेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : लक्षयुग्मं जपेन्मन्त्री पायसान्नैर्दशांशतः। एवमाराधिता बन्दी प्रयच्छेदीप्सितं वरम्। एकविंशतिघस्रान्तमयुतं प्रत्यहं जपेत्। ब्रह्मचर्यरतो मन्त्री गणेशार्चनपूर्वकम्। कारागृहनिबद्धस्य मोक्ष एवं कृते भवेत्।

इससे आठों मातृकाओं की पूजा करे। इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों[१५-२४] और वज्रादि आयुधों[२५-३४] की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण दो लाख जप है। खीर से दशांश होम करना चाहिये। फिर तत्तद्दशांश तर्पण मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि दो लाख जप और दशांश खीर से होम करे। इस प्रकार पूजित वन्दी देवी अभीष्ट वर देती है। २१ दिनों तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुये साधक को गणेश-पूजन पूर्वक प्रतिदिन १० हजार मन्त्रों का जप करना चाहिये। इस प्रकार करने से वन्दीगृह में पडे व्यक्ति की निश्चित रूप से मुक्ति हो जाती है।

अन्य प्र० : अपूपोपरि घृतेन चतुरस्रान्तर्वर्तिठकारं विलिख्य तत्रामुकं मोचयेति लिखेत् दिक्षुमायाबीजं च अष्टादशार्णमन्त्रेण तं वेष्टयित्वा तत्र देवीमावाह्याभ्यर्च्य कारागृहस्थायाऽपूपं दद्यात्। स च तज्जग्ध्वा बन्धनान्मुच्यते।

अन्य प्रयोग : अपूप (पूआ) के ऊपर घी से चतुर्भुज बनाकर उसके कोणों पर ठकार लिखकर उसमें 'अमुकं मोचय' लिखे। दिशाओं में मायाबीज (ह्रीं) लिखे। फिर उसे मन्त्र के १८ वर्णों से वेष्टित करके उसमें देवी का आवाहन कर पूजा करे। वन्दीगृह में पड़े व्यक्ति को वह पूजित अपूप देवे। वन्दी उसको खाते ही वन्धनमुक्त हो जाता है। वेष्टन के लिये १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं ह्रीं श्रीं बन्दि अमुष्य बन्धमोक्षं कुरुकुरु स्वाहा।

इस प्रकार वह पूजित देवी बन्धन से मुक्ति दिलानेवाली होती है।

अथाष्टाप्सरोदेवकन्यासाधनम्।

सबसे पहले वाहनादि मुद्रायें प्रदर्शित करे।

द्विमुष्टिसंयुक्तौ उभौ हस्तौ कमलावर्त्तयोगेन मध्यमांगुल्या सूचिता अष्टाप्सरसावाहनमुद्रा ॥ १ ॥ उभाभ्यां षट्ककरा सर्वाप्सरोवशङ्करी सान्निध्ये अग्निमुखमुद्रा सर्वत्र कामसाधिनी ॥ २ ॥ उभाभ्यां हस्ताभ्यां कमलावर्तयोगेन सर्वाप्सरोमोहिनी अनया मुद्रया वद्धमात्रया दासी भवति ॥ ३ ॥

दोनों मुट्ठियों को संयुक्त कर दोनों हाथों को कमलावर्त योग से मध्यमा अँगुली द्वारा सूचित आठ अप्सराओं की आवाहन मुद्रा बनती है। इसके साथ ही दोनों हाथों से छः हाथवाली सभी अप्सराओं को वश में करनेवाली अग्निमुख मुद्रा सब स्थानों में इष्ट को सिद्ध करनेवाली होती है। दोनों हाथों से कमलावर्त योग से समस्त अप्सराओं की इस मुद्रा के बन्धन मात्र से अप्सरायें दासी हो जाती हैं।

आठ अप्सराओं के आवाहनादि का मन्त्र इस प्रकार है :

तत्क्षणात्सर्वाप्सरसागच्छागच्छ हूं यः यः ॥ १ ॥

इस मन्त्र से अप्सराओं का आवाहन होता है।

ॐ सर्वसिद्धिभोगेश्वरि स्वाहा ॥ २ ॥

इससे सान्निध्यकरण करना चाहिये।

ॐ कामप्रियायै स्वाहा ॥ ३ ॥

इससे अभिमुखीकरण करना चाहिये।

यदि अप्सरायें सिद्ध न हों तो क्रोधसहित क्रोधमन्त्र का जप करना चाहिये। क्रोधमन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हूं वः फट्।

इसके जप मात्र से उनके शिर के सैंकड़ों टुकड़े हो जाते हैं अतः भय से वे आ जाती हैं।

ॐ सबन्धसबन्धस्तनू हुं फट् ।

इस मन्त्र से वेष्टित करे।

ॐ चलचल वशमानय हुं फट् ।

इससे सभी अप्सराओं को वश में करना चाहिये ।

अथ शशिदेव्यप्सरोमन्त्रप्रयोगः ।

भूतडामर तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं शशिदेव्यागच्छागच्छ स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पर्वतशिखरमारुह्य लक्षं जपेत् । सिद्धो भवति । पौर्णमास्यां यथाविभवतः पूजां कृत्वा घृतं दीपं प्रज्वाल्य सकलरात्रि जपेत् । प्रभाते नियतमागच्छति । स्वयं देव्यै आगतायै चन्दनेनार्घो देयः । वाचा भाषते । साधकेनैवं वक्तव्यं मम भार्या भवेति । सिद्धद्रव्यं रसरसायनं ददाति । वर्षसहस्रं जीवति । इति शशिदेव्याप्सरःसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥

इसका विधान : पर्वत-शिखर पर बैठकर मन्त्र का १ लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है । पूर्णमासी के दिन अपनी आर्थिक स्थित के अनुसार घी का दीपक जलाकर रात भर जप करे । प्रातःकाल निश्चित रूप से देवी आती है । स्वयं देवी के आने पर चन्दन से अर्घ्य देना चाहिये । तब वह वाणी से भाषण करती है । उस समय साधक को इस प्रकार कहना चाहिये : 'तुम मेरी भार्या होओ ।' तब देवी सिद्ध द्रव्य और रस-रसायन देती है जिससे साधक एक हजार वर्ष तक जीवित रहता है । शशि देवी नामक प्रथम अप्सरा का साधन समाप्त ॥ १ ॥

अथ तिलोत्तमाप्सरोमन्त्रप्रयोगः ।

इसका १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है ।

ॐ श्रीं तिलोत्तमे आगच्छागच्छ स्वाहा । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : चन्दनक्षीराहारेणायुतं जपेत् दिवसानि सप्त । दिवसे सप्तमे उदारपूजां कृत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रिं जपेत् । प्रभाते नियतमागच्छति । ईषद्धसितरागेण पुरस्तिष्ठति । आलिङ्गनं चुम्बनं च तया सह कर्तव्यं तूष्णींभावेन कामयेत् । एवं सिद्धा भवति । यमिच्छति कामं तं ददाति । पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति । इति तिलोत्तमाप्सरःसाधनं द्वितीयम् ॥ २ ॥

इसका विधान : चन्दन और दूध का आहार करके सात दिन तक दश हजार मन्त्र का जप करे। सातवें दिन उदारपूजा करके शुक्लपक्ष की अष्टमी को पर्वत शिखर पर चढकर पूरी रात जप करे। प्रातःकाल देवी निश्चित रूप से आती है और मुस्कराते हुये सामने स्थित होती है। उसके साथ आलिङ्गन और चुम्बन करते हुये शान्त भाव से कामना करनी चाहिये। इस प्रकार यह देवी सिद्ध होकर साधक को मनोभिलषित सब कुछ देती है। यहाँ तक कि अपनी पीठ पर बैठाकर स्वर्गलोक में भी ले जाती है और पुनः राज्य भी देती है। इति द्वितीय तिलोत्तमा अप्सरा-साधन ॥ २ ॥

अथ काञ्चनमालाप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं काञ्चनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : नदी सङ्गमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् दिवसानि सप्त। सप्तमे दिवसे उदारपूजां कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्त्वा सकलां रात्रिं जपेत्। प्रभाते नियतमागच्छति सा च सर्वाशां पूरयति। इति काञ्चनमाला-प्सरःसाधनं तृतीयम् ॥ ३ ॥

इसका विधान : नदी के सङ्गम पर जाकर सात दिन तक आठ हजार मन्त्र का जप करे। सातवें दिन उदारपूजा करे और गुग्गुल का धूप देकर पूरी रात जप करे। प्रातःकाल निश्चित रूप से देवी आती है और समस्त आशाओं को पूर्ण करती है। इति तृतीय काञ्चनमाला अप्सरा-साधन ॥ ३ ॥

अथ कुण्डलाहारिण्यप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं ह्रीं कुण्डलाहारिणि आगच्छागच्छ स्वाहा। इति षोडशा-क्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधिर्न तु। पर्वत-मूर्ध्नि गत्वा अयुतं जपेत्। ततोऽर्द्धरात्रे नियतमागच्छति अर्घो देयः भार्या भवति दीनारलक्षं प्रतिदिनं ददाति। पृष्ठमारोप्य सर्वतो भ्राम-यति रसरसायनं सिद्धद्रव्यं च ददाति। इति कुण्डलाहारिण्यप्सरःसाधनं चतुर्थम् ॥ ४ ॥

इसका विधान : इसकी साधना के लिये न तिथि है, न नक्षत्र है, न

उपवास ही करना है, और न इसकी कोई विधि ही है। पर्वत के शिखर पर जाकर मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये। इसके बाद आधी रात को देवी अवश्य आती है। उस समय उसे अर्घ्य देना चाहिये। तब वह नित्य एक लाख दीनार देती है, अपनी पीठ पर बैठाकर सब स्थानों पर घुमाती है और रस-रसायन तथा सिद्ध द्रव्य देती है। इति चतुर्थं कुण्डलाहारिणी अप्सरा-साधन ॥ ४ ॥

अथ रत्नमालाप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं रत्नमाले आगच्छागच्छ स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : देवायतने गत्वा अष्टसहस्रं जपेन्मासमेकं ततो मासान्ते पौर्णमास्यां पूजां कृत्वा पुनर्जपेत्। तावज्जपेत् यावदर्धरात्रे महानूपुरशब्देनागच्छति आगतायै पुष्पासनं दद्यात्। स्वागतं देव्या इति वक्तव्यं स्वामिन् किमाज्ञापयति तदा साधकेन वक्तव्यं मम भार्या भवेति वर्षसहस्रं जीवति। इति रत्नमालाप्सरःसाधनं पञ्चमम् ॥ ५ ॥

इसका विधान : देवमन्दिर में जाकर एक मास तक मन्त्र का आठ हजार जप करे। महीने के अन्त में पूर्णमासी के दिन पूजा करके पुनः जप करें। यह जप तब तक करता रहे जब तक कि आधी रात को महानूपुर शब्द के साथ देवी आ न जाय। देवी के आने पर उसे पुष्पासन दे और 'स्वागतं देव्याः' यह कहे। जब देवी यह कहे कि 'स्वामिन् किमाज्ञापयति' तब साधक कहे कि 'मम भार्या भव इति।' तब साधक देवी के प्रसाद से एक सहस्र वर्षों तक जीवित रहता है। इति पञ्चम रत्नमाला अप्सरा-साधन ॥ ५ ॥

अथ रम्भाप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में ११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सः रम्भे आगच्छागच्छ स्वाहा। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चन्दनेन मण्डलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् त्रिसन्ध्यं ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत्। प्रभाते शीघ्रमागच्छति। यदि शीघ्रं नागच्छति तदा म्रियते। आगता सा भार्या भवेति यथेष्टं कामयितव्या दश-वर्षसहस्राणि जीवति। सर्वाशां पूरयति। मृतो राजकुलेषु जायते। इति रम्भाप्सरःसाधनं षष्ठम् ॥ ६ ॥

इसका विधान : प्रतिपदा से पूजा आरम्भ करके चन्दन से मण्डल

बनाकर गुग्गुल-धूप देकर तीनों सन्ध्याओं में आठ हजार मन्त्र का जप करे। पूर्णमासी के दिन महती पूजा करके रात भर जप करे। प्रातःकाल देवी शीघ्र आती है। यदि शीघ्र नहीं आती तो वह मर जाती है। जब देवी आ जाय तब कहे कि 'तुम मेरी भार्या बनो' यह यथेष्ट कामना करे। देवी की कृपा से साधक दश सहस्र वर्षों तक जीवित रहता है और देवी उसकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करती है। मरणोपरान्त साधक राजकुल में जन्म लेता है। इति षष्ठम् रम्भा अप्सरा-साधन ॥ ६ ॥

अथ उर्वश्यप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं उर्वशि आगच्छागच्छ स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चन्दनेन मण्डलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्वा अष्टसहस्रं जपेत् त्रिसन्ध्यम्। ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत् प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भोभो साधक किमाज्ञापयति तदासाधकेन वक्तव्यं भार्याभवेति रसरसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति परस्त्र्यभिगमनं न कर्त्तव्यं पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति। इति उर्वश्यप्सरः साधनं सप्तमम् ॥ ७ ॥

इसका विधान : प्रतिपदा से पूजा आरम्भ कर चन्दन से मण्डल बनाकर गुग्गुल-धूप देकर तीनों सन्ध्याओं में आठ हजार जप करे। इसके बाद पूर्णमासी को महती पूजा करके पूरी रात जप करे। प्रातःकाल देवी शीघ्र आती है। उसे कुसुमासन देना और 'स्वागतं देव्याः' यह कहना चाहिये। जब देवी बोले कि 'भो भो साधक किमाज्ञापयति' तब साधक 'मम भार्या भव इति' यह कहे। तब देवी रस-रसायन तथा सिद्ध द्रव्य देती है। साधक को परस्त्रीगमन नहीं करना चाहिये। इससे साधक ५ हजार वर्षों तक जीवित रहता है। इति सप्तम उर्वशी अप्सरा-साधन ॥ ७ ॥

अथ श्रीभूषण्यप्सरोमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १५ अक्षरो का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वाः श्रीं वाः श्रीभूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : कुंकुमेन भूर्जपत्रे श्रीभूषणीप्रतिमां विलिख्य रात्रावेकाकी शुचिः प्रतिदिनमष्टसहस्रं जपेत् मासमेकं यावत्। मासान्ते उदारपूजां कृत्वा तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं नियतमागच्छति। आगता सा शीघ्रं कामयितव्या तुष्टा भवति सुवर्णमुक्तादीनि ददाति दिनेदिने कामिक-

भोजनं ददाति रसरसायनं ददाति। इति श्रीभूषण्यप्सरःसाधनमष्टमम् ॥ ८ ॥

इसका विधान : कुंकुम से भोजपत्र पर श्रीभूषणी अप्सरा की प्रतिमा लिखकर रात में एकाकी पवित्र होकर प्रतिदिन मन्त्र का आठ हजार जप एक मास तक करे। महीने के अन्त में उदारपूजा करके तब तक जप करे जब तक अर्द्धरात्रि के समय देवी निश्चित रूप से आ नहीं जाती। उसके आने पर शीघ्र उससे प्रार्थना करनी चाहिये। वह प्रसन्न होने पर स्वर्ण, मोती आदि और इच्छानुसार भोजन देती है। इति अष्टम् श्रीभूषणी अप्सरा-साधन ॥ ८ ॥

इत्यष्टाप्सरःसाधनं समाप्तम्।

अथाष्टकिन्नरीसाधनम्।

तत्रादौ सूचना। यद्यष्ट किन्नर्यो न सिद्धयन्ति तदा क्रोधसहितः क्रोधमन्त्रं जपेत्। क्रोधमन्त्रो यथा :

प्रारम्भिक सूचना : आठों किन्नरियाँ जब सिद्ध नहीं होतीं तब क्रोध मन्त्र का जप करना चाहिये। क्रोध मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आकट्टः कट्टः हूं वः फट्।

अनेन जपमात्रेण शिरः स्फुटति शतखण्डं विशीर्यंति तदागच्छन्ति।

इस मन्त्र के जप मात्र से उनका शिर सौ टुकड़ों में फटने लगता है, अतः वे (किन्नरियाँ) तत्काल आ जाती हैं।

अथ मञ्जुघोषामन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं मञ्जुघोषे आगच्छागच्छ स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : प्रतिपदमारभ्य पूजां कृत्वा चन्दनेन मण्डलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्वाष्टसहस्रं जपेत् त्रिसन्ध्यम्। ततः पौर्णमास्यां महतीं पूजां कृत्वा सकलां रात्रिं जपेत्। प्रभाते शीघ्रमागच्छति कुसुमासनं दद्यात् स्वागतमिति वक्तव्यं भोभोसाधक किमाज्ञापयति तदा साधकेन वक्तव्यं भार्या भवेति। रसरसायनसिद्धद्रव्याणि ददाति परस्त्र्यभिगमनं न कर्तव्यं पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति। इति मञ्जुघोषाकिन्नरीसाधनं प्रथमम् ॥ १ ॥

इसका विधान : प्रतिपदा से पूजा आरम्भ करके चन्दन से मण्डल बनाकर गुग्गुल-धूप देकर तीनों सन्ध्याओं में आठ हजार मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त पूर्णमासी के दिन महती पूजा करके पूरी रात जप करे। प्रातः

काल देवी शीघ्र आती है। उसके आने पर उसे कुसुमासन देकर कहना चाहिये कि 'स्वागतं देव्याः।' जब देवी पूछे कि 'भो भो साधक किमाज्ञापयति' तब साधक को कहना चाहिये कि 'मम भार्या भव।' इससे प्रसन्न होकर देवी रस-रसायन तथा सिद्ध द्रव्य देती है। इसमें परस्त्रीगमन नहीं करना चाहिये। साधक ५ हजार वर्ष तक जीवित रहता है। इति प्रथम मंजुघोषा किन्नरी-साधन ॥ १ ॥

अथ मनोहारीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मनोहार्यै स्वाहा। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पर्वतमूर्ध्नि समारूढोष्टसहस्रं जपेत्। अष्टकिन्नरीणां जपे समाप्ते महतीं पूजां कृत्वा गोमांसगुग्गुलुसमन्वितेन धूपो देयः तावज्जपेत् यावदर्धरात्रं किन्नरी नियतमागच्छति तस्या न भेतव्यं भोभो साधक किमाज्ञापयसि साधकेन वक्तव्यं भद्रेऽस्मद्भार्या भव। स्कन्धे आरोप्य देवलोकमपि नयति दिव्यकामिकभोजनं ददाति अष्टोत्तरसाधनं भवति। इति मनोहारीकिन्नरीसाधनं द्वितीयम् ॥ २ ॥

इसका विधान : पर्वत शिखर पर बैठकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। अष्टकिन्नरियों के जप की समाप्ति पर महती पूजा करके गोमांस तथा गुग्गुल-समन्वित धूप देने के बाद तब तक जप करे जब तक अर्द्धरात्रि के समय देवी आ न जाय। वह निश्चित रूप से आती है। उससे भयभीत नहीं होना चाहिये। जब वह पूछे 'भो भो साधक किमाज्ञापयसि' तब साधक को कहना चाहिये कि 'भद्रेऽस्मद्भार्या भव'। तब वह अपने कन्धे पर बैठाकर देवलोक तक साधक को ले जाती है और इच्छानुसार भोजन देती है। वह आठ से अधिक का साधन होती है। इति द्वितीय मनोहारी किन्नरी-साधन ॥ २ ॥

अथ सुभगामन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सुभगे स्वाहा। इति षडक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पर्वतमूर्ध्नि विहारेवाऽयुतं जपेत्। दिव्यकोमलहस्तेन पादमुपचारयति। शीघ्रं कामयितव्या भार्या भवति दिनेदिने पञ्चदीनाराणि ददाति। इति सुभगाकात्यायनीमन्त्रप्रयोगस्तृतीयः ॥३॥

इसका विधान : पर्वत के शिखर पर अथवा विहार में मन्त्र का दश हजार जप करे। दिव्य कोमल हाथों से देवी पैर दबाती है और शीघ्र ही

इच्छानुकूल भार्या होकर प्रतिदिन पांच दीनार देती है। इति तृतीय सुभगा कात्यायनी मन्त्र प्रयोग ॥ ३ ॥

अथ विशालनेत्राकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विशालनेत्रे स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : नदीकूले गत्वाऽयुतं जपेत्। पुनर्मासान्ते सकला रात्रिं जपेत्। प्रभाते नियतमागच्छति। आगता सा भार्या भवति। दिनेदिने पञ्चदीनाराणि ददाति। इति विशालनेत्राकिन्नरीमन्त्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

इसका विधान : नदी के तट पर जाकर मन्त्र का दश हजार जप करे। पुनः मासान्त पर पूरी रात जप करने से प्रातः निश्चित रूप से देवी आकर भार्या बन जाती है और प्रतिदिन पांच दीनार देती है। इति चतुर्थ विशालनेत्राकिन्नरी मन्त्र-प्रयोग ॥ ४ ॥

अथ सुरतिप्रियाकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सुरतिप्रिये स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : रात्रौ नदीसङ्गमे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत्। जपान्ते नियतमागच्छति। प्रथमदिवसे दर्शनं ददाति। द्वितीयदिवसे पुरतस्तिष्ठति वाचा भाषते तृतीयदिवसे कामयितव्या नियतं तिष्ठति भार्या भवति सर्वकर्माणि करोति अष्टौ दीनाराणि वस्त्रयुगलं ददाति। इति सुरतिप्रियाकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः पञ्चमः ॥ ५ ॥

इसका विधान : रात को नदी के सङ्गम पर जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। जप के अन्त में देवी निश्चित रूप से आकर प्रथम दिन दर्शन देती है। दूसरे दिन सामने खड़ी होकर बात करती है। तीसरे दिन देवी से प्रार्थना करनी चाहिये। तब देवी निश्चित रूप से स्थित होती है और भार्या बनकर आठ दीनार तथा एक जोड़ा कपड़ा प्रतिदिन देती है। इति पञ्चम सुरतिप्रिया किन्नरी मन्त्रप्रयोग ॥ ५ ॥

अथ अश्वमुखीकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः।

इसका भूतडामर तन्त्र में सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अश्वमुखि स्वाहा। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानं भूतडामरतन्त्रे : पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत्। तदा

शीघ्रमागच्छति रसरूपेण पुरस्तिष्ठति आलिंग्य चुम्बेत् तूष्णींभावेन कामयितव्या भार्या भवति। अष्टौ दीनाराणि प्रयच्छति दिव्यकामिक-भोजनं ददाति। इति अश्वमुखीकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥

इसका विधान : भूतडामर के अनुसार पर्वत शिखर पर जाकर जप करने से देवी शीघ्र आती है और रस के रूप में सामने स्थिति होती है। उसका आलिङ्गन और चुम्बन लेकर शान्त भाव से प्रार्थना करना चाहिये। तब वह साधक की भार्या बन जाती है और प्रतिदिन आठ दीनार तथा इच्छानुसार भोजन देती है। इति षष्ठम अश्वमुखी किन्नरीमन्त्रप्रयोग ॥ ६ ॥

अथ दिवाकरमुखीकिन्नरीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ दिवाकरमुखि स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : पर्वतमूर्ध्नि गत्वायुतं जपेत्। नियतसमये समागच्छति भार्या भवति अष्टौ दीनाराणि प्रयच्छति। इति दिवाकरमुखी-मन्त्रप्रयोगः सप्तमः ॥ ७ ॥

इसका विधान : पर्वत शिखर पर जाकर १० हजार जप करने से नियत समय पर आकर देवी साधक की भार्या बनती है और आठ हजार दीनार प्रतिदिन देती है। इति सप्तम दिवाकरमुखी किन्नरी मन्त्रप्रयोग ॥७॥

अथैककिन्नरीमन्त्रादेरभावः। इत्यष्टकिन्नरीसाधनं समाप्तम्।

किन्नरी मन्त्रों में से आठवीं किन्नरी के मन्त्र का अभाव है। अतः सातवी किन्नरी के मन्त्र पर ही आठों किन्नरियों के मन्त्रों को समाप्त समझना चाहिये। इत्यष्टकिन्नरीसाधन समाप्त।

अथाष्टभूतकात्यायनीसाधनम्।

द्वौ करौ मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत्। प्रसार्य तर्जनीं कुर्यात् त्रैलोक्यस्याकर्षिणी मुद्रा साधकाय ब्रह्मसाधनं करोति किं पुनः क्षुद्र-साधनमनया मुद्रयावलोक्य कात्यायनी शीघ्रमागच्छति। कात्यायनी-विद्या पठन मात्रेण सिध्यति।

दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधकर दोनों कनिष्ठाओं को आपस में वेष्ठित करके, तर्जनी को फैलाकर त्रैलोक्याकर्षिणी मुद्रा बनाये। यह मुद्रा ब्रह्म तक को सिद्ध करती है, फिर क्षुद्र साधनों का तो कहना ही क्या। इस मुद्रा को देखकर कात्यायनी शीघ्र आती है। कात्यायनी विद्या पठन मात्र से सिद्ध होती है। इसमें सर्वप्रथम सुभगा कात्यायनी के मन्त्र का प्रयोग यहाँ दे रहे हैं।

तत्रादौ सुभगकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः ।

भूतडामर तन्त्र में ५१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सुरतप्रिये दिव्यलोचने कामेश्वरि जगन्मोहने सुभगे काञ्चनमालाविभूषणनूपुरशब्देनाविशाविश पूरय साधकप्रियं स्वाहा । इत्येकपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रात्रौ राजगृहे गत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् । करवीरकाष्ठेऽग्निं प्रज्वाल्य मालतीपुष्पैर्दधिमधुघृताक्तैरष्टशतं जुहुयात् । तदा पञ्चदिनान्तरे महाभूतेश्वरी भूतराज्ञी महाकात्यायनी पञ्चशतपरिवारेण महानूपुरशब्देनागच्छति । आगतायै कुसुमेनार्घ्यो देयः वक्तव्या माता भगिनी भार्या वा भव । यदि माता भवति न चित्तं दूषयितव्यं दिव्यकामिकभोजनं ददाति सुवर्णालङ्कारं वा ददाति । यदि भगिनी भवति तदा राज्यं ददाति योजन शतादपि स्त्रियमानीय ददाति । यदि भार्या भवति तदा दिव्यस्त्रीसदृशं भोगं ददाति । सर्वाशां परिपूरयति । दशवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते । इति सुभगकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः प्रथमः ॥ १ ॥

इसका विधान : रात में राजगृह में जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करे। कनेर की लकड़ी से अग्नि जलाकर दही, घी और मधु से सिक्त मालती के पुष्पों से आठ सौ आहुतियाँ दे। तब ५ दिनों के बाद महाभूतेश्वरी भूतराज्ञी महाकात्यायनी पाँच सौ परिवार सहित महानूपुर शब्द के साथ आती है। देवी के आने पर पुष्पों से अर्घ्य देना और यह निवेदन करना चाहिये कि माता भगिनी या भार्या बने। यदि माता होती है तो चित्त को दूषित नहीं करना चाहिये। देवी इच्छानुसार भोजन या सुवर्णभूषण देती है। यदि भगिनी होती है तो राज्य तथा सौ योजन से स्त्री लाकर देती है। यदि भार्या होती है तो दिव्य स्त्री की भाँति भोग देती है और सभी आशाओं को पूर्ण करती है। इस साधना से साधक १० हजार वर्षों तक जीवित रहता है और मरणोपरान्त राजकुल में जन्म लेता है। इति प्रथम सुभगाकात्यायनी मन्त्रप्रयोग ॥ १ ॥

अथ कुण्डलकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः ।

भूतडामर तन्त्र में ४२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ यमिनि कृतिनि अकालमृत्युनिवारिणि खड्गत्रिशूलहस्ते शीघ्रं सिद्धिं ददाति हि तां साधक आज्ञापयति ह्रीं स्वाहा । इति द्वाचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रात्रौ उद्यानं गत्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिनानि त्रीणि नूपुरशब्दः श्रूयते । चतुर्थे दिवसेऽष्टमे दिवसे वा शिरःस्थाने मण्डलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वाष्टसहस्रं जपेत् । दिव्यभूतिनी कन्या कुण्डलकात्यायनी स्वगृहमागच्छति आगता च कामयितव्या भार्या भवति दिव्यमुक्ताहारं शयने परित्यज्य प्रभाते गच्छति । इति कुण्डलकात्यायनीमन्त्रप्रयोगो द्वितीयः ॥ २ ॥

इसका विधान : रात को उद्यान में जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करना चाहिये । तीन दिनों तक नूपुर का शब्द सुनाई पड़ता है । चौथे दिन या आठवें दिन शिरःस्थान पर मण्डल बनाकर गुग्गुल का धूप देकर मन्त्र का आठ हजार जप करना चाहिये । तब दिव्य भूतिनी कन्या कुण्डल-कात्यायनी साधक के घर आकर इच्छानुकूल भार्या बनती है और प्रातःकाल शय्या पर दिव्य मोतियों की माला छोड़कर चली जाती है । इति द्वितीय कुण्डलकात्यायनी मन्त्रप्रयोग ॥ २ ॥

अथ चण्डकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः ।

भूतडामर तन्त्र में ६८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं क्रं रुद्रभयङ्करि अट्टाट्टहासिनि साधकप्रिये महाविचित्ररूपे रत्नाकरि सुवर्णहस्ते यमनिकृन्तनि सर्वदुःखप्रशमनि उंउंउंहूंहूंहूं शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ ह्रीं जः स्वाहा । इत्यष्टाधिकषष्ट्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रात्रावेकलिङ्गे गत्वा सहस्रं जपेदेकस्मिन्दिवसे नूपुरशब्दः श्रूयते । द्वितीये दिवसे दिव्यस्त्री पुरतस्तिष्ठति न दूषयति न भाषते । तृतीय दिवसे चाभाषते भोः साधक किमाज्ञापयसि साधकेन वक्तव्यं भो देवि उपस्थायिका भवेति यावज्जीवति तावदुपस्थानं करोति पृष्ठमारोप्य मेरुसागरादीन्नयति पुनरपि वैश्रवणगृहे गत्वा द्रव्यमानीय ददाति जम्बूदीपपादके उत्तमरूपकन्यामानीय ददाति जीवति वर्षशतानि पश्चान्मृतः सामन्तकुलेषु जायते । इति चण्डकात्यायनीमन्त्रप्रयोगस्तृतीयः ॥ ३ ॥

इसका विधान : रात्रि के समय एकलिङ्ग के मन्दिर में जाकर मन्त्र का एक हजार जप करे । प्रथम दिन नूपुर का शब्द सुनाई पड़ता है । दूसरे दिन दिव्य स्त्री सम्मुख स्थित होती है जो न दूषित करती है और न बोलती है । तीसरे दिन साधक से कहती है कि 'भो साधक किमाज्ञापयसि ।' साधक को इसका उत्तर यह देना चाहिये कि 'भो देवि उपस्थायिका भवेति ।' इसके बाद जब तक साधक जीवित रहता है तब तक वह सेवा करती है और

अपनी पीठ पर बैठाकर मेरुपर्वत तथा सागर आदि तक ले जाती है। इतना ही नहीं, कुबेर के घर से द्रव्य और जम्बद्वीप के किनारे से उत्तम रूपवाली कन्या लाकर देती है। मरणोपरान्त साधक सामन्त कुल में जन्म लेता है। इति तृतीय चण्डकात्यायनी मन्त्रप्रयोग ॥ ३ ॥

अथ रुद्रकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं हे हे फट् स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : श्मशाने गत्वासहस्रं जपेद्दिवसानि त्रीणि तदा सर्वभूतिनी रुद्रकात्यायनी शीघ्रमागच्छति आगतायाः कपाले कण्ठे च पूर्णाभं देयं तुष्टा भवति वदति च किं मया कर्तव्यमिति साधकेन वक्तव्यं मातेव भवेति मातृवत्प्रतिपालयति राज्यं ददाति सर्वाशां पूरयति महाधनपतिर्भवति पञ्चवर्षशतानि जीवति मृतो राजकुले जायते। इति रुद्रकात्यायनीमन्त्रप्रयोगश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

इसका विधान : श्मशान में जाकर तीन दिन तक १ हजार जप प्रतिदिन करने से सर्वभूतिनी रुद्रकात्यायनी शीघ्र आती है। उसके आने पर कपाल और कण्ठ में पूर्ण आभा देने से वह सन्तुष्ट होकर पूछती है कि 'मुझे अब क्या करना चाहिये?' इस प्रश्न का उत्तर साधक यह दे कि 'माता के समान हो जाओ।' तदनन्तर वह माता के समान पालन करती है, राज्य देती है, तथा समस्त कामनाओं को पूर्ण करती है। साधक बहुत बड़ा धनी होकर पाँच सौ वर्षों तक जीवित रहता है तथा मरने पर राजकुल में जन्म लेता है। इति चतुर्थ रुद्रकात्यायनी मन्त्रप्रयोग ॥ ४ ॥

अथ महाकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ भूहूलह्लूं फट्। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : रात्रौ नदीसङ्गमे गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा दिव्यस्त्री भूतिनी महाकात्यायनी सह परिवारेणागच्छति आगता च मन्त्रयितव्या तूष्णींभावेन कामयेत्। दिनेदिने पञ्च दीनाराणि वस्त्रयुगलं च ददाति। इति महाकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः पञ्चमः ॥ ५ ॥

इसका विधान : रात को नदी के सङ्गम पर जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करने पर दिव्य स्त्री भूतिनी महाकात्यायनी अपने परिवार के साथ आती है। उसके आने पर उससे वार्तालाप करना और शान्त भाव से

उसकी कामना करना चाहिये। देवी प्रतिदिन ५ दीनार और दो वस्त्र देती है। इति पञ्चम महाकात्यायनी मन्त्र प्रयोग ॥ ५ ॥

अथ सुरकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः।

भूतडामर तन्त्र में ४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ भ्रूं हूं फट्। इति चतुरक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : शून्ये देवालये गत्वाष्टसहस्रं जपेत् तदा स्वयमेव सुरकात्यायनी महावभासं कृत्वाष्टशतपरिवारेण नियतमागच्छति आगतायै चन्दनोदकेन अर्घो देयः तुष्टा भवति रसरसायनं प्रयच्छत्यष्टशतपरिवारस्य वस्त्रालङ्कारभोजनादीनि ददाति पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति मृतो राजकुले जायते। इति सुरकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः षष्ठः ॥ ६ ॥

इसका विधान : शून्य देवालय में जाकर मन्त्र का आठ हजार जप करने से स्वयमेव अत्यधिक तेज फैलाती हुई सुरकात्यायनी आठ सौ परिवारों के साथ निश्चित रूप से आती है। जब वह आ जाय तब उसे चन्दनोदक से अर्घ्य दे। वह प्रसन्न होकर रस-रसायन और आठ सौ परिवारों के लिये वस्त्राभूषण तथा भोजनादि देती है। उसकी कृपा से साधक ५ हजार वर्षों तक जीवित रहता है और मरने के बाद राजकुल में जन्म लेता है। इति षष्ठम सुरकात्यायनी मन्त्र प्रयोग ॥ ६ ॥

जयमुखकात्यायनी १ सर्वभूतकात्यायनी २ द्वयोर्मन्त्रादेरभावः। इत्यष्टकात्यायनीमन्त्रप्रयोगः।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रदेवताखण्डे यक्षिण्यादि-
तन्त्रे द्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥

उक्त ६ के अतिरिक्त एक जयमुखकात्यायनी और दूसरी सर्वभूतकात्यायनी का मन्त्र अब उपलब्ध नहीं है। इति अष्ट कात्यायनी मन्त्रप्रयोग समाप्त।

मन्त्र महार्णव के मिश्रदेवताखण्ड में यक्षिण्यादि तन्त्र विषयक
द्वितीय तरङ्ग समाप्त ॥ २ ॥

तृतीय तरंग

कर्णपिशाचिन्यादि तन्त्र

तत्रादौ षोडशाक्षरमन्त्रोत्पत्तिः ।

कर्णे ते क्षणलोहितोरकगतोनन्तश्चकारो वदातीतानागतशब्दयुक्त-भुवने श्रीवह्निजायान्विता । ताराद्यो मनुरेकलक्षजपितो व्यासेन संसेवितः सुज्ञत्वं लभतेऽचिरेण नियतं पैशाचिकीभक्तितः ॥ १ ॥

उक्त श्लोक के आधार पर १६ अक्षरों का यह मन्त्र बनता है :

ॐ कर्णपिशाचि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा । इति षोडशाक्षरो मन्त्रः ।

इस मन्त्र का एक लाख जप करके व्यासजी ने शीघ्र ही सर्वज्ञता प्राप्त कर ली थी ।

अथ ध्यानम् । कृष्णां रक्तविलोचनां त्रिनयनां खर्वां च लम्बोदरीं बन्धूकारुणजिह्विकां वरवराभीतिकरामुन्मुखीम् । धूम्रार्चिर्जटिलां कपाल-विलसत्पाणिद्वयां चञ्चलां सर्वज्ञां शवहृत्कृताधिवसतिं पैशाचिकीं तां नुमः ॥ २ ॥

ध्यान : कर्णपिशाचिनी देवी का शरीर कृष्ण वर्ण है । तीनों नेत्रों की आभा अरुण वर्ण है और आकार खर्व अर्थात् छोटा है । उसका पेट बड़ा और जिह्वा बन्धूक पुष्प के समान अरुण वर्ण है । देवी के एक हाथ में वरमुद्रा, दूसरे हाथ में अभयमुद्रा तथा शेष दोनों हाथों में दो मनुष्यों के कपाल हैं । उसके शरीर से धूम्रवर्ण की ज्वाला निकलती है । उसका मुख ऊपर को उठा हुआ है, शिर पर ज्वाला विराजमान है । उसकी प्रकृति चञ्चल है । कर्ण पिशाची देवी सब विषयों को जाननेवाली है और सबके हृदय में निवास करती है । इस प्रकार की आकृतिवाली देवी को मैं नमस्कार करता हूं ।

अस्य विधानम् । अर्धरात्रे स्वहृदये देवीं ध्यात्वा मूलं रक्त चन्दनेन लिखित्वा : रक्तचन्दनबन्धूकजपापुष्पादीनि पूजाद्रव्याणि । ॐ अमृतं कुरुकुरु स्वाहा । एतन्मत्रेण सम्प्रोक्ष्य यन्त्रोपरि इष्टदेवतां सम्पूज्य । ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीनबलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरुकुरु स्वाहा । एत-

न्मन्त्रेण दग्धमीनबलिं च दत्त्वार्धरात्रे मन्त्रं जपेत्। पूर्वाह्णे किञ्चिज्ज-पित्वा मध्याह्ने चैकभक्तनिरामिषं भुक्त्वा रात्रावपि तत्तत्संख्यं जपेत्। अन्यत् किञ्चिन्न भोक्तव्यं ताम्बूलादिकं विना जपदशांशेन प्रतिदिनं तर्पणं कुर्यात्। तत्र मन्त्रः : ॐ कर्णपिशाचि तर्पयामि स्वाहा। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः दशांशेन होमः होमाशक्तौ पुनः दशांशतर्पणं कृत्वा वरं प्रार्थ-येत्। सिद्धिलक्षणं गगने हुंकारादिश्रवणदीर्घाग्निशिखारूपसन्दर्शनात्। सिद्धिर्भविष्यतीति ज्ञात्वा तथा विधिमाचरेत्। इति षोडशाक्षरकर्ण-पिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

इसका विधान : आधी रात को अपने हृदय में देवी का ध्यान करके मूलमन्त्र को लाल चन्दन से लिखकर लाल चन्दन, बन्धूकपुष्प तथा जपा पुष्प आदि पूजा के द्रव्य तैयार करके 'ॐ अमृतं कुरुकुरु स्वाहा' इस मन्त्र से प्रोक्षण करके मन्त्र के ऊपर इष्टदेवता की पूजा करके 'ॐ कर्णपिशाचि दग्धमीनबलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा' इस मन्त्र से दग्धमीनबलि देकर आधी रात को मन्त्र का जप करे। पूर्वाह्ण में किञ्चित जप करके मध्याह्न में एक काल निराभिष आहार कर रात्रि में भी उतना ही जप करे। ताम्बूलादि को छोड़ कर अन्य कुछ नहीं खाना चाहिये। जप का दशांश प्रतिदिन तर्पण करे। उसमें मन्त्र यह है : 'ॐ कर्णपिशाचि तर्पयामि स्वाहा'। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। दशांश होम करना चाहिये। होम में अशक्त होने पर प्रतिदिन पुनः दशांश तर्पण करके वर की प्रार्थना करे। सिद्धि का लक्षण तब जानना चाहिये जब आकाश में हुंकार सुनाई पड़े या अग्नि की ज्वाला दिखाई पड़े। सिद्ध हो गई जानकर तदनुसार कार्य करे। इति षोडाक्षर कर्णपिशाचिनी मन्त्रप्रयोग ॥ १ ॥

दूसरे तन्त्र के अनुसार २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

कहकह कालिके गृह्णगृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा। इति विंशत्य-क्षरो मन्त्रः।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। अन्य सब पूर्ववत् जानना चाहिये।२।

एक दूसरे तन्त्र में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं चः चः कम्बलिके गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा। इत्यष्टा-दशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : एकविंशतिदिनं यावदुदयास्तमयं जपेत्। नित्यं सायं समाहारपिण्डं हर्म्योपरि क्षिपेत्। त्रिसप्ताहे तु सा तुष्टा शशाङ्का तु पिशाचिका। पञ्चविंशतिदीनारान् ददाति प्रतिवासरम्। कर्णे कथयति

क्षिप्रं यद्यत्पृच्छत्यसौ क्रमात् । इत्यष्टादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ॥ ३ ॥

इसका विधान : २१ दिन तक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय जप करे । प्रतिदिन सायंकाल अपने आहार में से एक पिण्ड घर के ऊपर छत पर फेंक दें । तीन सप्ताह में शशाङ्का पिशाचिका प्रसन्न होती हैं और २५ दीनार प्रतिदिन देती है । साधक जो-जो पूछता है उस सब का उत्तर उसके कान में यह देवी क्रमानुसार बता देती है । इत्यष्टादशाक्षर मन्त्रप्रयोग ॥ ३ ॥

एक अन्य तन्त्र में भी १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय हुं फट् स्वाहा । इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : प्रदीप्ततैलं पादयोर्दत्त्वा रात्रौ लक्षं जपेत् । ततः सर्वज्ञो भवति नास्य पूजाध्यानम् ॥ ४ ॥

इसका विधान : रात के समय जले दीपक का तेल अपने पैरों में लगा कर मन्त्र का १ लाख जप करने से साधक सर्वज्ञ हो जाता है । इसमें कोई पूजा या ध्यान नहीं है ॥ ४ ॥

मन्त्र महोदधि में १६ अक्षरों का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनि कर्णे मे कथय स्वाहा । इति षोडशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधान :

विनियोग : अस्य कर्णपिशाचिनीमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिः नीवृच्छन्दः कर्णपिशाचिनी देवता ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १ । नीवृच्छन्दसे नमो मुखे २ । कर्णपिशाचिनीदेवतायै नमो हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । कर्णपिशाचिनि मध्यमाभ्यां नमः ३ । कर्णे मे अनामिकाभ्यां नमः ४ । कथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । कर्णपिशाचिनि शिखायै वषट् ३ । कर्णे मे कवचाय हुं ४ । कथय नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । स्वाहास्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐ चितासनस्थां नरमुण्डमालाविभूषितामस्थिमणीन् कराब्जैः ।
प्रेतान्नरान्त्रैर्दधतीं कुवस्त्रां भजामहे कर्णपिशाचिनीं ताम् ।

पीठपूजादिकं षड्यक्षिणीवज्ज्ञेयम् । श्मशानस्थः शवस्थो वा लक्षं जपेत् । विभीतकसमिधा दशांशतो होमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे अशुचिर्भूत्वा बदरीतरौ पुनर्लक्षं जपेत् । तदा पिशाचिनी प्रसन्ना भवति परचित्तस्थितां वार्तां कर्णे कथयति । तथा च : श्मशानस्थः शवस्थो वा जपेल्लक्षं समाहितः । दशांशं जुहुयाद्वह्नौ विभीतकसमिद्वरैः । सिद्धे मन्त्रे जपं कुर्यादधस्ताद्बदरीतरौ । अशुचिर्लक्षसंख्यातं तेन तुष्टा पिशाचिनी । परचित्तस्थितां वार्तां भाविनीं च वदेच्छ्रुतौ ।

पीठपूजादि षड्यक्षिणी के समान ही जानना चाहिये । श्मशान में या शव पर बैठकर शान्ति से मन्त्र का एक लाख जप और जप का दशांश बहेड़े की समिधा से होम करना चाहिये । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और मन्त्र के सिद्ध होने पर अशुचि होकर बेर के पेड़ के नीचे पुनः एक लाख जप करे । तब पिशाचिनी प्रसन्न होती है और दूसरों के मन की बातों को कान में कहती है । कहा भी गया है कि श्मशान में या शव पर बैठकर शान्ति से एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिये । जप का दशांश बहेड़े की समिधा से होम करना चाहिये । मन्त्र के सिद्ध होने पर बेर के पेड़ के नीचे अशुचि होकर एक लाख जप करे । इससे पिशाचिनी प्रसन्न होकर दूसरों के मन की बातों को तथा भाविनी बातों को कान में बताती है ।

एक दूसरे ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमः कर्णाग्नौ कर्णपिशाचिकादेवि अतीतानागतवर्तमानवार्तां कथय मम कर्णे कथय कथय तथ्यं मुद्रावार्तां कथय कथय आगच्छागच्छ सत्यंसत्यं वदवद वाग्देवि स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : मूलं रक्तचन्दनेन लिखित्वा पञ्चामृतेन स्नपयित्वा लक्षं जपेत् दशांशतो होमः मन्त्रः सिद्धो भवति वार्तां कथयति ॥ ६ ॥

इसका विधान : मूलमन्त्र को लालचन्दन से लिखकर पञ्चामृत से स्नान कराकर एक लाख जप और दशांश होम करने से मन्त्र सिद्ध होता है तथा कर्णपिशाचिनी बातें बताती है ॥ ६ ॥

दूसरे मत से ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकरणी प्रविश अतीतानागतवर्तमानं सत्यं कथय मे स्वाहा । इति षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लक्षं जपेत् सिद्धिः पुनः आम्रपट्टोपरि अष्टोत्तरशतवारं मन्त्रं लिखित्वा प्रत्येकं च पूजयित्वा तं मन्त्रं शिरोधो धृत्वा शयनं कार्यम् स्वप्ने वदति सत्यमेव यदि साधको लक्षत्रयं जपेत्तदा

प्रत्यक्षा भवति सा। भूतभविष्यद्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णं कथयति ॥ ७॥

इसका विधान : एक लाख जप करने पर सिद्धि होती है। पुनः आम के पटरे पर १०८ बार मन्त्र को लिखकर प्रत्येक की पूजा करे और उस पटरे को शिर के नीचे रखकर सो जाय। तब कर्णपिशाचिनी सभी बातें स्वप्न में बताती है। यदि साधक ३ लाख जप करे तो देवी प्रत्यक्ष हो जाती है और भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सभी बातें कान में कहती है ॥ ७ ॥

एक अन्य तन्त्र के अनुसार १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कर्णपिशाचिनि पिङ्गल लोचने स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः तद्दशांशतो होमः तिलं भुक्त्वा एकभुक्तिव्रतं कार्यम्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति देवी कर्ण-पिशाचिनी प्रसन्ना भवति त्रैलोक्यवार्तां कथयति ॥ ८ ॥

इसका विधान : इसका पुरश्चरण १ लाख जप तथा दशांश होम है। तिल खाकर एक-कालिक आहार का व्रत करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है तथा कर्णपिशाचिनी देवी प्रसन्न होकर तीनों लोकों की बातें बताती है ॥ ८ ॥

एक अन्य मत से ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अरविन्दे स्वाहा। इति षडक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अयुतं जपेत् एकविंशतिदिनं यावत् कर्णपिशा-चिनी सिद्धा भवति भूतभविष्यद्वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णं कथयति ॥ ९ ॥

इसका विधान : मन्त्र का दश हजार जप करना चाहिये। २१ दिनों में कर्णपिशाचिनी सिद्ध होती है और भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सभी बातें कान में बताती है ॥ ९ ॥

एक दूसरे मत से आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लीं जयादेवि स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अस्यापि ऋष्यादिन्यासादेरभावः। पूर्वं लक्षं जपित्वा गृहगोधिकां निपात्य तदुपरि जयादेवीं यथाशक्ति सम्पूज्य तावज्जपेत् यावत्सा जीवति। ततः सिद्धयति सिद्धिस्तु मनसा प्रश्ने कृते सा वदति तस्याः पृष्ठे सर्वं भूतभविष्यादिकं पश्यति ॥ १० ॥

इसके भी ऋष्यादि का अभाव है। पहले एक लाख जप करके छिपकिली को गिराकर उसके ऊपर जया देवी की यथाशक्ति पूजा करके तब तक जप करे जब तक वह (छिपकिली) जीवित रहे। इससे सिद्धि होती है—अर्थात

मन से प्रश्न करने पर उसी समय देवी साक्षात आकर प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देती है, और उक्त छिपकिली चलती है। उस छिपकिली की पीठ पर साधक भूत, भविष्यत और वर्तमान सब कुछ लिखे हुये के समान देखता है।१०।

एक अन्य मत से १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विश्वरूपे पिशाचि वदवद ह्लीं स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : लक्षं जपेत्। दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत् एकविंशतिदिनं यावत्। तदा त्रैलोक्यवार्तां सर्वां कर्णे कथयति ॥ ११ ॥

इसका विधान : एक लाख जप और जप का दशांश होम करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और मन्त्र के सिद्ध होने पर २१ दिन तक प्रतिदिन तीन हजार जप करे। तब कर्णपिशाचिनी तीनों लोकों की बातें कान में बताती है ॥ ११ ॥

दूसरे तन्त्र में ६५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

मन्त्रो यथा : ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघसत्यवादिनि मम कर्णं अवतरावतरातीतानागतवर्तमानानि दर्शयदर्शय मम भविष्यं कथयकथय ह्लीं कर्णपिशाचि स्वाहा। इति पञ्चषष्ठ्यक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : प्रातःकाल घृत का दीपक और रात्रि के समय घृत तथा तेल दोनों का दीपक जलाकर त्रिशूल की पूजा करे। इसके बाद मन्त्र का सवा लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तदुपरान्त अशुचि होकर होकर बेर के नीचे बैठकर रात्रि के समय पुनः सवा लाख जप करने से कान में शब्द आने लगता है। फिर साधक जिस समय भी किसी बात को जानने की इच्छा करता है उस समय कर्णपिशाचिनी देवी साधक के कान में उसके प्रश्न का उत्तर देती है ॥ १२ ॥

अथ कर्णपिशाचिनीवार्तालीमन्त्रप्रयोगः।

५७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासिनि सर्वनरनारीमुखवार्तालिवार्तां कथय सप्त समुद्रान्दर्शयदर्शय ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं नीं ठं ठं हुं फट् स्वाहा। इति सप्तपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : शाही के दो कांटे और वाराह का एक दांत लेकर उसके ऊपर मन्त्र का १,२२,००० जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तदनन्तर नित्य मन्त्र का जप करते रहने पर देवी साधक के प्रश्नों का उत्तर कान में कहती है। साधक को सदा रोली का तिलक लगाना चाहिये

अन्यथा सिद्धि नष्ट हो जाती है। यह मन्त्र एक महात्मा की कृपा से मिला था। उन महात्मा को इस मन्त्र की पूर्ण सिद्धि थी। इसी के प्रभाव से वह भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों की बातें भलीप्रकार बताते थे ॥१३॥

अथ कर्णपिशाचिनीमन्त्रप्रयोगः।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ कं ह्रीं प्राणकर्षणमालोकितेन विश्वरूपी पिशाची वदवद इं ह्रीं स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्: पक्षैकं दशसाहस्रं जपित्वा पिण्डदानेन सिद्धयति भूतभविष्यवर्तमानवार्तां कथयति ॥ १४ ॥

इसका विधान: एक पक्ष तक १० हजार जप करके पिण्डदान करने से कर्णपिशाचिनी सिद्ध होती है और भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान की बातें बताती है ॥ १४ ॥

अन्यत्र यह मन्त्र मिलता है:

मन्त्रो यथा: ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढूं हुं फट् कनकवज्रवैडूर्यमुक्तालंकृत-भूषणे एहि एहि आगच्छागच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमान-कालज्ञानदूरदृष्टिदूरश्रवणं ब्रूहिब्रूहि अग्निस्तम्भनं शत्रुस्तम्भनं शत्रुमुख-स्तम्भनं शत्रुगतिस्तम्भनं शत्रुमतिस्तम्भनं परेषां गतिं मतिं सर्वशत्रूणां वाग्जृम्भणस्तम्भनं कुरु कुरु शत्रुकार्यहानिकरे मम कार्यसिद्धिकरि शत्रूणामुद्योगविध्वंसकरि वीरचामुण्डिनि हाटकधारिणि नगरीपुरीपट्टण-स्थानसम्मोहिनि असाध्यसाधिनि ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ॐ देवि हन हन हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम्: इमं मन्त्रमयुतं जपेत् सिद्धिः। सर्वं कर्णे कथयति शत्रून्नाशयति सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति ॥ १५ ॥

इसका विधान: मन्त्र का दश हजार जप करने से सिद्धि होती है और कर्णपिशाचिनी कान में सब कुछ बताती है। साथ ही शत्रुओं का नाश करती है। इससे सभी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १५ ॥

अथ विप्रचाण्डालिनीमन्त्रप्रयोगः।

प्राकृत ग्रन्थ में ५१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ नमश्चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचाण्डालिनी शोभिनी प्रकर्षिणी आकर्षयआकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हुंफट् स्वाहा। इत्येक-पञ्चाशदक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान: प्रथम दिन उपवास करना, शीलता से रहना, धरती

पर सोना, मीठा भोजन करना और खाते-खाते बीच में ही भोजन छोड़कर अपवित्र अवस्था में ही मन्त्र का जप करना चाहिये। इस प्रकार २१ दिन करने से मन्त्र सिद्ध होता है। तदुपरान्त सात दिन तक पृथिवी पर ही सोने से आश्चर्य दिखाई पड़ता है। तीसरे दिन ही स्वप्न में रौद्रादि रूप दिखाई पड़ते हैं। यदि स्वप्न न दिखाई पड़े तो पुनः २१ दिन जप करने से स्त्री का रूप प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। तब यदि छल करे, अभक्ष्य वस्तुयें लाकर दे, अनाचार करे, मन को भेदे और शङ्का न करे तो सिद्ध होकर लक्ष्मी प्रत्यक्ष होती है। इति विप्रचाण्डालिनी मन्त्रप्रयोग ॥ १ ॥

अथ क्षोभिणीमन्त्रप्रयोगः।

प्राकृत ग्रन्थ में ३३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः उच्छिष्टचाण्डालिनि क्षोभिणि दहदह द्रवद्रव आनपूरी-श्रीभास्करि नमः स्वाहा। इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : मन्त्र का २२,१२३ जप करने से सिद्ध होता है ॥२॥

अथ वेतालसाधनम्।

प्राकृत ग्रन्थ में ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्षां क्षां ह्लीं ह्ली फट्। इति षडक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : श्मशान में एक लाख जप करने से वेताल सिद्ध होता है ॥ ३ ॥

अथ श्मशानोत्थापनप्रयोगः।

प्राकृत ग्रन्थ में ५४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आठकाठकी लाकडी मूञ्जबनीका वान। मुवा मुरदा बोले नहीं तो माया महावोर की आन। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति चतुःपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : एक सेर मद्य तथा जातीपुष्प, लोहबान का धूप, बालछड, छडीला, कपूर, कचरी और अगुरु लेकर श्मशान में जाकर शव को देखकर मद्य की धार और धूप देकर फल बिखेर दे तथा सुगन्ध-द्रव्यों को चढ़ावे। फिर कुछ दूर आकर मन्त्र पढ़कर पुनः मद्य की धार दे तो श्मशान जाग उठता है, हाहाकार मचता है और मन्त्र निश्चित रूप से सिद्ध हो जाता है ॥ ४ ॥

अथ प्रेतसाधनम्।

१६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : मूल नक्षत्र से प्रारम्भ करके शौच का बचा जल बबूल के वृक्ष की जड़ में डालना और उसी वृक्ष की जड़ में बैठकर १०८ मन्त्र प्रतिदिन जपना चाहिये । इस प्रकार ६ मास तक करने के बाद एक दिन केवल मन्त्र जपे और जल नहीं डाले तो प्रेत सम्मुख आकर पानी माँगेगा । उस समय उससे तीन बार यह वचन ले कि : १. स्मरण करने पर आवेगा, २. जो काम पड़ें वह करेगा । ये वचन लेने के बाद उसे पानी दे । ऐसा करने पर भूत साधक की सेवा में तत्पर रहेगा—यह सत्य है ॥ ५ ॥

एक अन्य १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

सूनसान सोखता मसान जागै भूत नाचै शैतान । इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : श्मशान से मनुष्य की अस्थि लाकर एकान्त स्थान में शिवजी के मन्दिर के भीतर बैठकर उस अस्थि को अपने आसन के नीचे रखकर अर्द्धरात्रि में मन्त्र का पाँच हजार जप करे । इस प्रकार करने से पाँच ही दिन में चरित्र दिखाई पड़ने लगेगा । बलि के लिये सदैव मद्य और मांसादि अपने पास रख लिया करे क्योंकि न जाने वेताल कब आकर माँग बैठे । ४० दिन तक जप करने के बाद प्रेत या वेताल सम्मुख आकर बलि माँगे तब उससे तीन बार यह वचन ले कि बुलाने पर उपस्थित होगा, अथवा उसकी शिखा लेकर मद्य-मांस की बलि दे । ऐसा करने से वह सदैव पास रहेगा तथा जो काम होगा वह सब करेगा । एक ब्राह्मण को इस मन्त्र की सिद्धि थी । उसका बड़ा पुत्र इससे आश्चर्यजनक कार्य करता था । उसी की कृपा से यह मन्त्र मुझे प्राप्त हुआ है ॥ ६ ॥

अथ भूतयक्षिणीप्रसन्नताकारकं यन्त्रम्

भूतप्रसन्नतायन्त्रम्

तं	तं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
इं	इं	इं	इं
लं	लं	लं	लं

इस यन्त्र को सिरस के वृक्ष के नीचे बैठकर एक लाख बार लिखने से भूत, प्रेत, देवी और यक्षादि अत्यन्त प्रसन्न होते हैं—इसमें सन्देह नहीं है ॥ ७ ॥

अथ स्वप्ने भूतदर्शकं यन्त्रम्

अथ स्वप्ने भूतदर्शकयन्त्रम्

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	८	९	१
४	६	९	१२

इस यन्त्र को गिलोय के रस से भोजपत्र पर अथवा कागज पर लिखकर गुग्गुल की धूप देवे और फिर यन्त्र को सर के पास रखकर सो जाय। इससे स्वप्न में ही भूत दिखाई पड़ेंगे—इसमें सन्देह नही है ॥ ८ ॥

अथ देवीप्रसन्नयन्त्रम्

देवीप्रसन्नयन्त्रम्

।।।	=	।।।	≡
।।।।	≡	।।।।	।।
≡	।।	१	।
।।।	=	–	=

इस यन्त्र को आम के वृक्ष के नीचे सवा लाख लिखने से देवी प्रसन्न होकर दर्शन देती हैं और मन में सोचे कार्यों को पूर्ण करती हैं ॥९॥

अथ पीरविरहना मन्त्रप्रयोग :

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

पीरविरहना फूलविरहना धुंधुंकारै—सवासेरका तोसाखाय आसी-कोसका धावा करै सातसै कुतक आगे चलै सातसै कुतक पाछे चलै छप्पनसै छुरी चलैं बावनसै वीर चलैं जिसमें गढ गजनीका पीर चलै औरकी ध्वजा उखाडता चलै अपनी ध्वजा टेकता चलै सोतेको जगावता चलै बैठेको उठावता चलै हाथोंमें हथकडी गेरै पैरोंमें पैरकडी गेरै हलालमाहीं दीठकरै मुरदारमांहीं पीठकरै कलवाननवीकूं याद करै ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा।

इसका विधान : ग्रहण की रात्रि से प्रारम्भ करके नित्य १०८ मन्त्र का जप करे, चमेली का फूल चढ़ाये और सवा सेर हलवे का भोग रक्खे। ऐसा करने से ४० दिन में पीरविरहना उपस्थित होगा। उस समय यदि

साधक भयभीत न हो तो जो काम कहेगा उसे पीरविरहना करेगा तथा सदा पास में उपस्थित रहेगा।

अथ महम्मदापीरसाधनम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

विस्मिल्लाहेररहेमानिरंहीम पांय घूंघरा कोट जञ्जीर जिसपर खेलै मुहम्मदा पीर सवामनका तीर जिसपर खेलता आवै मुहम्मदावीर मार-मार करता आवै बांधबांध करता आवै डाकिनीको बांध पलीतको बांध नौ नरसिंहको बांध बावन भैरो बांध जातका मसाण बांध गूंगिया पीतिया धौलिया कालिया मसाण बांध बांध कुवा बावडी लावो सोती को लावो पीसतीको लावो पकातीको लावो जल्द जावो हजरत इमाम हुसेनकी जांघसे निकालकर ल्यावो बीबीफातमाके दामनसू खोलकर ल्यावो नहीं लावै तो माताका चूखा दूध हराम कहे लावै सब्द शांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को नौचन्दी जुमरात की सन्ध्या से प्रारम्भ करके प्रतिदिन दस बार पढ़कर लोहबान की धूप देता जाय। इस प्रकार २१ जुमरातों तक करने से सम्मुख उपस्थित होगा और साधक जो भी कार्य कहेगा उसे करेगा। किसी रोगी के ऊपर चढ़कर फूँक देने से उसे आराम हो जायगा।

अथ डाकिनीसाधनम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो चढौ चढौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पग पाली चढ्या कुणकुण वीर हनुमन्तवीर चढ्या धरती चढ पगपानचढी एडी चढी मुरचै चढी मुरचै चढी पिण्डी चढी पिण्डी चढी गोडां चढी गोडां चढी जांघ चढी जांघ चढी कटि चढी कटि चढी पेट चढी पेटसूं धरणी चढी धरणीसूं पांसली चढी पांसलीसूं हिये चढी हियासूं छाती चढी छातीसूं खबा चढी खवासूं कण्ठचढी कण्ठसूं मुख चढी मुखसूं जिह्वा चढी जिह्वासूं कान चढी कानसूं आंख चढी आंखसूं ललाट चढी ललाटसूं सीस चढी सीससूं कपाल चढी कपालसूं चोटी चढी हनुमान नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसन्तावीर ये वीर चढे।

इसका विधान : ग्रहण की रात्रि को चौका लगाकर घी का दीपक जलाये और एक पैर पर खड़ा होकर मन्त्र का १०८ जप करे तो डाकिनी उपस्थित होती है। उससे भयमीत न हो और सम्मुख बात करे। ऐसा करने से साधक जो काम कहेगा उसे डाकिनी करेगी।

अथ प्रेतदर्शकतन्त्रम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में यह कहा गया है : वागल को लाकर उसे पारा पिलावे। जब विष्ठा के साथ पारा बाहर आये तब उसके बराबर सीसा मिलाकर नेत्र में आँजने से भूत-प्रेतों का दर्शन होता है। वे प्रेतादि साधक के कहे कार्यों को करेंगे और साधक जो बातें पूछेगा उसे भी सच-सच बतायेंगे।

अन्य :

सुरमां राखै योनि में एक दिवस रजमाहि। ताको होमै अग्नि में भूत दृष्टिमें आहि।

अन्य :

चिरमीरस आंखन में आंजै दीखै भूतभयङ्कर साजै।

पितृदर्शकतन्त्रम् ।

रविवार के दिन गधे का मूत्र लावे और उसे पृथिवी पर न गिरने दे। उसको गुग्गुल की धूप देकर रात्रि के समय नेत्रों में आँजने से पितृदेव दिखाई पड़ेंगे।

अन्य :

वेलपत्ररस पीसिये गुञ्जामूल मंगाय। आंज आंख में देखिये आवै भूत लखाय।

अन्य :

अङ्कोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः। दृश्यन्ते निशि भूतानि खेचराणि महीतले।

अङ्कोल के तेल से दीपक जलायें। इसके प्रकाश में रात को आकाशगामी भूमि पर दिखलाई पड़ेंगे।

अथ देवीदेवतादर्शकतन्त्रम् ।

प्राकृत ग्रन्थ के अनुसार : अङ्कोल के फल का तेल निकालकर तगर के फल का चूर्ण उसमें मिलाये। इसे नेत्रों में आँजने से जहाँ दृष्टि पड़ेगी वहीं देवी-देवता दिखाई पड़ेंगे। तत्पश्चात केवल तगर के तेल का अञ्जन करने से पुनः मानुषी दृष्टि प्राप्त हो जायगी।

अथ भैरवदर्शकतन्त्रम् ।

अमावस्या की रात को अपना वीर्य निकालकर सुखा ले। सूखने पर उसे पीसकर पास में रख ले। जब दूसरी अमावस्या आवे तब उस दिन सन्ध्या समय जहाँ भेड़ बकरियाँ आती हों वहाँ जाकर अञ्जन करने से भैरव बकरे पर सवार हुआ दिखाई पड़ेगा। तब उसी समय उसकी कुलही उतार

लेने से भैरव पास आकर अपनी कुलही को माँगता है। अतः उस कुलही को छिपा ले और उसे दे नहीं। जब तक वह कुलही (टोपी) साधक के पास रहेगी भैरव वशीभूत होकर साधक के पास रहेगा और जो काम कहा जायगा। उसे तत्काल करेगा। अगर भैरव तीन बार यह बचन दे कि 'स्मरण करते ही आऊँगा' तो उसकी टोपी उसे दे दे।

अन्य :

रविवार या शनिवार को जब तारा टूटे उस समय अपनी पगड़ी में गाँठ दे। इसी तरह सात तारा टूटने तक सात गाँठ दे। तदुपरान्त गूगल की धूप देकर कुएँ पर जाय। जब कोई पनहारी घड़ा लेकर चले तब एक गाँठ खोलने से उस पनहारी की मटकी फूट जायगी। इसी तरह करता रहे। जब मटकी न फूटे अथवा जिसकी मटकी की गर्दन फूटने से बच जाय उसको लाकर सन्ध्या के समय जहाँ भेड़ बकरियाँ आती हो वहाँ जाकर उस घड़े की गर्दन के भीतर से देखे तो भैरव बकरे पर बैठा दिखाई पड़ेगा। उस समय मटकी की गर्दन के भीतर हाथ डालकर भैरव की टोपी उतार ले और गर्दन को फोड़ दे। भैरव टोपी माँगे तो उसे न दें। ऐसा करने से भैरव सदा पास रहेगा और साधक जो काम कहेगा वह करेगा। जब भैरव तीन बार यह वचन दे कि स्मरण करने पर आयेगा और सब काम करेगा तब उसे टोपी दे दे—इसमें कोई हानि नहीं है।

पूर्वजन्मदर्शकतन्त्रम् ।

अङ्कोल के बीज के तेल में घी मिलाकर पुष्य नक्षत्र में काजल पारे। इस काजल को नेत्रों में लगाकर ध्यान करने से पूर्वजन्म दिखाई पड़ता है।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रदेवताखण्डे कर्णपिशाचिन्यादि-
साधनवर्णनं नाम तृतीयस्तरङ्गः ॥ ३ ॥

इति मन्त्र महार्णव के मिश्रदेवताखण्ड में कर्णपिशाचिन्यादि
साधन वर्णन में तृतीय तरङ्ग ॥ ३ ॥

चतुर्थ तरंग

चेटक तन्त्र

तत्रादौ वटयक्षिणीचेटकः ।

कामरत्न तन्त्र में १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सुमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ ह्लूं चेटके जयजय स्वाहा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

शिवार्चनचन्द्रिका में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हुं चेटके जयजय स्वाहा । इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किञ्चित्स्वादुभोजनम् । तद्बलिं दीयते तस्मै वटाधो मासमेकतः । ततो देवी समागत्य हस्ताद्‌गृह्णाति भोजनम् । तदैव सा वरं दत्त्वा सान्निध्यं कुरुते सदा । अतीतानागतं कर्म स्वस्थास्वस्थं ब्रवीति सा । पर्वतप्रतिमान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात् ॥ १ ॥

इसका विधान : मन्त्र का १०८ बार जप करके देवी के लिये बरगद के नीचे एक मास किञ्चित्स्वादु भोजन की बलि दे । तदनन्तर देवी आकर साधक के हाथ से ही भोजन ग्रहण करती है । देवी भूत-भविष्यत् कर्मों तथा स्वास्थ्य और बीमारी आदि के सम्बन्ध में सब कुछ बताती है । वह तत्क्षण पर्वत के समान लोगों तक को चलायमान कर देती है ॥ १ ॥

अथ कर्णवतश्मशानयक्षिणीचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्लीं भगवतीभ्यो नमः । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : श्मशाने नग्नो भूत्वा पञ्चाशत् सहस्रं जपेत् मद्यभाण्डे भोजनं च कृत्वा ततो देवी प्रसन्ना भवति त्रैकालिकीं वार्तां सर्वां कर्णे कथयति पुष्पफलादिकं ददाति ॥ २ ॥

इसका विधान : श्मशान में नग्न होकर मन्त्र का ५०,००० जप और मद्यभाण्ड में भोजन करने से देवी प्रसन्न होती है और तीनों कालों की बातें कान में कहती है । वह पुष्प तथा फल आदि भी लाकर देती है ॥ २ ॥

अथ करालिनीचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं करिकरालिनी क्षं क्षां फट् । इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : एकपदेन अष्टोत्तरशतं जपेत् अजामांसबलिं च दद्यात् रक्तपुष्पेण पूजयेत् एवं कृते षण्मासाभ्यन्तरे वरं ददाति ॥ ३ ॥

इसका विधान : एक पाँव पर खड़े होकर मन्त्र का १०८ बार जप करे, अजामांस की बलि दे तथा लाल पुष्पों से पूजा करे। ऐसा करने से देवी छः मास के भीतर ही वर देती है ॥ ३ ॥

अथ कालिकाचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा । इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : गोशालायां द्विलक्षं जपेत् तद्दशांशतो होमः एवं कृते मध्यरात्रे वरं ददाति ॥ ४ ॥

इसका विधान : गोशाला में मन्त्र का २ लाख जप और दशांश होम करने से देवी रात्रि में वर देती है ॥ ४ ॥

अथ भैरवचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भैरवाय स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : चत्वारिंशत्सहस्रं जपेत् गोधूमस्य दशांशतो होमः एवं कृते प्रतिदिनमष्टादशधान्यानि प्रयच्छति ॥ ५ ॥

इसका विधान : मन्त्र का ४०,००० जप और दशांश गेहूं से होम करने से देव प्रतिदिन १८ प्रकार का अन्न देता है ॥ ५ ॥

अथ लिङ्गचेटकः ।

शिवार्चनचन्द्रिका में ३० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो लिङ्गोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्तानां पार्वतीपते ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः । इति त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लिङ्गमूर्ध्नि करं दत्वा वामं लक्षं जपेन्मनुम् । वाक्सिद्धिं मन्त्रिणो लिङ्गी चेटकस्तु प्रयच्छति ॥ ६ ॥

इसका विधान : लिङ्ग की मूर्धा पर बांया हाथ रखकर मन्त्र का १ लाख जप करने से लिङ्गी चेटक साधक को वाक्सिद्धि प्रदान करता है ॥६॥

एक अन्य तन्त्र के अनुसार इसका मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो लिङ्गोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धि विना पर्वतगते द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः।

इसका विधान : अपनी मूर्द्धा पर बांया हाथ रखकर मन्त्र का १ लाख जप करने से लिङ्गीचेटक साधक को वाक्सिद्धि देता है।

अथ विरूचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ में ६१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ श्रीं काककमलवर्द्धने सर्वकार्यसर्वार्थान्देहिदेहि सर्वकार्यं कुरुकुरु परिचर्यंसर्वसिद्धिपादुकायां हं क्षं श्रीं द्वादशान्नदायिने सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा। इत्येकषष्ट्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : लक्षं जपेत् गोधूमचणकस्य दशांशतो होमः। विरूचेटकः प्रसन्नो भवति सहस्रधेनुं ददाति स्वर्गवस्तु समानीय ददाति सप्तद्वीपान्तरान्नं वस्त्रं च ददाति। चिन्तितः शीघ्रमायाति वस्तु ददाति ॥ ७ ॥

इसका विधान : मन्त्र का १ लाख जप तथा दशांश गेहूं और चने से होम करे। इससे विरूचेटक प्रसन्न होता है और हजार गायें देता है। वह स्वर्ग से वस्तुयें तथा सात द्वीपों से अन्न-वस्त्रादि लाकर देता है। चिन्तन करने पर यह चेटक शीघ्र आकर वस्तुयें देता है ॥ ७ ॥

अथ नानासिद्धिचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ में २४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धीर्देहिदेहि श्रीं क्लीं स्वाहा। इति चतुर्विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अश्वत्थवृक्षस्याधः उपविश्य पञ्चलक्षं जपेत् तद्दशांशं पलाशसमिद्भिः शुद्धघृतं जुहुयात् दशकपालिभ्यस्तृप्तिपूर्वकमन्नं देयम्। ततो विरूचेटकः प्रसन्नो भूत्वा प्रार्थितं ददाति खर्जूरचणकनारिकेल-द्राक्षाफलान्यनेकानि ददाति ॥ ८ ॥

इसका विधान : पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर मन्त्र का ५ लाख जप तथा पलाश की समिधाओं से शुद्ध घी सहित दशांश होम करना चाहिये। दश कपालियों को तृप्तिपूर्वक अन्न देना चाहिये। इससे विरू चेटक प्रसन्न होकर प्रार्थित पदार्थ खजूर, चना, नारियल तथा अंगूर आदि अनेक पदार्थों और फलों को लाकर देता है ॥ ८ ॥

अथ नृसिंहचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ में ४४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः श्रीनारसिंहाय मणिभद्राय शोषय वीर पहेरे चीर क्षीर नाव पन वेग आव पाटवी पुजाय ठः ठः स्वाहा । इति चतुश्चत्वारिंश-दक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : कार्तिककृष्णचतुर्दश्यां दीपमालिकायां वा अर्द्धरात्रे येनयेन वस्तुना होमयेत् तत्तद्वस्तु समानीय ददाति । अथ वा नवरात्रे कुर्यात् । द्वादशसहस्राहुतिं तीर्थे दद्यात् नारिकेलोत्थबलिं दद्यात् । सिद्धो भवति ॥ ९ ॥

इसका विधान : कार्तिक मास में कृष्ण चतुर्दशी में या दीपावली के दिन अर्ध रात्रि को जिस-जिस पदार्थ से होम करे वही-वही पदार्थ लाकर देता है । अथवा नवरात्र में भी यही करे । तीर्थ में १२ हजार आहुति और नारियल की बलि देने से यह चेटक सिद्ध होता है ॥ ९ ॥

अथ सागरचेटकः ।

शिवार्चनचन्द्रिका में २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते समुद्राय देहि रत्नानि जलराशे त्रीणि नमोऽस्तु ते स्वाहा । इत्यष्टविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

एक भिन्न मत से २३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवन्रुद्र देहि रत्नानि जलराशे नमोऽस्तु ते स्वाहा । इति त्रयोविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : रात्रौरात्रौ जपेन्मन्त्रं सागरस्य तटे शुचिः । लक्ष-जापे कृते सिद्धे दत्ते सागरचेटकः । रत्नत्रयं तदाऽमौल्यं तेन मन्त्री सुखी भवेत् ॥ १० ॥

इसका विधान : पवित्र होकर सागर के तट पर रात-रात को ही मन्त्र का १ लाख जप करना चाहिये । सिद्ध होने पर सागर चेटक तीन अमूल्य रत्नों को देता है जिससे साधक सुखी होता है ॥ १० ॥

अथ हंसबद्धचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हंसः सर्वलोकलोचनानि बन्धयबन्धय देवी आज्ञापयति स्वाहा । इति षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : हृदि ध्यात्वा जपेद्रात्रौ हंसबद्धं स चेटकः । योगं ददाति सन्तुष्टो जरामृत्युविनाशनम् ॥ ११ ॥

इसका विधान : हृदय में ध्यान करके रात को मन्त्र का जप करने से

हंसबद्ध चेटक सन्तुष्ट होकर जरा-मृत्यु विनाशक योग देता है ॥ ११ ॥

अथ मणिभद्रचेटकः ।

प्राकृत ग्रन्थ में ३४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा । इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

शिवार्चनचन्द्रिका में ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मणिभद्राय नमोनमः पूर्णभद्राय नमो नमः महायक्षसेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा । इत्यष्टात्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

एक भिन्न मत से ४४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमो महायक्षाय सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा । इति चतुश्चत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : सहस्राष्ट इमं मन्त्रं जपेत्सप्तदिनावधि । प्रत्यहं मणिभद्राख्यः प्रयच्छत्येकरूपकम् ॥ १२ ॥

इसका विधान : सात दिनों तक प्रतिदिन मन्त्र का १००८ जप करने से सिद्धि होती है और मणिभद्र चेटक प्रतिदिन एक रुपया देता है ॥ १२ ॥

अथ भूतेश्वरचेटकः ।

भूतडामर तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हूयः आः भूतेश्वरः आगच्छागच्छ स्वाहा । इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : एकलिङ्गे गत्वा रात्रौ एकाकी रक्तमत्स्यमांसबलिं दद्यात् । महामांसगुग्गुलुलवणेन सह धूपयेदष्टसहस्रं जपेत् । प्रथमे दिवसे स्वप्नं पश्यति द्वितीये दिवसे स्वयमेव पश्यति । तृतीये दिवसे शीघ्रमागच्छति पुरस्तिष्ठति स एवमाह किं मया कर्तव्यम् । साधकेन वक्तव्यं किङ्करो भवेति । नित्यानुबद्धो भवति स्वर्गं गत्वा अक्षयनिधानानि आनीय ददाति अतीतानागतवर्तमानं कथयति वस्त्रालङ्कार कामिकभोजनं च ददाति द्विवर्षसहस्रं जीवति ।

इसका विधान : एक लिङ्ग मन्दिर में जाकर रात में अकेले रक्त, मत्स्य, मांस की बलि और महामांस, गुग्गुल तथा लवण के साथ धूप दे। मन्त्र का १००८ जप करे। साधक को प्रथम दिन स्वप्न दिखाता है; दूसरे दिन स्वयं को दिखाता है और तीसरे दिन शीघ्र आकर सम्मुख बैठता है। वह यह कहता है कि 'मैं क्या करूँ ?' इसके उत्तर में साधक को यह कहना

चाहिये कि 'तुम मेरे सेवक बनो।' इसके बाद वह नियमपूर्वक उपस्थित होता है और स्वर्ग से लाकर अक्षय निधियाँ देता है। वह भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान की सब बातें बताता है और वस्त्रालङ्कार तथा इच्छानुसार भोजन देता है। साधक उसकी कृपा से दो हजार वर्ष तक जीवित रहता है।

अस्य मुद्रा : अंगुलिं वेष्टयित्वा मध्यमांगुलिं प्रसार्यं सूच्याकारेण धारयेदपराजितमहाभूतराजस्य अंगुष्ठौ पार्श्वतो भूतेश्वरस्य मुद्रा। इति भूतेश्वरचेटकः ॥ १३ ॥

इसकी मुद्रा : अँगुलियों को वेष्टित कर मध्यमा अंगुली फैलाकर सूई के आकार में धारण करे। अपराजित महाभूतराज के अँगूठे को पार्श्व में धारण करे। यह भूतेश्वर-मुद्रा कहलाती है ॥ १३ ॥

अथ किङ्करयमस्य चेटकः।

भूतडामर तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अजः किङ्करोत्तम आगच्छागच्छ स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : वज्रधरस्य गृहं गत्वा कृष्णचतुर्दश्यामारभ्यायुतं जपेत् दिवसान्सप्त पूर्वं सेवा भवति ततः साधनमारभेत्। चन्दनेन मण्डलं कृत्वा गुग्गुलधूपं दत्वा श्वेतभक्तघृतपायसपिञ्जकोप विष्टेन घृतप्रदीपं प्रज्वाल्य तावज्जपेद्यावदर्द्धरात्रे स्वयं किङ्करोत्तमतां याति। आगताय चन्दनेनार्घो देयः। भो साधक किं मया कर्तव्यं तदा साधकेन वक्तव्यमस्माकं किङ्करो भवेति। दिव्यकामिकभोजनं ददाति रसरसायनं निधानं च ददाति। पृष्ठमारोप्य स्वर्गमपि नयति। पुनरपि राज्यं ददाति। पञ्चवर्षसहस्राणि जीवति। तस्य मुद्राः सम्पुटं कृत्वा तर्जनीद्वयं कुञ्चयित्वा किङ्करोत्तमस्य मुद्राः। इति किङ्करयमस्य चेटकः ॥ १४ ॥

इसका विधान : वज्रधर के गृह (मन्दिर) में जाकर कृष्ण चतुर्दशी के दिन से आरम्भ करके साधक सात दिन तक मन्त्र का १० हजार जप करे। पहले सेवा होती है फिर बाद में साधन आरम्भ करना चाहिये। चन्दन से मण्डल बनाकर गुग्गुल का धूप देकर श्वेत भात, घी, खीर में रूई को भिगाकर बत्ती बनाये और उससे घी का दीपक जलाकर तब तक जप करे जब तक अर्द्धरात्रि को स्वयं किंकरोत्तमता को न प्राप्त कर ले अर्थात् जब तक किङ्करचेटक को प्राप्त न कर ले। जब चेटक आ जाय तब उसे चन्दन का अर्घ्य देना चाहिये। जब चेटक यह पूछे कि 'भो साधक किं मया कर्त्तव्यं' तब साधक यह कहे कि 'अस्माकं किङ्करो भव।' तब वह चेटक

इच्छानुसार दिव्य भोजन, रस-रसायन तथा धन देता है। वह अपनी पीठ पर बैठाकर साधक को स्वर्ग भी ले जाता है। पुनः राज्य देता है। इससे साधक ५ हजार वर्ष तक जीवित रहता है। इसकी मुद्रा : दोनों तर्जनियों को सम्पुट करके उन्हें टेढा करे। यह किङ्करोत्तम की मुद्रा है। इति किङ्करयम चेटक ॥ १४ ॥

अथ कालीचेटकः।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कङ्काली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण सहस्रमत्स्यं जुहुयात् काली वरदा भवति स्वर्णं पलचतुष्कं प्रतिदिनं ददाति। इति कालीचेटकः ॥ १५ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से १ हजार मछलियों का हवन करने से काली वर देनेवाली होती है और चार पल सोना प्रतिदिन देती है। इति काली चेटक ॥ १५ ॥

अथ मन्त्रवादे कालीचेटकः।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रवादं सुदुर्लभम्। येन विज्ञानमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते।

दुर्लभ मन्त्रवाद को बताते हैं जिसके ज्ञान मात्र से सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

इसका १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ काली कङ्काली किलकिले स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण मल्लिका पुष्पसहस्रं जुहुयात् तदा कङ्काली वरदा भवति। सुवर्णमाषचतुष्टयं प्रतिदिनं ददाति। इति मन्त्रवादे कालीचेटकः ॥ १६ ॥

इसका विधान : घी से युक्त एक हजार चमेली के फूलों का इस मन्त्र से होम करने से काली वर देनेवाली होती है और प्रतिदिन ४ माशा सोना देती है। इति मन्त्रवाद में काली चेटक ॥ १६ ॥

अथ रक्तकम्बलाचेटकः।

इसका ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं रक्तकम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कम्पय नीलय विलस हुंहुं। इत्यष्टत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : जप्यं मासत्रयं रक्तकम्बला सा प्रसीदति। मृतको-त्थापनं कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा। इति रक्तकम्बलाचेटकः ॥ १७ ॥

इसका विधान : तीन मास तक जप करने से रक्तकम्बला देवी प्रसन्न होती है और तब वह मरे हुओं को खड़ा कर देती है तथा मूर्ति को चला देती है। इति रक्तकम्बला चेटक ॥ १७ ॥

आकाशगामिचेटकः।

इसका सात अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ॐ हुंहुंहुं ॐ। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : त्रिलक्षं जपेत्। तदा दूरदृष्टिर्भवति सर्वपापरहितो भूत्वा आकाशचारी भवति ॥ १८ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र का ३ लाख जप करने से साधक दूर तक देखने की शक्ति प्राप्त करता है और वह समस्त पापों से रहित होकर आकाशगमन कर सकता है ॥ १८ ॥

एक अन्य ३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः। इति त्र्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : एतन्मन्त्रं वरारोहे जपेत्तु दशलक्षकम्। सर्वपाप-विनिर्मुक्तो जायते खेचरः पुमान्। इति ॥ १९ ॥

इसका विधान : हे वरारोहे ! इस मन्त्र का दश लाख जप करना करना चाहिये। ऐसा करने से साधक समस्त पापों से मुक्त होकर आकाश गमन की क्षमता प्राप्त कर लेता है ॥ १९ ॥

अथ देवाङ्गनाप्राप्तिचेटकः।

इसका ४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं नमः। इति चतुरक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : मन्त्रेणानेन देवेशि सप्ताहं जपमारभेत्। रक्ताम्बर-धरो नित्यं तथा कुंकुममालिकः। सप्ताहं जपमात्रेण ह्यानयेदमराङ्गनाम् ॥ २० ॥

इसका विधान : हे देवेशि ! नित्य लाल वस्त्र तथा कुंकुम की माला धारण किये हुये साधक इस मन्त्र का यदि सात दिन तक जप करे तो वह जप मात्र से चेटक देवाङ्गना को बुला देता है। अन्यत्र कहा गया है कि एक सप्ताह तक जप करने और कुंकुम की रङ्गीन माला धारण करने से सात दिन में ही देवाङ्गना प्राप्त होती है ॥ २० ॥

अथ ज्वालामालिनीचेटकः ।

इसका २२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि गृध्रगण परिवृते स्वाहा । इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् :

करन्यास : ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ भगवति तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ज्वालामालिनि मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ गृध्रगणपरिवृते अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । इति करन्यासः ।

एवमेव नेत्रहीनं पञ्चाङ्गन्यासं कृत्वा जपं कुर्यात् । अभुक्तनियतश्चैव जपेन्मन्त्रं जपाज्जयी । दीपतैलाक्तपादोथ वारे गुरुदिने ततः ॥ १ ॥ जपेदष्टसहस्रं तु त्रयोविंशतिवासरान् । प्रत्यहं सा सुवर्णं च ददातीति न संशयः । स्मृतिमात्रेण वै मन्त्री रिपून्सर्वान्विनाशयेत् ॥ २१ ॥

इस प्रकार नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यास करके जप करे । दीपक में जले तेल को पैर में लगा कर बृहस्पतिवार के दिन बिना आहार किये नियमों का पालन करते हुये जप से जय चाहनेवाला साधक जप करे । २३ दिन तक ८ हजार जप करने से ज्वालामालिनी प्रतिदिन सोना देती है—इसमें कोई संशय नहीं है । साधक स्मरणमात्र से सभी शत्रुओं को नष्ट कर देता है ॥ २१ ॥

अथ फेतकारिणीचेटकः ।

इसका ३० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अश्मकर्णेश्वरि दुर्बले आर्द्रकेशिकजटाकलापे ढक्कणफेतकारिणि स्वाहा । इति त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : कृष्ण चतुर्दशी की रात को कलहारी की जड़ लावे । उसे सफेद बकरी के दूध में पीसकर तिलक करने से जो देखेगा वही साधक के वश में हो जायगा । अथवा अजमोद की जड़ को घोड़ी के दूध में हरताल के साथ घिस कर उसे मुख में रखने से साधक जिससे जो वस्तु माँगेगा वह उस वस्तु को दे देगा ।

अथ यक्षचेटकः ।

ॐ नमो महायक्षसेनाधिपतये मानिभद्राय अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : वटवृक्ष पर इस मन्त्र को सात बार पढ़कर उसकी लकड़ी ले आवे । उस लकड़ी पर २१ बार मन्त्र पढ़कर उसे दाहिने कान पर लगाने से बिना माँगे अन्न प्राप्त होता है ।

अथ उच्छिष्टचाण्डालिनीचेटकः ।

ॐ नमः उच्छिष्टचण्डालिनि वाग्वादिनि राजमोहिनि प्रजामोहिनि स्त्रीमोहिनि आनआन येये वायुवायु उच्छिष्टचाण्डालि सत्यवादिनीकी शक्ति फुरै स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : भोजन के बाद जूठे मुंह इस मन्त्र का १ लाख जप करे। फिर जहाँ भी एकान्त में बैठकर साधक इस मन्त्र का स्मरण करेगा वहीं भोजन स्वतः आकर उपलब्ध होगा।

अथ रतिराजचेटकः ।

इसका १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं विटपाय स्वाहा । इति दशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : प्रथमचेटकस्य नाम गृहीत्वा ततो गृहमध्ये उपविश्य पञ्चशतसहस्रं पञ्चलक्षं जपेत् । ततः सिद्धिर्भवति । बालारमणसमये ह्यष्टाविंशतिवारं जपेत् कामोद्दीपनं भवति स्त्री द्रवति वशीभवति ।

इसका विधान : सर्वप्रथम चेटक का नाम लेने के बाद घर में प्रवेश कर मन्त्र का ५ लाख जप करने से सिद्धि होती है। बाला के साथ रमण के समय इसका २८ बार जप करने से कामोद्दीपन होता है और स्त्री द्रवित होकर वशीभूत होती है।

अथ सूर्यदर्शकचेटकः ।

दत्तात्रेयतन्त्रे : मातुलुङ्गस्य बीजेन तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः । लेपयेत्ताम्रपात्रेण मध्याह्ने च विलोकयेत् । रथेन सह साकारो दृश्यते भास्करो ध्रुवम् । विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ।

दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है कि मातुलङ्ग के बीजों का तेल निकालकर उसे ताम्रपात्र पर लेप करे। फिर उसमें मध्याह्न के समय देखे तो निश्चित रूप से रथ के साथ साकार सूर्य भगवान दिखाई देते हैं। इस प्रकार बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है—यह सिद्ध योग का उदाहरण है।

अथ ग्रहणदर्शकचेटकः ।

कृकलासस्य रक्तेन दर्पणार्द्धं तु लेपयेत् । धारयेच्च शिरोमूर्ध्नि ग्रहणं दृश्यते जनैः ।

गिरगिट के रक्त का दर्पण के अर्ध भाग पर लेप करे। उसे शिर पर धारण करने से लोगों को ग्रहण दिखाई देता है।

अथ दिने नक्षत्रदर्शकचेटकः ।

अगस्त फूलको तेल, जो कोइ आंजे नेत्रमें । दिनमें तारे देख, होय

अचम्भो अतिघनो ।

अगस्त के फूल के तेल को आँखों में आँजने से दिन में तारे देखने का महान आश्चर्य होता है।

अन्य प्रयोग :

सुरमा श्वेत जु लेयके, अगस्तपुष्प रस भेय। दिना सातलौं ताहि पुनि छाया सूख करेह। घोट आंखमें आंजिये, ऊपर देखै जाय। दिनमें तारे दीखहीं, ऐसो सहज उपाय।

एक अन्य प्रयोग : श्वेत सुरमा लेकर अगस्त पुष्प के रस में सात दिन तक भिगा दे फिर उसे छाया में सुखाकर घोंटकर आँख में आँजने से दिन में तारे दिखाई पड़ेंगे। यह एक सहज उपाय है।

काठ धतूरा लेय मंगाई, कोदोके भुस ताहि मिलाई। दुहुन मिलाय करै एकढेरी, भर कपडा बत्ती कर फेरी। ताको दीपक लेहु जलाय, काजल आंखिन लेहु लगाय। दिनमें तारे दीखैं भाई, सबही से यह सहज उपाई।

अथ रात्रिसमये दिनवद्दृश्यचेटकः।

उलूकव्याघ्रमहिषीघोषगृध्रविलोचनैः। स्रोतोंजनं युतं चांज्यं दिवा-वत्पश्यते निशि।

अन्य प्रयोग : उल्लू, व्याघ्र, भैंस, घोषा तथा गृध्र की आँखों के साथ घी तथा काला सुरमा मिलाकर आँख में आँजने से मनुष्य रात में भी दिन के समान देखने लगता है।

अन्यत्। हुदहुरुधिर नैनमें, जो कोइ आंजै लाय। विना चिरागके रात्रिमें, पुस्तक सबहि पढाय।

अन्यत्। रविदिन मेंढक मेंढकी, रति करता जो होय। अथवा मेंढक पीलिया, मेंढकहीपर जोय। लावै मार सुखायकर, जारै अग्नीमांहि। सुरमे का सा पीसिके आंजै नैनोमाहि। रात अंधेरी होय जब, करिये जो मनभाय। दीखै सगरी वस्तु यों ज्यों दिनमें दृष्टि आय।

अन्यत्। घृतको दीपक बालिये, उल्लू खोपडी मांहि। तामें काजर पाडिये, प्यालो खोपडी काहि। ताहि आंजिये नेत्रमें रात्रीमें दिन होय। जो चाहै सो वांचिये दृष्टि चौगुनी होय।

अथ शतयोजनदृष्टिचेटकः।

कृष्णपक्ष चौदशदिना, शीस गीधको लाय। भर मांटी गाडै कहीं, लहसन बीज बुवाय। पुष्यनक्षत्र आवै जबही, फल अरु फूल लायके

तबही। काजल संग ताहि पिसवावै, घृत मिलाय आंखनमें लावै। सौ योजनतक धरती चमकै, पुनः दिनमें ताराहू दमकै।

अथ अनाहारचेटकः।

दत्तात्रेयतन्त्रे : अन्त्राणि कृकलासस्य मज्जाकरंजबीजकम्। पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टितम्। तां वक्त्रे धारयेद्योऽसौ क्षुत्पिपासा न बाध्यते। यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि गिरगिट (कृकलास) की आंत तथा करञ्जबीर की गुद्दी पीसकर गोली बनाये और उसे त्रिलौह (अर्थात दश भाग सोना, बारह भाग तांबा, सोलह भाग चाँदी मिलाकर बनाई गई धातु को 'त्रिलौह' कहते हैं : 'दश हेम द्विषट् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम्। एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्व कर्मणि।' जहाँ-जहाँ त्रिलौह आये वहाँ-वहाँ सभी कर्मों में इसी अनुपात को समझना चाहिये) से वेष्टित करके मुख में धारण करने से साधक को भूख-प्यास नहीं लगती—यह शङ्कर का कथन अन्यथा नहीं होता। इसे ऐसे तैसे व्यक्ति को नहीं बताना चाहिये। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमः सिद्धिरूपाय मम शरीरे अमृतं कुरुकुरु स्वाहा।

१०८ बार जप से सिद्धि मिलती है।

अथ आहारकरणचेटकः।

दत्तात्रेयतन्त्रे : सन्ध्यायां अक्षवृक्षस्य कर्तव्यमभिमन्त्रितम्। प्रातः पुष्पाणि संग्राह्य मालां शिरसि धारयेत्। कौपीनं सम्परित्यज्य भोजनं भीमसेनवत्। यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्ध-योगमुदाहृतम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि सन्ध्या समय बहेड़े के वृक्ष को अभिमन्त्रित करे। प्रातःकाल पुष्पों का संग्रह करके उसकी माला शिर पर धारण करे। इससे कौपीन का त्याग कर साधक भीमसेन के समान भोजन करता है। इस साधन को ऐसे तैसे को नहीं बताना चाहिये।

अन्यत्। गृहीत्वा मन्त्रतोमन्त्री विभीततरुपल्लवान्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते विंशत्याहारभुग्भवेत्।

अन्य साधन : साधक मन्त्र से अभिमन्त्रित बहेड़े के पत्तों को लेकर दाहिने हाथ में बांधे तो बीस गुना भोजन करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

अन्यत्। अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने निबन्धयेत्। वायुपुत्र इवाश्चर्यं स तु भुंक्तेन्नपर्वतम्। तत्र मन्त्रः

अन्य साधन : कृकलास (गिरगिट) के अधर को शिखा स्थान पर

बांध लेने से साधक हनुमानजी के समान अन्न के पर्वत का भी भक्षण कर सकता है। यह एक आश्चर्य है। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रसग्रस शोषयशोषय भैरवी आज्ञापयति स्वाहा।

इति सर्वयोगेष्वयमेव मन्त्रः। अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः।

उक्त सभी योगों में यही मन्त्र है। १०८ बार इसके जप से सिद्धि मिलती है।

अन्यत्। प्राकृतग्रन्थे : जो वरणके वृक्षको, सन्ध्या न्यौते जाय। प्रातहि पत्र जु लायके, पगके तले दबाय। भोजन करतो ना थकै, बीस तीसको एक। साधकही भोजनकरै, कसर नहीं लौलेस।

अथ हाजरातचेटकः।

तत्रादौ ख्वाजामन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रो यथा : ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान पीर करो घोडेपर भीड चढो हजरत पीर हाजर सो हाजर। इति मन्त्रः।

इसका विधान : प्रतिदिन उल्टी माला से १०८ जप करने तथा लौंग, इलायची और लोहबान की धूप देने से २१ दिन में सिद्धि मिलती है। फिर जब प्रयोग करना हो तो ८ बजे दिन से पहले ही एक बालक को स्नानादि से पवित्र कराकर बैठाये। उस बालक के नख में स्याही लगाये और उसमें मुख देखने को कहे तथा स्वयं उसके आगे बैठकर धूप देता रहे। सर्वप्रथम एक विशाल मैदान दिखाई पड़ेगा। तब वह बालक कहे कि मुख दिखाना बन्द होकर चौगान हो जाओ—तब चौगान हो जायेगा। तदुपरान्त बालक कहे कि 'दो जन आ जाओ' और जब आ जाँय तब कहे कि '२ जन और आ जाओ' जब वे भी आ जाँय तो कहे कि '२ जन और भी आओ।' इसी प्रकार चार बार कहे। जब आठ आदमी हो जाँय तब कहे कि 'झाड़ू-वाले को बुलाकर झाड़ू लगवाओ।' झाड़ू लग जाने के बाद कहे कि 'भिश्ती को बुलाकर छिड़काव कराओ।' छिड़काव हो जाने पर यह कहे कि 'फर्श बिछाओ।' फर्श बिछ जाने पर कहे कि 'दो कुर्सी और तख्त मँगाओ।' यह भी आ जाने पर कहे कि 'तख्त पर गद्दा बिछाओ।' गद्दा बिछ जाने पर कहे कि 'पीरान् पीर साहब से जाकर हमारे अर्ज की गुजारिश करो कि आपका अमुक भक्त आपको याद करता है, अतः मुन्शी साहब को साथ लेकर कृपा करके पधारो।' जब आदमी जाय और फिर पीर साहब पधारें

तब मुन्शी से कहे कि 'भोग पीरान् पीर साहब की नजर करो।' भोग में इलायची और इतर आदि देवे। तदुपरान्त मुन्शी से कहे कि 'पीरान-पीर साहब से हमारी अर्ज करो कि अमुक भक्त आप से अमुक काम पूछता है।' तब उत्तर मिलेगा। यदि बालक उत्तर को समझ जाय तो ठीक है, अन्यथा मुन्शी से कहे कि 'मैं नहीं समझा। अमुक भाषा में मुझे लिखकर दिखाओ।' इस पर मुन्शी लिखकर दिखावेगा। इसी प्रकार जो कुछ पूछना हो वह पूछ ले। इति।

अन्य प्रयोग :

महम्मदपीरमन्त्रो यथा : बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम महम्मदा ताइ-यासिलारनवलखताजीका असवार यहां चलन्ता कौनकौन चल्या अजैगिर-पर पर्वत चले हाजी चले गाजी चले ढोल वाजन्त भेरी वाजन्त अहेमदा चलन्त महेमदा चलन्त राजा हठीली चलन्त सत्तर सिला चलन्त बहत्तर वल्लम चलन्त एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलन्त बावन वीर चलन्त चौंसठ जोगनी चलन्त नौ नारसिंह चलन्त बारह रावण चलन्त चौसठ मूसा चले सुलेमान पैगम्बरका तखत चलन्त ईसा पैगम्बर का तखत चलन्त बहत्तर खान वज्राईल पैगम्बरका तखत चलन्त लाल परी चली सुपेद परी चली जरद परी चली स्याम परी चली सबज परी चली हूर परी चली जूर परी चली अलोल परी चली आसमान परी चली सुपेद परी चली आकाससे उतरी वराय खुदा मेरे कामकूं सिताबी उतार ल्यावणा एक चलन्ता एकसौ चल्या दोय चलन्ता दोयसौ चल्या तीन चलन्ता तीनसौ चल्या बडे वेगसूं चल्या उडा कुडा देव चल्या मन्दाऊ कालेश्वरी चली लङ्कापै रावण चल्या हनुमन्त चले घूमन गरसूं देवी घूमाचली नदी नालेसूं चली मन्दोदरी रावनपुरीसूं चली उलटी पाखर सुलटी लागी जो कोई कहै हमारी बुरी उल्टी सोमरली देखू ते ताल-मन्त्र तेरी शक्ति बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम उत्तरका बाजा बजा उत्तर का बादशाह आया पश्चिमका बाजा बजा पश्चिमका बादशाह आया पूरबका बाजा बजा पूरबका बादशाह आया कालेकालेके असवार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहां हकालूं जहां हाजिर रहेना देखुदा महम्मदाकी सुबीर पीर नीरनीर नीला घोडा नीलाजीन जिस-पर चढिआया महम्मदा पीर रोजा करै निवाज गुजारै अन्नपानीके कने न आवै खाजखाय अखजपर हरै सो मुसलमान बिहिस्तमें जाय सवामन लोहेको जञ्जीर तोडतो जाई तोडतो आव हाथ कुदाडी गले

जञ्जीर ऐसी कही सुनो महम्मदापीर सुनो महम्मदापीर अपनी मुदारा पेशकरी पराई मुद्रा तोड डाल हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किलेकी असवारी ठः ठः स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सवा हाथ सफेद कपड़ा लेकर गूगल और नमक का धूप दे। फिर कपड़े के ऊपर सवा सेर चावल की मसजिद् बनाये, पानी से भरकर थाली रक्खे और मसजिद के ऊपर चौमुखा दीपक जलावे। कुमारी कन्या को स्नान कराकर और नये वस्त्र पहनाकर अपने सम्मुख बैठावे। १४ मन्त्र से गुड की एक गोली उस कन्या को खिलावे। फिर कन्या से दीपक पर दृष्टि केन्द्रित करने को कहे। तदनन्तर कन्या से जो पूछा जायगा उसे सत्य-सत्य कहेगी ॥ २८ ॥

अन्य हनुमान मन्त्रप्रयोगः।

६० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्रावताराय महाबलाय आंजनेयाय वायुपुत्राय कौशलेन्द्रानुचराय साम्प्रतं स्वात्मानं दर्शय दर्शय सत्यं वद वद स्वाहा हां हां ॐ। इति षष्ठ्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीविश्वलोचनचक्रराजहनुमन्मन्त्रस्य अगस्त्य ऋषिः अतिजगतीच्छन्दः कौशलेन्द्रानुचरो महेश्वरो हनुमान् देवता हां बीजं स्वाहा शक्तिः नमः कीलकं कार्यदर्शने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि १। अतिजगतीच्छन्दसे नमः मुखे २। कौशलेन्द्रानुचरो महेश्वरो हनुमान् देवतायै नमः हृदि ३। हां बीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५। नमः कीलकाय नमो नाभौ ६। कार्यदर्शनविनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो भगवते हां हनुमते हृदयाय नमः १। ॐ रुद्रावताराय महाबलाय हीं हनुमते शिरसे स्वाहा २। ॐ आञ्जनेयाय वायुपुत्राय हूं हनुमते शिखायै वषट् ३। ॐ कौशलेन्द्रानुचराय हैं हनुमते कवचाय हुं ४। ॐ साम्प्रतं स्वात्मानं दर्शयदर्शय हौं हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सत्यं वदवद स्वाहा हां हां ॐ हः हनुमते अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार कराङ्गन्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् : ॐ मनोजवं मारुततुल्यवेगं यतेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे। तदनन्तर सर्वतोभद्रमण्डल या लिङ्गतोभद्रमण्डल में अथवा विष्णुपीठ में या रुद्रपीठ में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं को स्थापित करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नम.' इस मन्त्र से पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे : पूर्वादिक्रम से :

ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वायै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

इससे पूजा करे। तदुपरान्त स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतात्मने हनुमन्ताय सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे और पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके तथा मूलमन्त्र से पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजन करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे। (देखिये चित्र ८) पुष्पाञ्जलि लेकर

ॐ संविन्मयपरोदेव परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे॥ १॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे :

त्रिकोणमध्ये : ॐ रां रामाय नमः[१]। रामश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥ इति सर्वत्र। पूर्वे ॐ हां हनुमन्ताय नमः[२]। हनु०श्रीपा० २। ईशान्ये ॐ सं सुग्रीवाय नमः[३]। सुग्रीवश्रीपा० ३। अग्निकोणे ॐ लं लक्ष्मणाय नमः[४]। लक्ष्मणश्रीपा० ४।

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त :

ॐ अणिमायै नमः[५]। अणिमाश्रीपा० १। ॐ महिमायै नमः[६]। महिमा-

श्रीपा० २ । ॐ गरिमायै नमः[७] । गरिमाश्रीपा० ३ । ॐ लघिमायै नमः[८] । लघिमा० ४ । ॐ प्राप्त्यै नमः[९] । प्राप्तिश्रीपा० ५ । ॐ प्रकाम्यायै नमः[१०] । प्रकाम्याश्रीपा० ६ । ॐ इशितायै नमः[११] । इशिता० ७ । ॐ वशितायै नमः[१२] । वशिताश्रीपा० ८ ।

इससे आठों सिद्धियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद षोडशदलों में दक्षिणावर्त :

ॐ विजयध्वजाय नमः[१३] १ । ॐ सिंहध्वजाय नमः[१४] २ । ॐ हलध्वजाय नमः[१५] ३ । ॐ सुषेणाय नमः[१६] ४ । ॐ भद्रसेनाय नमः[१७] ५ । ॐ जयसेनाय नमः[१८] ६ । ॐ विजयसेनाय नमः[१९] ७ । ॐ गोमुखाय नमः[२०] ८ । ॐ दधिमुखाय नमः[२१] ९ । ॐ जडलांगूलाय नमः[२२] १० । ॐ महीलांगूलाय नमः[२३] ११ । ॐ कालाय नमः[२४] १२ । ॐ महाकालाय नमः[२५] १३ । ॐ वज्रसाराय नमः[२६] १४ । ॐ महासाराय नमः[२७] १५ । ॐ मकरध्वजाय नमः[२८] १६ ।

इससे सोलहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद मण्डल में अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त मातृकाओं वाले भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों [२९-३८] और वज्रादि आयुधों [३९-४८] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य स्तोत्रादिकेन स्तुत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् मौनी एकचित्तो मूलमन्त्रं जपेत् ।

इस प्रकार आवरण पूजा करने के बाद धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके संस्कृत माला लेकर हृदय में धारण करते हुये मौन तथा एकाग्रचित्त होकर मूलमन्त्र का जप करे ।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । बदरघृतैः दशांशतो होमः । तद्दशांशेन त्रिमधुभिस्तर्पणं तद्दशांशेन गन्धवारिभिः मार्जनं तद्दशांशेन मोदकैः पायसेन वा ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्मन्त्रे सिद्धे मन्त्री प्रयोगान्साधयेत् । तथा । शुक्रशनिभौमवासरे घृतदीपं स्वर्णादिपात्रे सुगन्ध वर्त्या संयोज्य ॐ हनुमद्दीपाय नमः इति सम्पूज्य प्रज्वाल्य स्वर्णादिपात्रे कज्जलं पातयेत् । ॐ सिद्धाञ्जनाय नमः इति कज्जलं सम्पूज्य ततो विशाले शोभने पात्रे द्व्यंगुलं वर्तुलं तदुपरि चतुरंगुलं चक्रवालमलक्तकेन वा विधाय तत्राद्यमण्डले स्नेहेन सुगन्धेन

कज्जलं संयोज्य तदुपरि मण्डलं कुंकुमेन संलिप्य भूर्जपत्रे मूलमन्त्रं लिखित्वा मन्त्रान्तरे च पत्रान्तरयोः स्वप्ननिरूपकतगरादीनगरकुंकुम-कर्पूरकल्केन निरूपयेत्। तदग्रे यन्त्रं लिखित्वा तेषाम् : ॐ जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलाः। राजा जयति सुग्रीवो हनुमान्कार्यसाधकः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण मूलमन्त्रेण वा षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। बेर तथा घी से दशांश होम करना चाहिये। फिर होम का दशांश त्रिमधुर (घी, मधु तथा शक्कर) से तर्पण करना चाहिये। तर्पण का दशांश सुगन्धित जल से मार्जन तथा मार्जन का दशांश मोदक या खीर से ब्राह्मण-भोजन करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। शुक्रवार, शनिवार और मङ्गलवार को स्वर्णादि के पात्र में सुगन्धित बत्ती डालकर घी के दीपक की 'ॐ हनुमद्दीपाय नमः' इस मन्त्र से पूजा करके जलाये तथा उससे स्वर्णादि के पात्र में ही काजल पारे। 'ॐ सिद्धाञ्जनाय नमः' इस मन्त्र से काजल की पूजा करके विशाल उत्तम पात्र में अलक्तक (आलता) से दो अंगुल गोल और उसके ऊपर चार अंगुल चक्र-वाल बनाकर उसके आदि मण्डल में स्नेह तथा सुगन्ध सहित काजल को फेटकर उसके ऊपर कुंकुम से मण्डल पर लेप करके भोजपत्र पर मूलमन्त्र लिखे। मन्त्र के बाद पत्र के भीतर स्वप्न विरूपक तगर, अगर, कुंकुम तथा कपूर का चूर्ण तैयार करे। फिर उसके आगे मन्त्र लिखकर उसका 'ॐ जय-त्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः। राजा जयति सुग्रीवो हनुमान्कार्य-साधकः।' इस मन्त्र से या मूलमन्त्र से षोडशोपचारों से पूजा करे।

ततः स्नातं शुद्धमखण्डितब्रह्मचर्यमदूषितं बटुं संस्थाप्य मन्त्रं श्रावयेत् पूजां च कारयेत्। ततः गोघृतेन तैलेन वा दीपं प्रज्वाल्य शुचिर्मौनी अष्टोत्तरशतं मूलमन्त्रं जपेत्। ततो बालः समुत्थाप्य दीपकेन स्पृष्टं कृत्वा मेचकमण्डले नेत्रं दत्त्वा दीपं पश्येत्। तत्र मन्त्रत्रयं जपेत् : हुं इति प्रजपन् बालं पृच्छेत् किं पश्यति एवं पुनः पुनः कुर्यात्। बालकः पूर्वं तेजोमण्डलं पश्यति, तत उत्तरं, तत उपवेशनम्, ततः प्रभां ततः सभय-देवताः, ततः सिंहासनं, ततो हनुमन्तं, ततः सुग्रीवं, ततो लक्ष्मणं, ततः श्रीरामं पश्यति वदति ततो यजमानः स्वचिन्तितं कार्यं बालाय श्राव-येत्, बालः कृताञ्जलिर्वदेत्, भगवन् हनुमन्, मया निवेदितं कार्यं कृपया वद, इति वदेत्। तद्भासितं श्रुत्वा गुरवे निवेदयेत्। तेन कार्यसिद्धय-सिद्धी जानीयात्।

इसके बाद स्नानादि किये हुये और अखण्डित ब्रह्मचर्यवाले पवित्र बालक को बैठाकर मन्त्र सुनाये और पूजन कराये। फिर गाय के घी से या तेल से दीप जलाकर पवित्र तथा मौन होकर मूलमन्त्र का १०८ जप करे। इसके बाद बालक को उठाकर और दीपक का स्पर्श कराकर मेचक मण्डल में नेत्र देकर देखे और वहाँ तीन मन्त्र का जप करे। 'हुं' इसका जप करता हुआ बालक से पूछे कि 'तुम क्या देखते हो ?' इसी प्रकार पुनः पुनः करे। बालक पहले तेजोमण्डल, फिर आसन, उसके बाद प्रभा, उसके बाद सभय देवता, फिर सिंहासन और उसके भी बाद हनुमान को देखता है। उसके बाद सुग्रीव, उसके बाद लक्ष्मण और उसके बाद राम को देखता है। तब यजमान अपना सोचा हुआ कार्य बालक से कहे। बालक हाथ जोड़कर कहे कि 'हे भगवन् हनुमन्! मैंने जो निवेदन किया है उसके सम्बन्ध में कृपया कहिये।' फिर उसके कहे हुये उत्तर को सुनकर उसे गुरु से निवेदन करे और उससे कार्य की सिद्धि या असिद्धि के सम्बन्ध में जाने।

यदा तु किमपि न पश्यति अन्यथा पश्यति गिरिसमुद्रनागयक्षराक्षसनरनारीपशुपक्षिगणं पश्यति तदपि तदा शुभाशुभं तद्रूपेण जानीयात्। अनिष्टं पश्यति चेत् मन्त्रयन्त्रं बटुशिरसि निधाय मन्त्रं जपित्वा पुनः पृच्छेत् ततः इष्टं पश्यति तत्र प्रश्न एकवारं द्विवारं त्रिवारं वा कार्यं पृच्छेत्। चौरजारनारीद्यूतादीनां प्रश्नं न कुर्यात्, यदि कुर्यात्, लक्षमन्त्रं जपेत्। शान्तौ श्वेतवस्त्रमाल्यनैवेद्योपचारैस्तुष्टिं कुर्यात्। इतरे रक्तानि वस्त्राणि धारयेयुः सिद्धं कार्यं भवति। प्रश्नवेलार्धरात्रिरेव। इत्यगस्त्यसंहितायां सुतीक्ष्णागस्त्यसम्वादे विश्वलोचनचक्रपूजाविधानं समाप्तम्।

यदि बालक कुछ भी नहीं देखता अथवा अन्यथा देखता है—जैसे पर्वत, समुद्र, नाग, यक्ष, राक्षस, नर-नारी, पशु, पक्षियों को देखता है तब भी इन रूपों के शुभाशुभ को जाने। यदि वह अनिष्ट देखता है तो मन्त्र या यन्त्र को बालक के शिर पर रखकर मन्त्र का जप करके पुनः पूछे। इससे वह इष्ट देखेगा। उससे एक बार, दो बार, या तीन बार कार्य के सम्बन्ध में प्रश्न करे। चोर, जार, नारी तथा द्यूतादि के सम्बन्ध में प्रश्न न पूछे और यदि ऐसे प्रश्न पूछ ही बैठे तो मन्त्र का १ लाख जप करे। साथ ही शान्ति के लिये श्वेत वस्त्र, श्वेत माला और नैवेद्य के उपचारों से तुष्टि करे। अन्य लोग लाल वस्त्र धारण करें। इससे कार्यसिद्धि होता है। प्रश्न करने का समय आधी रात का ही उचित है। इति अगस्त्य संहिता में सुतीक्ष्ण-अगस्त्य संवाद में विश्वलोचन चक्रपूजा विधान समाप्त।

एक अन्य कामाख्या मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धिदायै अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य वह्निकऋषिः जगती छन्दः कामाख्या देवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तं कीलकम्, अमुककर्मणि जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वह्निकऋषये नमः शिरसि १। जगतीछन्दसे नमः मुखे २। कामाख्यादेवतायै नमः हृदि ३। प्रणवशक्तये नमः पादयोः ४। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः १। कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः २। सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां नमः ३। अमुककर्म अनामिकाभ्यां नमः ४। कुरुकुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो हृदयाय नमः १। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा २। सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट् ३। अमुककर्म कवचाय हुम् ४। कुरुकुरु नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्ग-न्यासः।

इससे न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम्। ॐ योनिमात्रशरीरा या कंगुवासिनि कामदा। रज-स्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा॥ १॥

इति ध्यात्वा मन्त्र जपेत्। अस्य पुरश्चरणमिहायुतजपः। गुडहल पुष्पेण दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतत्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगा-न्साधयेत्।

इससे ध्यान करके मन्त्र का जप करे। इसका पुरश्चरण १० हजार जप है। जप का दशाँश गुडहल के फूलों से होम करे। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और तब सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि : 'इस यन्त्र को लिखकर उसमें मेढल की राख लपेटकर रूई के साथ बत्ती बनावें

और उसके तेल में जलावें। फिर उस दीपक के सम्मुख आठ-दस वर्ष की कन्या अथवा पुत्र, जो उच्चवर्ण और देवतागण हो, को स्नान कराकर बैठाये। उसके हाथ में मेढल की राख तेल में सानकर लगा देवे। तब स्वयं मन्त्र पढ़ने लगे और बालक से कहे कि वह दीपक की लौ पर दृष्टि बाँधकर देखे। बालक को जैसा दिखाई पड़ेगा उसे वह सत्य-सत्य बतायेगा—इसमें सन्देह नहीं है ॥ २८ ॥

एक अन्य २५ अक्षरों का तैलमातङ्गी मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं तैलमातङ्गि नृनखमध्ये आगच्छ ततः कर्म कुरुकुरु स्वाहा। इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार की रात से काले कम्बल पर बैठकर नग्न हो प्रतिदिन १०८ बार मन्त्र का जप करने से २१ दिन में सिद्धि होती है। उसके बाद इस प्रकार करे : शनिवार की रात को तिल का तेल १ तोला काँसे की कटोरी में डालकर दूर्वा की प्रोक्षणी द्वारा १०८ बार उस तेल को अभिमन्त्रित करके रख ले। पुनः रविवार को प्रातःकाल चौका लगाकर धूप दे, फूल-माला चढ़ाये। फिर ९ या १० वर्ष के एक बालक को स्नान कराकर और सुगन्ध-द्रव्य लगाकर स्वच्छ वस्त्र पहनाकर वहाँ बैठा दे। पहले दिन का अभिमन्त्रित किया हुआ तेल बालक के हाथ के अंगूठे के नाखून में लगाकर उससे एक-टक देखने के लिये कहे और साधक स्वयं उस बालक के सामने बैठकर मन्त्र पढ़-पढ़कर बालक के ऊपर फूंक मारता और धूप देता रहे। थोड़ी देर के बाद बालक से पूछे कि उसे क्या दिखाई पड़ता है। पहले बालक को मुख दिखाई पड़ेगा। तब बालक से यह कहलावे कि 'हे मातेश्वरी ! तुम्हारा अमुक भक्त तुम्हें स्मरण कर रहा है अतः शीघ्र आकर दर्शन दो।' ऐसा कहने पर जब सिंहासन पर आरूढ़ देवी या जटा बिखेरे हुये भैरव दिखाई पड़े तब बालक के हाथ में पेड़ा देकर उससे कहलावे कि 'भोग लो।' तदुपरान्त इलायची दे, फिर सुगन्ध-द्रव्य देवे। यदि देवी इन वस्तुओं को लेती हुई दिखाई पड़े, तब जब ले चुके तो बालक हाथ जोड़कर पूछे कि 'आपका अमुक भक्त अमुक कार्य के सम्बन्ध में पूछता है। कृपया बताओ।' ऐसा कहने से देवी बतायेगी। जब तक यह प्रयोग करे तब तक धूप देता रहे।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहीम खुदाई बडा तूं बडा जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरा सादात फुरो वादना मुरादीबेवुनियादी तुर्कमापरि तायिया-

सिलार देखूं तेरी शक्ति वेगि बांधिल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलवा बारा ब्रह्मा अठारहसौ साकिनी कामनदुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया वैताल वेगि बांधिल्याव जो न बांधि ल्यावै तो दुहाई सुलेमान पैगम्बरकी। इति मन्त्रः।

इसका विधान : प्रति शुक्रवार को क्रमशः तेल, अतर, लौंग, धूप और मिठाई से पूजन करके १०८ बार मन्त्र पढ़ने से ४० दिन में सिद्ध होता है। तदुपरान्त जब हाजिर करना हो तब मिट्टी से चौका लगाकर उस पर चावलों की मसजिद बनावे। फिर एक पटरे पर त्रिशूल लिखकर कन्या को स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहनाये और उक्त पटरे पर बैठा दे। उसके सम्मुख दीपक जोड़कर रक्खे और साधक स्वयं मन्त्र पढ़-पढकर कन्या के मस्तक पर चावलों को मारे। ऐसा करने से उस कन्या से जो कुछ पूछा जायगा उसका उत्तर दीपक में देखकर वह सच-सच बतायेगी—इसमें सन्देह नहीं है॥ २९॥

एक अन्य प्रयोग : पुष्य नक्षत्र में सूर्योदय से पहले नग्न होकर लाल बोगा की जड़ साबित खोदकर निकाल लावे। फिर उसके तन्तु में रूई लपेटकर दीपक जलाकर दिखाने से सत्य-सत्य बिना मन्त्र के ही दिखाई पड़ने लगेगा—इसमें सन्देह नहीं है॥ ३०॥

अथ मण्डूकयुग्मचेटकः।

दत्तात्रेयतन्त्रे : मण्डूकद्वितयं ग्राह्यमेका नारी परो नरः। द्वितीया मुखमध्ये च मुद्रा स्वर्णस्य दीयते॥ १॥ श्मशाने गर्तकुण्डे तु निखनेद्भूतले ध्रुवम्। नार्याः कार्या चिता वामे पुरुषस्य च दक्षिणे। एकादशदिनं यावद्गन्धकं धूपमादिशेत्। तद्दिने संगृहीत्वा तु मुद्रिकां ग्राह्य यत्नतः। नारीसंज्ञा मुद्रिका च त्रिलोहे वेष्टितां कुरु। दक्षिणे बाहुमूले च कण्ठ-स्थाने विशेषतः। धारयेच्च नरः सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः। पुरुषसंज्ञा मुद्रिका च संसारे दीयते तथा। व्यापारं तस्य कृत्वा तु यथेच्छं सुख-माप्नुयात्। क्षणमात्रे हस्तमध्ये आगच्छति न संशयः। यावज्जीवं नरः सत्यं यावत्कौतुककौतुकम्। युग्मसंज्ञस्त्वयं सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः।

दत्तात्रेय तन्त्र में इस प्रकार लिखा है : एक नर और एक मादा, इस प्रकार दो मेढक लेकर दोनों के मुख में सोने की एक-एक अँगूठी डाल दे। फिर श्मशान में गड्ढा खोदकर नारी मेढक की चिता बायें और नर मेढक की दाहिने बनाये। ११ दिन तक दोनों को गन्ध और धूप देवे। ग्यारहवें

दिन अँगूठी को यत्न से लेकर नारी मुद्रिका को त्रिलौह में बांधकर दाहिने हाथ के मूल में या कण्ठ में विशेष रूप से साधक धारण करे। यह सिद्ध योग कहा गया है। फिर नर मेढक के मुख की अँगूठी से व्यापार करे। इससे व्यापार करके साधक यथेष्ट सुख प्राप्त करता है। क्षण मात्र में वह बिकी मुद्रा पुनः साधक के पास लौट आती है। मनुष्य जब तक जीवित रहता है तब तक यह आश्चर्यों का आश्चर्य सत्य-सत्य घटित होता रहता है। युग्मसंज्ञक यह सिद्ध योग बताया गया।

अथ वस्त्वाकर्षणचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ में इस प्रकार कहा गया है :

प्राकृतग्रन्थे : पारा विष अरु बीज अण्डके, मांसनागको लीजै। बीज ककोडा मांस छिपकली, बन्दर हाडजु लीजै। लेपकरै जल पीस हथेली, जहां हाथ वह लागै। बिन बल किये वस्तु वह आपुहि, सङ्गहि सङ्ग जु लागै।

यन्त्रभञ्जनचेटकः।

रविदिन दोपहेरी समै, नङ्गा होकर ल्याय। चील कागका घोलसा, लाइ धूप दे ताहि। बहुरि जरावै अगिनमें, ल्यावै अगिन उठाय। मुन्दे कुलफपर मारिये, कुञ्जी बिन खुलजाय।

अन्यत्।

भादों भौमवारको जोई, चन्द्रग्रहणं कहि ता दिन होई। नङ्गा होय जतन यह कीजे, जड औंगाकी खोद धरीजे। जीभ नांक दन्ता अरु काना, इनका मल सब लेय समाना। पांचों पीस धरै निजपासा, यहविध करिये चेटक जासा। एक हांथमें गुटिका रखिये, द्राविणद्राविण स्वाहा जपिये। ऐसे जपत छुवतही ताला, विन ताली खुलै ततकाला।

अथ निगडभञ्जनचेटकः।

दत्तात्रेय तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपधराय हसहस नृत्य नृत्य तुद तुद नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठःठः स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : हस्त नक्षत्र में सिन्दुवार की उस जड़ को लावे जो उत्तर की ओर गई हो। फिर उक्त मन्त्र पढ़कर यदि उसे बेड़ी से लगाये तो तत्काल बेड़ी खुल पड़ेगी।

प्राकृत ग्रन्थ में इस प्रकार कहा गया है :

लालकमल जटामांसी लावै, लाय तुल्य किरकिटै खवावै। ताको मल बेडीके लावै, तुरत बन्द बेडी खुलजावै।

अथ द्वारभञ्जनचेटकः।

मन्त्र इस प्रकार है :

दं हुं ॐ आयआय चिंचिटिचिटिह्लांलां वज्रनन्दिके कालिके स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से अभिमन्त्रित सफेद सरसों को किवाड़ों पर मारने से तत्काल ही बन्दीगृह के किवाड़ खुल जांयगे।

अथ राश्युत्थापनचेटकः।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो हुंकालूं चौंसठयोगिनीहुंकालूं बावनवीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊ आगे चौंसठ वीर जलबन्ध बलबन्ध आकाशबन्ध पौनबन्ध दीन-देशकी दिशाबन्ध उत्तरै तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तवीर्यराजा आसमानमें बावन वीर गाजै नीचे तो चौंसठयोगिनी विराजैं पीर तो राशि चलावै छपन्यां भैरूं राशि उडावै एकबन्ध आसमानमें लगाया दूजा बन्ध राशि घरमें ल्याया शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

इसका विधान : दीवाली की रात को वन में जाकर खुरसा (बकरा) की मींगनी लाये और उसे अभिमन्त्रित करके अन्न की राशि के ऊपर रक्खे तो सब अन्नराशि साधक के घर आ जायगी॥ २२॥

अथ तस्करग्रहणचेटकः।

मन्त्र इस प्रकार है :

उद्दमुद्दजल्लजलाल पकड चोटी धर पछाड भेज कुद्दा ल्याव मुद्दा याकहु हारो या कहु हारो। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र को नदी के किनारे अथवा कुएँ पर १२१ बार पढ़कर सो रहे तो सात दिन में सारा भेद मालूम हो जायेगा—जैसे यदि कोई माल चुरा ले गया हो तो उसने उस माल को कहाँ रक्खा है वह सब मालूम हो जायेगा॥ २३॥

एक अन्य प्रयोग का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः किष्किन्धापर्वतपर कदलोवन तिस्के फल तोडनवाला चोर तेरे कुञ्जनको देनो पकड दे इतनी आज्ञा फुरो। इति मन्त्रः।

इसका विधान : जिन पर सन्देह हो उनका नाम लिखकर आटे में गोली बनाये। इनमें से प्रत्येक गोली पर २१ बार मन्त्र पढ़कर पानी में डालता जाय। जिसने चोरी किया है केवल उसी के नाम की गोली तैरती रहेगी, शेष डूब जाँयगी। इस प्रकार चोर के नाम का पता लग जायगा।२४।

एक अन्य प्रयोग का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ इन्द्राग्निबन्धबन्ध ॐ स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार या शनिवार को लोगों का नाम भोजपत्र पर लिखकर प्रति नाम को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अग्नि में डालने से केवल चोर का नाम नहीं जलेगा। यदि इसी मन्त्र को लिखकर सफेद मुर्गे के गले में बाँध दे और उस मुर्गे को टोकरे के नीचे बन्द करके लोगों का हाथ मुर्गे को पकड़ाये तो चोर का हाथ पकड़ते ही मुर्गा बोलने लगेगा।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

रास्तीमुजुव्वेरजापेखुदाय कश्म दीदमगल कशुदमुजर्रात। इति मन्त्रः।

इसका विधान : संदिग्ध लोगों का नाम लिखकर चमार के सुतारी को उल्टी जूती में गाड़कर दो अँगुलियों पर उठावे और मन्त्र पढ़े। चोर का नाम पकड़कर उठाते ही जूती चक्कर देने लगेगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

कुछ अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रां चक्रेश्वरि चक्रधारिणि चक्रे वेगि काटि भ्रामिभ्रामि चोर-ग्रहणि स्वाहा।

ॐ नारसिंहवीर हरे कपडे ॐ नारसिंह वीर चावल चुपडे सरसोंके फकफक करै शाहको छोडै चोरको पकडै आदेस गुरूको।

ॐ नमो नारसिंह वीर ज्यूंज्यूं तूं चालै पवन चालै पानी चालै चोरका चित्त चालै चोरके मुखमें लोही चालै काया थांभै माया परे करै जो चोरके मुखमें लोहो न चलावै तो गोरखनाथकी आज्ञा मेटै नौनाथ चौरासीं सिद्धकी आज्ञा मेटै। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सवा पाव चावल तीन बार पानी से धोकर गोमूत्र में भिगा दे और फिर सुखाकर रख ले। शनिवार के दिन प्रातःकाल भूमि को लीपकर कपड़ा बिछाये और उस पर उक्त चावलों को रखकर उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक को पढ़कर १०८ बार फूंके। फिर चार यारी जो

चौकोर हो या जिसमें सुराख न हो, लेकर दूध से धोकर उनमें चावल तौलकर सन्दिग्ध व्यक्तियों को चबाने के लिये दे। जो चोर होगा उसके मुख से चावल चबाते ही रक्त निकलने लगेगा।

अथ मार्गचेटकः।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं आधारेश्वरि नित्यं यंयंदां। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् : त्रिंशद्वारं जप्त्वा शताभिमन्त्रितेन सूत्रेण द्वौ पादौ बद्ध्वा तदा पञ्चविंशतियोजनं गच्छेत्।

इसका विधान : तीस बार जप कर सौ बार अभिमन्त्रित सूत से दोनों पैरों को बाँधकर मनुष्य २५ योजन तक जा सकता है।

कुछ अन्य प्रयोग :

श्वेतककोडा काकजङ्घा, सरफोंकाहू लेय। जड तीनोंकी सहेतसङ्ग, जाहि पिया करदेय। अरु तीनोंकी पोटली, कटिसूं देय बंधाय। मारगमें हारै नहीं, उडचो पवनसो जाय।

काले तीतलको तीनदिन, भूखा राखै कोय। चौथे दिन पुनि ताहिको, पारा प्यावै जोय। दुग्धभेय चावल तबहि, तीतलही खवावै। विष्ठा ताके गुटिका निकलै, मुखधर हार न आवै।

अथ योजनवार्ताश्रवणचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग :

वींट गीधकी लायके, तासम पीपर डारी। मालकांगनी छाल जु नींबू, पीस छानकर त्यारी। धरके ताहि पताल यन्त्रमें, खैंच अरक पुनि लीजे। गेर कानमें योजनभरकी, तत्क्षण बात सुनीजे।

अथ गुप्तवार्तालक्षचेटकः।

प्राकृत ग्रन्थ का एक अन्य प्रयोग :

रविदिन जहांजु गुग्घू पावै, ताको काढ कलेजो ल्यावै। ताकूं धूप दीप दे राखै, सोवत नरके हिरदे नाखै। गुप्त वात मनमें जो होई, ज्योंकी त्यों सबही कहदेई।

अथ जलालोपकरणचेटकः।

रविदिन मावस होय जब, चोंच हंसकी लाय। रेखा तासो खैंचिये, जहं पनघटकी वाट। घटभर पनघटसों चलै, लांघ जाय वह रेख। खाली घट दीखनलगै, विना नीरको पेष। जो चालै फिर उलटिके, लांघै ग्हीं लकीर। भऱ्यो घडो दीखनलगै, जब आवै जिय धीर।

अथ स्त्रीवीर्यपातनचेटकः ।

चटकमैथुनं पश्येद्यावद्वारं करोति च । तावद्ग्रंथ्यश्च सूत्रेण दीयन्ते कौतुकं महत । कृकलासस्य रक्तेन लेपितं ग्रंथिसूत्रकम् । आगच्छति महा-रूपा वनिता स्वच्छन्दचारिणी । मध्यग्रंथिः खुलिता च योषिद्वीर्यं सृज-त्यलम् । विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ।

दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है : गौरैया का मैथुन देखे और जितने बार वह करता है उतने बार सूत में गाँठ देवे । फिर उस गाँठ लगे सूत को कृक-लास (गिरगिट) के रक्त में लपेट दे । इससे एक अत्यन्त सुन्दरी स्वच्छन्द-चारिणी स्त्री आती है । मध्य ग्रन्थि खोलने पर स्त्री वीर्य छोड़ देती है । यह अत्यन्त आश्चर्य है । बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है । यह एक सिद्ध योग कहा गया है ।

अथ जलविहारचेटकः ।

प्राकृतग्रंथे : होय सर्प जो दोमुहां, ताको लोही लाय । तामें वस्त्र भिगोय के धरिये धूप सुकाय । फिर ताको गोलाकरै मुखमें राखै मेल । दरिया में घुसके करै, जलभीतर की सैल । विद्या चेटक अति भलो, कोउ करके देख । गुरूविना नहि पाइये, गुप्त बातको भेद ।

अथ रसायनचेटकः ।

दत्तात्रेयतन्त्रे : गोमूत्रं हरितालं च गन्धकं च मनःशिलाम् । समंसमं गृहीत्वा तु यावच्छुष्यति पेषयेत् ॥ १ ॥ गोमूत्रं रक्तवर्णाया गन्धकं रक्तवर्णकम् । एकादशदिनं यावद्यत्नेनैव च रक्षयेत् । मन्त्रेण धूपदीपादि-नैवेद्यंर्धूपसंयुतैः ॥ २ ॥

दत्तात्रेय तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : गोमूत्र, हरताल, गन्धक तथा मैनसिल को सम-भाग लेकर जब तक सूख न जाय तब तक पीसता रहे । इस प्रयोग में लालवर्ण की गाय का मूत्र तथा रक्तवर्ण का गन्धक ग्रहण कर ११ दिन पर्यन्त पवित्र होकर धूप, दीप, नैवेद्य और मन्त्र से उसकी रक्षा करे । मन्त्र यह है :

ॐ नमो नमो हरिहराय रसायणसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।

पेषणसमये अयुतं जपेत् सिद्धिः । तं च मन्त्रं धूपादिकर्मणि योजयेत् । ततः-स वटीं गोलकं कृत्वाऽऽवेष्ट्य वस्त्रेण यत्नतः । मृत्तिकां लेपयेत्तस्य-च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ गर्तकुण्डे विनिक्षिप्ते पलाश काष्ठवह्निना । अष्टयामेन पर्यन्तं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ४ ॥ तद्भस्म जायते सिद्धि

ऋद्धि सिद्धि समानकम् । ताम्रपत्रे अग्निमध्ये बिन्दुमात्रेण निक्षिपेत् ॥५॥ तत्क्षणाज्जायते स्वर्णं नान्यथा शङ्करोदितम् । देयोऽयं गुरुभक्ताय न दद्याद्दुष्टमानसे ॥ ६ ॥ सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रीलक्षजापकैः । यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं शिवभक्तके ॥ ७ ॥ अग्निमूर्ध द्विजातीनां याचकानां विशेषतः । गोप्यं गोप्यं महागोप्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ८ ॥ वर्षा प्रावृट् काले च गोप्यं नैव प्रकाशयेत् । वनितापुत्रमित्रादिगोप्यं सिद्धिप्रदायकम् ॥ ९ ॥

पीसते समय इस मन्त्र का दश हजार जप करने से सिद्धि होती है। इस मन्त्र का धूपदान आदि में भी प्रयोग करे। इसके बाद १२वें दिन उसकी गोल बटी बनाकर यत्नपूर्वक कपड़े में लपेटकर उस पर मिट्टी लपेटकर छाया में सुखा ले। इसके बाद गड्ढे में डालकर पलाश की लकड़ी से आठ याम तक जलाये। इस प्रकार उसका भस्म तैयार होता है। यह सिद्ध भस्म ऋद्धि-सिद्धिप्रद है। अग्नि में तपाये ताम्रपत्र पर इसका एक बिन्दुमात्र डालने से वह तत्क्षण सोना हो जाता है। यह शङ्कर का कथन मिथ्या नहीं हो सकता। इसे केवल गुरुभक्त को ही देना चाहिये, दुष्ट व्यक्ति को नहीं। सिद्ध पीठ में गायत्री मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्धि होती है। इसे ऐसे-तैसे को नहीं देना चाहिये। केवल शिवभक्त मात्र को ही देना उचित है। अग्निहोत्री और याचक ब्राह्मण से विशेषकर गुप्त रखना चाहिये। यह रसायन देवताओं को भी दुर्लभ है। इसे वर्षा और प्रावृट काल में प्रकाशित न करे। स्त्री, पुत्र तथा मित्रादि से भी इसे गुप्त रखना चाहिये। यह सिद्धिप्रद रसायन है। (नोट : इस रसायन को बनाने से पहले भी मन्त्र का दश हजार जप करे, फिर रसायन बनाने के लिये उद्यत हो)।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ब्रह्मवृक्षस्य कल्पनम् । शृणु वत्स विधिं तस्य ब्रह्मवृक्षस्य यत्फलम् ॥ १० ॥ दारिद्र्यदुःखनिर्णाशो नराणां बुद्धिवर्द्धनम् । तस्य पुष्पाणि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ११ ॥ अजाक्षीरेण तद्भाव्यं त्रिवारंहि पुनः पुनः । वङ्गस्य षोडशांशेन प्रतितापं तु कारयेत् ॥ १२ ॥ तद्वङ्गं शोध्य नागेन पुनस्तैरवधार्यते । जायते शोभनं तारं शङ्खकुन्दसमप्रभम् ॥ १३ ॥

एक अन्य प्रयोग : अब मैं पलाश वृक्ष का कल्प बताऊँगा। हे वत्स ! ब्रह्मवृक्ष का जो फल है उसे सुनो। यह मनुष्यों की दरिद्रता तथा दुःखों का नाशक और बुद्धिवर्द्धक है। इसके पुष्पों का संग्रह करके सूक्ष्म चूर्ण बना

लेवे फिर उसे तीन बार बकरी के दूध की भावना दे। सोलह भाग रांगा को गलाकर सीसे से उसका शोधन करे। फिर उसे पुष्प चूर्ण के साथ मिला देने से शङ्ख और कुन्द के पुष्प की शोभा के समान उत्तम चांदी तैयार हो जाती है।

तस्य वृक्षस्य पुष्पाणि तद्रसे भाव्य तारकम्। त्रिंशांशं वेधयेद्वङ्गं तेन तारं च नान्यथा ॥१४॥ हिमकुन्देन्दुसदृशमष्टदोषविवर्जितम्। जायते नान्यथा वत्स भक्तियुक्तस्य तद्भवेत् ॥ १५ ॥

पलाश के पुष्पों के रस में चांदी को भावित करके उसके तीस भाग के बराबर रांगे से चांदी बन जाती है। यह अन्यथा नहीं है। हिम, कुन्द-पुष्प तथा चन्द्रमा के समान आठ दोषों से रहित यह चांदी बनती है। हे वत्स ! यह असत्य नहीं है। जो भक्ति भाव से युक्त है उसी को यह सिद्धि प्राप्त होती है।

ब्रह्मवृक्षफलं पिष्ट्वा गन्धकं भाव्य यत्नतः। शुक्ल(शुल्व)पत्रप्रलेपेन पुटेनैकेन काञ्चनम् ॥ १६ ॥ तस्य वृक्षस्य तैलेन भावयेद्रसगन्धकम्। नागं हेमं भवत्याशु द्वात्रिंशेन तु वेधयेत् ॥ १ ॥ शून्यभवनमध्ये तु कर्तव्यं तु यथोचितम्। तस्य फलरसेनैव हेमं भवति निश्चितम् ॥ २ ॥

पलाश के फल को पीसकर उसके रस में गन्धक को भावित करे। फिर शुक्ल (शुल्व) पत्र, अर्थात् चांदी के पत्र पर उसका लेप करके पुट देवे तो एक ही पुट में सोना बन जाता है। पलाश के बीज के तेल से पारा तथा गन्धक को भावित करके उससे सीसे का ३२ बार वेधन करने से वह सोना हो जाता है। एकान्त घर में यथोचित कार्य करना चाहिये। पलाश के फल के रस से सोना निश्चित रूप से बनता है।

कुछ अन्य प्रयोग :

पारा ३ टङ्क और जस्ता ३ टङ्क मिट्टी के खपड़े में रखकर सागर पत्र रस पर बूंद-बूंद देने से भस्म होता है।

इसके बाद :

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः वं आपदुद्धरणाय अजामल-बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्र्यविद्वेषणाय श्रीमहा-भैरवाय नमः।

इस मन्त्र की सिद्धि द्वारा उसे रौप्य पत्र पर लेपन करे या चांदी गला-कर उस पर डाले तो स्वर्णसिद्धि होती है ॥ ३ ॥

पारे को तुलसी-पत्र के रस में घोंटे। जब दाना-दाना हो जाय तब नर चमगादड़ के कमर में कन्या के काते सूत से उसी इस मन्त्र से बांधे (मन्त्र यह है :

ॐ मोहनपारा अनतदुवारा काज करै हमारा जो अग्नि ऊपरथी जाय तो श्रीगुरुगोरखनाथकी आन। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र के प्रभाव से पारा आग में उड़ेगा नहीं। तदनन्तर पारे को चमगादड़ के मुख में डालकर उसके कण्ठ तक पहुंचा दे, फिर मुख तक उसी कपड़ा मिट्टी लगाकर खूब सुखा दे। फिर शराब सम्पुट में बन्द कर गजपुट में फूंक दे जिससे चमगादड़ की अस्थियाँ तक सब जलकर भस्म हो जाय। यह बात चार-पांच दिन अग्नि में रहने देने से ही होगी। जब आग बुझने लगे तब उसे कण्डे डालकर सुलगा दिया करे। जब स्वाङ्ग शीतल हो जाय तब भस्म निकाल ले। फिर तांबा गलाकर उस पर थोड़ी सी भस्म डाले तो स्वर्ण हो जाता है—ऐसा चिकित्सा चक्रवर्ती में लिखा है ॥ ४ ॥

१ तोला सफेद हिंगुल, अर्थात रस कपूर को बिजौरे नीबू के बीच में रखकर कपड़मट्टी करे और एक सेर छाणा (सूखे कण्डे) में फूंक दे। फिर इसे तांबे में डाले तो वह पानी सोखने वाला हो जायगा—यह भावनाथजी का प्रयोग है ॥ ५ ॥

एक तोला हरताल को इन्द्रायण के फल में रखकर ४ कपड़मट्टी करे और सवा सेर छाणा (सूखे कण्डे) में फूंके। इसी तरह उसे २१ इन्द्रायण के फलों में फूंके तो पानी सोखनेवाली भस्म बनती है ॥ ५ ॥

सांभर नमक और हलदिया १-१ तोला लेकर ढाक की १ सेर कोपल के रस में खरलकर उसकी लुगदी को कपड़मट्टी करके फूंक दे। फिर तीन तोला रांगा में चार चावल डालें तो सब काम बन जाता है ॥ ६ ॥

तपकिया हरताल, हलदिया, जहरपारा—प्रत्येक डेढ़-डेढ़ तोला लेकर ग्वारपाठे के रस में ४ घड़ी खरल करे। फिर टिकडी करके शराब सम्पुट में रखकर १० तोला सीप के चूने से उसका मुख बन्द करके कपड़मट्टी कर ढाई सेर कण्डे की गर्म राख में फूके। फिर ठण्डा कर निकाल ले। इसे तपे ताम्र-पत्र पर भुरकने से वह चक्कर खाकर स्वर्ण हो जायगा ॥ ७ ॥

जङ्गली सूअर के गले का मांस डेढ़ सेर, तपकिया हरताल आधा सेर—सबको कपड छानकर मिलावे और मुख मुद्रा कर ४० दिन घूरे में गाडे रहे।

फिर निकालकर उसमें जो पीतमुख के कीडे पड़ें उन्हें शीशी में भरकर खिचड़ी सीझते हुये बटलोहे में रक्खे तो वे कीड़े पानी हो जांयगे। वह पानी लेकर ताम्रपत्र पर लगाकर आग में तपाने से स्वर्ण होगा। यदि सूअर के मांस के स्थान पर पहले-पहल ब्यायी गाय की पहले या दूसरे दिन की खीस (फेनुस) काम लाये तो भी ठीक है। कोई-कोई हरताल के बदले आमलासार गन्धक डालने के लिये भी कहते हैं ॥ ८ ॥

ताम्रपात्र
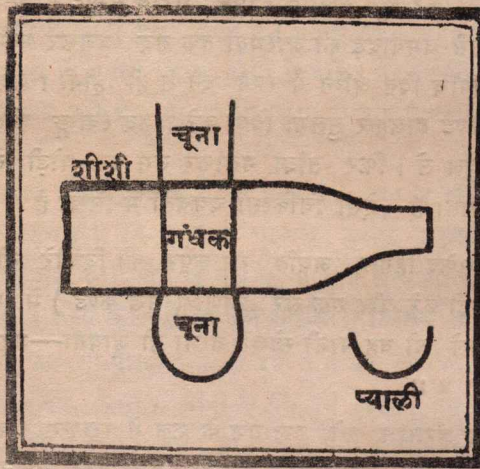
एक महात्मा ने गन्धक का तेल बनाने की यह रीति बताई है : एक तांबे का बड़ा पात्र लेकर उसके दोनों बगलों में इतना बड़ा छेद करे जिससे उसमें से शीशी चली जाय। पूरा यन्त्र ऊपर चित्र में देखें। चित्र के अनुसार यन्त्र बनाकर उसमें पत्थर का तुरन्त का फूँका हुआ चूना भरे, फिर शीशी में गन्धक भरकर उस पात्र में कुछ तिरछा अटकाये। सन्धियों को गेहूं के आटे से अच्छी तरह बन्द करके उसे सुखा ले। शीशी के ऊपर भी चूना ढक दे और पात्र का मुख खुला रक्खे। फिर उस पात्र में पानी डालने से जब चूना उबलेगा तब उसकी गर्मी से गन्धक का तेल निकलकर बाहर पड़ने लगेगा। उस तेल को चीनी के प्याले में एकत्र कर ले। उस तेल को किसी तांबे के पत्र पर लगाकर तपाने से वह स्वर्ण हो जाता है।

दूसरे महात्मा ने कहा है कि गन्धक हरे वर्ण का होना चाहिये। उसको

प्याज के रस में गोली बनाकर शीशी में डालना चाहिये। ऐसा करने से पातली यन्त्र द्वारा अग्नियोग से भी तेल निकल जायेगा क्योंकि हरी गन्धक आग में विशेष गलती नहीं ॥ ९ ॥
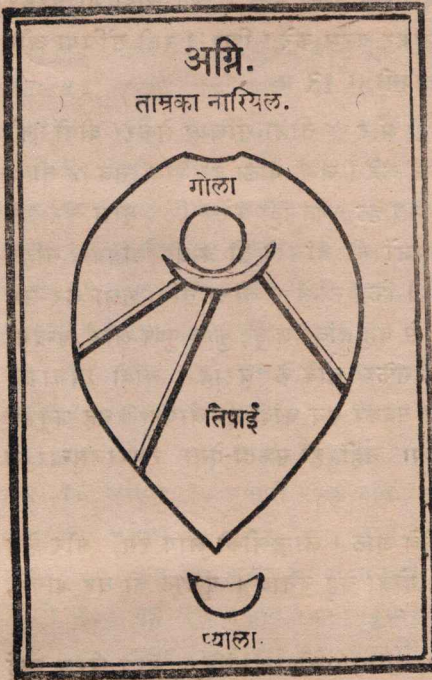
एक महात्मा बङ्गाली ने गन्धक का तेल निकालने की विधि इस प्रकार बताई है : आमलासार गन्धक को जामुन की छाल के रस में ४ पहर घोटकर गोली बनावे और एक ताँबे के नारियल में, जिसके नीचे छिद्र हो, ताँबे की तिपाई रखकर उसके ऊपर गन्धक का गोला रक्खे (देखिये चित्र)। फिर ताँबे के नारियल का मुख ताम्र-पात्र से ही बन्द करके मुद्रा करे। इसके ऊपर अग्नि जलाने से तेल टपक आयेगा। इस तेल को ताम्रपत्र पर लगाकर अग्नि में डालने से स्वर्ण होता है। कोई-कोई बिजौरे नीबू के रस में गन्धक घोटने की बात कहते हैं ॥ १० ॥

कुछ अन्य प्रयोग :

अन्यत्। रुद्रवन्तीलक्षणम्। पत्ता चणेके पत्रसम, चपटा छत्ता गोल। जैसे मोटी रोटी होती है, याविध मोटा तोल। पृथ्वी नीचे चिक्कणी, जाविच चींटी लाग। ताका पत्र जिह्वा धरे, तीक्षणता अतिभाग। निपजत है सबही जघां, मिलै भाग्यविन नाहिं। ताम्रपत्र बुन्द एक दे, तबै सुवर्ण होजाहि ॥ ११ ॥

अन्यत्। संखिये की डली को डोलायन्त्र द्वारा कडुवे तेल में औटावें। जब उसमे सींक घुसने लगे उस समय नकछिकनी के रस के साथ उसे कुलहडे

(मिट्टी के पात्र) में डालकर थोडा सा शोरा भी डाले और आंच पर रक्खे। जब बोलना बन्द हो जाय तब उतार ले। फिर ६ माशा तांबा सुहागे के रस से गलावे। जब चक्कर खाने लगे तब उसमें १ रती संखिया डाले तो तांबा सपेद हो जायगा। फिर ६ माशा चांदी डाले। जब चांदी भी चक्कर खाने लगे तब थोड़ासा शोरा डालकर गरम करे। फिर १ रती संखिया और डालने से अति शुद्ध चांदी बन जायगी ॥ १२ ॥

अन्य प्रयोग : ४ तोला पारा और ४ तोला संखिया लेकर दोनों को ७ दिन तक नींबू के रस में खरल करे। जब गाढा हो जाय तब ४ तोला चांदी को सम्पुट में रखकर अत्यन्त दृढ कपडमट्टी करे। फिर सुखा कर उसे एकान्त स्थान पर तीस आरने उपलों की आंच दे तो आधी डिबिया सहित सब चीजों की चांदी हो जायगी। फिर उसमें २ तोला तांबा गला कर उस डिबिया की ५ रती चांदी डालने से वह तांबा शङ्ख, कुन्द पुष्प और चन्द्रमा के समान श्वेत हो जायगा। फिर सफेद तांबे के बराबर चांदी मिलाकर अच्छी तरह धमाने (गर्माने) से सबका सब चांदी हो जायगा। यह अनुभव किया हुआ प्रयोग है अतः मिथ्या नहीं हो सकता-ऐसा रसराजसुन्दर में लिखा है ॥ १३ ॥

पीत धतूरापुष्परस, सीसा तोले आठ। लाङ्गलीको लाय रस, और लेय रस पाठ। मर्दन करके खरल में, गोला लेहु बनाय। गजपुट की धर आगमें, फूंक सुवर्ण बनाय।

मधु घृत गुड अरु तांबो लाय, सोनामाखीपारामांहि। कीजे खरल इन्हें मिलवाय, दीजे तीव्र अग्नि जलवाय। मुसमांही रखकर मुखबन्द, जासे रहे न पावै सन्ध। दीजे अग्नि न बीच धराय, ऐसे चांदी सहज बनाय।

अथ समयज्ञानचेटकः।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : अनेक वस्तुओं को तोलकर उक्त मन्त्र द्वारा गांठ बांधकर रख दे। प्रभात समय में उन्हें पुनः तोलने से जो वस्तु घट जाय वह मँहगी होगी और जो बढ़ जाय वह सस्ती होगी—ऐसा जानना चाहिये।

अन्य प्रयोग :

निम्नलिखित चक्र के द्वारा सभी वस्तुओं की तेजी मन्दी का ज्ञान होता है।

वस्तुओं की मन्दी तेजी देखनें की सारणी

वस्तु नाम	ध्रुवांक	वस्तु नाम	ध्रुवांक	वस्तु नाम	ध्रुवांक	संक्रांति	ध्रुवांक	बार नक्षत्र	ध्रुवांक	नक्षत्र	ध्रुवांक
सुवर्ण	९६	अफीम	१९२	तूर	७२	मेष	३७	शुक्र	२४	विशाखा	३२०
चांदी	८१	तिल	५३	मूंग	५१	वृष	८४	शनि	१४	अनुराधा	४९३
पीतल	५६	सरसों	८८	चणा	५६	मिथुन	६६	अश्वि.	१०	ज्येष्ठा	५५९
लोहा	५४	राई	७७	जुवार	१००	कर्क	१०९	भरणी	१०	मूल	५५२
शीसा	६०	कपूर	१०२	हींग	६२	सिंह	१२५	कृत्ति.	९६	पू. षा.	१४२
कांसा	१२७	अश्व	७७०	कथीर	६७	कन्या	१०२	रोहि.	५६	उ. षा.	४२०
तांबा	१०	हाथी	६४	कूंकुम	२५	तुला	१४०	मृग.	२०	श्र०	५५०
मोती	६५	भैंस	६२	हरड	७३	वृश्चि.	१४४	आर्द्रा	८६	ध०	७३६
कपास	१२७	गाय	७७	जीरा	७०	धन	१४४	पुनर्व.	२१	शतभि.	५७६
सूत	६४	बैल	८७	कुल.	६२	मकर	१९८	पुष्य	६४	पू. भा.	२७५
कपडा	१००	बकरी	६०	कांगनी	२०	कुम्भ	१६०	श्लेषा	१३५	उ. भा.	१२६
घृत	५०	ऊंट	८५	साल	१६५	मीन	१८०	मघा	१५०	रेवती	२[illegible]६
तैल	१०	चावल	१७	सुपारी	२०४	रवि.	४०	पू.फा.	२२०	ति. एकम्	१८
लूण	५६	चवला	८७	गिर्रा	८३	चन्द्र	५०	उ.फा.	७२	द्विती.	[illegible]०
शक्कर	१०२	जव	५७	सूंठ	१००	मङ्गल	५७	हस्त	३३४	तृती.	२२
मिश्री	१०३	गेहूं	१४	मञ्जीठ	१४४	बुध	७२	चित्रा	२१	चौथ	२४
गुड़	४०	उडद	८०	नारैल	७८	बृहस्पति	६५	स्वाति	२१०	पञ्चमी	२६
				छुहारा	१४४	षष्ठी	२५	दशमी	१७	चौदस	६
						सप्तमी	२३	एकादशी	१५	पौर्णमासी	१६
						अष्टमी	२१	द्वादशी	१३	अमावश्या	७
						नौमी	१९	त्रयोदशी	११		

विधि : मेषादि संक्रान्ति जिस दिन बैठे उस दिन के सब ध्रुवांक, जैसे संक्राण्ति का, तिथि का, वार का, नक्षत्र का, इन सब के ध्रुवांक को जोड़कर उसमें अभीष्ट वस्तु का ध्रुवांक मिलाकर ३ का भाग दे। शेष १ बचे तो सस्ती, २ बचे तो सम, ० बचे तो अवश्य महंगी होती है।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे चेटकतन्त्रे चतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥

मन्त्र महार्णव के मिश्र खण्ड में चेटक तन्त्र विषयक चतुर्थ तरङ्ग समाप्त ॥४॥

पञ्चम तरंग

निधिग्रहणाञ्जन तन्त्र

तत्रादौ निधिस्थानलक्षणम् ।

कौतुकचिन्तामणौ : पद्मगन्धा भवेद्यत्र मृत्तिका तत्र जायते । निधिः शाबरमन्त्रेण बलिमासाधयेद्धनम् ॥ १ ॥ श्येनकाकबकाद्याश्च तथान्ये बहुपक्षिणः । सततं यत्र तिष्ठन्ति निधिस्तत्र न संशयः ॥ २ ॥ यस्मिन्स्थाने प्रकुर्वन्ति काका मैथुनमादरात् । सिंहस्थितिर्भवेद्यत्र निधिस्तत्र न संशयः ॥ ३ ॥ बहूनां यत्र वृक्षाणामेकस्मिन्सकलाः खगाः । वसन्ति सकले काले निधानं तत्र लभ्यते ॥ ४ ॥ जीर्णोद्यानतडागेषु शून्यग्रामवनेषु च । मातरो यत्र तिष्ठन्ति तत्र वित्तं न संशयः ॥ ५ ॥ कोमलः शाड्वलो रम्यो दृश्यते तृणसञ्चयः । गोकुलैर्बहुधा लुब्धैः खाद्यमानोपि नित्यशः ॥ ६ ॥ पुनश्च तादृशो भूयो निधानं तत्र दृश्यते ॥ ७ ॥ शरद्धेमन्तवर्षासु पवित्राः पत्र-संयुताः । भवन्ति भूरुहा ग्रीष्मे तत्र स्थाने ध्रुवं निधिः ॥ ८ ॥ एकशीर्षेषु वृक्षेषु यदि शाखाद्वयं भवेत् । तत्र वित्तं भवत्येव नासत्यं शाबरं वचः ॥ ९ ॥ विपरीतफलोपेता दृश्यन्ते यत्र भूरुहाः । अवश्यं तत्र वित्तं स्यात्साधयेद्बलिना बुधः ॥ १० ॥ करिहस्तसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे । रक्तं स्रवति भिन्नश्च तत्र वित्तं न संशयः ॥ ११ ॥ ध्वजमीनसमाकारः प्ररोहो दृश्यते वटे । शतसाहस्रकं वित्तं तदधो लभते ध्रुवम् ॥ १२ ॥ अनारोहेषु वृक्षेषु यथाधारो हि दृश्यते । निधानं लक्षयेत्तत्र लभ्यं भाग्य-वतां नृणाम् ॥ १३ ॥ ग्रीष्मसूर्यांशुभिर्दग्धा शोषं नायाति या मही । दावानलेन दग्धा वा तोयसम्पर्कवर्जिता । प्रदेशः कुत्रचित्तस्याः पन्नगैः सेवितो यदि ॥ १४ ॥ इति निधिस्थाननिरीक्षणं कृत्वा लेपादिद्वारा निश्चयं कुर्यात् ।

कौतुक चिन्तामणि में यह कहा गया है : जहाँ की मिट्टी में कमल की गन्ध आती हो वहाँ निधि होती है । शाबर मन्त्र से बलि देकर वहाँ धन प्राप्त करना चाहिये । इसी प्रकार जहाँ बाज (श्येन) कौआ, बकुला आदि तथा अन्य बहुत से पक्षी सदा बैठते हैं वहाँ निःसन्देह निधि होती है । जिस

स्थान पर कौवे आदर से मैथुन करते हैं तथा जहाँ पर सिंह प्रायः बैठा करता है वहाँ भी निधि होती है—इसमें संशय नहीं है। जहाँ बहुत से वृक्ष हों किन्तु सब वृक्षों को छोड़कर किसी एक ही वृक्ष पर सभी पक्षी सदा निवास करते हों वहाँ निधि प्राप्त होती है। जीर्ण-शीर्ण उद्यानों में, तालाबों में, शून्य ग्रामों में तथा वनों में जहाँ मातायें स्थित होती हैं वहां भी निःसंशय धन होता है। जहाँ पर कोमल, सुन्दर और घनी ऐसी घास उगती हो और जो लोभवश गायों द्वारा खाये जाने पर भी पूर्ववत् हो जाती हो, वहाँ भी निधियाँ देखी जाती हैं। जहाँ पर शरद्, हेमन्त, वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतुओं में वृक्ष पवित्र पत्तों से युक्त होकर हरे-भरे बने रहते हों वहाँ निश्चित रूप से धन होता है। एक शिखावाले वृक्ष में यदि दो शाखायें हों तो वहाँ धन होता है—यह शाबर वचन असत्य नहीं है। ऋतु के विपरीत फलवाले वृक्ष जहाँ दृष्टिगोचर होते हैं वहाँ निश्चित रूप से धन होना चाहिये। बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि बलि देकर उसे प्राप्त करे। जहाँ बरगद के वृक्ष में हाथी के सूंड के समान बरोह दिखाई पड़े तथा उसपर आघात करने से लाल रङ्ग का स्राव हो वहाँ निश्चित रूप से धन होता है—इसमें कोई संशय नहीं है। जहाँ बरगद में झण्डों तथा मत्स्य के आकार के बरोह दिखाई पड़े वहाँ भूमि में एक लाख की सम्पत्ति निश्चित रूप से प्राप्त होती है। जिन वृक्षों पर चढ़ना सम्भव ही नहीं होता उन पर यदि चढ़ने का आधार दिखाई पड़े तो इसे वहाँ निधि होने का लक्षण जानना चाहिये। भाग्यवान लोगों को ही वह निधि प्राप्त होती है। जो भूमि जल के सम्पर्क से रहित होने पर और दिन भर सूर्य की किरणों से या दावाग्नि से दग्ध होने पर भी यदि सूखे नहीं बल्कि नम दिखाई पड़े तथा उसके आस-पास कहीं पर साँप के रहने का भी पता चले तो इसे वहाँ पर निधि होने का लक्षण समझना चाहिये। इस प्रकार निधिस्थान का निरीक्षण करके लेपादि द्वारा उसका निश्चय करे।

तथा च : गोमूत्रैर्घटमापूर्य निखनेच्छङ्कितस्थले। सप्तरात्रे व्यतिक्रान्ते यदि जीर्यति वै घटः। तत्र तत्र धनं ज्ञेयं कुशलेनाथ भाषितम् ॥ १५ ॥ गोक्षीरेण तु सम्पेष्य तिलकोद्रवराजिकाः। शणबीजं च सम्पेष्य निशायां च निधिस्थलम्। अष्टलेपा भवेद्यत्र प्रातस्तत्र निधिं दिशेत् ॥ १६ ॥ अर्जुनस्य कदम्बस्य वटस्य खदिरस्य च। ब्रह्मवृक्षस्य पत्राणि काञ्जिकेनैव

पेषयेत् । निशायां लेपयेद्भूमिं कल्कं मन्त्रेण मन्त्रयेत् । प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्र वित्तं न संशयः ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य करञ्जस्य नारिकेलस्य पल्लवान् । पेषयित्वारनालेन तेन भूमिं प्रलेपयेत् । प्रातर्लेपो न यत्रास्ति तत्रैव निधिमादिशेत् ॥ १८ ॥

कहा भी गया है : गोमूत्र से घड़ा भर कर सम्भावित स्थान पर भूमि में गाड़ दे । सात रात व्यतीत होने पर यदि घड़ा जीर्ण हो जाता है तो वहाँ धन जानना चाहिये । ऐसा कुशल व्यक्तियों ने कहा है । गाय के दूध से तिल, कोदो, राई तथा सन के बीजों को पीस कर लेप बनाये । इस लेप से निधि-स्थल को लीप दे । प्रातःकाल यदि वह लेप उड़ जाय या विकृत हो जाय तो वहाँ निधि होने का निश्चय करे । अर्जुन वृक्ष, कदम्ब, बट, खैर तथा पलाश के पत्तों को काँजी के साथ पीसे । रात को सम्भावित निधि-स्थान की भूमि को मन्त्र से अभिमन्त्रित इस लेप से लीप दे । प्रातःकाल जहाँ लेप न रह जाय वहाँ धन होता है—इसमें संशय नहीं है । अर्जुन, करञ्ज तथा नारियल के पत्तों को आरनाल (माँड़) के साथ पीस कर लेप तैयार करे । उस लेप से सम्भावित निधि-स्थान की भूमि को रात में लीप दे । प्रातःकाल यदि लेपादि विद्यमान न रहे तो वहाँ निधि होने का निश्चय करे ।

विल्वमक्षतमादाय काञ्जिकेनैव पेषयेत् । सन्ध्ययोर्लेपयेद्भूमिं विवर्णे धनमादिशेत् ॥ १९ ॥ उमादिमातृकायुक्तं किरातं तत्र पूजयेत् । अत्र होमः प्रकर्तव्यो निशायां घृतगुग्गुलैः । प्रभाते तद्विवर्णं चेन्निधिस्तत्र विनिश्चितम् ॥२० ॥ तत्र मन्त्रः

साबुत बेल लेकर काँजी के साथ पीस कर लेप तैयार करे । सायं अथवा प्रातः सम्भावित भूमि को लीप दे । यदि वह लेप विवर्ण हो जाय तो वहाँ धन होने का आदेश करे । जहाँ धन होने का निश्चय हो वहाँ उमा आदि मातृकाओं से युक्त किरात की पूजा करे । रात में वहाँ पर घी और गुग्गुल से होम करे । प्रातःकाल यदि वह होम किया स्थान विवर्ण हो जाय तो वहाँ निधि है यह निश्चित हो जाता है । इस विषय में मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय कल्कलेपाञ्जनं दर्शयदर्शय स्वाहा ठः ठः ।

अनेन मन्त्रेण कल्कलेपाञ्जनमभिमन्त्र्य लेपं कुर्यात् । इति लेपाञ्जन द्वारा निश्चयं कृत्वा नयनाञ्जनेन निरीक्षयेत् ।

इस मन्त्र से कल्क लेप तथा अञ्जन को अभिमन्त्रित करके लेपन या अञ्जन करना चाहिये । इस प्रकार लेप तथा अञ्जन द्वारा निश्चय करके नयनाञ्जन से निरीक्षण करे ।

अथ निधिग्रहणाञ्जनम् ।

कक्षपुटौ : अञ्जनानां तु सर्वेषां मन्त्रं साध्यमघोरकम् । विनाऽघोरेण विघ्नाश्च नाशयन्ति पदेपदे ॥२१॥ दक्षिणामूर्तिमासाद्य जपेदष्टसहस्रकम् । ततः सर्वविधानानि सुखसाध्यानि चाहरेत् ॥ २२ ॥

कक्षपुटी में लिखा है कि सभी अञ्जनों के लिये अघोर मन्त्र का साधन करना चाहिये । बिना अघोर मन्त्र को सिद्ध किये विघ्न पग-पग पर नाश करते हैं । दक्षिणामूर्ति के पास जाकर मन्त्र का ८ हजार जप करना चाहिये । इसके बाद सभी सुखसाध्य विधानों को एकत्र करना चाहिये । प्रार्थना मन्त्र इस प्रकार है :

प्रार्थनामन्त्र : ॐ विश्वरूपं विरूपाक्षं विद्याधारं महेश्वरम् । जपाम्यहं महादेवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।

इससे प्रार्थना करके मन्त्र का जप करे । मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ रुद्राय नमो रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वाय नमो विश्वरूपाय नमस्तत्पुरुषाय नमो यक्षाय नमो यक्षरूपाय नम एकाय नम एकयक्षाय नम एकनाथाय नम एकरोमाय नम एकेक्षणाय नमो वरदाय नमस्त्र्यक्षाय नमो नुदनुद स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : सोपवासो जितेन्द्रियो भूत्वा महेश्वरपूजां कृत्वा इमं मन्त्रं जपेत् सिद्धिर्भवति ।

इसका विधान : जितेन्द्रिय हो उपवास तथा महेश्वर की पूजा करके इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि होती है ।

अथ कज्जलपात्रं यथा : दीपकज्जलयोः पात्रं कर्तव्यं नरमुण्डजम् । सर्वेषां कज्जलानां तु सत्यं स्याच्छिवभाषितम् ।

कज्जलपात्र : दीपक और काजल पारने का पात्र मानव कपाल का होना चाहिये । सभी कज्जलों के लिये यही उपकरण सत्य है—ऐसा शिवजी ने कहा है ।

अथ कज्जलार्थं अग्निग्रहणमन्त्रः कज्जलानां पातनार्थं ग्राह्यो यत्नेन पावकः । दीक्षितस्य गृहे श्रेष्ठश्चितायां तु विशेषतः । रजकस्य गृहाद्वापि तक्षकस्य गृहाच्च यः । तत्र मन्त्रः ।

कज्जल के लिये अग्निग्रहण मन्त्र : काजल पारने के लिये अग्नि यत्नपूर्वक लेना चाहिये । दीक्षित पुरुष के घर की अग्नि तथा विशेष रूप से चिता की अग्नि, धोबी के घर की अग्नि तथा बढ़ई के घर की अग्नि (पाठान्तर तस्करस्येति) श्रेष्ठ होती है । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ज्वलितविद्युति देहाय स्वाहा। अयमग्निग्रहणे मन्त्रः।

इस मन्त्र से अग्नि का संग्रह करके अग्नि की रक्षा करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धर धर बन्ध बन्ध श्रीपते कुलपर्वते वसुमते स्वाहा।

इस मन्त्र से अग्नि की रक्षा करे।

अथवर्तिमन्त्रः - वर्तिबन्धे दिशां बन्धे पातालं बन्धमण्डलं बन्धय स्वाहा।

इस मन्त्र से बत्ती को अभिमन्त्रित करे।

अथ दीपमन्त्र : ॐ नमो भगवते सिद्धशाबराय ज्वल ज्वल पातय पातय बन्ध बन्ध संहर संहर दर्शय दर्शय निधिं नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से दीपक को जलाये।

अथ कज्जलग्रहणमन्त्रः : ॐ सर्वसिद्धिभ्यो नमः विच्चे स्वाहा।

इस मन्त्र से काजल का संग्रह करे। इसके बाद :

ॐ कालि कालि महाकालि रक्ष रक्ष यदञ्जनं नमो विच्चे स्वाहा।

इस मन्त्र से सभी अञ्जनद्रव्यों को अभिमन्त्रित करे। इसके बाद :

ॐ ह्रीं सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं सर्वहिते सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमोनमः स्वाहा।

दूसरे तन्त्र में :

ॐ सर्वे सर्वहिते श्रीं क्लीं क्षीं सर्वौषधिप्राणहिते निरते नमो विच्चे स्वाहा।

दूसरे तन्त्र में :

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नम्ननम्नमिहेम्नविहेम्न विहेम्न मिहेम्न मिहेम्न हरहर रक्ष रक्ष पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा।

अनेन मन्त्रेणाञ्जनयोग्यमूलिकामभिमन्त्रयेत्। ततः केवल हेमशलाकया नेत्रे अञ्जयित्वा-ततस्तया शलाकयाञ्जनद्रव्यमभिमन्त्रयित्वाञ्जनं कुर्यात् ॥२३॥ अञ्जयित्वाञ्जनं पश्चात्सप्ताश्वत्थदलानि वै। बन्धयेत्प्रतिनेत्रं तु ह्यच्छिद्राधोमुखानि च। पर्णोपरि सितं वस्त्रं पट्टजं वाथ बन्धयेत्। नांज्यादधिकहीनाङ्गं श्वदष्टं चाग्निदग्धकम्। सम्पूर्णाङ्गं शुचिं स्नातं द्विदिनं नक्तभोजिनम्। क्षीरशाल्यन्नभोक्तारं द्विदिनान्ते ततोंजयेत्। अञ्जितस्य शिखाबन्धे कर्तव्ये मन्त्र उच्यते ॥ २४ ॥

इस मन्त्र से अञ्जनयोग्य औषधि की जड़ को अभिमन्त्रित करे। इसके

बाद केवल सोने की शलाका से आँखों में अञ्जन लगाये। उस शलाका से अञ्जनद्रव्य अभिमन्त्रित करके अञ्जन करे। अञ्जन करने के बाद आँख पर सात पीपल के छिद्रादिरहित शुद्ध पत्तों को क्रमशः अधोमुख रखकर उस पर सफेद कपड़े या रेशम के कपड़े की पट्टी बाँध दे। ऐसे व्यक्ति को अञ्जन न लगावे जो हीनाङ्ग अथवा अधिकाङ्ग हो, या जो अग्नि से दग्ध हो। जो व्यक्ति पूर्णाङ्ग हो, पवित्र हो, स्नान किये हो, दो दिन तक केवल एक बार रात को ही भोजन किये हो, और भोजन में दूध के साथ शालि चावल का ही आहार किये हो, उसे अञ्जन लगाना चाहिये। अञ्जन करने के बाद शिखाबन्धन के लिये मन्त्र कहते हैं।

अथ शिखाबन्धनमन्त्रः : ॐ नमो भगवते रुद्राय रुद्ररूपाय ॐ नमो लमहे ॐ लमहे-लुण्डविविदुलु-मिमुहुलु हुलु हर हर यक्षरक्षःपूजिते तक्षकमारि सुलोचने स्वाहा।

तन्त्रान्तरेऽपि : ॐ नमो भगवते रुद्राय तुलु तुलु महेश्वरमाहेश्वल-विज्वलु विज्वलु मिज्वलु मिज्वलु हर हर यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा।

तन्त्रान्तरेऽपि : ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नन्न नन्न मिहेन्न-विहेन्न विहेन्न मिहेन्न मिहेन्न हर हर यक्षरक्षःपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा।

अस्य विधानम् : दक्षिणामूर्तिमाश्रित्य उदयास्तमयं जपेत्। सर्वं एव समाख्यातः शिखाबन्धः शिवोदितः॥ २५॥

इसका विधान : दक्षिणामूर्ति के पास जाकर सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त पर्यन्त जप करे। इस प्रकार शिवप्रोक्त सभी शिखाबन्धन कहा गया।

अथ सर्वाञ्जनविधिः।

रोचनं कुंकुमं शङ्खं वालमोदा तु चन्दनम्। राजावर्तं कुमारी च सौवीराञ्जनपारदम्। कट्फलं काङ्गनी चैव सितपद्मककेसरम्। पावकं च घृतं क्षीरं समभागं च पेषयेत्। श्मशानतैलमादाय पूर्वपिष्टेन लेपयेत्। तद्वर्तिघृतसंयुक्तं प्रज्वाल्य कज्जलं हरेत्। सर्वाञ्जनमिदं ख्यातं पाताल-निधिदर्शने॥ २६॥

सर्वाञ्जनविधि : गोरोचन, कुंकुम, शङ्ख, बालमोदा, चन्दन, राजावर्त, घिकुआर, सौवीराञ्जन, पारा, कट्फल, मालकागुनी, सफेद कमल का केसर, पावक (चित्रक), घी तथा दूध समान भाग एक साथ पीसकर और उसकी बत्ती बनाकर उस पर श्मशान तैल का लेपकर घी में उस बत्ती को जलाकर

काजल पारे। पातालनिधि दर्शन (भूमि में गड़ी निधि को देखने के लिये) यह विख्यात सर्वाञ्जन है।

अन्यत्। सप्तधापद्म सूत्राणि भावयेदिक्षुजै रसैः। तद्वर्त्या ज्वालये-द्दीपमंकुलीतैलसंयुतम्। ग्राह्यं कृष्णचतुर्दश्यां कज्जलं निधिदर्शकम्। सर्वाञ्जनमिदं सिद्धं शम्भुदेवेन भाषितम्॥ २७॥

अन्य विधि : कमलनाल के तार सात बार मिलाकर उसे गन्ने के रस में भावना दे। उसकी बत्ती बनाकर अंकुली के तेल में डालकर दीपक जलाये। कृष्ण चतुर्दशी की रात को उससे काजल पारकर आँखों में लगाने से साधक भूमि में गड़ी निधियों को देखने की क्षमता प्राप्त करता है। शम्भु देव ने इस सिद्धाञ्जन को बताया है।

नवनीतं कृष्णकाकभोजनार्थं तु दापयेत्। तद्विष्ठावर्तिकां कृत्वा कज्जलं पातयेद्बुधः। सिद्धं सर्वाञ्जनं प्रोक्तमञ्जनं निधिदर्शनम्।

काले कौए को मक्खन खाने के लिये देवे। सुधी साधक उस कौए की विष्ठा की बत्ती बनाकर काजल पारे। यह सर्वाञ्जन भी सिद्ध और निधियों को दिखलानेवाला है।

रक्तपुच्छस्य ब्रामण्या रक्तं मैनशिलायुतम्। पेषयित्वाञ्जयेच्चक्षुर्निधि पश्यति भूमिगम्।

ब्रामणी (एक छिपकिली जैसा जीव जिसकी पूंछ लाल होती है) की लाल पूंछ का रक्त मैनसिल मे मिलाकर पीसे। इससे आँखों में अञ्जन लगाने से मनुष्य भूमि में गड़ी निधियों को देखता है।

मासेन कृष्णरङ्गा वै सा श्यामां कुक्कुटीं नयेत्। तद्वसां चांजयेन्नेत्रं निधिं पश्यति भूमिगम्।

एक मास में कृष्णराँगा (सीसा) मुर्गी को काला बना देता है। उस मुर्गी की चर्बी से अञ्जन करने पर मनुष्य भूमिगत निधियाँ देखता है।

श्वेतगुञ्जारसैः सूत्रं दिनमेकं तु भावयेत्। वाराहदंष्ट्रा चूर्णं च सूत्र-मध्ये विनिक्षिपेत्। दीपमंकुलतैलेन तद्वर्त्योद्धृतकज्जलम्। सिद्धं सर्वाञ्जनं प्रोक्तमञ्जनान्निधिदर्शनम्॥ २८॥

श्वेतगुञ्जा के रस से सूत को एक दिन तक भावना दे। फिर सूअर के दाँत का चूर्ण सूत के मध्य डाल दे। अंकुली के तेल से उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। यह सर्वाञ्जन सिद्ध तथा निधियों को दिखानेवाला कहा गया है।

शरत्काले तु संग्राह्य भूलतां रक्तवर्णिकाम्। सिन्दूरपूरितां कृत्वा

रवितूलेन वेष्टयेत् । अतिकृष्णतिलात्तैलं ग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः । तैल वर्त्योः प्रयोगेण कज्जलं चोत्तरायणे । ग्राहयित्वाञ्जयेच्चक्षुर्निधिं पश्यति पूर्ववत् ।२६

शरत्काल में रक्तवर्ण भूलता का संग्रह करके उसमें सिन्दूर मिलाकर उसे रवितूल से वेष्टित करे। फिर सुधी साधक अत्यन्त काले तिल से तेल निकालकर सुरक्षित रक्खे। इस तेल तथा बत्ती के योग से सूर्य के उत्तरायण रहते काजल पारे। इस काजल को आँखों में लगाने से मनुष्य पूर्ववत् भूमि में पड़ी निधियों को देखता है।

अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वामांसं समाहरेत् । वेष्टयेद्रवितूलेन वर्ति तेनैव कारयेत् । अजाघृतेन दीपं च प्रज्वाल्यादाय कज्जलम् । अञ्जिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ ३१ ॥

अत्यन्त काले कौवे की जिह्वा का मांस लाये और उसे मदार की रूई में लपेटकर बत्ती बना ले। फिर बकरी के घी से उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। उस काजल को आँखों में लगाने से मनुष्य पूर्ववत् निधि देखता है। इसी प्रकार साधक नेवला तथा भेड़ा की आँख लाये और उसे मेषीतैल के साथ पीसे। इसका आँखों में अञ्जन करने से साधक पूर्ववत् निधि देखता है।

शृगालस्याक्षिचूर्णेन नेत्रयुग्मे तु रञ्जितः । भूतं पश्यत्यभीतस्तु दर्शयेच्च महानिधिम् ॥ ३२ ॥ उलूकचक्षुरादाय कुंकुमं रोचनं शशी । समांशं मधुना पिष्ट्वा एतत्सर्वाञ्जनं परम् ॥ ३३ ॥

शृगाल की आँखों के चूर्ण का अञ्जन आँखों में लगाकर साधक निर्भय होकर भूत को और महानिधियों को देखता है। उल्लू की आँखे लाकर उसके साथ कुंकुम, गोरोचन तथा कपूर बराबर-बराबर मिलाकर मधु के साथ पीसकर अञ्जन बनावे। यह सर्वोत्तम सर्वाञ्जन है।

अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वाहृन्मांससंयुतम् । घृतपक्वं तु तच्चूर्णं तद्दीपोद्धृतकज्जले । अञ्जिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति साधकः ॥ ३४ ॥

अत्यन्त काले कौवे की जिह्वा और उसके हृदय का मांस घी में पकाकर उसका चूर्ण दीपक पर पारे गये काजल में मिलाकर आँखों में अञ्जन लगाने से साधक निधियों को देखता है।

रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनःशिलाम् । तेन चाञ्जितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ३५ ॥

कृकलास के रक्त से मैनसिल को भावित करके उसका अञ्जन आँखों में लगाने से साधक भूमिगत निधि देखता है।

सद्योहतमनुष्यस्य पित्तमादाय पूरयेत् । शशिना रोचनेनैव मधुपाकेन शोषयेत् । अष्टाहान्ते जले घृष्टमञ्जनं निधिदर्शकम् ॥ ३६ ॥

तत्काल हत मनुष्य का पित्त लेकर उसे कपूर तथा गोरोचन में मिलावे । तत्पश्चात् उसे मधु के साथ पकाकर सुखा ले । आठ दिनों के बाद उसे घिसकर आँखों में अञ्जन करने से यह साधक को निधियाँ दिखाता है ।

सूतं दारुनिशां चैव समभागानि पेषयेत् । दिव्याञ्जनमिदं ख्यातं सर्वभूतवशङ्करम् ॥ ३७ ॥ देवदालिरसैश्चक्षुरञ्जयित्वा तु तत्फलम् ॥३८॥

पारा और दारुहल्दी सम भाग लेकर पीसे । यह दिव्य अञ्जन प्रसिद्ध और समस्त प्राणियों को वश में करनेवाला है । देवदाली के रस का आँखों में अञ्जन करने से भी यही फल होता है ।

पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया विधिना मूलमाहरेत् । उलूकाक्षेण मधुना सर्वाञ्जनमिदं भवेत् ॥ ३९ ॥

पुष्य नक्षत्र में बिधिवत श्वेतगुञ्जा की जड़ लाकर उसे उल्लू की आंख तथा मधु के साथ पीसकर आँखों में अञ्जन लगावे । यह सर्वाञ्जन है ।

रक्तागस्त्यस्य तैलेन धात्रीमूलं सुपेषितम् । कर्पूरेण युतं चाज्यं सिद्धं सर्वाञ्जनं परम् ॥ ४० ॥

लाल अगस्त्य के तेल से आंवले की जड़ को पीसे और उपमें कपूर तथा घी मिलाये । यह दिव्य अञ्जन समस्त प्राणियों के वशीकरण के लिये प्रसिद्ध है ।

कुछ अन्य प्रयोग :

पुष्यार्के मुनिवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा । संघृष्य मधुना सार्द्धमञ्जये-ल्लोचनद्वयम् ॥ ४१ ॥

पुष्य नक्षत्र में अगस्त्य की जड़ को खोदकर मधु तथा जल से उसे घिस-कर दोनों आँखों में अञ्जन लगाये ।

राजावर्तं च कर्पूरं रक्तचन्दनमूलिकम् । रोचनं मधुसंयुक्तं भवे-त्सर्वाञ्जनं परम् ॥ ४२ ॥ पारदं मधु कर्पूरं काकमाचीफलं तथा । समं पिष्ट्वा भवेत्सिद्धं दिव्यं सर्वाञ्जनं परम् ॥ ४३ ॥

राजावर्त्त, कपूर, लालचन्दन, मूलिक तथा गोरोचन को मधु के साथ मिलाकर बनाया गया सर्वाञ्जन परमोत्तम होता है । पारा, मधु, कपूर और काकमाची (मकोय) का फल समभाग पीसकर भी दिव्य परमाञ्जन तैयार होता है ।

स्रोतोंजनमुलूकाण्डे तस्य जिह्वान्वितं क्षिपेत् । सप्ताहान्ते समुद्धृत्य अञ्जनादीक्षते निधिम् ॥ ४४ ॥

काले अञ्जन (सुरमा) और उल्लू की जिह्वा को उल्लू के अण्डे में डाले। एक सप्ताह के बाद निकालकर उस अञ्जन को आँखों में लगाने से मनुष्य निधियाँ देखता है।

आश्लेषायां तु कृष्णाहेरन्तर्धूमेन कंचुकम् । दग्धं स्रोतोंजनोन्मिश्र-मञ्जनं निधिदर्शकम् ॥ ४५ ॥

आश्लेषा नक्षत्र में काले सर्प की केंचुली लाकर उसे अन्तर्धूम से पचावे। उसका भस्म तथा काला अञ्जन (सुरमा) नित्य मिलाकर आँखों में अञ्जन करने से वह निधिदर्शक होता है।

स्रोतोजनं सखद्योतमुलूकाण्डे विनिक्षिपेत् । सप्ताहान्ते समुद्धृत्य पातालमधुनाञ्जयेत् । दिवानक्षत्रयुक्तानि दूरस्थानि च पश्यति ॥ ४६ ॥

काले अञ्जन और खद्योत को उल्लू के अण्डे में डाल दे फिर एक सप्ताह के बाद उसे निकालकर पाताल मधु से आँखों में लगाने से मनुष्य दिन में भी दूरस्थ नक्षत्रों को देखता है।

हरितालं वचा लोध्रं रेणुका चाञ्जनं तथा । कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् । सम्पुटे ताम्रजे तत्र अघोरेणाथ मन्त्रयेत् । अञ्जि-ताक्षो नरः पश्येन्निधीन्नानाविधान्भुवि ॥ ४७ ॥

हरिताल, बच, लोध, रेणुका तथा काले अञ्जन को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन चूर्ण करके ताँबे की डिबिया में रख देवे। तदनन्तर उसे अघोर मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। इस अञ्जन को आँखों में लगाकर मनुष्य भूमिगत नानाविध निधियों को देखता है।

कुंकुमं रोचनं श्वेतकाञ्चनस्यैव पल्लवाः । सुश्वेतं च जयापुष्पं नन्द्यावर्तं (तगर) समं मधु । सर्वाञ्जनमिदं ख्यातं पातालनिधिदर्शनम् ॥ ४८ ॥

कुंकुम, गोरोचन, श्वेतकाञ्चन (सफेद धतूरा) के पत्ते, सुश्वेत (कपूर), नन्द्यावर्त (तगर) तथा मधु समान भाग घोंटकर अञ्जन बनाये। यह सर्वाञ्जन पातालगत निधियों को देखने के लिये विख्यात है।

हंसपादीजटामांसी कर्पूरं च मनःशिला । तेन चाञ्जितनेत्रस्तु निधिं पश्यति भूमिगम् ॥ ४९ ॥

हंसपदी, जटामांसी, कपूर और मैनसिल से अञ्जन बनाकर आँखों में लगाने से मनुष्य भूमिगत निधियाँ देखता है।

कृष्णाजपित्तं च मयूरपित्तमशोकमूलं गतमुत्तराशाम्। शशाङ्क-गोरोचनमाक्षिकं च सर्वाञ्जनं नाम शिवोपदिष्टम्। एते सर्वाञ्जनाः ख्याताः प्रसिद्धाः शिवभाषिताः।

काले बकरे का पित्त, मयूर का पित्त, उत्तर दिशा में गई अशोक की जड़, शशाङ्क (कपूर), गोरोचन तथा मधु से बना सर्वाञ्जन शिव द्वारा उपदिष्ट है। उक्त सभी विख्यात सर्वाञ्जन शिव द्वारा भाषित हैं।

अथ कुमाराञ्जनं।

कक्षपुटी : पुष्यनक्षत्रयोगेन पिण्डीतगरमूलिकाम्। षडंगुलमितां कुर्याच्छलाकां रचयेत्ततः। स्नापयेच्च शिलापृष्ठे कुमारं वा कुमारिकाम्। तच्छिलास्नानतोयेन रोचनं हैमगैरिकम्। निघृष्टमञ्जयेन्नेत्रं मन्त्रयुक्तं च पूर्ववत्। रक्षिता या शलाका वै तथैवांज्य निधिं लभेत्॥ १॥

कक्षपुटी के अनुसार : पिण्डीतगर की जड़ छः अंगुल की लेकर उससे अञ्जन शलाका बनाये। पत्थर पर किसी कुमार या कुमारिका को स्नान कराये। उस पत्थर पर स्नान से जो पानी गिरे उसमें गोरोचन तथा हेम-गैरिक (सोनागेरु) घिरकर अञ्जन बनाये। इसके बाद तगर की उक्त शलाका से बालक या बालिका की आंखों में उस अञ्जन को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लगाये तो वह (बालक या बालिका) पूर्ववत् भूमिगत निधियों को देखेगा।

पुष्यार्केऽगस्त्यवृक्षस्य मूलमुद्धृत्य वारिणा। पिष्टं पातालमधुना संयुक्तं निधिदर्शकम्॥ २॥

पुष्यार्क में अगस्त्य की जड़ को जल से पीसकर उसमें पाताल मधु मिलाकर तैयार किया अञ्जन निधिदर्शक होता है।

पिण्डीतगरजं मूलमुदीच्यां गतमुद्धरेत्। चन्द्रसूर्योपरागेषु पाताल-मधुसंयुतम्। पेषयित्वाञ्जयेन्नेत्रे सम्यक्पश्यति भूनिधिम्॥ ३॥

पिण्डीतगर की उत्तर दिशा में गई जड़ को खोदकर निकाले और चन्द्र-ग्रहण या सूर्यग्रहण के समय पाताल मधु के साथ उसे पीसकर अञ्जन बनाये। इस अञ्जन को आंखों में लगानेवाला भूमिगत निधियों को अच्छी तरह देखता है।

अथ पादजाताञ्जनं।

तुलसीमूलिकां पुष्ये शनिवारे समुद्धरेत्। निघृष्टं काञ्जिकेनाथ मधुनायुतमञ्जयेत्। पादजातं कुमारं वा कन्यकां वा यतो निधिः। दृश्यते नात्र सन्देहः पातालान्तर्गतं तथा॥ १॥

पुष्य नक्षत्र में शनिवार के दिन तुलसी की जड़ खोदकर लाये और कांजी के साथ उसे घिसकर मधु मिलाकर उसका अञ्जन तैयार करे। जो कुमार या कुमारिका पैरों की ओर से उत्पन्न हुई हो उसकी आंखों में इस अंजन को लगाने से वह निधि स्थानों को देखता है—निधि चाहे पाताल में ही क्यों न हो वह उसे अवश्य देखता है। इसमें कोई संशय नहीं है।

सुश्वेतकरवीरस्य पुष्यार्के मूलमुद्धरेत्। पातालमधुनायुक्तं पादजाताञ्जनं भवेत्॥ २॥

सफेद कनेर को पुष्यार्क में खोदे। उसे पाताल मधु के साथ घिसकर बनाया गया अंजन पादजातांजन होता है।

पार्श्वपिप्पलजं मूलं पुष्पार्के विधिनोद्धृतम्। पातालमधुनायुक्तं पादजाताञ्जनं भवेत्॥ ३॥ ५०॥

पुष्यार्क में पीपल की पार्श्वज मूल को विधिपूर्वक उखाड़कर पाताल मधु के साथ घिसकर बनाया गया अंजन भी पादजातांजन होता है।

अथ पादुकायोगः।

अगस्त्यवृक्षजां कृत्वा पादुकां निधिदर्शकाम्। पादुकाञ्जनयोगेन सिद्धयोगा भवन्ति हि। पादुकामन्त्रो यथा :

अगस्त्य वृक्ष की लकड़ी की पादुका बनवाये। यह पादुका भूमिगत निधियों को दिखाती है। पादुका और अंजन के योग से अनेक सिद्धयोग बनते हैं। पादुका मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि शिलि भ्रमणेनामवैतालिनि स्वाहा।

अनेन पादुकामभिमन्त्रयेत्॥ ५१॥ इति निधानं निरीक्ष्य ततः उद्धरेत्।

इस मन्त्र से पादुका को अभिमन्त्रित करे। इस प्रकार भूमिगत निधानों का निरीक्षण करके उनका उद्धार करना चाहिये।

तत्रादौ निधिखननमुहूर्तः।

कौतुकचिन्तामणौ : अथ नक्षत्रवाराणि मूलमन्त्रैर्यथोचितम्। कथयामि विभागेन शिवेन कथितं यथा॥ ५२॥

कौतुक चिन्तामणि में इस प्रकार कहा गया है : अब मूलमन्त्रों के साथ नक्षत्रों को विभागपूर्वक यथोचित रूप से मैं कह रहा हूं—जैसा कि शिवजी ने कहा था।

मणिनिधिलाभो वित्तमार्द्रायां नैव लभ्यते। पुष्ये हस्ते चाविध्वंसो

ध्रुवं सिद्धिः पुनर्वसौ ॥ ५३ ॥ आश्लेषायां भवेन्मृत्युर्विग्रहो वार्यभेदनम् । फाल्गुन्यामर्थलाभः स्यान्मघायां मरणं ध्रुवम् ॥ ५४ ॥ चित्रायां कलहो भेद उत्तरा सिद्धिकृत्स्मृता । विवादो जायते स्वात्यां विशाखा मृत्युदायिनी ॥ ५५ ॥ अनुराधा धना प्रोक्ता धनिष्ठायां सिद्धिरुत्तमा । पूर्वाषाढा शुभा प्रोक्ता मूले शोणितदर्शनम् ॥ ५६ ॥ ज्येष्ठायां च महाक्लेशः श्रवणे सिद्धिरुत्तमा । पूर्वाभाद्रा ध्रुवं क्षेमं भरण्यां मरणं तथा ॥ ५७ ॥ अश्विनी रेवती पुष्टिः कृत्तिका कार्यनाशिनी । रोहिण्यां सिद्धिमाप्नोति शाबरस्य वचो यथा ॥ ५८ ॥

मणिनिधि का लाभ या धनप्राप्ति आर्द्रा नक्षत्र में नहीं होती । पुष्य तथा हस्त नक्षत्र में कोई हानि नहीं होती । पुनर्वसु में निश्चित रूप से सिद्धि होती है । आश्लेषा में मृत्यु, विग्रह अथवा अरिभेदन होता है । फाल्गुनी में धनलाभ और मघा में निश्चित मरण होता है । चित्रा नक्षत्र में कलह या मतभेद होता है । विशाखा नक्षत्र मृत्युदायक है । अनुराधा में धनप्राप्त होना कहा गया है और मूल में शोणित दिखाई पड़ता है । ज्येष्ठा में महान क्लेश और श्रवण में उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है । पूर्वाभाद्रपद में निश्चित रूप से कल्याण होता है । भरणी में मरण निश्चित है । अश्विनी तथा रेवती में पुष्टि होती है और कृत्तिका कार्यनाशिनी है । रोहिणी में सिद्धि प्राप्त होती है—यह शाबर का वचन है ।

क्रूरवारास्त्रयो वर्ज्या भौमादित्यशनैश्चराः । व्यतीपाते त्र्यहं वर्ज्यं विष्ट्यां च प्रहरद्वयम् ॥ ५९ ॥ आषाढे नैव नक्षत्रे यावत्स्वपिति नो हरिः । तावदन्तरमाषाढे खन्यं कुर्वीत मन्त्रवित् ॥ ६० ॥ मार्गशीर्षे शुभे मासे नक्षत्रे चन्द्रदैवते । खन्यं सर्वेषु कुर्वीत यावदाषाढमाहितम् ॥ ६१ ॥ कुर्याच्चोक्तेषु वै खन्यं नान्यथा सिद्धिभाग्भवेत् । उच्यते मैत्रनक्षत्रमनुराधा शिवागमे ॥ ५२ ॥ मार्गशीर्षे च पौषे च प्रशस्तं खन्यकर्मसु । सहायाः शोभनाः कार्याः सप्त पञ्च त्रयोऽपि वा । असहायेन कर्तव्यं मन्त्रेण निधिसाधनम् ॥ ६३ ॥

तीन क्रूरवार—सोमवार, रविवार और शनिवार वर्जित हैं । व्यतीपात योग में तीन पहर तथा विष्टि योग में दोपहर का समय वर्जित है । आषाढ़ा नक्षत्र में जब तक विष्णु भगवान नहीं सोते तभी तक साधक भूमिगत निधि को खोदे । शुभ मास मार्गशीर्ष में चन्द्र दैवत नक्षत्र में तब तक निधि खोदना चाहिये जब तक आषाढ़ न आ जाय । इन उपर्युक्त नक्षत्रों में निधि को खोदना चाहिये । अन्यथा करने से सिद्धि नहीं मिलती । शिवागम में

अनुराधा को मैत्र नक्षत्र माना गया है। मार्गशीर्ष तथा पौष मास भूमिगत निधियों के उत्खनन के लिये उत्तम माने गये हैं। उत्तम सहायक सात, पांच या तीन रखने चाहिये। असहाय व्यक्ति को मन्त्र से भूमिगत निधि की सिद्धि करनी चाहिये।

अथ ज्ञातनिधानस्य ग्रहणोपाय:।

ज्ञात निधि प्राप्त करने के उपाय :

ब्रह्मचारिसहस्रेण शिलाशूलशतेन च। रुद्राणां च सहस्रेण शिखाबन्धो विधीयते ॥ ६४ ॥ तत्र मन्त्र:

सहस्र ब्रह्मचारियों, सौ शिलाशूलों तथा हजार रुद्रों से शिखाबन्धन किया जाता है। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ रक्षरक्ष विच्चे स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण सर्वं सहायानां शिखाबन्धनं कृत्वा मन्त्री शाबररूपं धारयेत्। तथा च : शाबरं धारयेद्रूपं मन्त्री सर्वार्थसिद्धये। गुणिनी या मृता नारी तत्केशैरुपवीतकम् ॥६५॥ कृत्वा तद्धारयेत्तस्या भस्मनोद्धूलयेत्तनुम्। नरमुण्डधरो नग्न: शिखिपुच्छै: सुभूषणम्। इत्येवंरूपधृग्वीर: पूजां कुर्यान्निधिस्थले ॥ ६६ ॥ तस्य प्रयोग:

इस मन्त्र से सभी सहायकों का शिखाबन्धन करके साधक शाबर रूप धारण करे। कहा भी गया है कि सभी अर्थों की सिद्धि के लिये शाबर रूप धारण करे। गुणवती नारी, जो मर चुकी हो, उसके केशों का यज्ञोपवीत धारण करे तथा उसके शरीर की भस्म सारे शरीर में लपेटे। नग्न होकर नरमुण्ड तथा मोर के पङ्खों का आभूषण धारण करे। इस प्रकार का रूप धारण किये हुये वीर निधिस्थल पर पूजा करे। इसका प्रयोग :

चतुरस्रं चतुर्द्वारं तन्मध्येऽष्टदलांबुजम्। कृत्वैव मण्डलं मन्त्री कुंकुमागुरुचन्दनै: ॥ ६७ ॥ तन्मध्ये पूजयेच्छम्भुं जलकुम्भे शिवान्वितम् ॥ ६८ ॥ तत्र मन्त्र:

चार द्वारवाला चतुरस्र और उसके मध्य १८ अंगुल का मण्डल बनाकर मन्त्रों से साधक कुंकुम, अगुरु तथा चन्दन से उसके मध्य अष्टदल कमल में जल से पूर्ण कुम्भ में पार्वती सहित शिव की पूजा करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते ईशानाय श्वाधिपतये आगच्छागच्छ बलिं गृहाण गृहाण नमो विच्चे स्वाहा ॥ ६९ ॥

इस मन्त्र से पूजा करे। इसके बाद अष्टदल में प्राचीक्रम से :

ॐ नमो ब्राह्म्यै आगच्छागच्छ बलिं गृहाण गृहाण नमो विच्चे स्वाहा ।

इससे १. ब्राह्मी, २. माहेश्वरी, ३. कौमारी, ४. वैष्णवी, ५. वाराही ६. इन्द्राणी, ७. नारसिंही, ८. चामुण्डा—इन आठ मातृकाओं की उनके नाम से—यथा 'ॐ नमो ब्राह्म्यै' इत्यादि—पूजा करे। इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से :

ॐ शक्राय आगच्छागच्छ बलिं गृहाणगृहाण नमो विच्चे स्वाहा ।

इस मन्त्र से दश लोकपालों तथा वज्रादि उनके आयुधों की प्रत्येक के पृथक्-पृथक् नामोल्लेखपूर्वक पूजा करे। फिर भूपुर के बाहर पूर्वादिक्रम से :

ॐ नन्दिने आगच्छागच्छ बलिं गृहाण गृहाण नमो विच्चे स्वाहा ॥ ७० ॥

एवं सर्वे द्वारपालाः पूज्याः । द्वारपाला यथा : नन्दिनं च श्रियं पूर्वं द्वारदेशे प्रपूजयेत् । कीर्तिं चैव महाकालं दक्षिणे पश्चिमे पुनः । सगणेशं कुमारं च दण्डी भृङ्गी तथोत्तरे ॥ ७१ ॥

इस मन्त्र से सभी द्वारपालों की पूजा करनी चाहिये। द्वारपाल इस प्रकार हैं : नन्दी और श्री पूर्वद्वार पर; कीर्ति और महाकाल दक्षिण द्वार पर; गणेश और कार्तिकेय पश्चिम द्वार पर; और भृङ्गी तथा दण्डी उत्तर द्वार पर।

इत्येवं पूजनं कृत्वा मन्त्रोच्चारण पूर्वकम् । बलिं प्रदर्शयेन्मन्त्री सहायांश्चाभिषेचयेत् ॥ ७२ ॥ बलिमन्त्रो यथा :

साधक इस प्रकार मन्त्रोच्चारण पूर्वक पूजन करके बलि मन्त्र से पृथक्-पृथक् नामोल्लेख पूर्वक बलि निवेदन करे और सहायक गणों का अभिषेक करे। बलिमन्त्र इस प्रकार है :

ॐ बलिं सुबलिं तृप्यन्तु सिद्धिं मां दिशन्तु ॐ नमो विच्चे स्वाहा ।

अनेन मन्त्रेण बलिं दद्यात् ॥ ७३ ॥ मण्डलं दर्शयेन्मन्त्री सहायाय समर्चितम् । शिवकुम्भाम्भसा सर्वान्मन्त्रेणैवाभिषेचयेत् । तत्र मन्त्रः

इस मन्त्र से बलि दे। फिर सहायक गणों को मण्डल प्रदर्शित करके शिव के कुम्भजल से मन्त्र द्वारा सहायक गणों का अभिषेक करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते आरम्भरे पिङ्गले पिङ्गले लोह धर धर विधर विधर पापानि नाशय नाशय पच पच दुराचारान्हन हन अभिषेचितान्रक्ष रक्ष अभिषेकपदमुपधारय धारय कुरु कुरु समय समय भीषणे नमो विच्चे वौषट् ।

ग्रंथान्तरे अन्यमन्त्रः—ॐ नमो भगवते अर्भटे पिङ्गलोदराय पापं नाशय नाशय दुराचारं हन हन अभिषिक्तात्रक्ष रक्ष अभिषेकपदमुपधारय धारय कुरु कुरु समर समर भीषणे भीषणे नमो विच्चे वौषट्। इति अभिषेकमन्त्रः ॥ ७४ ॥

अथ भूमिखननोपायः।

निधेः खननकाले तु जपंस्तिष्ठेदघोरकम्। ध्यायेच्च शाबरं रूपं सर्वभूतभयावहम् ॥ ७५ ॥ मयूर पिच्छसंछन्नं गुञ्जाजालेन भूषितम्। दन्तुरोर्ध्वमतिश्यामं रक्तोत्पलनिभेक्षणम्। किरातमीश्वरं ध्यात्वा सर्वसिद्धिफलप्रदम्।

निधि को खोदने के समय अघोर मन्त्र का जप करता रहे। सभी भूतों के लिये भयकारक, मयूरपक्षधारी, गुंजाजाल से भूषित, बड़े-बड़े दांत, उन्नत देहवाले, अति श्यामलवर्ण, रक्तोत्पल के समान आँखोंवाले, सब सिद्धियों का फल प्रदान करनेवाले किरातरूपी ईश्वर (महादेव) के इस शाबर रूप का ध्यान करके कार्य आरम्भ करे। अघोर मन्त्र इस प्रकार है :

अथ अघोरमन्त्रः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरअघोरतरतरप्रस्फुर प्रस्फुर प्रकट प्रकट कह कह शम शम जात जात दह दह पातय पातय ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रूं अघोरास्त्राय फट् ॥ ७६ ॥

इममघोरमन्त्रं जपेत्। पूर्वं सेवायुतं दशांशेन होमः गुग्गुलुमधुघृतैः सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ७७ ॥ खन्यमाने निधौ सर्पा निःसरन्ति भयानकाः। औषधेन विना तेभ्यो भयं स्यान्मन्त्रिणामपि। तस्मादौषधयोगेन पादलेपेन तान्क्षिपेत् ॥ ७८ ॥

इस अघोर मन्त्र का १० हजार जप करे। पूर्व सेवा के साथ दशांश से गुग्गुल, मधु तथा घी द्वारा होम करने से सिद्धि होती है, अन्यथा नहीं। निधि खोदने के समय उस स्थान से भयानक सर्प निकलते हैं। औषधि के बिना उन सर्पों से साधक को भय होता है, अतः औषधयोग द्वारा पादलेप से उन्हें दूर करे।

सर्पभीति हरण :

अर्कस्य करवीरस्य पनसस्य तु मूलिकाः। पिष्ट्वा पादप्रलेपेन दूरं गच्छन्ति पन्नगाः ॥ ७९ ॥ मल्लिका गिरिपर्णी च श्वेतार्कः कण्टकारिका। वचा च मूलिकां चैव पिष्ट्वा पादौ प्रलेपयेत्। सर्पा यक्षगणाः क्रूरा ये चान्ये विघ्नकारिणः। पलायन्ते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥८०॥

मदार, कनेर तथा कटहल की जड़ पीसकर पैरों में लेप करने से सर्प दूर भाग जाते हैं। मल्लिका, गिरिपर्णी, श्वेत मदार, कण्टकारी, वचा तथा मूलिका को पीसकर पैरों में लेप लगा लेने से सर्प, क्रूर यक्षगण तथा जो अन्य विघ्नकारक तत्त्व होते हैं वे सब निधि को छोड़कर उसी प्रकार भाग जाते हैं जैसे कायर पुरुष युद्ध छोड़कर भाग जाते हैं।

वह्निः कोशातकी वज्री श्वेतार्कं गिरिकर्णिका। वचा पाठा च निर्गुण्डी कटुतुंब्याश्च मूलकम्। निम्बकेशरबीजानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम्। अनेन पादलेपेन विघ्ना यान्ति दिशो दश। एतन्नाराचयोगेन याति पातालगं धनम्। गृह्णाति नात्र सन्देहः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना॥ ८१॥

वह्नि (चित्रक), कोशातकी (तरोई), वज्री (थूहर), श्वेतार्क, गिरिकर्णिका, वचा, पाठा, निर्गुण्डी, कटुतुम्बी की जड़, निम्ब का केशर तथा बीज समभाग लेकर गोमूत्र से पीसे। इस लेप को पैरों में लगाने से सभी विघ्न दशों दिशाओं में भाग जाते हैं। इस नाराच योग से पाताल में भी गड़े धन को साधक प्राप्त कर लेता है—इसमें सन्देह नहीं है। यह स्वयं शिवजी द्वारा कहा गया है।

कूष्माण्डैरण्डधत्तूरबीजानि पनसस्य च। जातिदाडिममूलानि गोमूत्रैः पेषयेत्समम्। अनेन पादलेपेन सर्पा यक्षाः पिशाचकाः। पलायन्ते न सन्देहो निधिं संग्राहयेद्ध्रुवम्॥ ८२॥

कोंहड़ा, रेंड, धतूरा तथा कटहल के बीज तथा जाती और दाडिम (अनार) की जड़ों को समभाग लेकर गोमूत्र में पीसे। इस लेप को पैर में लगाने से सर्प, यक्ष तथा पिशाच भाग जाते हैं—इसमें सन्देह नहीं है। यह लेप निश्चित रूप से निधि का संग्रह कराता है।

अथ धूपः।

दत्तात्रेयपटले। ईश्वर उवाच। शिरीषवृक्षपञ्चाङ्गं कटुतैलेन पाचितम्। विषं चैव समायुक्तं धत्तूरबीजसंयुतम्। पञ्चाङ्गं करवीरस्य श्वेतगुञ्जासमन्वितम्। उलूकविष्ठासंयुक्तं गन्धकं च मनःशिलाम्। धूपं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं निधिस्थाने विशेषतः। पलायन्ते निधिं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः। राक्षसा भूतवेताला देवदानवपन्नगाः। सुखेन निधिं गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते। धूपमन्त्रः।

दत्तात्रेय पटल में इस प्रकार कहा गया है: ईश्वर बोले: शिरीष वृक्ष का पञ्चाङ्ग, विष, धतूरे का बीज, कनेर का पञ्चाङ्ग, श्वेतगुंजा, उल्लू का बीट, गन्धक तथा मैनसिल मिलाकर कड़वे तेल में पकावे। निधि-स्थान

पर इसका धूप विशेष रूप से देने से राक्षस, भूत, वेताल, देव, दानव और सर्प निधि को छोड़कर उसी प्रकार भाग जाते हैं जैसे कायर पुरुष युद्ध छोड़कर भाग जाते हैं। तब साधक विघ्नों से पराजित नहीं होता और सुखपूर्वक निधि को प्राप्त करता है। धूप मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो विघ्ननाशाय निधिग्रहणं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्वमयुतं पुरश्चरणं कृत्वा—अष्टोत्तरशतमन्त्रेण कार्यं साधयेत् ॥८३॥ अथ दृष्टे निधौ मन्त्री कीलकैः कीलयेत् द्रुतम्। प्लक्षपालाशलोध्रोत्थपद्मकदम्बनिम्बजैः। शम्युदुम्बरकाश्वत्थजैः कीलैः पत्रसंयुतैः। कीलनमन्त्रः।

पहले इसका दश हजार जप का पुरश्चरण करके १०८ मन्त्र के जप से कार्य को सिद्ध करे। गुप्त निधि के दृष्टिगोचर होने पर साधक प्लक्ष, पलाश, लोध्र, पद्म, कदम्ब, निम्ब, शमी, उदुम्बर तथा पीपल की पत्रयुक्त लकड़ियों की कीलकों से उसे शीघ्र कीलित कर दे। कीलन मन्त्र इस प्रकार है :

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धिया। पुनन्तु मा विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि माम्।

इस मन्त्र से निधि को कीलित करे ॥ ८४ ॥

अथ भूतबलिमन्त्रः।

ॐ सर्वभूताधिपतये नमः।

इस मन्त्र से मद्य और मांस की भूत बलि देवे ॥ ८५ ॥

पुष्पार्पणमन्त्रः। ॐ ह्रीं ह्रूं फट्।

इस मन्त्र से निधान को आसन तथा पुष्प देवे ॥ ८६ ॥

अथ निधिग्रहणमन्त्रः। ॐ नमो भगवति केतुमालिनि गरुडे शुभे ॐ ह्रीं कपालिनि उद्धारय उद्धारय गृहाण निधिं स्वाहा।

इस केतुमालि मन्त्र से निधि को निकाले ॥ ८७ ॥

चत्वारो निधियस्तत्र शम्भुदेवेन भाषिताः। कच्छपो मकरः शङ्खः पद्म इत्याभिधानतः ॥८८॥ कच्छपो मकरः श्रेष्ठः स्थिरचित्तौ स्वभावतः। सुखसिद्धया यथापूर्वं निधानेन समाहरेत् ॥ ८९ ॥ शब्देन तु मनुष्याणां शङ्खपद्मौ रसातलम्। गच्छतो न तु दृश्येते तत्र मन्त्रद्वयं स्मरेत्। शैवं च वैष्णवं चैव ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम्। प्रथममन्त्रः।

निधियां चार प्रकार की होती हैं—ऐसा शिवजी ने कहा है : १. कच्छप, २. मकर, ३. शङ्ख और ४. पद्म, इन नामों से ये प्रसिद्ध हैं। कच्छप और मकर निधि श्रेष्ठ तथा स्वभाव से ही स्थिर चित्त हैं। पूर्वकथित सिद्धि

द्वारा सुखपूर्वक इन दोनों निधियों को साधक ले लेवे ; किन्तु शङ्ख और पद्म नामक निधियाँ मनुष्यों के शब्द को सुनते ही पाताल को चली जाती हैं और जाते समय वे दिखाई भी नहीं देतीं। ऐसे समय में दो मन्त्रों का स्मरण रखना चाहिये। इन दोनों मन्त्रों में से एक शैव है और दूसरा वैष्णव मन्त्र है। इन दोनों मन्त्रों से निश्चित रूप से ये दोनों निधियाँ भी सिद्ध होती हैं। प्रथम मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय निधिमुत्तिष्ठमाणं चालय स्वाहा।

द्वितीय मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धर धर बन्ध बन्ध श्रीपर्वते कुलपर्वते वसुमते निधानमुद्धर उद्धर स्वाहा।

इन दोनों मन्त्रों का जप करना चाहिये ॥ ९० ॥

अथ पद्मसंज्ञकनिधि ग्रहणोपयोगी मन्त्रः ॐ नमो भगवते शाबर-रूपाय ॐ हूं फट् स्वाहा।

तन्त्रान्तरेपि : ॐ नमो भगवते शाबररूपाय महाकिराताय कङ्काल-रूपधराय हूं फट् स्वाहा।

इस सिद्ध शाबर मन्त्र से साध्यनिधि को सिद्ध करे ॥ ९१ ॥

अथ द्रव्यशुद्धिकरणम्।

मृत्काष्ठलोहभाण्डे तु स्थितं द्रव्यं तु मृत्तिकाम्। शैवालं वा समाश्रित्य तिष्ठेत्तं च विशोधयेत् ॥ ९२ ॥ बालुकैर्लवणं पिष्ट्वा तस्मिन्द्रव्यं विनिक्षिपेत्। यावल्लवणसंशोषं पाचयेन्मृदुवह्निना। स्वर्णं च सर्वरत्नानि निर्मलानि भवन्ति वै। करञ्जस्य विभीतस्य चित्रकस्य च पल्लवान्। पिष्ट्वा लवणसंतुल्यानारनालेन लोलयेत्। तल्लिप्तद्रविणाद्यग्नौ तापयेन्मल-शान्तये ॥ ९३ ॥

मिट्टी के भाण्ड, काष्ठभाण्ड और लोहभाण्ड में रखा निधिद्रव्य मिट्टी और शैवाल का आश्रय लेकर स्थित रहता है। अतः उस द्रव्य का शोधन कर लेना चाहिये। उक्त मृद्भाण्डादि में स्थित निधिद्रव्य के ऊपर बालू सहित नमक को पीसकर डाले और जब तक नमक शुष्क न हो जाय तब तक मन्द अग्नि पर उसे पकाये। इस प्रकार करने से स्वर्ण और सर्व प्रकार के रत्न आदि निर्मल हो जाते हैं। अथवा करंज, बहेड़ा तथा चित्रक के पत्ते को पीसकर उसके बराबर लवण मिलाकर काँजी सहित आलोड़न करे। तदनन्तर उस रस में सने निधिद्रव्य को निर्मल करने के लिये अग्नि में तपाये।

अथ समयदर्शनम् ।

केषां केषां प्रदातव्यं समयं शिक्षयेदमुम् । यत्र क्वापि निधिं लब्ध्वा गुरवे तन्निवेदयेत् ॥ ६४ ॥ यद्ददाति गुरुस्तुष्टो गृह्णीयात्तत्समंसमम् । लब्धेन वचनं कार्यं यदि साक्षान्महानृपः । गुरुवे वा सहायेभ्यो यः कदाचिन्न यच्छति । मन्त्रो मन्त्राञ्जनात्सिद्धिः क्रुद्ध्यन्ति किल देवताः ॥६५॥

किस-किस को निधि का भाग देना चाहिये इसकी शिक्षा साधक को देनी चाहिये । जहाँ भी निधि मिले उसे गुरु को निवेदित करना चाहिये । गुरु उसमें से जो कुछ दे उसे समान भाग में परस्पर बांट लेना चाहिये । निधि प्राप्त करनेवाले को इन नियमों का अवश्य पालन करना चाहिये चाहे वह साक्षात् महानृप ही क्यों न हो । मनुष्य गुरु या सहायकों को कदाचित धन यदि नहीं देता तो मन्त्र, मन्त्रांजनसिद्धि तथा सभी देवता निश्चित रूप से क्रुद्ध हो जाते हैं ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे निधिग्रहणाञ्जन-
तन्त्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥ ५ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के मिश्रखण्ड में निधिग्रहणांजन तन्त्र विषयक
पञ्चम तरङ्ग समाप्त ॥ ५ ॥

षष्ठ तरंग

अदृश्यविद्यातन्त्र

तत्रादौ आसुरीकल्पे मन्त्रो यथा :

आसुरी कल्प में ३३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं आसुरीरक्तवाससे अघोरे अघोरे कर्मकारिके अदृश्यं कुरुकुरु ह्रीं ऐं ॐ । इति त्रयस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पुष्यार्के द्विमुखं सर्पं संगृह्य मन्त्रसंयुतम् । अरण्येऽथ श्मशाने वा शून्यागारे सुरालये ॥ १ ॥ ततो भूमिं विशोध्याथ भूरसीति च मन्त्रवित् । ततस्त्रिकोणषट्कोणं भूरियन्त्रं विलेपयेत् ॥ २ ॥ पूजये-न्मूलमन्त्रेण ध्यानन्यासेन संयुतम् । स्थापयेच्च शुभं कुम्भं विधिवच्च ततो जपेत् ॥ ३ ॥ आजिघ्र कलशे मन्त्रं विधिवत्कुम्भं प्रपूजयेत् । मही-द्यौरिति मन्त्रेण मृत्तिकां निक्षिपेत्पुनः ॥ ४ ॥ नमो अस्तु सर्पेति तृचैः कुम्भं प्रपूजयेत् । पश्चात्संपुटयेत्कुम्भं यन्त्रं तस्योपरि लिखेत् ॥ ५ ॥ पाताले निक्षिपेत्कुम्भं हस्तत्रयप्रमाणतः । स्थण्डिलं चतुरस्रं च स्थापयेत्त-दुपर्यथ ॥ ६ ॥ तत्रैव यन्त्रमालेख्य भुजङ्गाकारशोभितम् । एवं विलिख्य तद्यन्त्रं तन्मध्ये मूलमुच्चरेत् ॥ ७ ॥ मूलमन्त्रं लिखित्वाथ पूजयेद्विधि-पूर्वकम् ।

इसका विधान : साधक पुष्यार्क में मन्त्र के साथ द्विमुख सर्प को पकड़ कर वन में, श्मशान में, या शून्य घर में अथवा देवालय में ले जाय। वहाँ 'भूरसि' मन्त्र से भूमि का शोधन करके मन्त्रविद् साधक त्रिकोण और षट्कोणयुक्त भूरियन्त्र लिखे और मूलमन्त्र से ध्यान तथा न्यास सहित उसका पूजन करे। फिर वहाँ शुभ कुम्भ की स्थापना करके विधिपूर्वक जप करे। 'आजिघ्रकलशे' इस मन्त्र से विधिवत कुम्भ का पूजन करे, उसमें सर्प को डाले और पुनः 'महीद्यौ' मन्त्र से मिट्टी डाले। 'नमो अस्तु सर्पेति' ऋचा से कुम्भ की पूजा करे। इसके बाद घड़े को बन्द करके उसके ऊपर यन्त्र लिखे और फिर उसे भूमि में तीन हाथ नीचे गाड़ देवे। तदुपरान्त वहां चौकोर वेदी बनाकर भुजङ्गाकार यन्त्र लिखना चाहिये। इस प्रकार इस मन्त्र को

लिखकर उसके मध्य मूलमन्त्र का उच्चारण करे। फिर वहां मूलमन्त्र लिख-कर विधिपूर्वक पूजा करे।

द्वितीये सप्तके वत्स पूजनं कथयाम्यहम् ॥ ८ ॥ आगमोक्तेन कर्तव्यं मूलमन्त्रेण चिन्तयेत्। साधकश्चैकभक्ताशी ह्येकविंशदिनानि च ॥ ९ ॥ भूमौ शय्यार्चयेन्मन्त्रं ब्रह्मचर्ययुतः शुचिः। दन्तजिह्वाविशुद्धश्च प्रातः-स्नानं सुरार्चनम् ॥ १० ॥ जपं कृत्वायुतं त्रीणि त्रिकालं यन्त्रपूजनम्। रक्तचन्दनगन्धाद्यैर्धूपदीपैस्तथोत्तमैः ॥ ११ ॥ नैवेद्यं विधिना कृत्वा अलिना पिशितैः सह। नमोस्तु रुद्रेति ऋचा मन्त्रैः शम्भुं प्रपूजयेत् ॥ १२ ॥ अम्बेअम्बिकेति मन्त्रेण ततो गौरीं प्रपूजयेत्। एवंविधां कृतां पूजां सप्ताहे च द्वितीयके ॥ १३ ॥

हे वत्स अब मैं द्वितीय सप्ताह का पूजन कहता हूं। आगमोक्त मन्त्र से पूजा करना चाहिये। साधक एककाल भोजी होकर २१ दिन तक ध्यान करे। ब्रह्मचर्यपूर्वक पवित्र तथा भूमिशायी, दन्त-जिह्वा शुद्ध करके तथा प्रातः स्नायी होकर देवता का पूजन करे। तीनों कालों में दश हजार जप करके लाल चन्दन, गन्ध, उत्तम धूप तथा दीप आदि से यन्त्र की पूजा करे। सुरा और मांस से विधिपूर्वक नैवेद्य देकर 'नमोस्तु रुद्रेति' ऋचा से शिव की पूजा करे। 'अम्बे अम्बिके' मन्त्र से गौरी की पूजा करे। दूसरे सप्ताह में इसी प्रकार पूजा करे।

तृतीये सप्तके बाल शृण्वेकाग्रमनः शुचिः। समयाचारयोगेन पूजनीयं सदा बुधैः ॥ १४ ॥ महादेवं ततः पूज्य कृष्णाजिनधरः शिवम्। अश्वस्तु परितो मन्त्रैः पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ १५ ॥ विधिवच्चागमोक्तेन एक-विंशतिमे दिने। मातङ्गीं पूजयेत्पश्चाल्लज्जाबीजेन संयुतः ॥ १६ ॥ पूपिका-वटिकाक्षीरा (?) अलिनापिशितैरपि। विधिवन्मूलमन्त्रेण मूर्त्यष्टक-मथार्चयेत् ॥१७॥ पुनः कुम्भं प्रपूज्याथ पूर्वोक्तैरेव मन्त्रकैः। पश्चादासुरि-माराध्य ततो गृह्णीत सर्पकम् ॥ १८ ॥ तद्भुजङ्गास्थि संगृह्य पञ्च-गव्येन क्षालयेत्। अञ्जयेन्मूलमन्त्रेण अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १९ ॥

हे बाल ! तृतीय सप्ताह में एकाग्र मन तथा पवित्र होकर समयाचार योग से विद्वानों को सदा पूजा करना चाहिये। इसके बाद महादेव की पूजा करके काले मृग का चर्म धारण कर शिव की पूजा करे। फिर 'अश्वस्तु परितः' मन्त्र से महेश्वर की पूजा करके इक्कीसवें दिन विधिवत आगमोक्त लज्जा बीज 'ह्रीं' सहित मातङ्गी देवी की पूजा करे। अपूप (पूआ),

बड़ा, खीर, सुरा और मांस से भी विधिवत मूलमन्त्र द्वारा मूर्त्यष्टक की पूजा करे। पुनः पूर्वोक्त मन्त्रों से कुम्भ की पूजा करने के बाद आसुरी की पूजा करके सर्प का ग्रहण करे। उस सर्प की अस्थि को लेकर पञ्चगव्य से धो डाले। फिर मूलमन्त्र से उसका अञ्जन आंखों में लगाने से साधक निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है।

अञ्जनं त्रिविधं प्रोक्तं दैवदानवमानवम्। देवदानवा न पश्यन्ति न भुजङ्गाश्च मानवाः ॥ २० ॥ कर्तव्योऽयं द्वितीयश्च योगोऽदृश्यत्वकारकः। प्रथमं शाल्मलीमूलं मन्त्रिभिर्मन्त्रवत्फलम् ॥ २१ ॥ पद्मिनीतनु संयुक्तं कार्पासमस्थिवर्जितम्। कृत्वैकत्र च तत्सर्वं वर्तिं यत्नेन कारयेत् ॥ २२ ॥ शिवलिङ्गोपरि स्थाप्य कपाले दीपकं ज्वलेत्। तद्दीपे कज्जलं गृह्य ह्यञ्ज-येल्लोचनद्वयम् ॥ २३ ॥ मूलमन्त्रेण कर्तव्यमदृश्यो भवति ध्रुवम्।

अञ्जन तीन प्रकार का कहा गया है : १. दैव, २. दानव और ३. मानव। जिससे देव, दानव, सर्प तथा मनुष्य नहीं देख पाते उस अदृश्यात्मक द्वितीय योग को बनाना चाहिये : पहले साधक को चाहिये कि मन्त्र के साथ शाल्मली (सेमर) की जड़ तथा फल, कमलिनी की नाल, बीजरहित कपास (रूई)—इन्हें एकत्र करके बत्ती बनाये। शिवलिङ्ग पर मनुष्य की खोपड़ी में दीपक जलाये फिर उस दीपक का काजल लेकर मूल-मन्त्र से दोनों आँखों में उसका अंजन लगाने से निश्चित रूप से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां रविवारेण प्राप्यते। काष्ठशूलसमारूढो म्रियते वापि तस्करः ॥ २४ ॥ वितद्धि (?) च भवेत्साधु एकाकी दृढचित्तवान्। मध्यरात्रे शुचिर्देहे तत्तत्स्थानेऽपि जायते ॥ २५ ॥ यतो यतेतिमन्त्रेण तत्तत्स्थानं प्रपूजयेत्। आगमोक्तेन पूजायां मांसेन सुरया सह ॥ २६ ॥ क्षीरखण्डादि नैवेद्यैर्विशाले खर्परे कृते। वामे खर्परमुद्धृत्य पूजयेन्मन्त्र-संयुतम् ॥ २७ ॥ मन्त्रजाप्यं ततो जप्त्वा यावत्कर्म समाप्यते। वर्तिं कुर्यात्प्रयत्नेन तारमष्टोत्तरं शतम् ॥ २८ ॥ जप्त्वा कुर्यात्ततो मन्त्री धृते नरकपालवत्। वामे करे च तत्पात्रं दक्षिणे दीपधारणम् ॥२९॥ आसुरी-पदमागत्य तमोरस्यसरित्ततः। नैवेद्यं भक्षणार्थाय साधकस्य हितार्थकम् ॥ ३० ॥ तच्चोरदक्षिणे पादे तलकज्जलमुच्चये। वेगेन कज्जलं गृह्य पुनः पूजां प्रकारयेत् ॥ ३१ ॥ नमस्कारं प्रकुर्वीत तन्मुद्रां च प्रदर्शयेत्। स्फोटयेत्खर्परं तत्र पश्चाद्दृष्टिं न कारयेत् ॥ ३२ ॥ अञ्जयेन्मूलमन्त्रेण

अदृश्यो भवति ध्रुवम् । नेत्रं प्रक्षाल्य गोमूत्रैः प्रत्यक्षो भवति क्षणात् ॥ ३३ ॥ इति आसुरीकल्पे अदृश्ययोगः ।

यदि कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को रविवार हो और उस दिन काष्ठशूल पर चढ़ाया गया कोई तस्कर मर गया हो तो वह भी इस प्रयोग के लिये उपयुक्त है । दृढ़चित्तवाला साधक पवित्रदेह होकर मध्यरात्रि में उस स्थान पर जाय और 'यतोयतेति' मन्त्र से उस स्थान की पूजा करे । पूजा में आगमोक्त सुरा और मांस के साथ क्षीरखण्ड आदि नैवेद्य विशाल खप्पर में रखकर उसे बायें हाथ में उठाकर मन्त्रों के साथ पूजा करे । मन्त्र का जप तब तक करता रहे जब तक कर्म समाप्त नहीं हो जाता । साधक यत्न से बत्ती बनाये । १०८ ॐ का जप करके मनुष्य खप्पर के उक्त पात्र को बायें हाथ में और दीपक को दाहिने हाथ में धारण करे तथा इस प्रकार आसुरी पद के पास उसकी और बढ़े । साधक के खाने के लिये नैवेद्य हितार्थक है । उक्त चोर (तस्कर) के पैर के तलवे में काजल पारे और शीघ्रता से उस काजल को लेकर पुनः पूजा करे, नमस्कार करे, उसकी मुद्रा प्रदर्शित करे, खप्पर को फोड़ दे, पीछे दृष्टि न डाले । इस प्रकार लाये गये काजल को आँखों में लगाने से साधक निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है । फिर गोमूत्र से नेत्र धो लेने से क्षण भर में वह प्रत्यक्ष भी हो सकता है । इति आसुरीकल्पोक्त अदृश्य प्रयोग समाप्त ।

कक्षपुटी में ३९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो निशाचर महामाहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि बन्धबन्ध देव्याज्ञापयति स्वाहा । इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : निशायाञ्च निधिं ध्यात्वा जपन वामेन पाणिना । अदृश्यकारिणी विद्या लक्षजप्ये प्रयच्छति ॥ ३४ ॥ रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानस्य शिवालये । अतिबल्युपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम ॥ ३५ ॥ ततो दीपांकुलीतैलैर्वर्तिः स्मादर्क तन्तुजैः । प्रज्वाल्य नृकपाले तु तत्पात्रोद्भूतकज्जलम् ॥ ३६ ॥ अञ्जयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते । महाश्चर्यकरी विद्या सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३७ ॥

इसका विधान : रात्रि में निधि का ध्यान करके बायें हाथ से मन्त्र का जप करे । इस अदृश्यकारिणी विद्या (मन्त्र) का एक लाख जप करने से निशाचर अदृश्यकारिणी विद्या प्रदान करता है । कृष्ण चतुर्दशी की रात को श्मशान में स्थित शिवालय में अत्यधिक बलि तथा उपहार द्वारा उत्तम पूजा करनी चाहिये । उसके बाद अंकुली के तेल में मदार की रूई की बत्ती

बनाकर मनुष्य की खोपड़ी के पात्र में दीपक जलाकर मनुष्य की खोपड़ी में ही काजल पारकर दोनों आंखों में लगाने से साधक देवताओं के लिये भी अदृश्य हो जाता है। इसे महान आश्चर्यकारी और सिद्ध योग कहा गया है।

एक अन्य ४३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं फट्फट्स्वाहा कालिकालि महाकालि मांसशोणितभोजने। रक्तकृष्णमुखे देवि मां मा पश्यन्तु मानुषा इति हुं फट् स्वाहा। इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अयुतं जपेत् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य प्रयोगान्कुर्यात्। ततः सिद्धो भवति। प्रयोगो यथा : अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टसूत्राब्ज तन्तुभिः। पञ्चभिर्नृकपालैश्च वर्तिकाभिश्च पञ्चभिः। नारतैलेन दीपाः स्युः कज्जलं नीरजैर्दलैः। ग्राहयेत्पञ्चभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ॥ ३८ ॥ पञ्चस्थानेषु कज्जलमेकीकृत्य च तत्पुनः। मन्त्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ॥ ३९ ॥

इसका विधान : दश हजार जप से मन्त्र सिद्ध होता है। उसके सिद्ध होने पर साधक १०८ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके प्रयोगों को करे। इससे सिद्धि होती है। प्रयोग इस प्रकार है : मदार की रूई, सेमर की रूई, कपास की रूई, रेशम और पद्मसूत्र—इन पांच प्रकार के सूत्रों द्वारा पांच बत्तियां और नर तेल से पांच नरमुण्डों में ही पांच दीपक जलाये। फिर पांच कमल के पत्ते लेकर उन पर उक्त पांचों दीपकों की शिखा पर यत्नपूर्वक काजल पारे। यह कार्य किसी शिवालय में पांच स्थानों पर पूर्ववत् पृथक्-पृथक् करे और फिर यत्नपूर्वक इन पांचों अंजनों (काजलों) को एकत्र करके मिश्रित कर ले। फिर उस मिश्रित काजल को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आंखों में लगाने से साधक देवताओं तक से अदृश्य हो जाता है।

अंकुली तैलसंसिक्ता वचा सप्तदिनावधि। त्रिलोहवेष्टिता सा तु गुटिकां कारयेत्ततः ॥४०॥ अदृश्यकारिणी ख्याता मुखस्था नात्र संशयः। तत्तैलैः सर्षपाः श्वेतास्त्रिलोहेन च वेष्टिताः ॥ ४१ ॥ गुटिका मुखमध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी।

सात दिन तक वचा को अंकुली के तेल में भिगा रक्खे। फिर उसे त्रिलोह से वेष्टित करके गुटिका बनाये। मुख में रखने से यह प्रसिद्ध गुटिका साधक को अदृश्य करनेवाली कही गई है। इसी प्रकार यदि अंकुली तैल से भावित सफेद सरसों को भी त्रिलोह में वेष्टित करके गुटिका बना लिया जाय तो

वह भी मुख में रखने से अदृश्यकारिणी हो जाती है। यह भी प्रसिद्ध गुटिका है।

पद्मचूर्णकपत्राणां सुरभिपत्रसंयुतम् ॥ ४२ ॥ धत्तूरस्य रसे पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्दृढाम् । सा लिप्तांकुलतैलेन मुखस्थाऽदृष्यकारिणी ॥४३॥

पद्मचूर्णक पत्रों को धतूरे के रस में पीसकर दृढ़ गुटिका बनाये। अङ्कोल तेल से लिप्त करके इसे मुख में रखने से यह गुटिका भी मनुष्य को अदृश्य बना देती है।

काकोलूकस्य पक्षाश्च आत्मकेशास्तथैव च । अन्तर्धूमगतं दग्धं सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ ४४ ॥ अङ्कोलतैलाद्गुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत् । अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ४५ ॥

कौवे और उल्लू के पङ्ख तथा अपने केश को अन्तर्धूम द्वारा दग्ध करके सूक्ष्म चूर्ण बनाये। इस चूर्ण में अङ्कोल का तेल डालकर गुटिका बना ले। इस गुटिका को शिर पर धारण करने से साधक तत्काल अदृश्य हो जाता है और देवगण भी उसे नहीं देख पाते।

तालकं कृष्णमहिषीक्षीरमङ्कोलतैलकम् । तल्लिप्ताङ्गो नरोऽदृश्यो जायते शङ्करोदितम् ॥ ४६ ॥

तालक (हरिताल), काली भैंस का दूध तथा अङ्कोल का तेल एकत्र पीसकर उसे अपने शरीर में लगा लेने से साधक अदृश्य हो जाता है—ऐसा शङ्कर ने कहा है।

अङ्कोलतैलसंसिक्तं मलं पारावतोद्भवम् । ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ ४७ ॥

कबूतर का बीट अङ्कोल के तेल में मिलाकर उससे ललाट पर तिलक करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां चतुर्भिः सह साधकैः । एकान्ते वा श्मशाने वा खड्गहस्तैर्महाबलैः ॥ ४८ ॥ अर्चयेत्कृष्णमार्जारं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः । कृष्णमजं बलिं दद्यात्तस्य मेदः समाहरेत् ॥ ४९ ॥ उपोषिताय तस्मै तु मेदो देयं तु भक्षणे । तृप्यते तन्तु मार्जारं गृहीत्वा पश्चिमौ पदौ ॥ ५० ॥ चालनाद्भ्रामयेद्भाण्डे जलपूर्णे समर्चिते । तद्भ्रामं तापयेदग्नौ दीपं तेनैव दीपयेत् ॥ ५१ ॥ वर्तीनां विंशतिं कृत्वा ज्वालयेन्नृकपालके । तत्पात्रे कज्जलं ग्राह्यं रात्रौ देवीं च पूजयेत ॥ ५२ ॥ परस्पराश्लिष्टकराश्चत्वारः खड्गपाणयः । दीपमावृत्य रक्षेयुः पञ्चमस्तु जपेत्सुधीः ॥ ५३ ॥ महा-

कालीयमन्त्रो यः सर्वयोग उदाहृतः। तत्रस्थं कज्जलं यत्नात्पञ्चभिर्ग्राह-येत्समम् ॥ ५४ ॥ अदृश्यकारकं चांज्यं सिद्धयोग उदाहृतः।

दिन को एक काले बिल्ले को पकड़कर उसे उपवास कराये। फिर खड्ग-हस्त चार महाबली सहचरों के साथ साधक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को गन्ध, पुष्प और अक्षत आदि द्वारा उस बिल्ले की पूजा करे। तदनन्तर एक काले बकरे की बलि देकर उसकी चर्बी निकाले और उस उपवास किये हुये बिल्ले को वह चर्बी खिला दे। फिर उस तृप्त बिल्ले की पिछली टाँगे (पैर) पकड़कर घुमावे और पूजित जलभाण्ड में उससे वमन करावे। उस वमन को अग्नि पर तपावे तथा उससे मनुष्य की खोपड़ी में बीस बत्तियों का दीपक जलाये। उस दीपक की शिखा पर मानव कपालास्थि में ही काजल पारे। रात में देवी की पूजा करे। चार खड्गहस्त साधक एक दूसरे का हाथ पकड़े हुये दीपक को घेरकर उसकी रक्षा करें जब कि पाँचवा सुधी साधक महाकालीय मन्त्र का जप करे जिसे सभी पूर्व योगों में कहा गया है। फिर नृकपाल में पारे गये उक्त काजल को एकत्र कर पाँचो जन बराबर बाँट लें। इस अंजन को अदृश्यकारक सिद्ध योग कहा गया है।

अन्यत्। शुनकस्यातिकृष्णस्य गले सूत्रं निबन्धयेत्। ततः ॐ नमः आकाशे कान्ति परमकान्ति कटुयति कटुकारीं मे नेत्रे ॐ नमः। अनेन मन्त्रेण कृष्णश्वानस्य दक्षिणाधोदंष्ट्रामूलमांसं संग्राह्य पञ्चोपचारैः पूज-यित्वा घृत मध्ये क्षिपेत्। तस्माद्दिनत्रयादुद्धृत्य पूर्वमन्त्रेण अष्टाधिकशत-जाप्येनाभिमन्त्रयेत्। पुनः पाटलीपुष्पैरावेष्ट्य सवितुः कराशौ भौमवारे क्षिपेत्। अपरभौमवारे समुद्धरेत्। ततः पूर्वमन्त्रेणाष्टोत्तरशतेनाभि-मन्त्रयेत्। ततो निर्गुण्डीपत्रैर्वेष्ट्य दक्षिणहस्ते धारयेत्। असावदृश्यो भवति न सन्देहः ॥ ५५ ॥ इति सिद्धयोगः।

एक अन्य प्रयोग : एक अत्यन्त काले कुत्ते के गले में सूत्र बांध दे। उसके बाद 'ॐ नमः आकाशे कान्ति परमकान्ति कटुयति कटुकारीं मे नेत्रे ॐ नमः' (कक्षपुटी के बङ्ग संस्करण में मन्त्र इस प्रकार है : ॐ नमः अकान्ति नृकटयतु कूटकटिभेन) इस मन्त्र से उक्त काले कुत्ते के नीचे के दाहिनी ओर के दांत की जड़ का मांस लेकर पञ्चोपचारों से पूजा कर उसे घी में डाल दे। फिर तीन दिन बाद उसे निकालकर पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके पुनः पाटली फूलों से वेष्टित करके सूर्य की किरणों के बीच सोमवार को उसे रख दे। फिर दूसरे सोमवार को उसे लाकर पूर्व मन्त्र से ही १०८ बार अभिमन्त्रित करके निर्गुण्डी के पत्तों में वेष्टित

करके दाहिने हाथ में धारण करे तो साधक अदृश्य होता है—इसमें सन्देह नहीं है। इति सिद्धयोग।

अन्यत्। अमावास्याथवा पूर्णा पञ्चमी वा त्रयोदशी। श्वेतपुष्पैर्गन्धधूपैर्बलिदीपोपहारकैः ॥ ५६ ॥ रात्रौ पूज्या ततो ग्राह्या देवदाली सुमन्त्रिता। तत्र मन्त्रः ॐ अमृतगणपरिवृते रुद्रगणाय ॐ नमः स्वाहा। इति मन्त्रेण पूजयित्वाभिमन्त्रयेत्। ततः ॐ नमो भगवते रुद्राय फट् ठः ठः ठः। अनेन मन्त्रेण ग्राहयेत्। तद्रसैः पारदं मर्द्यं दिनमेकं ततोऽजयेत्। अदृश्यो जायते जन्तुः स्वयं प्रोक्तं पिनाकिना ॥५७॥ तद्रसं देवदाल्युत्थं केतकी स्तन्य संयुतम्। अञ्जयेन्नेत्रयुगलमन्तर्धानकरं परम् ।५८।

अन्य प्रयोग : अमावस्या, अथवा पूर्णिमा या पञ्चमी या त्रयोदशी की रात को श्वेत पुष्प, गन्ध, धूप, बलि तथा दीप आदि उपहारों से देवदाली की 'ॐ अमृतगणपरिवृते रुद्रगणाय ॐ नमः स्वाहा' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पूजा करे। इसके बाद 'ॐ नमो भगवते रुद्राय फट् ठः ठः ठः' इस मन्त्र से ग्रहण करे। उसके रस से पारद को एक दिन तक घोटे। इसके बाद उसका अंजन आंखों में लगाये तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है—इसे पिनाकी (शिव) ने स्वयं कहा है। देवदाली के उक्त रस को केतकी वृक्ष के रस के साथ मिलाकर दोनों आंखों में अंजन करने से श्रेष्ठ अन्तर्धानकारक होता है।

एक अन्य ३५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अश्वले अश्वकर्णे अरिदुर्बले अर्द्धकेशे दंष्ट्राकराले ढक्कारवे भेरुण्डे चाण्डालिनि स्वाहा। इति पञ्चत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अजमोदस्य मूलं तु तुरगीगर्भजारया। सह तालकसंपिष्टं तिलकोऽदृश्यकारकः ॥ ५९ ॥

इसका विधान : अजमोदा की जड़ तथा घोड़ी की जरायु को हरिताल के साथ पीसकर तिलक लगाना अदृश्यकारक होता है।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां लाङ्गलीमूलमुद्धरेत्। श्वेतच्छागलिकागर्भशय्यायां नरतैलकम् ॥ ६० ॥ एकीकृत्याञ्जयेन्नेत्रे अदृश्यः खेचरो भवेत्।

कृष्ण चतुर्दशी की रात को लाङ्गली की जड़ को खोदकर लाये तथा श्वेत बकरी के जरायु में नरतैल के साथ उस जड़ को एकत्र घोटकर आंखों में अंजन करे तो मनुष्य अदृश्य होता है और आकाश में उड़ने लगता है।

एक अन्य १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय नमो रुद्राय हिलि हिलि चिलि

चिलि व्याघ्रचर्मपरिधानाय मरुल मरुल कुरु कुरु चण्डप्रचण्ड किलि किलि स्वाहा । इति सप्तपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : खञ्जरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् । पञ्जरे रक्षयेत्तावद्यावद्भाद्रपदं लभेत् । तदा स पञ्जरेऽदृश्यो जायते नात्र संशयः । खञ्जरीटशिखा ग्राह्या हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ६२ ॥ तच्छिखां तु करे गृह्य त्रिलोहे वेष्टितां कुरु । गुटिकायां मुखस्थायामदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ६३ ॥ अदृश्यो जायते सत्यं शक्रेणापि न दृश्यते । यस्मैकस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ६४ ॥

इसका विधान : फाल्गुन मास में खंजरीट पक्षी को जीवित पकड़कर पिंजड़े में भाद्रपद मास तक रक्खे तो वह पक्षी पिंजड़े में अदृश्य हो जाता है—इसमें संशय नहीं है । उस खंजरीट की शिखा को हाथ में लेने से वह अदृश्यकारक होती है । उस शिखा को हाथ में पकड़कर त्रिलौह से वेष्टित करे । उस गुटिका को मुख में रखने से मनुष्य निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है । वह ऐसा अदृश्य होता है कि इन्द्र भी उसे नहीं देख सकते । इसे ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये—ऐसा शङ्कर ने कहा है ।

श्वेतापराजितामूलं ग्राह्यं चन्द्रग्रहे सति । बलाक्षौद्रेण संयुक्तां गुटिकां मूर्ध्नि धारयेत् ॥ ६५ ॥ वक्त्रे हस्ते च संग्राह्य देवैरपि न दृश्यते ।

श्वेत अपराजिता की जड़ को चन्द्रग्रहण में लेकर बला तथा मधु के साथ पीसकर गुटिका बनाये । उस गुटिका को सिर पर, मुख में या बाहु में धारण करने से देवता भी साधक को नहीं देख पाते ।

पुत्रजीवोत्थितं तैलं वर्ति कृत्वा प्रतन्तुभिः । रोचनासहदेवीभ्यां नरमुण्डं प्रलेपयेत् । दीपं प्रज्वाल्य चैकस्मिन्परिग्राह्यं च कज्जलम् ॥ ६६ ॥ तदञ्जनाञ्जितो मर्त्यो विश्वेनापि न दृश्यते ।

पुत्रजीवक का तेल, अनेक तन्तुओं की बत्ती, गोरोचन तथा सहदेवी के लेप से लिप्त मनुष्य की खोपड़ी में दीपक जलाकर दूसरी खोपड़ी में काजल पारे । उस काजल को आँखों में लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है और उसे संसार में कोई नहीं देख सकता ।

जरायुं श्वेतमार्जार्याः कृष्णाया वाथ चूर्णयेत् ॥ ६७ ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थाऽदृश्यकारिणी ।

सफेद या काली बिल्ली की जरायु को पीसकर त्रिलौह में वेष्टित कर मुख में धारण करना अदृश्यकारक है ।

पूर्वंस्वां ग्रहणे भानोर्नन्द्यावर्तप्रमूलकम् ॥ ६८ ॥ गृहीत्वा तत्स्त्रियाः स्तन्यैर्घृष्ट्वा तु वटिका कृता। त्रिलोहे वेष्टितां कृत्वा वक्त्रस्थाऽदृश्य-कारिणी ॥ ६९ ॥

सूर्यग्रहण का स्पर्श होने पर नन्द्यावर्त की जड़ लेकर उसे स्त्री के दूध से घिसकर वटिका बनावे। फिर उस वटिका को त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में धारण करना अदृश्यकारक होता है।

भोजयेत्कृष्णकाकं तु महिषीनवनीतकम्। तद्विष्ठा रवितूलेन वेष्टिता वर्तिका कृता ॥७०॥ दीपमङ्कुलतैले नृकपाले च पूर्ववत्। श्मशाने कज्जलं ग्राह्यं तद्वत्स्यात्फलमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

काले कौवे को भैंस का मक्खन खिलावे। फिर उस कौवे के बीट को मदार की रूई में लपेटकर बत्ती बनाकर नरकपाल में अङ्कोल के तेल में उस बत्ती से दीप जलाये। श्मशान में उस दीपक से काजल ग्रहण करने से उसका (काजल का) भी उपरोक्त फल होता है—अर्थात् वह अदृश्यकारक होता है।

पारावतस्य कुक्षिस्थं पक्षं स्रोतोञ्जनान्वितम्। कृष्णमार्जाररक्तेन भावितं रक्ततन्तुभिः ॥ ७२ ॥ वर्तिस्तत्कपिलाज्येन नृकपाले च पूर्ववत्। ग्राहयेत्कज्जलं दिव्यमदृश्यकरणोदितम् ॥ ७३ ॥

कबूतर की कोख का पङ्ख तथा काले अञ्जन को मिलाकर कृष्णवर्ण के बिलाव के रक्त में भावित करके उसका अञ्जन करने से साधक अदृश्य होता है। काले बिलाव के रक्त में रक्त सूत को भावना देकर बत्ती बनाये। उस बत्ती से कपिला गाय के घी द्वारा नरकपाल में दीपक जलाकर नरकपाल में ही काजल ग्रहण करे। इस दिव्य अञ्जन को अदृश्यकारक कहा गया है।

दरदो देवदारुश्च चितामांसं नरस्य च। स्रोतोञ्जनयुतं कुर्यादञ्जनं दृष्टिबन्धनम् ॥ ७४ ॥

दरद (हिंगुल), देवदारु और नर की चिता के मांस को काले अञ्जन (सुरमा) में मिश्रित करके आँख में आंजने से दृष्टिबन्धन होता है।

उलूकस्य शृगालस्य सूकरस्याक्षिरक्तकम्। नीलाञ्जनयुतं पिष्ट्वा रुध्वा श्रावपुटे दहेत्। तेनाञ्जितो नरोऽदृश्यो जायते नात्र संशयः ॥७५॥

उल्लू, शृगाल तथा शूकर की आँखों का रक्त नीलाञ्जन (सुरमा) के साथ पीसकर मिट्टी के सकोरों में कपड़मट्टी करके (शरावपुट करके) अग्नि में फूंक दे। उस अञ्जन को लगाकर मनुष्य अदृश्य हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

अन्य नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ इडापिङ्गलायै स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : कृष्णमृत्पूरिते वाप्यं कृष्णगुञ्जां नृमुण्डके । रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां बलिधूपोपहारकैः ॥ ७६ ॥ नित्यं कुर्याद्बलिं पूजां जलैः सिञ्चयात्सदा निशि । पश्चात्फलति सा गुञ्जा ततः कृष्णमजं बलिम् ॥७७॥ कृत्वा योगीश्वरान्पञ्चभोजयेद्बलिपूर्वकम् । ततश्चाष्टोत्तरशतं ग्राह्यं गुञ्जाफलं क्रमात् ॥ ७८ ॥ सूच्या तु प्रोतयेत्सूत्रे सा मालाऽदृश्यकारिणी । धारयेन्मूर्ध्नि कण्ठे वा तद्युतश्च न दृश्यते ॥ ७९ ॥

इसका विधान : कृष्ण चतुर्दशी की रात को बलि, धूप तथा उपहारों के साथ नरकपाल में काली मिट्टी भरकर काली घुंघुची बो देना चाहिये । सदा रात में उसे बलि देना चाहिये । उसकी पूजा करनी चाहिये । साथ ही जल से रात में ही उसे सींचते भी रहना चाहिये । कालान्तर में जब गुञ्जा फलने लगे तब काले बकरे की बलि देकर पाँच योगीश्वरों को बलिपूर्वक भोजन कराये । इसके बाद एक-एक करके क्रम से १०८ गुञ्जाफल लेकर सूई से उन्हें गूंथ लेना चाहिये । यह माला अदृश्यकारिणी होती है । इसे शिर में या कण्ठ में धारण करना चाहिये । इसे रखनेवाला अदृश्य हो जाता है ।

उपवासत्रयं कृत्वा ततः पुष्ये निवापयेत् । नृकपाले यवान्कृष्णान्कृष्णमृत्पूरिते निशि ॥ ८० ॥ निशायां सेचयेन्नित्यं सुपक्वान्ग्राहयेन्निशि । तैर्बीजैस्तु कृता माला शिरःस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ८१ ॥

तीन दिन उपवास करके पुष्यनक्षत्र में मनुष्य की खोपड़ी में काली मिट्टी भरकर उसमें काले जौ को रात में बो दे । नित्य रात में ही सींचता रहे । जब जव की बाली पक जाय तब रात में उसके दानों से माला बनावे । शिर में धारण करने से यह माला अदृश्यकारिणी होती है ।

भजेदृतुमतीं कन्यां श्मशाने मैथुनेन तु । तच्छुक्रशोणितं ग्राह्यं शिलातालकमिश्रितम् ॥ ८२ ॥ ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ।

श्मशान में ऋतुमती कन्या के साथ मैथुन करके उसके शुक्र शोणित को लेना चाहिये । शिला (मैनसिल) ओर तालक (हरिताल) उसमें मिलाकर ललाट पर तिलक लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

सम्प्राप्ते ह्यष्टमे मासि यदि गर्भः पतेत्स्त्रियः ॥ ८३ ॥ तस्य नेत्रे च कर्णौ च जिह्वाहृन्मांसनासिकाः । गुदमेढ्रं च पादांश्च सन्ध्यायां तत्र पेषयेत् ॥८४॥ चन्द्रे वाथ ग्रहे सूर्ये गुटिकां चाभिमन्त्रयेत् । महाकालीय-

मन्त्रेण यावन्मोक्षो भवेद्गृहे ॥ ८५ ॥ गुटिकां धारयेद्यस्तु अदृश्यो जायते नरः ।

आठवें मास में स्त्री के पतित गर्भ के नेत्र, कान, जिह्वा, हृदय का मांस, नासिका, गुदा, मेढ़ तथा पैर को सायंकाल पीसकर गुटिका बनाये। चन्द्र-ग्रहण या सूर्यग्रहण पर इस गुटिका को ग्रहणमोक्ष पर्यन्त घर में महा-कालीय मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। जो अभिमन्त्रित गुटिका को धारण करेगा वह अदृश्य हो जायगा।

नृकपाले तु या लग्ना शीर्षकोद्भवमृत्तिका ॥ ८६ ॥ चाण्डालीस्तन्य-संमिश्रा हस्तस्थाऽदृश्यकारिणी ।

मनुष्य की खोपड़ी में जो मिट्टी लगी हो उसे चाण्डाली के दूध में मिलाकर हाथ में लेना अदृश्यकारक होता है।

वापयेत्तुलसी बीजं कृष्णकाकस्य पृष्ठतः ॥ ८७ ॥ रात्रौ कृष्ण-चतुर्दश्यामन्यानि परितो वसेत्। तुलसीकाकपृष्टे या दृश्यते सा न केनचित् ॥ ८८ ॥ तदर्थं वापिता बाह्ये तुलसी जायते यदा। तदा काकोद्भवा ग्राह्या बलिं दद्याच्च कुक्कुटम् ॥ ८९ ॥ सुपक्वं सप्तधान्यं च वटपत्रे बलिं दिशेत्। समूलां तुलसीमंज्याददृश्यो जायते नरः ॥ ९० ॥

काले कौवे की पीठ पर कृष्ण चतुर्दशी की रात को तुलसी के बीज बोये। कुछ बीज उसके चारों ओर भी बोना चाहिये। जो बीज तुलसी की पीठ पर उगेगा वह किसी को दिखाई नहीं देगा। इस प्रयोग के लिये जब कौवे के चारों ओर बोई तुलसी जम जाय तब कौवे की पीठ पर की तुलसी लेनी चाहिये। वहाँ मुर्गे की बलि देनी चाहिये। पकाये गये सात अन्नों को बरगद के पत्तों पर रखकर बलि दे। मूलसहित उस (कौवे की पीठवाली) तुलसी का आँखों में अञ्जन लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

कृष्णाषाढे चतुर्दश्यां कृष्णधत्तूरबीजकम्। वापयेन्नरमुण्डे तु नासा-रन्ध्रे समांसके ॥ ९१ ॥ निखनेत्कृष्णभूम्यां तु स्वोच्छिष्टैः सेचयेत्सदा। संक्रान्तिदर्शपूर्णासु दीपं दद्याद्घृतेन तु ॥९२॥ वर्तिश्च रक्तसूत्रस्य यावत्तस्य फलोदयः। कृष्णाष्टम्यां फलं ग्राह्यं बलिं दत्वा तु कुक्कुटम् ॥ ९३ ॥ तद्बीजैर्गुटिका कार्या मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ।

आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी को काले धतूरे के बीज मनुष्य की खोपड़ी की मांसयुक्त नासिका में बोकर उसे भूमि में गाड़ दे। सदा अपने जूठे जल से उसका सिञ्चन करे। संक्रान्ति, अमावस्या तथा पूर्णिमा को लाल सूत की बत्ती से घी में जलाया गया दीपक तब तक उसे दिखाये जब तक

उसमें फल न आ जांय। कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मुर्गे की बलि देकर उसका फल ग्रहण करे। उसके बीजों से गुटिका बनाकर मुख में रखने से वह गुटिका अदृश्यकारिणी होती है।

शरेण निहिते मर्त्यं दग्धे तल्लोहमाहरेत् ॥९४॥ काकोलूकस्य नीलस्य ग्राह्ये वै तस्य लोचने। तल्लोहेनाञ्जयेच्चक्षुरदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ९५ ॥

बाण से मारे गये मनुष्य को जला देने पर उसको लगे बाण के लोहे को लावे। कौआ, उल्लू तथा नीलकण्ठ की आँखों के अञ्जन से उस लोहे की शलाका से आँखों में अञ्जन करने से मनुष्य निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है।

मयूरवानरास्थीनि पाचयेन्महिषीघृते। पिष्ट्वा तदञ्जयेन्नेत्रे अदृश्यो जायते नरः ॥ ९६ ॥

मोर तथा वानर की अस्थियों को भैंस के घी में पकावे। बाद में उसे पीसकर आँखों में लगाये तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

अश्विन्यांकुशबुघ्नं तु पूजां कृत्वा समाहरेत्। त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थोऽदृश्यकारकम् ॥ ९७ ॥

अश्विनी नक्षत्र में पूजा करके कुश की जड़ लाये और त्रिलोह से वेष्टित कर उसे मुख में रक्खे तो वह अदृश्यकारक होता है।

हृदयं कृकलासस्य ग्राहयेद्विधिपूर्वकम्। गोरोचनासमं पिष्टं तार-यन्त्रेण वेष्टयेत् ॥ ९८ ॥ समन्त्रा गुटिका सा च मुखस्थाऽदृश्यकारिणी।

कृकलास (गिरगिट) का हृदय विधिपूर्वक लाये और गोरोचन के बराबर पिष्ट (आटा) से तारयन्त्र द्वारा उसे वेष्टित करे। मन्त्र सहित मुख में रखने से यह गुटिका अदृश्यकारिणी होती है।

कौतुकचिन्तामणौ : कङ्कनेत्रं समादाय नेत्राञ्जनं चरेत्ततः। अदृश्यो भवति क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ ९९ ॥

कौतुक चिन्तामणि में इस प्रकार कहा गया है : कङ्क पक्षी की आँख लाकर उसका अपने आँखों में अञ्जन करने से साधक शीघ्र अदृश्य हो जाता है और देवता भी उसे नहीं देख सकते।

कृष्णमार्जारास्थि गृह्य नृकपाले विनिक्षिपेत्। तद्गन्धलेपनं कुर्याल्ल-लाटे दर्पणे धृते ॥ १०० ॥ प्रतिबिम्बं न पश्येत आत्मनो वदनं ततः। तदा मार्गेण गन्तव्यं देवैरपि न दृश्यते ॥ १०१ ॥ यावच्च तिलकं भाले सर्वदैव हि साधकः ॥ १०२ ॥

काली बिल्ली की अस्थि लेकर मनुष्य की खोपड़ी में डाले। फिर

सामने दर्पण रखकर उसमें देखते हुये अपने ललाट पर उस गन्ध का लेपन करे तो साधक अपने मुख का प्रतिबिम्ब नहीं देखेगा। तब वह यदि मार्ग में जाय तो जब तक उसके भाल पर वह तिलक रहेगा तब तक वह देवों द्वारा भी नहीं देखा जायगा।

मयूरं च शिलातालं भोजयेद्दिनसप्तकम्। तद्विष्ठालिप्तहस्तस्थं द्रव्यं शक्रो न पश्यति ॥ १०३ ॥

मोर को सात दिन तक मैनसिल तथा हरिताल खिलावे। उसके बाद उसकी विष्ठा से लिप्त हाथ में स्थित द्रव्य को इन्द्र भी नहीं देख सकते।

कृष्णमार्जारान्तरस्थं रक्तं संगृह्य भावयेत्। नक्तमालस्य तैलेन तत्र श्वेतार्कसूत्रजाम् ॥ १०४ ॥ वर्तिं प्रज्वाल्य वज्रस्य दले संगृह्य कज्जलम्। तेनाञ्जनेन मनुजस्त्वदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ १०५ ॥

कृष्ण मार्जार (काली बिल्ली) के शरीर के भीतर के रक्त को एकत्र कर नक्तमाल (करञ्ज) के तेल के साथ सफेद मदार की रूई से बनी बत्ती को भावना देकर उसे जलाये और वज्र (सेहुंड) के पत्ते पर उसका काजल पारे। उस काजल को लगाने से साधक निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है।

सुकृष्णं चैव मार्जारं मारयित्वा चतुष्पथे। प्रोक्षणं कारयित्वा तु दिनानि पञ्चविंशति ॥ १०६ ॥ तत्संगृह्य प्रयत्नेन क्षालयेच्छीतवारिणा। यदस्थि श्रोत्रभेदि स्याद्ग्राह्यं वै यत्नतोऽथ च ॥ १०७ ॥ पूजयित्वा महाकालीं गोरोचनसमन्विताम्। नकुलस्य तु पित्तेन भावयित्वा प्रपेषयेत् ॥ १०८ ॥ तद्वर्तितिलकं कृत्वा नरोऽदृश्यो भवेद्ध्रुवम्।

एकदम काली बिल्ली को चौराहे पर मारकर उसका प्रोक्षण कर २५ दिन तक रखने के बाद यत्न से उसे शीतल जल से धोये। उसकी जो अस्थि उसके कान की ओर गई हो उसे यत्न से ले लेना चाहिये। गोरोचन से युक्त महाकाली की पूजा करके नेवले के पित्त से उसे (अस्थि को) भावित करके पीसे। उसकी बत्ती बनाकर उससे तिलक लगाकर साधक निश्चित रूप से अदृश्य हो जाता है।

नृमांसं च शिवामांसं यत्नतो ग्राहयेद्बुधः ॥१०९॥ प्रथमं रजस्वलायाश्च रुधिरेण वटीं कुरु। त्रिलोहे वेष्टिता सा तु मुखस्याऽदृश्यकारिणी ॥ ११० ॥

नरमांस और शृगाली के मांस को बुद्धिमान साधक यत्नपूर्वक एकत्र

करे। पहले रजस्वला के रक्त से उन मांसों की बटी बनावे। इस बटी को त्रिलौह में वेष्ठित करके मुख में रखने से यह अदृश्यकारक होती है।

कृष्णमार्जारमुण्डे तु कृष्णगुञ्जां प्रवापयेत्। तत्फलं वदनस्थंहि साक्षाददृश्यकारकम् ॥ १११ ॥

काली बिल्ली की खोपड़ी में काली घुंघुची (गुञ्जा) बोये। जब उसमें से फल निकले तब उस फल को मुख में रखने से साधक अदृश्य हो जाता है।

कोकिलानयनं वामं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत्। सा वटी मुखमध्यस्था ह्यदृश्यं कुरुते ध्रुवम् ॥ ११२ ॥

कोयल की बाईं आंख को त्रिलौह में वेष्ठित करके मुख में रखना निश्चित रूप से अदृश्यकारक है।

दिवाभीतस्य नयनं त्रिलोहेन प्रवेष्टितम्। मुखस्थं कुरुतेऽदृश्यं यथेच्छं विचरेन्महीम् ॥ ११३ ॥

उल्लू की आंख को भी त्रिलौह में बन्द करके मुख में रखना मनुष्य को अदृश्य बना देता है। ऐसी दशा में वह मनुष्य पृथिवी पर यथेच्छ भ्रमण करता है।

चिताग्निः खञ्जरीटस्य विष्ठा फेनो हयस्य च। सोभाञ्जनमयं नेत्रे नर एतेन धूपितः ॥ ११४ ॥ अदृश्यस्त्रिदशैः सर्वैः किं पुनर्मनुजैः प्रिये।

चिता की अग्नि खञ्जरीट की बिष्ठा, घोड़े का फेन तथा सहिजन का बीज—इन सबको एकत्र करके नेत्र को धूपित करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है और हे प्रिये! देवता भी उसे नहीं देख सकते। फिर मनुष्यों की बात ही क्या ?

अथ तुल्यदृष्टिकरणम्।

मार्जारमीनपित्तं च तैलं मूषकविट् तथा। रजस्वलाया वस्त्रेण मार्जनं त्रिश्च कारयेत् ॥ ११५ ॥ मूषिकामलतैलेन यत्नेन परिमर्दयेत्। अञ्जयेन्मूलमन्त्रेण तुल्यदृष्टिप्रदं भवेत् ॥ ११६ ॥

बिल्ली तथा मछली का पित्त और तेल तथा चूहे की बीट को रजस्वला के वस्त्र से तीन बार मार्जन करे। इसके बाद चूहे के मल के तेल से यत्नपूर्वक उसका मर्दन करे। तदनन्तर मूलमन्त्र से आंख में उसका अञ्जन लगाने से तुल्यदृष्टि प्राप्त होती है।

रजस्वलाया वस्त्रस्य मषीं कुर्यात्प्रयत्नतः । अञ्जनं गोघृतयुक्तं तुल्य-दृष्टिप्रदायकम् ॥ ११७ ॥

रजस्वला के वस्त्र की यत्नपूर्वक मसी बनाये । गाय के घी में मिलाकर उसका अञ्जन करना तुल्य दृष्टिप्रद होता है ।

प्राकृत ग्रन्थ के अनुसार :

दांत दाहिनीओर, चर्षलै बाजूबांधै । काहू दीखै नांहि, फिरै धर गठडी कांधे ॥ ११८ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डेऽदृश्यविद्यातन्त्रे षष्ठस्तरङ्गः ॥ ६ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के मिश्रखण्ड में अदृश्यविद्यातन्त्र
विषयक षष्ठ तरङ्गः समाप्त ॥ ६ ॥

सप्तम् तरंग

षट्कर्मतन्त्र

तत्रादौ षट्कर्मलक्षणानि ।

षट्कर्माणि यथा शारदातिलके : अथो विधास्ये तन्त्रेस्मिन् सम्यक् षट्कर्मलक्षणम् । सर्वतन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥ १ ॥ शान्ति-वश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने ततः । मारणं तानि शंसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥ २ ॥ योगकृत्यग्रहादीनां निवासः शान्तिरीरिता । वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम् ॥ ३ ॥ प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं तदुदाहृतम् । स्निग्धानां द्वेषजननं मिथो विद्वेषणं मतम् ॥ ४ ॥ उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् । प्राणिनां प्राणहरणं मारणं तदुदीरितम् ॥ ५ ॥

शारदा तिलक में षट्कर्म के लक्षणों का इस प्रकार वर्णन किया गया है : इस तन्त्र में मैं षट्कर्म-लक्षण कहूंगा जो सभी तन्त्रों के अनुसार प्रयोग के फलों की सिद्धि देनेवाला है । शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण—इन्हें मनीषिगण षट्कर्म कहते हैं ।

१. योगकृत्य ग्रहादि का निवास शान्ति कहलाता है ।

२. सभी लोगों को अनुकूल करना वशीकरण कहलाता है ।

३. सभी प्रवृत्तियों को स्तम्भित करने को स्तम्भन कहते हैं ।

४. दो घनिष्ठ व्यक्तियों के बीच द्वेष उत्पन्न करने को विद्वेषण कहते हैं ।

५. स्वदेश से हटा देने को उच्चाटन कहते हैं ।

६. प्राणियों का प्राणहरण मारण कहलाता है ।

षट्कर्मोपयोगि निर्णय चक्र

नीचे द्वितीय कोष्ठ में यदि किसी ऋतु में किसी कर्म की अत्यन्त आवश्यकता हो तो उसके लिये ऋषियों ने एक दिन की दश-दश घड़ी बांट-कर जिन छः ऋतुओं का विधान किया है उसी के अनुसार ऋतु विशेष के समय पर तद्विहित कर्म करना चाहिये । एक अहोरात्र में ६ ऋतुओं को इस प्रकार जानना चाहिये : दिन के पहले भाग में वसन्त, मध्याह्न में ग्रीष्म, तीसरे पहर वर्षा, सन्ध्या में शिशिर, रात्रि में शरद् और प्रातःकाल में हेमन्त ।

अथ षट्कर्मयोगिनिर्णयचक्रम्

नामानि	ऋतु १	पक्ष २	तिथि ३	वार ४	स्थान ५	आसन ६	दिग् ७	मालापदार्थ ८	मालामणि संख्या ९	अंगुली १०	यंत्रलेखन पत्रं ११	यंत्रलेखनद्रव्याणि १२	लेखनीयं १३
शांतिकर्म०१	हेमंते	शुक्ल पक्षे	२-७- ५-३-	बु. बृ.	काली०वा दुर्गामंदिरे	गोचर्म	पश्चिमे उत्तरेवा	शङ्खः	५४-२७- १०-	मध्यमास्थितां मालामंगुष्ठेनभ्रामयेत्	भूर्जपत्रं	चन्दनं	हैमं-रौप्यं-जाती-
वशीकरणे २	वसन्ते	शुक्ल पक्षे	४-९- ६-१३-	बृ. चं.	शिवालये आ.नि.ना	खड्ग चर्म	पश्चिमेवा	पद्मबीजं	५४-२७- १०-	मध्यमास्थितां अंगुष्ठेन भ्रामयेत्	भूर्जपत्रं	रोचनं रक्तचंदनंवा	दूर्वा-राज वृक्षोवा
स्तंभने ३	शिशिरे	कृष्ण पक्षे	-८-१४	र.मं.श	नियमोनास्ति	गज चर्म	पूर्वे	निंबबीजं	१५-	अनामिकांगुष्ठ-योगेन	द्वीपिचर्म	हरिद्रा	अगस्तिवृक्ष
विद्वेषणे ४	ग्रीष्मे	शुक्ल पक्षे	८-९- १०-११	श. शु.	श्मशाने	शृगाल चर्म	नैर्ऋत्ये	निंबफलं	१५०	तर्जन्यंगुष्ठ-योगेन	खरचर्म	गृहधूमः	करंजवृक्ष
उच्चाटने ५	वर्षासु	कृष्ण पक्षे	१४-८	र. श.	शून्यदेवालये	मेषचर्म	वायुकोणेऽग्निकोणेवा	फेनिस्तत्फलजा	१५-	तर्जन्यंगुष्ठ-योगेन	ध्वजवासः	चितांगारः	बिभीतकः
मारणे ६	शरदि	कृष्ण पक्षे	८-१५	र.मं.श	श्म.का.क्षे. प्रेतारू.वा	माहिष चर्म	दक्षिणे	बाहर निकलाहुवा अश्वदंत	१५-	कनिष्ठिकांगुष्ठ योगेन	नरास्थि प्रेत वस्त्रंवा	त्रिकटु : ३ श्येनविष्ठा ४ चित्रकं ५गृहधूमः ६ नरास्थि मत्तरसः अर्थात् धत्तूर रसः ७ लवणं-इत्यष्ट विष्ठाभिर्लिखेत्.	कीलं लौहंवा

नामानि	कुण्डप्रमाणं १४	कार्यपरत्वेनहोमपदार्थाः	स्रुवा	होमसंख्या	काष्ठं	अग्निः
शांतिकर्मणि १	वृत्तकुडं पश्चिमायां	दूर्वासमिधौ घृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पालाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
वशीकरणे २	पद्माकारं उत्तरे	दाडिमसमिधो अजाघृतंच	सुवर्णयज्ञवृक्षोवा	दशांशतः	बिल्व-अर्क-पलाश-क्षीरवृक्षावा	लौकिकाग्नौ
स्तम्भने ३	चतुष्कोणं पूर्वे	राजवृक्षसमिधो मेषीघृतंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	वटकाष्ठोत्थाग्नौ
विद्वेषणे ४	त्रिकोणंनैर्ऋत्ये	धत्तूरसमिधोअलसीतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	विभीतकजाताग्नौ
उच्चाटने ५	षट्कोणं वायव्ये	आम्रसमिधः सर्षपतैलंच	यज्ञवृक्षः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ
मारणे ६	अर्द्धचन्द्राकारं दक्षिणे	खदिरसमिधः कटुतैलंच	लौहमयः	दशांशतः	कुचिला-निंब-धत्तूरावा	श्मशानाग्नौ

नामानि	तर्पणेद्रव्याणि	तर्पणेपात्रं	तर्पणेआसनं	तर्पणाभिमुख्यं	मार्जनं
शांतिकर्मणि १	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रंताम्रपात्रंवा	मृदासनं	ईशानाभिमुखः	तर्पणदशांशतः
वशीकणे २	हरिद्राजलं	सुवर्णपात्रं	मृदासनं	उत्तराभिमुखः	एवम्
स्तम्भने ३	मरिचाद्यंकवोष्णं	मृत्तिकापात्रं	जानुभ्यामुत्थितः	पूर्वाभिमुखः	एवम्
विद्वेषणे ४	मेषरक्तयुतंतोयं	खदिरकाष्ठनिर्मितंपात्रं	एकपादस्थितः	नैर्ऋत्याभिमुखः	एवम्
उच्चाटने ५	मेषरक्तयुतं तोयं	लौहपात्रं	एकपादस्थितः	वायुकोणाभिमुखः	एवम्
मारणे ६	मरिचाद्यंकवोष्णं	कुक्कुटांडपात्रं	एकपादस्थितः	अग्निकोणाभिमुखः	एवम्

नामानि	ब्राह्मणभोजनार्थमन्त्रंयथा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याउत्तमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्यामध्यमा	ब्राह्मणभोजनेसंख्याधमा
शान्तिकर्मणि १	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पञ्चविंशांशेन	हो[illegible]शतांशतः
वश्ये २	होमदशांशतः	होमदशांशतः	होमात् पञ्चविंशांशेन	होमशतांशतः
स्तम्भने ३		होमपञ्चांशतः	होमात् द्वादशांशेन	होमात् पञ्चशतांशेन
विद्वेषणे ४		होमपञ्चांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
उच्चाटने ५		होमपञ्चांशतः	होमात् अष्टमांशेन	होमात् एकत्रिंशदंशेन
मारणे ६		होमसंख्यायामशक्तश्चेत् पञ्चांशतो वा भोजयेत्	होमार्थमशक्तश्चेद्दशांशतो वा भोजयेत्	होमात् पञ्चांशेन अशक्तश्चेत् विंशांशेन वा भोजयेत्

अथ शान्तितन्त्रप्रारम्भः ।

प्रारम्भ में मन्त्र महोदधि के अनुसार प्रत्यङ्गिरा मन्त्र प्रयोग:

अब मैं प्रत्यङ्गिरा-मन्त्र को कहूंगा जो शत्रु की कृत्या का नाश करनेवाला है । ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव हां ब्रह्मणा अपनिर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ह्रीं ओं । इति सप्तत्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य प्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः देवीप्रत्यङ्गिरा देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । देवीप्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि ३ । ॐ बीजाय नमः लिङ्गे ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोरयः अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ह्रीं वधूमिव मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ह्रीं हां ब्रह्मणा अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्त्तारमृच्छतु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोरयः हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा २ । ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट् ३ । ॐ ह्रीं हां ब्रह्मणा कवचाय हुं ४ । ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ह्रीं यां ह्रीं शिरसि १ । ॐ ह्रीं कल्पयन्ति ह्रीं भ्रूमध्ये २ । ॐ ह्रीं नो ह्रीं मुखे ३ । ॐ ह्रीं रयः ह्रीं कण्ठे ४ । ॐ ह्रीं क्रूरां ह्रीं दक्षहस्ते ५ । ॐ ह्रीं कृत्याँ ह्रीं वामहस्ते ६ । ॐ ह्रीं वधू ह्रीं हृदि ७ । ॐ ह्रीं मिव ह्रीं नाभौ ८ । ॐ ह्रीं हां ह्रीं दक्षिणोरौ ९ । ॐ ह्रीं ब्रह्मणा ह्रीं वामोरौ १० । ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः ह्रीं दक्षजानुनि ११ । ॐ ह्रीं प्रत्य ह्रीं वामजानुनि १२ । ॐ ह्रीं क्कर्तार ह्रीं दक्षपादे १३ । ॐ ह्रीं मृच्छतु ह्रीं वामपादे १४ । इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

**ॐ आशाम्बरा मुक्तकचा घनच्छविर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा ।
दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहिताऽन्वया प्रत्यङ्गिरा शङ्करतेजसेरिता ॥ १ ॥**

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे। (प्रत्यङ्गिरा पूजनयन्त्र चित्र ६)। पूर्वादि अष्ट दिशाओं में :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ६।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित मन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर 'ॐ ह्रीं प्रत्यङ्गिरे पद्मासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में :

ॐ ह्रीं यां कल्पयन्ति नोरयः[१] हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ ह्रीं क्रूरां कृत्यां शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। ॐ ह्रीं वधूमिव शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं हां ब्रह्मणा कवचाय[४] हुं। कवचश्रीपा० ४। ॐ ह्रीं अपनिर्णुद्मः नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ ह्रीं प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर और मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों[७-१६] और वज्रादि उनके आयुधों[१७-२६] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इस प्रकार

आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके इन्द्रादि दश दिक्पालों का उनके अपने-अपने मन्त्रों से दश दिशाओं में उड़द और भात की बलि दे। इन्द्रादि दश दिक्पालों के बलि मन्त्र इस प्रकार हैं :

ॐ यो मे पूर्वगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। इन्द्रस्तं देवराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इस मन्त्र से इन्द्र के लिये पूर्व दिशा में बलि दे ॥ १ ॥

ॐ यो मेऽग्निगतः पाप्मा पापकेनेह कमर्णा। अग्निस्तं तेजोराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इससे अग्नि के लिये पूर्व दिशा में बलि दे ॥ २ ॥

ॐ यो मे दक्षिणगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। यमस्तं प्रेतराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इससे यम के लिये दक्षिण दिशा में बलि दे ॥ ३ ॥

ॐ यो मे नैर्ऋत्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। निर्ऋतिस्तं रक्षोराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः चास्तु।

इससे निर्ऋति के लिये नैर्ऋत्य कोण में बलि दे ॥ ४ ॥

ॐ यो मे पश्चिमगतः पाप्मा पापके नेह कर्मणा। वरुणस्तं जलराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इससे वरुण के लिये पश्चिम दिशा में बलि दे ॥ ५ ॥

ॐ यो मे वायुगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। वायुस्तं भुवनराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इससे वायु के लिये वायव्य कोण में बलि दे ॥ ६ ॥

ॐ यो मे उदग्गतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। कुबेरस्तं यक्षराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्तु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु।

इससे कुबेर के लिये उत्तर दिशा में बलि दें ॥ ७ ॥

ॐ यो मे ईशानगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा। ईशानीं विद्याराजो

भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु ।

इससे ईशान के लिये ईशानकोण में बलि दे ॥ ८ ॥

ॐ यो मे इन्द्रेशानमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । ब्रह्माणं ब्रह्माण्डराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु ।

इससे ब्रह्मा के लिये इन्द्रेशान के मध्य में बलि दे ॥ ९ ॥

ॐ यो मे वरुणनिर्ऋतिमध्यगतः पाप्मा पापकेनेह कर्मणा । अनन्तस्तं नागराजो भञ्जयतु अञ्जयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु कलिं तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु ।

इससे अनन्त के लिये वरुण-निर्ऋति के मध्य में बलि दे ॥ १० ॥

इति बलिं दत्त्वा जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमयुतजपः । अपामार्गसमिधाज्यहर्विर्भिर्दशांशतो होमः । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतत्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान्साधयेत् । तथा च : ध्यायन्नेवं जपेन्मन्त्रमयुतं तद्दशांशतः । अपामार्गेध्मराज्याज्यहर्विभिर्जुहुयात्ततः ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत् । जुहुयाच्च शतं दिक्षु दशमन्त्रैर्हरेद्बलिम् ॥ २ ॥ इत्थं कृते शत्रुकृता कृत्या क्षिप्रं विनश्यति ॥ ३ ॥ इति प्रत्यङ्गिरासप्तत्रिंशदक्षरीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

इस प्रकार बलि देकर जप करे । इसका पुरश्चरण १० हजार जप है । अपामार्ग की समिधा तथा घी की हवि से जप का दशांश होम करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है और मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि 'इस प्रकार ध्यान करता हुआ साधक १० हजार जप तथा उसका दशांश अपामार्ग की समिधा, घी तथा हवि से होम करे । इस प्रकार साधक सिद्ध मन्त्र को प्रयोगों में सौ बार जपे, सौ आहुति दे और दश मन्त्रों से दश दिशाओं में बलि दे । इस प्रकार करने पर शत्रुकृत कृत्या शीघ्र ही नष्ट हो जाती है । प्रत्यङ्गिरा का ३७ अक्षरों का मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ १ ॥

अथ प्रत्यङ्गिरामालामन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र महोदधि में १२५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससे शतसहस्रहिंसिनि सहस्रवदने महाबले अपराजिते प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमने सर्वदेवान् बन्धबन्ध सर्वविद्याश्छिन्धिछिन्धि क्षोभयक्षोभय पर-

यन्त्राणि स्फोटयस्फोटय सर्वंभृङ्खलास्त्रोटयत्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः। इति पञ्चविंशित्यधिकशताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य प्रत्यङ्गिरामालामन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप् छन्दः देवी प्रत्यङ्गिरा देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। देव्यै प्रत्यङ्गिरादेवतायै नमः हृदि ३। ॐ बीजाय नमो लिङ्गे ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐसिंहारूढाति कृष्णा त्रिभुवनभयकृद्रूपमुग्रं वहन्ती ज्वालावक्त्रा वसाना नववसनयुगं नीलमण्याभकान्तिः। शूलं खड्गं वहन्ती निजकरयुगले भक्तरक्षैक दक्षा सेयं प्रत्यङ्गिरा संक्षपयतु रिपुभिर्निर्मितान्त्रोऽभिचारान्॥ १॥

इति ध्यात्वा पूर्वोक्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तिलराजकेन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतत्सिद्धो मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं तिलराजिकाः। हुत्वा सिद्धममुं मन्त्रं प्रयोगेषु शतं जपेत्॥ १॥ ग्रहभूतादिकाविष्टं सिञ्चेन्मन्त्रं जपञ्जलैः। विनाशयेत्परकृतं यन्त्र मन्त्रादिकर्मजम्॥ २॥ इति प्रत्यङ्गिरापञ्चविंशत्यधिकशताक्षरीमालामन्त्रप्रयोगः॥ १॥

इससे ध्यान करके पूर्वोक्त विधि से पूजन करके जप करे। इसका पुरश्चरण १० हजार जप है। तिल तथा राई से जप का दशांश होम होता है। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'मन्त्र का १० हजार जप तथा तिल और राई से एक हजार आहुति देकर इस सिद्ध मन्त्र का प्रयोगों में १०० बार जप करे। ग्रहबाधा और भूतादि से अविष्ट व्यक्ति को जप करते हुये जल से छींटे दे। इसी प्रकार शत्रुकृत मन्त्र तथा मन्त्रादि से की गई बाधाओं

का भी निवारण करे। १२५ अक्षरों का प्रत्यङ्गिरा माला मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ १ ॥

अथ नारायणास्त्रम् ।

नारायणास्त्र मन्त्र इस प्रकार है :

हरिः ॐ नमो भगवते श्रीनारायणाय नमो नारायणाय विश्वमूर्तये नमः श्रीपुरुषोत्तमाय पुष्पदृष्टि प्रत्यक्षं वा परोक्षं वा अजीर्णं पञ्चविषूचिकां हनहन ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशयनाशय चतुरशीतिवातानष्टादशकुष्ठान् अष्टादशक्षयरोगान् हन हन सर्वदोषान् भञ्जय भञ्जय तत्सर्वान्नाशय नाशय शोषय शोषय आकर्षय आकर्षय शत्रून् मारय मारय उच्चाटयोच्चाटय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तम्भय निवारय निवारय विघ्नैर्हन विघ्नैर्हन दह दह मथ मथ विध्वंसय विध्वंसय चक्रं गृहीत्वा शीघ्रमागच्छागच्छ चक्रेण हत्वा परविद्यां छेदय छेदय भेदय भेदय चतुःशीतानि विस्फोटय विस्फोटय अर्शवातशूल दृष्टिसर्पसिंहव्याघ्रद्विपदचतुष्पदपदवाह्याग्दिवि भुव्यन्तरिक्षे अन्येपि केचित् तान्द्वेषकान्सर्वान् हन हन विद्युन्मेघनदीपर्वताटवीसर्वस्थान रात्रिदिनपथचौरान् वशं कुरुकुरु हरिः ॐ नमो भगवते ह्रीं हुं फट् स्वाहा ठः ठं ठं ठः नमः । इति नारायणास्त्रमन्त्रः ।

अस्य विधानम् : एषा विद्या महानाम्नी पुरा दत्ता मरुत्वते । असुराञ्जितवान्सर्वाञ्च्छक्रस्तु बलदानवान् ॥ १ ॥ यः पुमान्पठते भक्त्या वैष्णवो नियतात्मना । तस्य सर्वाणि सिध्यन्ति यच्च दृष्टिगतं विषम् ॥ २ ॥ अन्यदेहविषं चैव न देहे संक्रमेद्ध्रुवम् । संग्रामे धारयत्यङ्गे शत्रून्वै जयतेक्षणात् ॥ ३ ॥ अतः सद्यो जयस्तस्य विघ्नस्तस्य न जायते। किमत्र बहुनोक्तेन सर्वसौभाग्यसम्पदः ॥ ४ ॥ लभते नात्र सन्देहो नान्यथा तु भवेदिति । गृहीतो यदि वा येन बलिना विविधैरपि ॥५॥ शीतं समुष्णतां याति चोष्णं शीतलतां व्रजेत् । अन्यथा न भवेद्विद्यां यः पठेत्कथितां मया ॥ ६ ॥ भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं गोरोचनजलेन च । इमां विद्यां स्वके बद्ध्वा सर्वरक्षां करोतु मे ॥ ७ ॥ पुरुषस्याथवा स्त्रीणां हस्ते बद्ध्वा विचक्षणः । विद्रवन्ति च विघ्नानि न भवन्ति कदाचन ॥ ८ ॥ न भयं तस्य कुर्वन्ति गगने भास्करादयः । भूतप्रेतपिशाचाश्च ग्रामग्राही तडाकिनी ॥ ९ ॥ शाकिनीषु महाघोरा वेतालाश्च महाबलाः । राक्षसाश्च महारौद्रा दानवा बलिनो हि ये ॥ १० ॥ असुराश्च सुराश्चैव अष्टयोनिश्च देवता । सर्वत्र स्तम्भिता तिष्ठेन्मन्त्रोच्चारणमात्रतः ॥ ११ ॥ सर्वहत्याः

प्रणश्यन्ति सर्वं फलति नित्यशः । सर्वे रोगा विनश्यन्ति विघ्नस्तस्य न बाधते ॥ १२ ॥ उच्चाटनेऽपराह्ले तु सन्ध्यायां मारणे तथा । शान्तिके चार्धरात्रे तु ततोऽर्थः सर्वकामिकः ॥१३॥ इदं मन्त्ररहस्यं च नारायणास्त्र-मेव च । त्रिकालं जपते नित्यं जयं प्राप्नोति मानवः ॥१४॥ आयुरारोग्य-मैश्वर्यं ज्ञानं विद्यां पराक्रमम् । चिन्तितार्थं सुखप्राप्तिं लभते नात्र संशयः ॥ १५ ॥ इति नारायणास्त्रम् ।

इसका विधान : महानाम्नी यह विद्या पहले इन्द्र को दी गई थी। इन्द्र ने बल नामक सभी असुरों को जीत लिया था। जो वैष्णव नियम से रहकर भक्तिपूर्वक इसका पाठ करता है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। दृष्टिगत विषों तथा अन्य विषों का उसके देह में संक्रमण नहीं होता—यह निश्चित है। संग्राम में जो इस मन्त्र को अपने अङ्ग में धारण करता है वह निश्चित रूप से शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है; अतः उसको तत्काल विजय प्राप्त होती है और उसे विघ्न नहीं होता। यहाँ अधिक कहने से क्या ? इससे मनुष्य समस्त सौभाग्य तथा सम्पत्तियाँ प्राप्त करता है—इसमें सन्देह नहीं है। यह मन्त्र कभी भी अन्यथा नहीं होता। यदि कोई बली शत्रु या अन्य प्रकार के शत्रुओं से पकड़ा गया है तो वह भी समस्त सौभाग्य और सम्पत्तियाँ पाता है। इसके प्रभाव से शीतल वस्तु उष्ण और उष्ण वस्तु शीतल हो जाती है। जो मेरे द्वारा कही विद्या को पढ़ता है उसका कभी अन्यथा नहीं होता। भोजपत्र पर गोरोचन और जल से इस मन्त्र को लिखे। इस विद्या को शरीर पर कहीं बाँधकर कहे कि 'सर्वरक्षां करोतु मे।' बुद्धिमान पुरुष अथवा स्त्री इसे अपने हाथ में बाँधे तो उसके सभी विघ्न भाग जाते हैं और फिर कभी नहीं आते। आकाश-चारी सूर्य आदि ग्रह भी उसे भय नहीं देते। भूत, प्रेत, पिशाच, ग्रामगाही, डाकिनी, महा-भयङ्कर शाकिनी, वेताल, महाबली राक्षस, महारौद्र दानव, बली असुर, देवता और अष्टयोनि देवता सर्वत्र इस मन्त्रोच्चार से स्तम्भित हो जाते हैं। समस्त हत्याओं के दोष नष्ट हो जाते हैं। सब कुछ नित्य फलता है। साधक के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। कोई विघ्न उसे बाधा नहीं पहुंचाता। उच्चारण में अपराह्ण, मारण में सन्ध्या और शान्ति कर्म में आधी रात का समय उपयुक्त होता है। इस प्रकार कार्य करने से सभी कुछ इच्छानुकूल होता है। यह मन्त्र रहस्य नारायणास्त्र ही है। जो मनुष्य तीनों कालों में इसका जप करता है वह जय प्राप्त करता है। आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य, ज्ञान, विद्या, पराक्रम, अभिलषित अर्थ तथा सुख मनुष्य प्राप्त करता है—इसमें संशय नहीं है। नारायणास्त्र प्रयोग समाप्त।

अथ चोरनिवारणम् ।

मन्त्र इस प्रकार है :

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः । अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥ १ ॥ जले रक्षतु नन्दीशः स्थले रक्षतु भैरवः । अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पातु शङ्करः ॥ २ ॥ अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः । बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥ ३ ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरणमात्रेण चोरो-गच्छति निष्फलः ॥ ४ ॥ कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः । इति पठित्वा शयनं कार्यं तेन चोरो निष्फलो गच्छेत् ।

अथ ग्रहनाशनभूतेश्वरमन्त्रः ।

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाश-शूलखट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्ड - मण्डिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्र-फणिकालकूटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जयजय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शयदर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बन्धबन्ध-हुंकारेण त्रासयत्रासय-वज्रदण्डेन हनहन-निशितखड्गेन छिन्धिछिन्धि शूलाग्रेण भिन्धिभिन्धि-मुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय-स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : गुग्गुलुं मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत् । मन्त्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रहपीडितम् ॥ १ ॥ ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः । मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च ॥ २ ॥ इति ।

इसका विधान : मधु से सिक्त गुग्गुल का घी के साथ धूप दे । हे हारीत ! फिर इस मन्त्र से ग्रहपीडित को डरावे । ग्रहाविष्ट के द्वारा उसे उत्तम बलि देना चाहिये । तब वह ग्रहबाधा से मुक्त हो जाता है—इसमें संशय नहीं है ।

अथ भूतोपद्रवनाशका उड्डीश मन्त्रः ।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्या-डम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रों ह्रों क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय ताडय मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीतिललाटे बन्धय बन्धय ह्रीं हृदये स्तम्भय स्तम्भय किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादयप्रच्छादय शाकिनीं

प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनीग्रहं साधयसाधय शाकिनीग्रहं साधय साधय।" अनेन मन्त्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्येकाहिकद्वया-हिकत्र्याहिकचातुर्थिकपञ्चवातिकपैत्तिकश्लेष्मिकसन्निपातकेसरिडाकिनी-ग्रहादीन्मुंचमुंच स्वाहा। गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : लोहे की सलाई से २१ बार झाड़ने अथवा छप्पर की तीली से झाड़ने से उन्मादादि भूतबाधा दूर होती है।

अथ डाकिनी से बालक को छुडाने का मन्त्र।

ॐ कालाभैरो कपिली जटा रातदिन खेलै चौपटा काला भैरूं भस्म मुसाण जेहि मांगूं सो पकडी आन। डङ्किनी सङ्खिनी पटसिहारी जरख चढन्ती गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिणी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया। इति मन्त्रः।

इसका विधान : तीर से झाड़ने तथा अभिमन्त्रित पानी पिलाने से बालक डाकनी से छूट जाता है—यह निश्चित है।

प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र :

ॐ नमो आदेस गुरूको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुण्ड घोर धोबीकी कुण्ड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बखेरता चल पारकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोडता चल सारका किंवाड तोडता चल कुनकुनसो बन्द करता चल भूतकू पलीतकू देवकू दानवकू दुष्टकू मुष्टक चोटकू फेटकू मेलेकू घरेलेकू उलकेकू बुलकेकू हिडकेकू भिडकेकू ओपरीकू पराईकू भूतनीकू पलीतनीकू डङ्किणीकू स्यारीकू भूचरीकू खेचरीकू कलुबेकू मलबेकू उनकू मथवायकं तापकू तेजराकू माथाकी मथवायकू मगरांके पीडकू पेटके पीडकू सांसकू कांसकू मरेकू मुसाणकू कुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीडी चौपटाका मुसाण नुह्या मुसाण इन्हींको बन्दकरि एडीकी एडी बंध करि पीडाकी पीडी बंध करि जांघकी जाडी बंधकरि कट्यांकी कडी बंधकरि पेटकी पीडा बन्धकरि छातीकी शूल बन्धकरि सरिकी सीस बन्धकरि चोटीकी चोटी बन्धकरि नौनाडी बहत्तर कोठा रूमरूममें घर पिण्डमें दखलकर देस बङ्गालाका मनसारा मसेवडा आकर मेरा कारज सिद्ध न करै तो

गुरू उस्तादसूं लाजै सब्दसाचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् : मद्यमांस छडछरीला अतर तेल दीपक रविवारकी रविवार भाङ्गसुलफा चढाना तो सिद्ध हो पीछे मन्त्र सातवार पढकर झाड दे तो सर्वोपद्रव दूर होकर सुखी होवे इसमें सन्देह नहीं ॥ ३ ॥

नजर झाडनेका मन्त्र।

ॐ नमो सत्य नाम आदेस गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोलै छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहाँ की ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उडी कहांको जाया अबही वसकरले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहडी चमारी कायथनी खतरानी कुह्मारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके सिर पडै जाहर पीर नजरसो रक्षा करै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा मोर-पङ्ख से झाड़ने से आराम होता है।

एक अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को कागज पर लिखकर उसका पलीता सुलगाकर सुंघाने से प्रेत साक्षात बात करता है और जो पूछा जाय उसका जवाब देता है।

पलीतायन्त्रम्

द	मू	सि	ज	जं	त्र	ō	०	०
अ	च	जा	पै.	नि	स्थै	०	०	०

डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र :

ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ ह्रूं ह्रूं ह्रैं ह्रौं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः

डाकिनी को चोट मारने का प्रयोग : उक्त मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित कर ओखली में डालकर मूसल से कूटने से उस मूसल की चोट डाकिनी को लगेगी। यदि इस मन्त्र से अपना सर मूंडे तो डाकिनी का

सिर मुंड जायगा। किसी वस्तु पर मन्त्र पढ़कर जिसके घर में उस वस्तु को फेंक दे तो डाकिनी उसके घर में जाकर बोलेगी। इस मन्त्र को पढ़कर आंखों में जल का छींटा मारने से डाकिनी जल उठेगी।

डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना :

ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरो यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय परायातकै तिस पापनका भण्डारा फूटै नरसा टूटै पाप न छूटै गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से सात बार झाड़ने से डाकिनी द्वारा ग्रसित को आराम होता है।

डाकिनी दूर करनेवाला मन्त्र।

ॐ नमो आदेस गुरूको डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्तने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसूं कौन पकडल्याया जती हनुमन्त पकडल्याया एक-ताल दे एक कोठा तोडद्या दो ताल दे दो कोठा तोडद्या तीन ताल दे तीन कोठा तोडद्या चार ताल दे चार कोठा तोडद्या पांच ताल दे पांच कोठा तोडद्या छः ताल दे छः कोठा तोडद्या सात ताल दे सातवों कोठो खोलदेखै तो कौन खडी छै? डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चलै जती हनुमन्तसेरे झाडे सूं चलै ॐ नमो आदेश गुरूको गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मोर के पङ्ख अथवा लोहे से झाड़ने से सभी उपद्रव दूर होते हैं।

अन्य प्रयोग :

ॐ नमो आदेस गुरूको गिरहवाज नटनीका जाया चलतीवेर कबूतर खाया पीवै दारू खाय जो मांस रोगदोषकूं लावै फांस कहांकहांसूं लावैगा गुदगुदमें सुन्नावैगा वोटी वोटीमेंसूं ल्यावैगा चामचाममेसू ल्यावैगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसू ल्यावैगा मारमार बन्दीकरकर ल्यावैगा न ल्यावैगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरैगा मेरा भाई मेरा देखादिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मोर के पङ्ख से झाड़ने से भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि सब भाग जाते हैं।

डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र :

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो जय नरसिंह तीनलोक चौदहभुवन में हाथ चावी और होठ चावी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाडमार भगतनको प्राण राखि आदेश आदिपुरुषको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढकर पानी पिलाकर पूछने पर डाकिनी-शाकिनी निश्चित रूप से बोलती है।
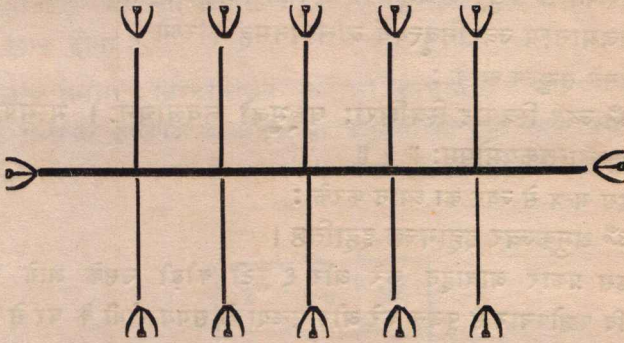
उक्त यन्त्र को कागज पर लिखकर लोहबान की धूप देकर ओखली में डालकर मूसल से कूटने पर डाकिनी का माथा फूटता है और वह बोलती है।

प्रेतादि झाडनेका मन्त्र।

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवन-व्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलाय स्तम्भोद्भवाय समस्त-दोषान् हरहर विसरविसर पचपच हनहन कम्पयकम्पय मथमथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्फट् ठः ठः एहिएहि। रुद्र आज्ञापयति स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर सरसों मारने से सब दोष दूर होते हैं।

दूसरे के कृत्य को उलटना :

एकठोसरसों सोलाराई मोरो पठवलको रोजाई खायखाय पडै भार जे करै ते मरै उलट विद्या ताहीपर परै शब्द साचा पिण्ड काचा तो हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से राई और नमक उतारकर आग में डालने से दूसरे द्वारा की गई विद्या उलट कर करनेवाले पर ही जा पड़ती है।

अथ सर्वज्वरे बलिदानविधानम्।

भावप्रकाशपरिशिष्ट में लिखा है कि नौ मुट्ठी चावलों का भात बना-

कर उसका पुतला बनावे। उस पुतले को खस की चटाई पर बैठाकर उसके सम्पूर्ण शरीर में हल्दी का लेप करे। फिर उसके चारों ओर पीले रङ्ग की चार पताका गाड़कर चन्दन-पुष्प चढ़ाये और धूप-दीप से पूजन करके पीपल के पत्तों की चार पुड़ियाँ, जिनमें हल्दी भरी हो, पुतले के चारों कोनों पर स्थापित करे। फिर यह सङ्कल्प करे :

देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोहं अमुकशर्म्माहं माम् अथ वा मम यजमानस्य ज्वरनिवृत्त्यर्थं बलिदानमहं करिष्ये।

इससे सङ्कल्प करके :

ॐ ज्वर स्त्रिपाद स्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः। भस्मप्रहरणो रुद्रः कालान्तकयमोपमः ॥ १ ॥

इस मन्त्र से ज्वर का ध्यान करके :

ॐ अमुकज्वर इहागच्छ इहातिष्ठ।

इस प्रकार आवाहन करे और ९ फूटी कौड़ी उसके आगे रखकर गन्धादि पञ्चोपचार से पूजन करे और सन्ध्या के समय रोगी के घर से दक्षिण की ओर श्मशान में अथवा श्मशान वृक्ष के नीचे या चौराहे पर उस पुतले को लेकर आये और ज्वरवाले रोगी को उसके आगे खड़ा करके :

ॐ नमो भगवते गरुडासनाय त्र्यम्बकाय स्वस्त्यस्तु वस्तुतः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ कं टं पं शं वैनतेयाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं ठः ठः भोभो ज्वर शृणुशृणु हलहल गर्जगर्ज एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक अर्धमासिक मासिक नैमेषिक मौहूर्तिक फट्फट् हूं फट्फट् हलहल मुञ्चमुञ्च भूम्यां गच्छ गच्छ स्वाहा।

इस मन्त्र से बलिदान करके विसर्जन कर देना चाहिये। इस प्रकार तीन दिन तक करने से सब प्रकार का महादुष्ट ज्वर भी शान्त हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है। यह हमारा परीक्षा किया हुआ प्रयोग है।

अन्यमन्त्रः। ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं सुग्रीवाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमिततेजसे ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं दृष्टिज्वरं सान्निपातिकं सन्ततज्वरं तत्क्षणं षाण्मासिकं साम्वत्सरिकं सर्वान् छिन्धिछिन्ध भिन्दि-भिन्दि किरिकिरि सर्वान् ज्वरान् ग्रसग्रस पिबपिब ब्रह्मज्वरं भीषयभीषय विष्णुज्वरं त्रासयत्रासय माहेश्वरज्वरं निघातय भूतज्वरप्रेतज्वरापस्मारादिमहाव्याधीन्नाशयनाशय सर्वान् दोषान् घातयघातय महावीरवानर ज्वरान् बन्धबन्ध ॐ ह्रां ह्रीं हुं हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से २१ बार झाड़ने से हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है।

अन्यत्। ॐ नमो भगवते छिन्धिछिन्धि अमुकस्य ज्वरस्य शिरः प्रज्वलितपरशुपाणये पुरुषाय फट्। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को लिखकर धारण करने से सब प्रकार का ज्वर शान्त होता है।

अन्यत्। ॐ विद्युदानन हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को चूने-कत्थे से पान पर लिखकर खाने से तीन दिन में ज्वर शान्त होता है।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को श्मशान के ठीकरे पर धतूरे के रस से लिखकर कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को पूजा करके श्मशान में गाड़ देने और पूजन करने से बालकों का ज्वर तत्काल शान्त हो जाता है।

६	१४	५३
६	॥६	१
४।	४५	८

निम्नलिखित त्रिशूली अथवा नवकोष्ठ के यन्त्र को कागज पर स्याही से लिखकर कण्ठ अथवा भुजा में बांधने से ज्वर दूर होता है।
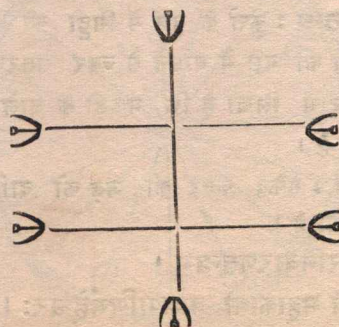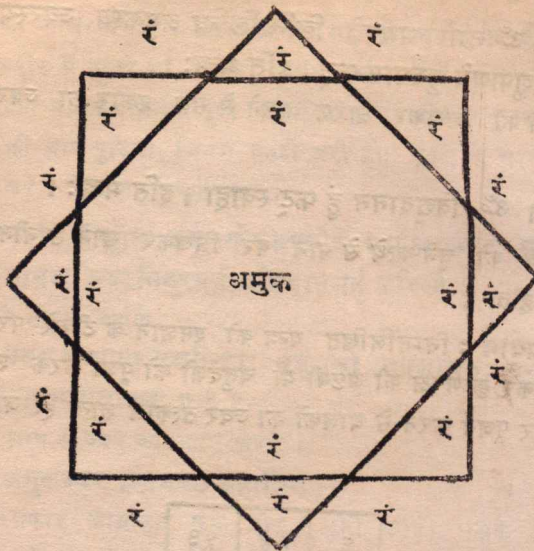
अथ मन्थरज्वरनिवारणतन्त्रम् ।

ॐ नमो अञ्जनीपूत ब्रह्मचारी वाचा अविचलस्वामि उनका जसा-रिवां क्षां क्षः मगधदेशराय वडस्थान कितिहां मुसलीकन्द ब्राह्मण तिण मधुरो कियो । इति मन्त्रः ।

सकोरों सहित तीन गागरों को पानी से भरकर उनमें चन्दन घिसकर डाले और अगर की धूप दे । उस पर श्वेत पुष्प चढ़ावे और फिर मन्त्र को १०८ बार पढे । इस प्रकार सात दिन तक करे और रोगी को हनुमानजी के प्रसाद की भीगी दाल खिलावे तो आराम होता है ।

संतत ज्वर तन्त्र : कुत्ते के मूत्र में मिट्टी की गोली बनाकर धूप में सुखावे । इस गोली को गले में बाँधने से ज्वर उतरकर फिर दुबारा नहीं चढ़ता । तन्त्रान्तर में लिखा है कि मकड़ी के जाले को गले में लटकाने से ज्वर छूट जाता है ।

शीतज्वरतन्त्र : सफेद कनेर की जड़ को दाहिने हाथ में बाँधने से शीत ज्वर छूट जाता है ।

अन्येद्युष्कज्वरनिवारणतन्त्रम् ।

ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः । ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर । इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र से पान के बीड़े को १०८ बार अभिमन्त्रित करके खिलाने से एक ही दिन में एकान्तर ज्वर जाता रहेगा।

अन्यत्। ॐ गङ्गाया उत्तरे तीरे अपुत्रस्तापसो मृतः। तस्मै तिलोदकं दद्यान्मुञ्चत्वैकाहिको ज्वरः। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से हाथ में पीपल का पत्ता लेकर उसमें तिल डालकर जल से तर्पण करने से एकाहिक ज्वर छोड़ देता है।

अन्यत्। ॐ बाणयुद्धे महाघोरे द्वादशार्कसमप्रभे। जातोसौ सुमहावीर्यो मुञ्चत्यैकाहिको ज्वरः। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर धारण करने से एकाहिक ज्वर छोड़ देता है।

तन्त्रम्। उलूकदक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत्। बध्नाति वामकर्णे तु हरत्येकाहिकज्वरम्।

एक अन्य तन्त्र : उल्लू के दाहिने पङ्ख को सफेद सूत में लपेटकर बायें कान में बाँध देने से एकाहिक ज्वर समाप्त हो जाता है।

अन्यत्। कर्कटस्य बिलोद्भूतमृदा तत्तिलकं कृतम्। ऐकाहिकज्वरं हन्ति नात्र कार्या विचारणा।

अन्य प्रयोग : कर्कट (केकड़ा) के बिल से निकली मिट्टी का तिलक करने से एकाहिक ज्वर नष्ट होता है—इसमें कोई विचार नहीं करना चाहिये।

यन्त्र : निम्नलिखित १६ त्रिशूलवाले यन्त्र को शनिवार के दिन डण्डी सहित नीचे गिरे हुये पीपल के पत्ते पर स्याही से लिखकर तीन तार के लाल सूत से गले में बाँधने से एकाहिक ज्वर छोड़ देता है—इसमें सन्देह नहीं है। यह हमारा सहस्रों बार का परीक्षित यन्त्र है।
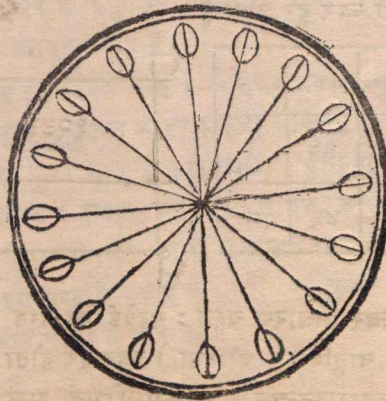
अन्य प्रयोग : निम्नलिखित षट्कोण यन्त्र को हल्दी द्वारा पान पर बबूल के काँटे से लिखे। फिर उसका पूजन करके रोगी को खिला दे तो एकान्तर ज्वर दूर हो जायगा।
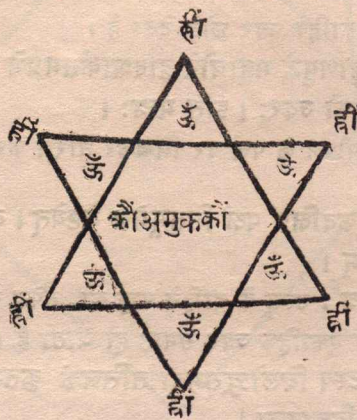
तृतीयज्वरनिवारणम्।

अपामार्गजटा कट्यां लोहितैः सप्ततन्तुभिः। बद्धा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हन्ति तृतीयकम्।

अपामार्ग की जड़ को रविवार के दिन कमर में लाल सूत के सात तारों से बाँधे तो तृतीया (तिजरिया) ज्वर नष्ट हो जायगा।

यन्त्र : निम्नलिखित अथवा नवकोष्ठ के यन्त्र को लिखकर गले में बाँधने से तिजारी ज्वर दूर होता है।

६	१४	५३
६	११६	१
४१	४५	८

१२३३
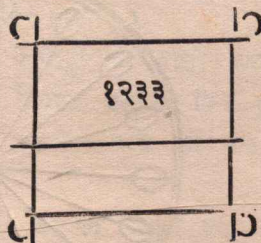
चातुर्थिक ज्वर निवारण यन्त्र : सहदेई को नग्न होकर लाये। इसे कान में बाँधने से चातुर्थिक (चौथिया) ज्वर दूर होता है।

रात्रिज्वरनिवारणतन्त्रम्। काकमाचीभवं मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम्। निहन्ति नात्र सन्देहो यथा सूर्योदयात्तमः॥ १॥

काकमाची (काली मकोय) की जड़ कान में बाँधने से रात में होने-वाला ज्वर नष्ट हो जाता है। इसमें उसी प्रकार कोई सन्देह नहीं है जैसे सूर्योदय से अन्धकार नष्ट होने में सन्देह नहीं है। अथवा भांगरा की जड़ को डोरे सहित कान में बाँधने से रात्रिज्वर दूर होता है।

अथ अर्शनिवारणतन्त्रम्। ॐ काका कर्ता क्रोरीकर्त्ता ॐ करतासे होय ये रसना दशहूंसे प्रकटै खूनी वादी बवासीर न होय। मन्त्र जानके न बतावै द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करै तो उसके वंशमें न होय शब्द सांचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से बासी पानी को २१ बार अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर (अर्श) की पीड़ा दूर होकर फिर कभी नहीं होती। जो कोई इस मन्त्र का १ लाख जप करता है उसके वंश में कभी बवासीर का रोग नहीं होता। जो इस मन्त्र को जानकर अर्शरोगी को आबदस्त के लिये जल ले जाने के लिये नहीं कहता उसे १२ ब्राह्मणों की हत्या का पाप लगता है। अतः आबदस्त के लिये इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ले जाने के लिये अवश्य कहना चाहिये। यदि कहने पर भी रोगी ऐसा जल नहीं ले जाता तो उससे मन्त्री (मन्त्र जाननेवाला, दोषभागी नहीं होता। यह मन्त्र हमारा अनेक बार का परीक्षित है।

अन्यत्। ॐ उमतीउमती चलचल स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गाँठ दे। इसी तरह तीन गाँठ देकर दाहिने पैर के अंगूठे में बाँधने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर हो जायगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

दांतके कीडे झाडनेका मन्त्र। ॐ नमो आदेस गुरूको वनमें व्याई अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त कीडा मकडा माकडा ए तीनू भस्मन्त गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : दीवाली की रात से एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर नीम की डाली से झाड़ने से दांत का दर्द तत्काल दूर होता है। यदि इस मन्त्र से कटाई के बीजों का धूआं डाढ़ों में दिया जाय तो उसके सब कीड़े पानी में गिर पड़ेंगे।

अन्यत्। ॐ नमो कीडरेतूं कुण्डकुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुख काला में तोहि पूंछूं कहां ते आया तोडमांस सबको क्यौं खाया अब तूं जाय

भस्म होजाय गोरखनाथके लागूं पाय शब्द सांचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र द्वारा नीम की टहनी से ७ बार झाड़ने से सब कीड़े मर जाते हैं ।

धरण (नारा उखड़ने) को यथास्थान लाना : मन्त्र इस प्रकार है :

ऊंची नीची धरणी श्रीमहादेवकी सरनी टली धरन आणूं ठौर सत-सत भाखै श्रीगोरखराव । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : मन्त्र से झाडकर सवा तीन मासा की मुदड़ी पहना देने से धरण ठिकाने आ जाती है ।

अन्यत् । ॐ नमो नाडीनाडी नौसै नाडी बहत्तरसौ कोठा चलै अगाडी डिगै न कोठा चलै न नाडी रक्षा करै जती हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । इति मन्त्रः ।

सूत में ९ गाँठ लगाकर उसे छल्ले की तरह बना ले फिर उसको नाभि पर रखकर मन्त्र पढ़े और उस पर फूंक मारे तो थोड़ी देर में धरण ठिकाने आ जायगी ।

अन्य प्रयोग : वन में जब सह्लाहुली फूले तो उसको हल्दी से रँगे चावलों से शनिवार को निमन्त्रित करे । फिर रविवार को प्रातःकाल जाकर सात प्रदक्षिणा करके हाथ जोड़ें, मस्तक झुकाये, स्तुति करे और सूर्य की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डाले । फिर उसे खोद लाये । उसे कमर में बाँधते ही धरण यथास्थान आ जाती है—इसमें सन्देह नहीं है ।

हूकका मन्त्र । ॐ नमो सारकी छुरी धारका वान हूकन चलै रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और प्रत्येक बार तेज छूरी से जमीन पर रेखा खींचता जाय तो हूक बन्द हो जाती है ।

प्लीहनिवारणमन्त्रः । ॐ नमो हुतास पर्वत जहा सुरहगा सुरहगाय के पेटमें वच्छा वच्छाके पेटमें तिल्ली दबादबाकर तिल्ली कटै सरकण्डा बढै फीहा कटै हरौ फुरौ । इति मन्त्रः ।

छूरी से भूमि पर लकीर बनाकर उसे काटता जाय और साथ ही साथ मन्त्र भी पढ़ता जाय तो तिल्ली ठीक हो जाती है ।

कखलाईनिवारणार्थं मन्त्र । ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहा बैठा हनुमन्ता आई पकै न फूटै चलै न पीड रक्षा करै हनुमन्त वीर,

दुहाई गुरू गोरखनाथकी शब्द साचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा, सत्य नाम आदेस गुरूको । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : नीम की टहनी से २१ बार झाड़कर भूमि की मिट्टी उस पर लगा दे तो तीन ही दिन में कखलाई बैठ जायगी ।

रींघनवायको मन्त्र । ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो कामरूदेसकामाक्षा देवी जहां वसै इस्मायल जोगी इसमायलजोगीके पुत्री तीन एक तोडै एक पिछोडै एक रींघनवाय तोडै शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । इति मन्त्रः ।

मङ्गल और शनिवार को मणिहारी की मुंगरी से झाड़ने से आराम होता है।

सुखप्रसव

मन्त्र इस प्रकार है ।

ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः । मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भं एहि माचिरमाचिर स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : इस मन्त्र से ८ बार जल को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा ।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित चक्रव्यूह यन्त्र को कांसे की थाली में लिखकर धोकर उस पानी को पिलाने से कष्टपूर्ण प्रसव वेदना में लाभ होगा ।

चक्रव्यूह

तीसीयन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

तीसी यन्त्र : उपरोक्त प्रकार से तीसी यन्त्र को लिखकर गर्भवती को दिखाने से तत्काल प्रसव हो जाता है ।

कुछ अन्य मन्त्र :

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा । इति मन्त्रः ।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक के द्वारा दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भवती को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नेत्रपीडानिवारणमन्त्र। ॐ नमो श्रीरामकी धनुही लक्ष्मणका बाण आंख दर्दकरै तो लक्ष्मण कुमारकी आन। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से इस मन्त्र को पढ़ते हुये २१ बार झाड़ने से तीन दिन में आँख की पीड़ा दूर हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है। यह अनुभूत प्रयोग है।

अन्यत्। ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमन्ता जाई फूटै न पाकै करै न पीडा जती हनुमन्त हरै पीडा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर नीम की टहनी से झाड़ने से पीड़ा मिट जाती है।

कण्ठवेल का मन्त्र। ॐ नमो कण्ठवेल तूं द्रुमद्रुमाली सिरपर जकडी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घटगई वेल बढन नहिं पावै बैठी तहां उठननहिं पावै फूटै और पीडा करै तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सात दिन चाकू की नोक से झाड़े और भूमि पर २१ लकीर बनाता जाय। इससे कण्ठवेल समाप्त होता है।

अदीठमन्त्र। ॐ नमो सिर कटा नख कटा विष कटा अस्थिमेद-मज्जागत फोडा फुनसी अदीठदुम्बल दूखना रैत्यावरोगरीधणवायजाय चौसठ जोगनी बावन बीर छप्पन भैरूं रक्षा कीजे आय शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मोरपङ्ख से भूमि को साफ करके सात बार मन्त्र पढ़ें, और एक चुटकी धूल उठाकर फोड़े के चारों ओर लगा दे। सात दिन तक ऐसा करने से अदीठ समाप्त हो जाता है।

विच्छू झाडनेका मन्त्रः। ॐ नमो आदेस गुरूको कालो विच्छूं कांकरवालो उत्तर विच्छूं नकर टालो उतरै तो उतारूं चढै तो मारूं गरुडमोरपङ्ख हकालू शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा। इस मन्त्र से झाडने से विच्छूका विख उतर जाता है।

अन्यत् । कालाबिच्छू कङ्करवाला हरी पूंछ भौंराला सोनाकागाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौकोर नीचे विच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार विच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वैदमानुष-पर गया खातेजाते लागी वार उतर रे विच्छू तुझे ख्वाजममन्दीन-चिरागतृष्टीकी आन । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : जहां तक बिच्छू चढ़ा हो वहाँ पकड़कर बुहारी (झाड़ू) से झाड़ दीजिये । जैसे-जैसे दर्द नीचे उतरे वैसे-वैसे आप भी नीचे पकड़ते जाँय । जब दंश स्थान पर दर्द उतर आवे तब झाड़ना बन्द कर दे और दंश स्थान पर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगा दे । इससे दंश स्थान की पीड़ा भी समाप्त हो जायगी ।

सर्प झाडनेका मन्त्र । खं खः । इति द्वयक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : जब कोई सर्प काटने का समाचार दे तब पानी को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके समाचार देनेवाले व्यक्ति को देकर कहे कि 'जाकर इस पानी को सर्पदष्ट को पिला दो ।' इस पानी को पीने से सर्पविष उतर जाता है ।

अन्यत् । ॐ नमो भगवति वज्रमये हनहन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्त-शरीरे वज्रायुधे वज्रकराश्चिते पूर्वां दिशं बन्ध बन्ध ॐ दक्षिणां दिशं बन्धबन्ध ॐ पश्चिमां दिशं बन्धबन्ध ॐ उत्तरां दिशं बन्धबन्ध ॐ नागान् बन्धबन्ध ॐ नागपत्नीं बन्धबन्ध ॐ असुरान् बन्धबन्ध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धबन्ध ॐ प्रेतभूतगन्धार्वादयो ये केचिदुपद्र-वास्तेभ्यो रक्षरक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्षरक्ष ॐ अधो रक्षरक्ष ॐ क्षुरिके बन्ध-बन्ध ॐ ज्वल महाबले घटघट ॐ मोटिमोटि सटावलि वज्राङ्गि वज्र-प्रकारे हुं फट् ह्रों ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं ह्रः फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्व-व्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्षरक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : जल को मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके पिलाने से विष उतर जाता है ।

अन्यत् । ॐ ह्रुं सूं ॐ नालकान्तिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्र-तारिणि छिलि किलि रक्त लोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुण्डे कट कट हन हन महोज्ज्वले चिलिचिलि

मुण्डमालाधारिणि स्फोटय स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जङ्गमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनि वनवासिनि पर्वतविचारिणि कह कह ॐ हस हस नम नम दह दह क्रुध क्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुर विस्फुर ॐ घण्टानादिनि ललज्जिह्वे महाकाये क्षुं ह्लुं आकर्ष आकर्ष विषं धून धून हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महाकाये अमुकस्य स्थावरजङ्गमविषं छिन्दि छिन्दि किटि किटि सर्वविषनिवारिणि हुं फट् । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : पहाड़ के एक नीलवर्ण पत्थर के टुकड़े को अभिमन्त्रित करके दष्ट स्थान पर चिपका दे और मन्त्र पढ़ता जाय । जब तक विष रहेगा तब तक पत्थर दष्ट स्थान पर चिपका रहेगा और विष के समाप्त होने पर स्वयं ही पत्थर अलग हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है ।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर धोवे और उस धोवन को सर्पदष्ट को पिला दे । इससे सर्प का विष तत्काल उतर जायेगा और चढेगा नहीं ।

सर्पविषनाशकयन्त्रम्

।।।	=	।=।	=
।।।।	।	।।।	=
≡	२	+	≡
।।।	=	।	=।

सर्पकीलन का मन्त्र :

ॐ नमो सर्पा रे तूं थूलं मथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरी दादी भुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरा रतन कटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो धाव तेरी डाढ भस्म होजाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष दिन पर्यन्त प्रतिदिन सवा पहर तक असंख्य बार जपे तो यह सिद्ध हो

जाता है। फिर इस सिद्ध मन्त्र से आरने उपले की भस्म को सर्प पर डालने से उसकी डाढ़ बन्द हो जायगी। फिर साधक उस सर्प को खिलौने की भांति उठा सकता है।

सर्प कीलनेका मन्त्र। बजरी बजरी बजरकिवाड बजरी कीलूं आसपास मरै सांप होय खाख मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः

इस मन्त्र से साँप को एक कङ्कड़ मारने से वह कीलित हो जायगा।

सांप खोलनेका मन्त्र। कीलन भई कुकीलनी, वाचा भया कुवाच। जाहु सर्प घर आपनें, चुग फिर चारों मांस। इति मन्त्रः।

अन्यत्। पहेर भगवें कपडे कर मरदाना भेस बन्धीबन्धी पन छुटगई फिरि आचारों देस मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर कीलित सांप पर कङ्कण मारने से उसका उत्कीलन हो जायगा।

सर्पोंको भगानेका मन्त्र। ॐ प्लः सर्वकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घर में डाल दे तो सर्प भाग जांयगे।

पागल कुत्तेका मन्त्र। ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां वसै इसमायलजोगी इसमायलजोगीका झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंडा बन्दर नाचै रीछ बजावै सीता बैठी औषध वांटै कूवरका विष भाजै शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से झाड़ देने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है और किसी तरह की पीड़ा नहीं होती।

तन्त्रान्तरेपि। ॐ नमो आदेश गुरूको आदेश कामरू देशकझवरा कुत्ता हुकनबुके सुषपसुषे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मोरपङ्ख से १०६ बार झाड़ दे। फिर शनिवार के दिन ३ तोला चावल भिगावे और रविवार को पीसकर दो गोली बना ले। फिर भूमि को लीपकर रोगी को वहां बैठाकर सूर्य की ओर मुख करके एक गोली फेरे और मन्त्र पढ़ता रहे तो कुत्ते के बाल गोली में निकलेंगे। फिर दूसरी गोली भी इसी प्रकार फेरे तो उसमें भी बाल निकलेंगे। इसी प्रकार

रविवार के दिन से तीन दिन झाड़ें और वर्ष दिन पर्यन्त दर्पण न देखे, उड़द, तेल की वस्तु, खटाई, अचार आदि न खाय और पानी में भी मुख न देखे।

आधासीसीका मन्त्र। ॐ नमो वनमें व्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूदकूद शाखानपै, कच्चे वनफल खाय। आधा तोडै आधा फोडै, आधा देय गिराय। हुंकारत हनुमानजी, आधासीसी जाय। इति मन्त्रः।

वनमें व्याई अञ्जनी, कच्चे वनफल खाय। हांकमारी हनुमन्तने, इस पिण्ड से आधासीसी उतरजाय। इति मन्त्रः।

इन मन्त्रों से विभूति से झाड़ने से आधा सीसी दूर होकर पीड़ा समाप्त हो जाती है।

निम्नलिखित ९ कोष्ठ के यन्त्र को लिखकर सिर में बांधने से आधा सीसी दूर होती है। निम्नलिखित चार कोष्ठ के यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बांधने से निश्चित रूप से आधा सीसी नष्ट हो जाती है। यह यन्त्र अत्यन्त गुप्त है।

५३	४२
३११	७०

५६	१	४४
२०	३८	४६
२८	६२	१४

कमल झाडनेका मन्त्र। ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहैन नेकनिशान जो कहीं रहे जाय तो हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

कांसे की कटोरी में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखकर मन्त्र पढ़े और कुशा से उस तेल को चलाता जाय। जब तेल पीला हो जाय तब उतार ले। इससे पीलिया (कवल) रोग तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

अथ दर्द और थनपलको झाडना। ॐ वनमें जाई वानरी, जिन-जाया हनुमन्त। सब्बा खधा ठाकिया, हो गया भस्मीभूत। इति मन्त्रः।

इसका विधान : स्त्री का बायाँ स्तन दुखे तो अपने दाहिने, और यदि उसका दाहिना स्तन दुखे तो अपने बाये स्तन को कण्डे की राख से ७ बार झाड़ने से स्त्री को आराम हो जायगा।

जमोगा का मन्त्र। सुनरे जमोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान बचोगे नहीं तूं जिमी आसमान दुहाई औघडकी छू खेदके मारता हूं वान। इति मन्त्रः।

रामसर की तीर-कमान बनावे और मन्त्र पढ़कर तीर बालक को मारे तो जमुवे की पीड़ा से वह छूट जायगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

डबा पसली झाडने का मन्त्र। सत्य नाम आदेस गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतो गया सवालाख पर्वतो जाय कहा करैगा सवाभार कोईला करैगा सवाभार कोईलाकर कहाकरैगा हनुमन्त वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढैगा नव चन्द्रहास खड्ग घड कहाकरैगा जानवा डौरू पांसलीवाय काटकूट खारीसमुद्र नाखैगा जगद्गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

तिल के तेल और सिन्दूर से झाड़ने से आराम होगा।

अथ द्यूते विजयकरणम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जां च मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि पुष्य नक्षत्र में श्वेत गुञ्जा की जड़ लेकर दाहिने हाथ में बांधने से जूए में विजय होती है।

अन्यत्। धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम्। हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिने कृतम्। अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी। विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शङ्करोदितम्।

अन्य प्रयोग : धतूरा, कनेर तथा अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ के के साथ हरिताल को बकरी के दूध में पीसकर उत्तम दिन तिलक करने से राजकुल में, शत्रु के विरोध में तथा जूए में तत्काल विजयी होती है। यह शङ्कर का वचन है, अन्यथा नहीं हो सकता।

अन्यत्। हस्तनक्षत्र होय रवि, तादिन ऐसा करै उपाय। न्योतै पेडपवाण्डको, दिन पहेलेही जाय। रविदिन ताकूं ल्यायके, बांध दाहिनी बांह। खेलै जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को रेड के पत्ते पर कौवे के पङ्ख से स्याही द्वारा रात के समय शुद्ध होकर लिखे। इस ६४ कोष्ठ के यन्त्र में :

मेखैरकन्दयेरूपाकजिजतंदनीचतः छदावींयमंत्रंतेषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम्।

इस ३२ अक्षर के मन्त्र को अनुलोम और विलोम रीति से लिखकर भुजा में धारण करे। फिर जूआ खेलने पर साधक सदैव जीतेगा।

द्यूतेविजयकरणयन्त्रम्

मे	खै	र	कं	द	ये	रू	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	तः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्ठि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्ठि	हे
य	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
तः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रू	ये	द	कं	र	खै	मे

अन्य प्रयोग : निम्न १६ कोष्ठ के यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप देकर भुजा में बाँधकर जूआ खेलने पर साधक सदा जीतेगा और कभी हारेगा नहीं।

द्यूतेविजयकरणयन्त्रम्

१	२५।	२३।	२३।
३२॥	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	६॥	२४॥	१६॥
२६।	६॥।	५॥।	४॥।

अथ विक्रीयवर्धनम्। भवंरवीर तूं चेला मेरा खोल दुकान कहा कर

मेरा उठै जो डण्डी बिकै जो माल भंवरवीर सोखें नहि जाय। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार के दिन काली उड़द लेकर उस पर २१ बार मन्त्र पढ़कर दूकान में डाल दे। तीन रविवारों तक ऐसा करने से बिक्री चौगुनी हो जायगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

याअववार्विरिजकुल्प तूहदूकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगद्दीवह-क्वयाफत्ताहोयावासितो। इति मन्त्रः।

विक्रीयवर्द्धकयन्त्रम्

८२४	८२७	८३०	८१६
८२९	८१७	८२३	८२८
८१८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२१	८१९	८३१

शुक्लपक्ष के पहले बृहस्पतिवार को उक्त यन्त्र सात बार लिखकर पञ्चोपचार से पूजा करे, लोहबान का धूँआ दे और मन्त्र को १०८ बार पढ़े। तदुपरान्त प्रतिदिन एक यन्त्र की बत्ती बनाकर मीठे तेल के साथ दूकान पर जलावे तो सात ही दिन में बन्द हुई बिक्री फिर से होने लगेगी—इसमें सन्देह नहीं है।

अथ गोमहिषीणां दुग्धवर्धनोपायः।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं टं ठः। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अति क्षीरदास्ता भवन्ति।

इसका विधान : इस मन्त्र से तृण आदि को १०८ बार अभिमन्त्रित करके गाय और भैंस आदि को खिलाना चाहिये। इससे ये पशु अधिक दूध देंगे।

दुग्धवर्धकयन्त्र : निम्नलिखित यन्त्र को केसर अथवा गोरोचन अथवा

कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर गाय के गले में और भेंस की सींग में गूगल की धूप देकर बांधने से ये पशु अधिक दूध देने लगेंगे।

दुग्धवर्धकयन्त्रम्

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३१

फलवृद्धियन्त्र : इस यन्त्र को जमीरी नीबू के रस से भोजपत्र पर या कागज पर लिखकर अनार के पेड़ में बांधे तो उसमें अनार फलेंगे। अथवा अन्य किसी फल के वृक्ष में बांधे तो उसमें भी बहुत फल लगने लगेंगे।

फलवृद्धियन्त्र

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	९	८६	९२

लड़की ससुराल में रहे और रूठ कर न आवे : इसका मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भोगराज भयङ्कर परिभूय उत उंधरई जोइ जोइ देखै मारकर तासो सोदीखै पाव परन्ता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा। इति मन्त्रः

इसका विधान : सांभर नमक की १०८ कङ्कड़ी मन्त्री को खिलाने से लड़की ससुराल में रहेगी और रूठकर आयेगी नहीं।

अथ कलहनाशनम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : तालकं तक्रपिष्टेन मृत्तिकायुक्तपुत्तलीम्। निखनेद्यद्-गृहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात्।

दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है कि मट्ठे में हरिताल को पीसकर मिट्टी की पुतली पर लेप करके जिसके घर में गाड़ दे वहाँ कलह का नाश होता है।

अथ अनावृष्टिकाले वृष्टिकरणम् ।

वीरभद्रोड्डीशतन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ काली काली स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेनाश्वत्थसमिधं घृताक्तां जुहुयात् । सहस्राहुति-होमेन अनावृष्टिकाले महावृष्टिर्भवति ।

इसका विधान : घी से लिप्त पीपल की समिधा से इस मन्त्र द्वारा एक सहस्र आहुतियाँ देने से अनावृष्टि काल में महावृष्टि होती है ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे षट्कर्मतन्त्रे
शान्त्याख्यः सप्तमस्तरङ्गः ॥ ७ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के मिश्र खण्ड के षट्कर्म तन्त्र में
शान्त्याख्य सप्तम तरङ्ग समाप्त ॥ ७ ॥

अष्टम तरंग

वशीकरणादि तन्त्र

तत्रादौ स्वयंवरकलामन्त्रप्रयोगो मन्त्रमहोदधौ : अथोच्यते विवाहाप्त्यै स्वयंवरकला शिवा। मन्त्रो यथा :

सर्वप्रथम मन्त्रमहोदधि के अनुसार स्वयंवर कला मन्त्र बताते हैं। विवाह के लिये कल्याणकारी स्वयंवरकला कहते हैं। इसका ५० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगेश्वरि योगभयङ्करि सकलस्थावरजङ्गमस्य मुखं हृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा। इति पञ्चाशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य स्वयंवरकलामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः जगतीच्छन्दः देवी गिरिपुत्री स्वयंवरा देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। जगतीच्छन्दसे नमः मुखे २। देवीगिरिपुत्रीस्वयंवरादेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय हुं ४। ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार विन्यास करके मूलमन्त्र से पाँव से लेकर मूर्द्धा पर्यन्त व्यापक न्यास करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐ शम्भुं जगन्मोहनरूपपूर्णं विलोक्य लज्जाकुलितां स्मिताढ्यम्।
मधूकमालां स्वसखीकराभ्यां सम्बिभ्रतीमद्रिसुतां भजेयम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्र मण्डल में आधार शक्ति से लेकर परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके :

ॐ आं आधार शक्त्यादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः।

इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे। पूर्वादिक्रम से अष्ट दिशाओं में :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ बिलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद त्रिकोण, चतुरस्र, षट्कोण, अष्टदल, द्विदिग्दल, षोडश, द्वात्रिंशत तथा चतुःषष्टिदल और उसके बाहर तीन वृत्त, त्रिरेखात्मक भूपुर तथा स्वर्णादि पत्र पर यन्त्र बनाकर (देखिये चित्र १०) ताम्रपात्र में उसे रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर :

ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये स्वयंवरे एह्येहि नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

त्रिकोणे ॐ पार्वत्यै नमः[१]। पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र।

इससे पूजा करने के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से जलविन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से चतुष्कोण में :

ॐ मेधायै नमः[2] । मेधाश्रीपा० १ । ॐ विद्यायै नमः[3] । विद्याश्रीपा० २ । ॐ लक्ष्म्यै नमः[4] । लक्ष्मीश्रीपा० ३ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः[5] । महालक्ष्मीश्रीपा० ४ ।

इससे पूजन करके पुष्पाञ्जलि दे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में :

ॐ ह्रीं जगत्त्रयवश्यमोहिन्यै हृदयाय[6] नमः । हृदयश्रीपा० १ । ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यमोहिन्यै शिरसे स्वाहा[7] । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं उरगवश्यमोहिन्यै शिखायै[8] वषट् । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं सर्वराजवश्यमोहिन्यै कवचाय[9] हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं शवस्त्रीपुरुषवश्यमोहिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट्[10] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं सर्ववश्यमोहिन्यै अस्त्राय फट्[11] । अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति तृतीयावरणं ॥ ३ ॥

इसके बाद अष्टदलों में प्राचीक्रम से :

ॐ अं आं नमः[12] १ । ॐ इं ईं नमः[13] २ । ॐ उं ऊं नमः[14] ३ । ॐ ऋं ॠं नमः[15] ४ । ॐ लृं लॄं नमः[16] ५ । ॐ एं ऐं नमः[17] ६ । ॐ ओं औं नमः[18] ७ । ॐ अं अः नमः[19] ८ ।

इससे स्वरों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति चतुर्थावरण ॥ ४ ॥

इसके बाद प्रथम दिग्दलों में इन्द्रादि दश दिक्पालों[20-29] और द्वितीय दिग्दलों में वज्रादि आयुधों[30-39] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति पञ्चमावरण ॥ ५ ॥

इसके बाद षोडशदलों में 'ॐ श्रीं रमायै नमः[40-55] रमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।' इस मन्त्र से षोडशदलों रमा की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति षष्ठावरण ॥ ६ ॥

इसके बाद द्वात्रिंशदलों में 'ॐ ह्रीं क्रौं शिवायै[56-87] नमः । शिवाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।' इससे द्वात्रिंशद्दलों में शिवा की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति सप्तमावरण ॥ ७ ॥

इसके बाद ६४ दलों में 'श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिपुरायै[88-151] नमः । त्रिपुराश्रीपादुकां पूजयामि ।' इस मन्त्र से ६४ दलों में त्रिपुरा की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इत्यष्टमावरण ॥ ८ ॥

इसके बाद तीनों वृत्तों में से प्रथम वृत्त में 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१५२] । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ १ ॥' द्वितीय वृत्त में 'ॐ भवान्यै नमः[१५३] । भवानी श्रीपादुकां ॥ २ ॥' तृतीय वृत्त में 'ॐ पुष्पसायकायै नमः[१५४] । पुष्पसायका-श्रीपा०[१५५] ॥ ३ ॥'

इससे पूजा करे। इसके बाद भूपुर में चारों द्वारों पर पूर्वादिक्रम से :

ॐ विघ्नेशाय नमः[१७६] । विघ्नेशश्रीपा० १ । ॐ क्षेत्रपालाय नमः[१७७] । क्षेत्रपालश्रीपा० २ । ॐ भैरवाय नमः[१७८] । भैरवश्रीपा० ३ । ॐ योगिन्यै[१७९] नमः । योगिनीश्रीपा० ४ ।

इससे द्वारपालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इति नवमावरण ॥ ९ ॥

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। पायसान्नेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः। पायसान्नेन जुहुयात्पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥ १ ॥ एवं यो भजते देवीं वश्यास्तस्याखिला जनाः। लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयादयुतं तु यः ॥ २ ॥ लभते वांछितां कन्यां धनमान-समन्विताम् ॥ ३ ॥ इति पञ्चाशदक्षरस्वयंवरामन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। खीर से जप का दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है और इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि इस प्रकार ध्यान करके मन्त्र का चार लाख जप करे और उसका दशांश खीर से पूर्वोक्त पीठ पर होम करके पूजन करे। इस प्रकार जो देवी का भजन करता है उसके वश में समस्त संसार हो जाता है। जो त्रिमधुर से युक्त लावा से १० हजार आहुतियों से होम करता है वह धन-धान्य से युक्त हो वाञ्छित कन्या प्राप्त करता है। इति पञ्चाशदक्षर स्वयंवरा मन्त्र प्रयोग ॥ १ ॥

अथ मधुमतीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधि में ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

आं ह्रीं क्रौं क्लीं हूं ॐ स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मधुमतीमन्त्रस्य मधुऋषिःत्रिष्टुप्छन्दः मधुमती

देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मधुऋषये नमः शिरसि १ । त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २ । मधुमतीदेवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्रौं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ हूं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ आं हृदयाय नमः १ । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्रौं शिखायै वषट् ३ । ॐ क्लीं कवचाय हुं ४ । ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐ अहिलतादलनीलसरोजयुक्करयुगां मणिकाञ्चनपीठगाम् । अमरनागवधूगणसेवितां मधुमतीमखिलार्थकरीं भजे ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में आधारशक्ति से लेकर परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करके 'ॐ आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठ देवताओं की पूजा करके इस प्रकार नवपीठशक्तियों की पूजा करे । पूर्वादिक्रम से आठों दिशाओं में :

ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९ ।

इससे नवपीठ शक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर :

ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये मधुमत्येह्येहि नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करे । फिर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । (मधुमती पुजनयन्त्र देखिये चित्र ११) । पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

इसे पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से जलबिन्दु छिड़ककर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे ।

इससे आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ आं हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ १॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। ॐ क्रौं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ क्लीं कवचाय[४] हुं। कवचश्रीपा०। ॐ हूं नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ ह्रौं अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से :

ॐ निद्रायै नमः[७]। निद्राश्रीपादुकां० १। ॐ छायायै नमः[८]। छायाश्रीपा० २। ॐ क्षमायै नमः[९]। क्षमाश्रीपा० ३। ॐ तृष्णायै नमः[१०]। तृष्णाश्रीपा० ४। ॐ कान्त्यै नमः[११]। कान्तिश्रीपा० ५। ॐ आर्यायै नमः[१२]। आर्याश्रीपा० ६। ॐ श्रुत्यै नमः[१३]। श्रुतिश्रीपा० ७। ॐ स्मृत्यै नमः[१४]। स्मृतिश्रीपा० ८।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण।२।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों[१५-२४] और वज्रादि आयुधों[२५-३४] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः बिल्वपत्रैर्दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : प्रजप्य वसुलक्षं तद्दशांशं जुहुयाद्दलैः। बिल्वोत्थैः पूजयेत्पीठे जयादिनवशक्तिके॥ १॥ य इत्थं सेवते देवीं स समृद्धेः पदं लभेत्। रक्ताम्भोजैर्हुतैर्मन्त्री भूपतिं वश्यतां नयेत्। नानाभोगान्पायसेन ताम्बूलैर्वामलोचनाम्॥ २॥ इत्यष्टाक्षरमधुमतीमन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण आठ लाख जप है। बिल्व पत्रों से दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र

सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि 'आठ लाख जप करके उसका दशांश बिल्व पत्रों से होम करे तथा पीठ पर जयादि नवशक्तियों की पूजा करे। जो इस प्रकार देवी की पूजा करता है वह समृद्धि पद प्राप्त करता है। साधक लाल कमलों की आहुति से राजा को वश में कर लेता है। खीर से होम करने से नाना प्रकार के भोगों को प्राप्त करता है। अष्टाक्षर मधुमती मन्त्रप्रयोग समाप्त।

एक अन्य एकाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं। इत्येकाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् सर्वं पूर्ववत्। तथा च : पूर्ववद्यजनं चास्य ध्यायेद्देवीं कुमारिकाम्। कोट्यर्द्धं तु जपं कुर्वन्विद्यापारङ्गमो भवेत्। मधुमत्या समा नान्या नानाभोगसुखप्रदा। इत्येकाक्षरमधुमतीमन्त्रप्रयोगः।

इसका विधान आदि सब पूर्ववत् है। कहा भी गया है कि 'पूर्ववत् इस कुमारी देवी का यजन करके ध्यान करना चाहिये। पचास लाख जप करनेवाला साधक विद्या में पारङ्गत होता है। मधुमती के समान नाना प्रकार के भोगों और सुखों को देनेवाली अन्य कोई नहीं है। इत्येकाक्षरी मधुमती मन्त्रप्रयोग समाप्त।

अथ वाणेशीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधि में ५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः। इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य बाणेशीमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः गायत्रीच्छन्दः बाणेशी देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : सम्मोहनऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे २। बाणेशीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : द्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। द्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४। सः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : द्रां हृदयाय नमः १। द्रीं शिरसे स्वाहा २। क्लीं शिखायै वषट् ३। ब्लूं कवचाय हुं ४। सः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

पञ्चदेवतान्यास : द्रां द्राविण्यै नमो मूर्ध्नि १। द्रीं क्षोभिण्यै नमः

पादयोः २ । क्लीं वशीकरिण्यै नमः मुखे ३ । ब्लूं कर्षिण्यै नमो गुह्ये ४ । सः मोहिन्यै नमो हृदि ५ । इति पञ्चदेवतान्यासः ।

इससे न्यास करके ध्यान करे :

उद्यद्भास्वत्सन्निभा रक्तवस्त्रा नानारत्नालंकृताङ्गी वहन्ती । हस्तैः पाशं चांकुशं चापबाणौ बाणेशी नः कामपूर्ति विधत्ताम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करके :

ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ।

इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करे । पूर्वादिक्रम से आठों दिशाओं में :

ॐ मोहिन्यै नमः १ । ॐ क्षोभिण्यै नमः २ । ॐ त्रास्यै नमः ३ । ॐ स्तम्भिन्यै नमः ४ । ॐ कर्षिण्यै नमः ५ । ॐ द्राविण्यै नमः ६ । ॐ ह्लादिन्यै नमः ७ । ॐ क्लिन्नायै नमः ८ । मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः ९ ।

इससे नव पीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर :

द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः बाणेशीयोगपीठाय नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके और प्राण-प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान करे । इस प्रकार पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा और देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (बाणेशी पूजनयन्त्र चित्र १२) । पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि बाणेशि परिवारार्चनाय मे ।

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे ।

देवी के अङ्ग में आग्नेयी आदि चार दिशाओं में और मध्य दिशा में :

द्रां हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ इति सर्वत्र । द्रीं शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपा० २ । क्लीं शिखायै वषट् । शिखा-श्रीपा० ३ । ब्लूं कवचाय हुं । कवचश्रीपा० ४ । सः नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र-त्रयश्रीपा० ५ । द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करे और दिशाग्र में : ॐ द्राविणीमुख्यै नमः ।

द्राविणीमुखीश्रीपा० ॥ ७ ॥

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर और मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलविन्दु छिड़ककर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से :

ॐ अनङ्गरूपायै नमः[१] । अनङ्गरूपाश्रीपा० १ । अनङ्गमदनायै नमः[२] । अनङ्गमदनाश्रीपा० २ । ॐ अनङ्गमन्मथायै नमः[३] । अनङ्गमन्मथाश्रीपा० ३ । ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः[४] । अनङ्गकुसुमाश्रीपा० ४ । ॐ अनङ्गमदनपरायै नमः[५] । अनङ्गमदनपराश्रीपा० ५ । ॐ अनङ्गशिशिरायै नमः[६] । अनङ्गशिशिराश्रीपा० ६ । ॐ अनङ्गमेखलायै नमः[७] । अनङ्गमेखलाश्रीपा० ७ । ॐ अनङ्गदीपिकायै नमः[८] । अनङ्गदीपिकाश्रीपा० ८ ।

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण ।२।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों[९-१८] और वज्रादि आयुधों[१९-२८] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणपञ्चलक्षजपः । दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च : एवं ध्यात्वा जपेल्लक्ष पञ्चकं तद्दशांशतः । हुत्वा बाणेश्वरीं देवीं पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥ एवं सिद्धं मनुं मन्त्री काम्येषु विनियोजयेत् । दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् । सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥२॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मन्त्री कन्यामवाप्नुयात् । कन्यापि वरमाप्नोति मासद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन ससम्पातं[१] हुत्वा साष्टशतं नरः । आज्यं सम्पातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रियै ॥ ४ ॥ सा तदाज्यं निजं कान्तं भोजयित्वा वशं नयेत् । सुगन्धकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति बाणेशीपञ्चाक्षरीमन्त्रप्रयोगः ॥ ३ ॥

---

१. ससम्पातम् : आहुतिशेषस्य पात्रान्तरे प्रक्षेपः सम्पातः । तद्युतं हुत्वा सम्पाताज्यं स्त्रियै दद्यात् । किंभूतायै : विश्राणितश्रियै दत्तदक्षिणायै : दक्षिणामादावादाय पश्चादाज्यं दद्यादित्यर्थः । अन्यथा फलाभावः ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण पाँच लाख जप है। जप का दशांश होम होता है। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण-भोजन करे। इस प्रकार करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि इस प्रकार ध्यान करके पाँच लाख जप करे। फिर उसके दशांश से होम करके वाणेश्वरी देवी की विधिवत पूजा करे। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सिद्ध मन्त्र को काम्य कर्मों में विनियोजित करे। दही से युक्त अशोक के पुष्पों से तीन दिन तक एक हजार आहुतियाँ देने से सारे संसार के लोग वश में हो जाते हैं। दही से युक्त लावा से होम करने से साधक कन्या को प्राप्त करता है। ऐसा करने से कन्या भी दो मास में ही वर प्राप्त करती है। गाय के घी से ससम्पात एक सौ आठ आहुति से होम करके साधक को चाहिये कि वह सम्पातित घी ऐसी स्त्री को दे दे जिसने दक्षिणा दे दी है। वह स्त्री उस घी को अपने पति को खिलाकर उसे वश में कर सकती है। सुगन्धित पुष्पों से होम करके मनुष्य वाञ्छित धन प्राप्त करता है। वाणेशी पञ्चाक्षरी मन्त्रप्रयोग समाप्त ॥ ३ ॥

अथ कामेशीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में ५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य कामेशीमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः गायत्रीच्छन्दः कामेशी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सम्मोहनऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे २। कामेशीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ब्लूं अनामिकाभ्यां नमः ४। स्त्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ह्रीं हृदयाय नमः १। क्लीं शिरसे स्वाहा २। ऐं शिखायै वषट् ३। ब्लूं कवचाय हुं ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

पाशाङ्कुशाविक्षुशरासबाणौ करैर्वहन्तीमरुणांशुकाढ्याम् । उद्यत्पतङ्गाभिरुचिं मनोज्ञां कामेश्वरीं रत्नचितां प्रणौमि ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे। पूर्वादि आठों दिशाओं में और मध्य में :

ॐ मोहिन्यै नमः १। ॐ क्षोभिण्यै नमः २। ॐ त्रास्यै नमः ३। ॐ स्तम्भिन्यै नमः ४। ॐ कर्षिण्यै नमः ५। ॐ द्राविण्यै नमः ६। ॐ ह्लादिन्यै नमः ७। ॐ क्लिन्नायै नमः ८। मध्ये ॐ क्लेदिन्यै नमः९।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर :

ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं कामेशीयोगपीठाय नमः ।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर ध्यान करके और मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (कामेशी पूजन यन्त्र चित्र १३)

पुष्पाञ्जलि लेकर :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि कामेशि परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि दे। इस प्रकार आज्ञा लेकर देवी के अङ्ग में आग्नेयी आदि चार दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में :

ह्रीं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ क्लीं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। ऐं शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ब्लूं कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४। स्त्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से बिन्दु गिराकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से चारों दिशाओं में :

ॐ मकरध्वजाय नमः[१] । मकरध्वजश्रीपा० १ । ॐ कन्दर्पाय नमः[२] । कन्दर्पश्रीपा० २ । ॐ मन्मथाय नमः[३] । मन्मथश्रीपा० ३ । ॐ कामदेवाय नमः[४] । कामदेवश्रीपा० ४ ।

इससे मनोभवों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति द्वितीयावरण । २ ।

इसके बाद अष्टदलों में प्राचीक्रम से :

ॐ अनंगरूपायै नमः[५] । अनंगरूपाश्रीपा० १ । ॐ अनंगमदनायै नमः[६] । अनंगमदनाश्रीपा० २ । ॐ अनंगमन्मथायै नमः[७] । अनंगमन्मथाश्रीपा० ३ । ॐ अनंगकुसुमायै नमः[८] । अनंगकुसुमाश्रीपा० ४ । ॐ अनंगमदनपरायै नमः[९] । अनंगमदनपराश्रीपा० ५ । अनंगशिशिरायै नमः[१०] । अनंगशिशिराश्रीपा० ६ । ॐ अनंगमेखलायै नमः[११] । अनंगमेखलाश्रीपा० ७ । ॐ अनंगदीपिकायै नमः[१२] । अनंगदीपिकाश्रीपा० ८ ।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों[१३-२२] और वज्रादि आयुधों-[२३-३२] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं पञ्चलक्षजपः । पालाशकुसुमैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च : भूतलक्षं जपित्वैनामर्द्धलक्षं पलाशजैः । कुसुमैर्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम् । एवं सिद्धमनुर्मन्त्री पूर्वोक्तं योगमाचरेत् ॥ १ ॥ दधियुक्तैरशोकस्य पुष्पैर्यो दिवसत्रयम् । सहस्रं जुहुयात्तस्य वश्याः स्युः प्राणिनोऽखिलाः ॥ २ ॥ लाजैर्दधियुतैर्होमान्मन्त्री कन्यामवाप्नुयात् । कन्यापि वरमाप्नोति मासद्वितयमध्यतः ॥ ३ ॥ गव्याज्येन ससम्पातं हुत्वा साष्टशतं नरः । आज्यं सम्पातितं दद्यात् स्त्रियै विश्राणितश्रियै ॥ ४ ॥ सा तदाज्यं निजं कान्तं भोजयित्वा वशं नयेत् । सुगन्धकुसुमैर्हुत्वा धनमाप्नोति वांछितम् ॥ ५ ॥ इति कामेशीपञ्चाक्षरमन्त्रप्रयोगः ॥ ४ ॥

इसका पुरश्चरण ५ लाख जप है । पलाश के फूलों से जप का दशांश होम और तत्तदशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है और इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध

करे। कहा भी गया है कि मन्त्र का ५ लाख जप करके पलाश के फूलों से दशांश आहुतियाँ देना तथा पूर्वोक्त पीठ पर पूजन करना चाहिये। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक पूर्वोक्त काम्य प्रयोग करे। दही के साथ अशोक के फूलों से जो तीन दिन तक प्रतिदिन १-१ हजार आहुतियाँ देता है उसके वश में सभी प्राणी हो जाते हैं। दही के साथ लावा के होम से साधक कन्या तथा कन्या भी दो मास के भीतर सुन्दर वर प्राप्त करती है। गाय के घी के साथ सम्पात सहित १०८ आहुतियाँ देकर सम्पातित घी को ऐसी स्त्री को दे दे जो दक्षिणा दे चुकी है। उस घी को अपने पति को खिलाकर वह उसे अपने वश में कर लेती है। सुगन्धित फूलों से होम करने से मनुष्य मनोवाञ्छित धन प्राप्त करता है। कामेशी का पञ्चाक्षर मन्त्र-प्रयोग समाप्त ॥ ४ ॥

अथ नित्यामन्त्रप्रयोगः।

शारदा तिलक में १२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य सम्मोहनऋषिर्निवृत्तिच्छन्दः नित्या देवता स्त्र्याकर्षणे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सम्मोहनऋषये नमः शिरसि १। निवृत्तिच्छन्दसे नमः मुखे २। नित्यादेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं हृदयाय नमः १। ऐं शिरसे स्वाहा २। ऐं शिखायै वषट् ३। ऐं कवचाय हुं ४। ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ऐं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि सम्पन्न करके ध्यान करे :

ॐ अर्द्धेन्दुमौलिमरुणाममराभिवन्द्यामम्भोजपाशसृणिपूर्णकपालहस्ताम्। रक्ताङ्गरागवसनाभरणां त्रिनेत्रां ध्यायेच्छिवस्य वनितां मदविह्वलाङ्गीम् ॥ १ ॥

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो

नमः' इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे : पूर्वादिक्रम से :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक 'ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे और पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। (नित्या पूजन यन्त्र चित्र १४)। षट्कोण केसरों में :

अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय[1] नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा[2] शिरःश्रीपा० २। वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै वषट्[3] शिखाश्रीपा० ३। ईशानकोणे ॐ ऐं कवचाय[4] हुं कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देवीपश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट्[6] अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त ;

ॐ नित्यायै नमः[7]। नित्याश्रीपा० १। ॐ निरञ्जनायै नमः[8]। निरञ्जनाश्रीपा० २। ॐ क्लिन्नायै नमः[9]। क्लिन्नाश्रीपा० ३। ॐ क्लेदिन्यै नमः[10]। क्लेदिनीश्रीपा० ४। ॐ मदनातुरायै नमः[11]। मदनातुराश्रीपा० ५। ॐ मदद्रवायै नमः[12]। मदद्रवाश्रीपा० ६। ॐ द्राविण्यै नमः[13]। द्राविणी-श्रीपा० ७। ॐ आकर्षिण्यै नमः[14]। आकर्षिणीश्रीपा० ८।

इससे आठों देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीया-वरण ॥ २ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[१५] १। ॐ रं अग्नये नमः[१६] २। ॐ मं यमाय नमः[१७] ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[१८] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[१९] ५। ॐ यं वायवे नमः[२०] ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[२१] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[२२] ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[२३] ९। वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[२४] १०।

इससे दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इति तृतीयावरण ॥३॥ फिर भूपुर के बाहर :

ॐ वं वज्राय नमः[२५] १। ॐ शं शक्तये नमः[२६] २। ॐ दं दण्डाय नमः[२७] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[२८] ४। ॐ पां पाशाय नमः[२९] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[३०] ६। ॐ गं गदायै नमः[३१] ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[३२] ८। ॐ पं पद्माय नमः[३३] ९। ॐ चं चक्राय नमः[३४] १०।

इससे अस्त्रों की पूजा करे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। मधुराक्तैर्मधूक कुसुमैरयुतहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : चतुर्लक्षं जपित्वान्ते मधुराक्तैर्मधूकजैः। कुसुमैरयुतं हुत्वा तोषयेद्गुरुमात्मनः ॥१॥ सिद्धमन्त्रं जपेन्मन्त्री सहस्रं शयनस्थितः। यां चिन्तयेत्स्त्रियं रात्रौ सा समायाति तत्क्षणात् ॥ २ ॥ इति द्वादशाक्षरनित्यामन्त्रप्रयोगः।

इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। घी, मधु और शर्करा (त्रिमधुर) से युक्त महुआ के फूलों से होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है और इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि चार लाख जप के बाद त्रिमधुर से सिक्त महुवे के फूल से होम करके अपने गुरु को सन्तुष्ट करे। सिद्ध मन्त्र को साधक शय्या पर शयन किये हुये एक हजार बार जपे। रात्रि में साधक जिस स्त्री की चिन्ता करता है वह स्त्री तत्क्षण उपस्थित होती है। द्वादशाक्षर नित्या मन्त्र समाप्त प्रयोग।

अथ वज्रप्रस्तारिणीमन्त्रप्रयोगः।

बारह अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं ह्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य अङ्गिरा ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वज्रप्रस्तारिणी देवता सर्वजनवशीकरणे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अङ्गिरषंये नमः शिरसि १। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। वज्रप्रस्तारिणी देवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ऐं हृदयाय नमः १। ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ॐ ऐं कवचाय हुं ४। ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम् : ॐ रक्ताब्धौ रक्तपोते रविदलकमलाभ्यन्तरे सन्निषण्णां रक्ताङ्गीं रक्तमौलिस्फुरितशशिकलां स्मेरवक्त्रां त्रिनेत्राम्। बीजापुरेषुपाशांकुशदमनधनुःसत्कपालानि हस्तैर्बिभ्राणामानताङ्गीं स्तनयुगलभरादम्बिकामाश्रयामः॥ १॥

इससे ध्यान करे। इसके बाद सर्वतोभद्रमण्डल में 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे। पूर्वादिक्रम से :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक 'ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे और पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे (वज्र प्रस्तारिणी पूजन यन्त्र चित्र ३५)। उसमें क्रम यह है : षट्कोण केसरों में :

अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः १। निर्ऋतिकोणे ॐ ऐं शिरसे स्वाहा[2] २। वायुकोणे ॐ ऐं शिखायै वषट्[3] ३। ईशान्ये ॐ ऐं कवचाय[4] हुं ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] ५। देव्याः पश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट्[6] ६।

इससे षडंगों की पूजा करे। इति प्रथमावरण॥ १॥

इसके बाद द्वादशदलों में प्राच्यादि क्रम से :

ॐ हृल्लेखायै नमः[७] । हृल्लेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ । एवं सर्वत्र । ॐ क्लेदिन्यै नमः[८] । क्लेदिनीश्रीपा० २ । ॐ क्लिन्नायै नमः[९] । क्लिन्नाश्रीपा० ३ । ॐ क्षोभिण्यै नमः[१०] । क्षोभिणीश्रीपा० ४ । ॐ मदनातुरायै नमः[११] । मदनातुराश्रीपा० ५ । ॐ निरञ्जनायै नमः[१२] । निरञ्जनाश्रीपा० ६ । ॐ रागवत्यै नमः[१३] । रागवतीश्रीपा० ७ । ॐ मदनावत्यै नमः[१४] । मदनावतीश्रीपा० ८ । ॐ मेखलायै नमः[१५] । मेखलाश्रीपा० ९ । ॐ द्राविण्यै नमः[१६] । द्राविणीश्रीपा० १० । ॐ वेगवत्यै नमः[१७] । वेगवतीश्रीपा० ११ । ॐ स्मरायै नमः[१८] । स्मराश्रीपा० १२ ।

इससे शक्तियों की पूजा करे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

इसके बाद भूपुर के भीतर दिशाओं और विदिशाओं में :

पूर्वे ॐ ब्राह्म्यै नमः[१९] । ब्राह्मीश्रीपा० १ । दक्षिणे ॐ माहेश्वर्यै नमः[२०] । माहेश्वरीश्रीपा० २ । पश्चिमे ॐ कौमार्यै नमः[२१] । कौमारीश्रीपा० ३ । उत्तरे ॐ वैष्णव्यै नमः[२२] । वैष्णवीश्रीपा० ४ । अग्निकोणे ॐ वाराह्यै नमः[२३] । वाराहीश्रीपा० ५ । निर्ऋतिकोणे ॐ इन्द्राण्यै नमः[२४] । इन्द्राणीश्रीपा० ६ । वायुकोणे ॐ चामुण्डायै नमः[२५] । चामुण्डाश्रीपा० ७ । ईशानकोणे ॐ महालक्ष्म्यै नमः[२६] । महालक्ष्मीश्रीपा० ८ ।

इससे आठों मातृकाओं की पूजा करे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[२७] । इन्द्रश्रीपा० १ । ॐ रं अग्नये नमः[२८] । अग्निश्रीपा० २ । ॐ मं यमाय नमः[२९] । यमश्रीपा० ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[३०] । निर्ऋतिश्रीपा० ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[३१] । वरुणश्रीपा० ५ । ॐ यं वायवे नमः[३२] । वायुश्रीपा० ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[३३] । कुबेरश्रीपा० ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[३४] । ईशानश्रीपा० ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३५] । ब्रह्मश्रीपा० ९ । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३६] । अनन्तश्रीपा० १० ।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करे । फिर भूपुर के बाहर :

ॐ वं वज्राय नमः[३७] १ । ॐ शं शक्तये नमः[३८] २ । ॐ दं दण्डाय नम[३९] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[४०] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[४१] ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[४२] ६ । ॐ गं गदायै नमः[४३] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[४४] ८ । ॐ पं पद्माय नमः[४५] ९ । ॐ चं चक्राय नमः[४६] १० ।

इससे अस्त्रों की पूजा करे इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : मन्त्री मन्त्रं जपेल्लक्षं जपान्ते जुहुयात्ततः। अयुतं राजवृक्षोत्थैर्घृतसिक्तैः समिद्वरैः॥ १॥ भजेन्मन्त्री मनुं नित्यमर्चनादिभिरादरात्। दारिद्र्यरोगनिर्मुक्तः स जीवेच्छरदां शतम्॥ २॥ अस्मिन्मन्त्रे रतो मन्त्री वशयेदखिलं जगत्। नित्यं मन्त्रैर्बुधः कुर्यान्मुखलालनमन्वहम्॥ ३॥ अञ्जनं तिलकं पुष्पं धारयेन्मन्त्रितं सुधीः। ताम्बूलं मन्त्रितं भक्षेन्मन्त्री स स्याज्जगत्प्रियः॥ ४॥ इति वज्रप्रस्तरिणीद्वादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः॥ ५॥

इसका पुरश्चरण १ लाख जप है। फिर तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि साधक को मन्त्र का १ लाख जप करने के बाद घी से सिक्त राजवृक्ष की समिधाओं से १० हजार होम करना चाहिये। साधक नित्य आदरपूर्वक अर्चन आदि से मन्त्र का जप करे तो वह दारिद्र्य तथा रोग से मुक्त होकर सौ वर्षों तक जीवित रहता है। इस मन्त्र में रत साधक सारे संसार को वश में कर लेता है। बुद्धिमान साधक नित्य मन्त्रों से मुख का लालन करे और अभिमन्त्रित अञ्जन तिलक तथा पुष्प धारण करे। अभिमन्त्रित ताम्बूल खाने से साधक संसार का प्रिय हो जाता है। वज्रप्रस्तारिणी का द्वादशाक्षर मन्त्र प्रयोग समाप्त॥ ५॥

अथ त्रैलोक्यमोहनगौरीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में कहा गया है : तीनों लोकों के मोहन के लिये गौरी मन्त्र कहा जा रहा है। ६१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जय विजये गौरि गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा। इत्येकषष्ट्यर्णो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य अज ऋषिः निवृत्गायत्री छन्दः गौरी त्रैलोक्यमोहिनी देवता ह्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाखिलाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अजर्षये नमः शिरसि १। निवृत्गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। गौरीत्रैलोक्यमोहिनीदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः

लिङ्गे ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं जय विजये गौरि गान्धारि तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं त्रिभुवनवशङ्करि मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं सर्वलोकवशङ्करि अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं सुसुदुदुघेघेवावा ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास भी करके मूलमन्त्र से व्यापक न्यास करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐ गीर्वाणसङ्घार्चितपादपङ्कजारुणप्रभा बालशशांकशेखरा। रक्ताम्बरालेपनपुष्पयुङ्मुदे सृणिं सपाशं दधती शिवास्तु वः॥ १॥

एक दूसरे तन्त्र में ध्यान इस प्रकार भी किया जा सकता है :

अविकल शशिराजन्मौलिराबद्ध पाशांकुश रुचिर कराब्जा बन्धुजीवारुणाङ्गी। अमरनिकरवन्द्या त्रीक्षणा शोणलेपांशुक कुसुमयुता स्यात्सम्पदे पार्वती वः।

इससे ध्यान करने के बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल मे मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवतओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः।' इससे पीठ देवताओं की पूजा करके पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे : पूर्वादि आठों दिशाओं में :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इससे पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर :

ॐ ह्रीं गौरीत्रैलोक्यमोहिनीपद्मासनाय नमः।

इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके और प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवार्चनाय मे।

यह पढकर पुष्पाञ्जलि दे। इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे (त्रैलोक्यमोहन गौरी पूजन यन्त्र चित्र १६) : षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ह्रीं जय विजये गौरि गान्धारि शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। ह्रीं त्रिभुवनवशङ्करि शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ह्रीं सर्वलोकवशङ्करि कवचाय[४] हुं। कवश्रीपा० ४। ह्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रीं सुसुदुदु-घेघेवावा ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडंगों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[७]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[८]। माहेश्वरी-श्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[९]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[१०]। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[११]। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[१२]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[१३]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१४]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे आठों देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इति द्वितीया-वरण ॥ २ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों[१५-२४] तथा वज्रादि आयुधों[२५-३४] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजन करके जप करे।

अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। घृतमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं घृतसंयुतैः। पायसैर्जुहुयात्पीठे प्रागुक्ते गिरिजां यजेत्। इत्थमाराधिता देवी प्रयच्छेत्सुखसम्पदः ॥ १ ॥ तण्डुलैस्तिल-

संमिश्रैर्लवणैर्मधुरान्वितैः। फलै रम्यै रक्तपद्मैर्जुहुयाद्यो दिनत्रयम् ॥ २ ॥ तस्य विप्रादयो वर्णा वश्याः स्युर्मास मध्यतः। रविमण्डलमध्यस्थां देवीं ध्यायन् जपेन्मनुम्। अष्टोत्तरशतं तावद्धुत्वाग्नौ वशयेज्जगत् ॥ ३ ॥

इसका पुरश्चरण १० हजार जप है। घी-मिश्रित खीर से दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण-भोजन करे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि साधक १० हजार मन्त्र का जप करे और घी से युक्त खीर से एक हजार आहुतियाँ दे तथा पूर्वोक्त पीठ पर गिरिजा की पूजा करे। इस प्रकार पूजित देवी सुख तथा सम्पत्ति देती है। जो साधक तिलयुक्त तण्डुल, त्रिमधुरयुक्त लवण, रम्य फलों तथा रक्तकमलों से तीन दिन तक होम करता है, उसके विप्रादिवर्ण के लोग एक मास में ही वश में हो जाते हैं। सूर्यमण्डल में स्थित देवी का ध्यान करते हुये जो साधक मन्त्र का १०८ बार जप तथा उतनी ही बार आहुतियों से होम करता है वह समस्त संसार को वश में कर लेता है।

तन्त्रान्तरे : फलं तु पुष्पाञ्जनमभ्युक्ष्य चन्दनादिकं मूलमन्त्राभिमन्त्रितं यस्मै यस्मै दीयते सस वश्यो भवति ॥ ४ ॥

तन्त्रान्तर में यह फल कहा गया है कि साधक पुष्प, अञ्जन तथा चन्दनादि को अभ्युक्षित तथा मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसे-जिसे देता है वह-वह साधक के वश में हो जाता है।

अन्यत् : रात्रौ हरिद्रया वामोरुमध्ये स्निग्धस्त्री नामाभिलिख्य वामकरे विधाय शतं सहस्रं वा जपन्निष्टां प्रियामाकर्षयति ॥ ५ ॥ इत्येकषष्ट्यर्णत्रैलोक्यमोहनगौरीमन्त्रप्रयोगः।

अन्यत्र यह कहा गया है कि रात को हल्दी से बाँई जाँघ के मध्य में या बायें हाथ में अभीष्ट स्त्री का नाम लिखकर एक सौ या एक हजार बार मन्त्र का जप करके उस स्त्री को बुला लेता है। ६१ अक्षरों का त्रैलोक्य मोहन गौरी मन्त्र प्रयोग समाप्त।

मन्त्र महोदधि में ४८ अक्षरों का एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ह्स्रैंह्र्यूं राजमुखि राजाधिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीं देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं मम वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टचत्वारिंशदर्णो मन्त्रः।

इसका विधान : ऋष्यादिन्यास सब पूर्ववत् है।

करन्यास : ह्स्रैंह्र्यूं राजमुखि राजाधिमुखि अंगुष्ठाभ्यां नमः १। वश्य-

मुखि ह्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। देवि देवि मध्यमाभ्यां नमः ३। महादेवि अनामिकाभ्यां नमः ४। देवाधिदेवि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सर्वजनस्य मुखं मम वश्यं कुरुकुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा पूर्वोक्तं ध्यात्वा पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कुर्यात्। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति। कुर्यात्सर्वजनस्थाने मनोः साध्याभिधानकम् ॥ १ ॥ जपे होमे तर्पणे च वशीकरणकर्मणि ॥ २ ॥ ससम्पातं घृतं हुत्वा सहस्रं सप्तवासरम्। सम्पाताज्यं तु साध्यस्य प्राशितं वश्यकारकम् ॥ ३ ॥ साध्यनक्षत्रवृक्षेण कुर्यात्साध्याकृतिं शुभाम्। तस्यामसून् प्रतिष्ठाप्य प्राङ्गणे निखनेच्च ताम् ॥ ४ ॥ तत्रानलं समाधाय रक्तचन्दनसंयुतैः। जपापुष्पैर्निशीथिन्यां जुहुयात्सप्तवासरम् ॥ ५ ॥ सहस्रं प्रत्यहं पश्चात्तां निष्कास्य सरित्तटे। निखनेत्साधकस्तस्य साध्यो दासो भवेद्ध्रुवम् ॥ ६ ॥ इति त्रैलोक्यमोहनगौर्यष्टचत्वारिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करके पूर्वोक्त ध्यान तथा पूर्ववत् सब पूजादि करे। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को कर सकने में समर्थ होता है। मन्त्र में जहाँ 'सर्वजनस्य' पद है। उसके स्थान पर साध्य का नाम रखना चाहिये। जप, होम, तर्पण तथा वशीकरण कर्मों में इसी नियम का अनुसरण करना चाहिये। ससम्पात घी की सात दिन तक प्रतिदिन १ हजार आहुति देकर सम्पातित घी को खिलाने से साध्य का वशीकरण होता है। साध्य के नक्षत्र-वृक्ष (देखिये देवता खण्ड) की लकड़ी से साध्य की शुभ आकृति बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके आँगन में उसे गाड़ दे और उस पर आग जलाकर लाल चन्दन के साथ जपापुष्पों से रात में सात दिन तक प्रतिदिन १ हजार आहुति दे। इसके बाद साधक उस मूर्ति को निकालकर नदी के तट पर गाड़ दे तो साध्य निश्चित रूप से साधक का दास हो जाता है। ४८ अक्षरों का त्रैलोक्यमोहनगौरी मन्त्रप्रयोग समाप्त।

अथ कामदेवमन्त्रप्रयोगः।

६६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते कामदेवाय इन्द्राय वसाबाणाय इन्द्रसन्दीपबाणाय क्लीं क्लीं सम्मोहनबाणाय ब्लूं ब्लूं सन्तापनबाणाय सः सः वशीकरणबाणाय कम्पितकम्पित हुं फट् स्वाहा। इति षट्षष्ट्यक्षरो मन्त्रः।

दूसरे तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हन हन वद वद तप तप सम्मोहय सम्मोहय सर्वजनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : एकविंशतिसहस्रजपात् सिद्धो मनुर्भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री पत्रं पुष्पं फलं वाभिमन्त्रितं यस्मै ददाति स वश्यो भवति । तथा च : पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियै वा पुरुषाय वा । अवश्यं वश इत्याहुरात्मना च धनेन च ॥ १ ॥ महाविद्यावतां पुंसां मनःक्षोभं करोति यः । सप्तरात्रौ व्यतीतायां स च शत्रुर्विनश्यति । दृष्टा जनैर्दुष्टजनाः सर्वे मोहवशंगताः ॥ २ ॥ इति कामदेवमन्त्रप्रयोगः ॥ ७ ॥

इसका विधान : मन्त्र का २१ हजार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक पत्र, पुष्प या फल को अभिमन्त्रित करके जिसे देता है वह साधक के वश में हो जाता है । कहा भी गया है कि पत्र, पुष्प या फल जिस स्त्री या पुरुष को साधक देता है वह तन, मन और धन से साधक के वश में हो जाता है । महाविद्या के स्वामी पुरुषों के मन को जो क्षुब्ध करता है वह शत्रु सात दिन व्यतीत होते ही नष्ट हो जाता है । महाविद्याधारी पुरुषों द्वारा देखे गये सभी दुष्टजन मोह के वशीभूत हो जाते हैं । कामदेव मन्त्रप्रयोग समाप्त ।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ आं ह्रीं सौः ऐं क्लीं हूं सौः ग्लौं श्रीं क्रौं एहि एहि भ्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलअण्डजपिण्डजान् भ्रामय भ्रामय राजप्रजावशङ्करि सम्मोहय मोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिणी अमलवरयूं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभाभासुरि चन्द्रजटी मां रक्षरक्ष मम शत्रून् भस्मीकुरु कुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुं फट् स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : लक्षं जपेत् । सर्वं वश्या भवन्ति शत्रवोनंक्ष्यन्ति ।

इसका विधान : एक लाख जप करने से सभी वश में हो जाते हैं और शत्रु भी नष्ट हो जाते हैं ।

अथ काममेखलामन्त्रप्रयोगः ।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में ३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं कामातुरे काममेखले विघोषिणि नीललोचने अमुकं वश्यं कुरुकुरु ह्रीं नमः । इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्र ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण स्वयं भक्ष्यद्रव्यं सप्ताभिमन्त्रितं भुञ्जीत

सप्तमे द्वादशे वा दिवसे स्त्री पुरुषो वा वश्यो भवति। इति काममेखला-मन्त्रप्रयोगः ॥ ८ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से भक्ष्य द्रव्य को सात बार अभिमन्त्रित करके स्वयं खाने से सातवें या बारहवें दिन स्त्री या पुरुष वश में हो जाता है। ३२ अक्षरों का काममेखला मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ ८ ॥

अथ सूर्यमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते श्रीसूर्याय ह्रीं सहस्रकिरणाय ऐं अतुलबलपराक्रमाय नवग्रहदशदिक्पाललक्ष्मीदैवताय धर्मकर्मसहिताय अमुकनाम नाथय नाथय मोहय मोहय आकर्षय आकर्षय दासानुदासं कुरु कुरु वशं कुरु कुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् स वश्यो भवति। इति सूर्यमन्त्रप्रयोगः ॥ ९ ॥

इसका विधान : १०८ बार प्रतिदिन जप करने से साध्य वश में हो जाता है। इति सूर्यमन्त्र प्रयोग ॥ ९ ॥

अथ घोररूपिणीमन्त्रप्रयोगः।

१५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कटविकटघोररूपिणि स्वाहा। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण सप्ताभिमन्त्रितं भुक्तपिण्डं यस्य नाम्ना सप्ताहं खादेत् स ध्रुवमेव वश्यो भवति ॥ १० ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित भोजन पिण्ड को जिसके नाम से साधक खायेगा वह निश्चित रूप से वश में हो जायगा। इति घोररूपिणी मन्त्रप्रयोग ॥ १० ॥

अथ दुर्गामन्त्रप्रयोगः।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ठं ठः। इति षडक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण श्वेतधत्तूरकाष्ठमयं कीलकं नवांगुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना स्वगृहे निखनेत् स वश्यो भवति ॥११॥

इसका विधान : श्वेत धतूरे की लकड़ी की नव अंगुल लम्बी खूंटी इस मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से अपने घर में गाड़ दे वह वशीभूत होता है। इति दुर्गामन्त्रप्रयोग ॥ ११ ॥

अथ मातङ्गीमन्त्रप्रयोगः ।

नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मातङ्गिनि ह्रीं ह्रीं स्वाहा । इति नवाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण राजिकालवणमिश्रितं घृतं होतव्यम् । स्त्रियं पुरुषमपि वा आकर्षयति । अवश्यं वश्यो भवति । इति मातङ्गी-मन्त्रप्रयोगः ॥ १२ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से राई तथा लवण से मिश्रित घी का होम करना चाहिये । इससे साधक जिस स्त्री या पुरुष को आकर्षित करता है वह अवश्य वशीभूत होता है । इति मातङ्गी मन्त्र प्रयोग ॥ १२ ॥

अथ माहेश्वरीमन्त्रप्रयोगः ।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ माहेश्वर्यै नमः । इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण बदरीकाष्ठकीलकं चतुरंगुलं सहस्रे-णाभिमन्त्रितं यस्य गृहे निखनेत् स सपरिवारो वश्यो भवति । इति माहे-श्वरीमन्त्रप्रयोगः ॥ १३ ॥

इसका विधान : चार अंगुल बेर की लकड़ी की कील को एक हजार बार इस मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दे वह सपरिवार वशीभूत होता है । इति माहेश्वरी मन्त्र प्रयोग ॥ १३ ॥

अथ वश्यमुखीमन्त्रप्रयोगः ।

११ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वश्यमुखि राजमुखि स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन सप्ताहं मुखप्रक्षालनात् सर्वे वश्या भवन्ति ॥ १४ ॥

इसका विधान : एक सप्ताह तक इस मन्त्र से मुख का प्रक्षालन करने से सब वश में हो जाते हैं । इति वश्यमुखी मन्त्रप्रयोग ॥ १४ ॥

११ अक्षरों का ही एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ राजमुखि वश्यमुखि स्वाहा । इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : वामहस्ते तैलं संस्थाप्य अनामिकया त्रिधा आमन्त्र्य पुनर्मूलमन्त्रं त्रिधा पठित्वा मुखकेशादौ विलेपयेत् प्रातःकाले शय्यायां स्थित्वा तदा सर्वाञ्जनान्वश्यान्करोति व्याघ्रोऽपि न खादति ॥ १५ ॥

इसका विधान : बाँये हाथ में तेल लेकर अनामिका से तीन बार अभिमन्त्रित करके पुनः मूलमन्त्र को ३ बार पढ़कर प्रातःकाल शय्या पर

स्थित होकर मुख तथा केश में उस तेल को लगाये तो साधक सभी मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है और व्याघ्र भी उसका भक्षण नहीं कर सकता ॥ १५ ॥

अथ क्षोभिणीमन्त्रप्रयोगः ।

१३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

एरण्डं क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा । इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अयुतद्वयं जपेत् सिद्धिः । अपामार्गस्य मूलं तु पेषयेद्रोचनेन च । ललाटे तिलकं कुर्याद्वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १६ ॥

इसका विधान : मन्त्र के २० हजार जप से सिद्धि होती है । अपामार्ग की जड़ को गोरोचन के साथ पीसकर ललाट पर उसका तिलक लगाने से मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है ॥ १६ ॥

अथ चामुण्डामन्त्रप्रयोगः ।

३४ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ चामुण्डे जय जय स्तम्भय स्तम्भय भञ्जय भञ्जय मोहय मोहय सर्वसत्त्वे नमः स्वाहा । इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन पुष्पमभिमन्त्रितं यस्मै दीयते स वश्यो भवति । एकचित्तः स्थितो मन्त्री मन्त्रं जप्त्वाऽयुतत्रयम् । ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥ १७ ॥

इसका विधान : जिसे भी मन्त्र से अभिमन्त्रित पुष्प दिया जाता है वह वश्य हो जाता है । साधक एकाग्रचित्त होकर मन्त्र का ३० हजार जप करके दर्शनमात्र से तीनों लोकों को क्षुभित कर देता है ॥ १७ ॥

अथ स्त्रीवशीकरणप्रकरणम् ।

तत्रादौ भगमालिनीमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र इस प्रकार है :

आं ऐं भगभुगे भगनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वभगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षोभय क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं में ब्लूं मौं ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीहरब्लें ह्रीं भगमालिनि स्वाहा । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत् स्त्रीवश्या भवति न सन्देहः ॥ १८ ॥

इसका विधान : मन्त्र का प्रतिदिन १०८ जप करने से स्त्री वश में हो जाती है—इसमें सन्देह नहीं है ॥ १८ ॥

स्त्रीवशीकरशैणेतानीमन्त्रः ।

मन्त्र इस प्रकार है :

इन्नाचात्वेना शैताना मेरी शिकलवन अमुकीके पास जाना उसे मेरे पास लाना न लावै तो तेरी बहेन भानजीपर तीनसै तीन तलाक । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : खाट के पायताने नग्न बैठकर गुड़ को मन्त्र द्वारा १२१ बार अभिमन्त्रित करके खाट के नीचे रखकर सो जाय । फिर प्रातः-काल उसे बालकों को बाँट दे । ऐसा करने से वाञ्छित स्त्री एक सप्ताह में ही उपस्थित होती है ॥ १९ ॥

कुछ अन्य प्रयोग :

मन्त्र इस प्रकार है :

वड पीपलका थान जहां बैठा अजाजील शैतान मेरी सबीह मेरीसी सूरत बन अमुकीको जारानरानै तो अपनी बहन भानजीके सिर जान पग चलता अमीरान् जो नरानै तो धोबीकी नाद चमारकी खाल कलालकी भाठी पड़ जो राजा चाहे राजको मैं चहूं अपने काजको मेरा काम न होगा तो आनसीमें तेरा दामनगीर हूंगा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : शनिवार के दिन अर्द्धरात्रि के समय नग्न होकर बारह राई हाथ में ले और प्रत्येक राई के ऊपर १ मन्त्र पढ़ पढ़कर उसे अग्नि में डालता जाय । ऐसा करने से वाञ्छित स्त्री साधक के प्रेम में वशीभूत होकर उपस्थित हो जायगी ॥ २० ॥

मन्त्र इस प्रकार है :

अलफ गुरू गुफतार रहेमान जागजाग रे अलहादीन शैतान सात-वार अमुकीको जारानजोनरानै तो तेरी माकी तलाक बहेनकी तीन तलाक । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : बेसन का एक चौमुखा (चौकोर) दीपक बनाकर उस दीपक के चारों कोणों में चीटे का और अपनी दाहिनी अनामिका का रक्त लगाकर चार बत्ती रक्खे और तेल डालकर उन्हें जलावे । इसके बाद नग्न होकर दक्षिण मुख बैठकर लोहबान की धूप दे, भुने हुये चने भोग में रक्खे मन्त्र का १०८ बार जप कर और उसी स्थान पर सो जाय । साधक जिस स्त्री के नाम से मन्त्र पढ़ता है उसी स्त्री के साथ स्वप्न में वह सात

बार भोग करता है और वह स्त्री व्याकुल होकर साधक के पास आ जाती है ॥ २१ ॥

अथ कामपिशाचीमन्त्रप्रयोगः ।

५६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं पिं स्था क्लीं कामपिशाचिनि शीघ्रं अमुकीं ग्राहय ग्राहय कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय विदारय द्रावयद्रावय स्नेहेन बन्धय बन्धय श्रीं फट् । इति षट्पञ्चाशदक्षरो मन्त्रः ।

एक अन्य तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सहवल्लीं वल्लीं करवल्लीं कामपिशाचि अमुकीं कामं ग्राहय स्वप्नेन मम रूपेण नखैर्विदारय द्रावय स्वेदेन बन्धय श्रीं फट् । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : सर्वप्रथम इस मन्त्र का १० हजार जप करे तो यह सिद्ध होता है । फिर कामयुक्त चित्त हो रात्रि के समय १२ या १५ दिन तक नित्य जिस स्त्री का नाम लेकर साधक मन्त्र का ११ सौ जप करेगा वह अवश्य ही साधक के वश में हो जायगी ॥ २२ ॥

अथ चामुण्डामन्त्रप्रयोगः ।

३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं वशमानय स्वाहा । इति द्वात्रिंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पुष्ये पुष्पं च संग्राह्य भरण्यां तु फलं तथा । शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च ॥ १ ॥ मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात् । पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम् ॥ २ ॥ तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती । काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ॥ ३ ॥ तैर्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिति ध्रुवम् । प्रातर्मुखं तु प्रक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितम् । यस्या नाम्ना पिबेत्तोऽयं सा स्त्री वश्या भवेद्ध्रुवम् ॥ ४ ॥ २३ ॥

इसका विधान : काले धतूरे का पुष्य नक्षत्र में फूल, भरणी में फल, विशाखा में शाखा, हस्त में पत्र, और मूल में जड़ का क्रमशः संग्रह करके उन्हें पीसकर कपूर, केसर तथा गोरोचन को समभाग मिलाकर उससे तिलक करने पर यदि साक्षात् अरुन्धती के समान पतिव्रता ही कोई स्त्री क्यों न हो वह साधक के वश में हो जाती है । काकजङ्घा, वचा, कूठ तथा शुक्र और शोणित को मिश्रित करके भोजन में देने से बाला निश्चित रूप से

श्मशान में रोती है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से प्रातःकाल सात बार मुख धोकर जिसके नाम से जल का पान साधक करेगा वह स्त्री निश्चित रूप से उसके वश में हो जायगी ॥ ४ ॥ २३ ॥

अथ अतरमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

अलहम्दोगवानीवो मेरेपर हो दिवानी जो न हो दिवानी तो सैयद कादर अब्दुलं जलानी चुट्टा पकडकर करो दिवानी। इति मन्त्रः।

इसका विधान : उत्कृष्ट अतर (इत्र) को शीशी में डालकर १०८ बार मन्त्र पढ़ें और शीशी के भीतर फूंक मारे। इसी तरह प्रत्येक माला पूरी होने पर फूंक मारता रहे। जब १ हजार मन्त्र पढ़ चुके और शीशी में दश फूंके लग चुकें तब शीशी को किसी स्वच्छ स्थान में रख दे। इसी प्रकार २१ दिनों तक करने से शीशी का अतर चक्कर देने लगेगा। जब अतर चक्कर देने लगे तब जान ले कि वह सिद्ध हो गया है। अगर २१ दिन में अतर चक्कर न मारे तो फिर ४० दिन तक मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त जिस स्त्री की इच्छा से यह कार्य किया हो उसे अतर सुंघाने से वह वशीभूत हो जाती है। यह अत्यन्त चमत्कारी और अनुभूत मन्त्र है, इसे मिथ्या नहीं जानना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ लूणमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो हयलूण सुहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवाचाटत जन्म जाय। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से २१ बार नमक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से वशीकरण होता है ॥ २५ ॥

अथ सुपारीमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

पीर मै नाथ पीर तूं नाथ जिस्को खिलाऊं तिस्को वश करना फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त जल में खड़ा होकर एक सुपारी को सात बार अभिमन्त्रित करके निगल जाय। जब वह (मल के साथ) निकले तब उसे जल से धोकर फिर दूध से धोवे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर गूगल की धूनी दे। तदुपरान्त उस सुपारी का एक टुकड़ा भी जिसे खिला दे वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, अवश्य वश में हो जायगा ॥२६॥

अथ इलायचीमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो काला कलुवा काली रात निसकी पुतली मांझी रात काला कलुवा घाटवाट सोतीको जगाय ल्याव बैठीको उठाय ल्याव खडीको चलाय ल्याव वेगी धर ल्याव मोहिनी जोहिनी चल राजाकी ठाव अमुकीके तनमें चटपटी लगाव जियाले तोड जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोडै हमारा साथ घरको तजै बहेरको तजै घरके साईको तजै हमे तज और कनेजाय तो छाती फाड तुरत मरजाय सत्य गुरू आदेस गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ईश्वर महादेवकी वाचासे टरै तो कुम्भी नरकमें पडै। इति मन्त्रः।

इसका विधान : २१ दिन में इसे सिद्ध कर ले। फिर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित इलायची जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जायगा ॥ २७ ॥

अथ लौंग मोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

सत्य नाम आदेश गुरूको लौंगलौंग मेरा भाई इन्हीं लौंगने शक्ति चलाई पहेली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवनमाती तीजी लौंग अङ्ग मरोडै चौथी लौंग दोऊ कर जोडै चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पाससे फलानेकने आजाय गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : शनिवार से प्रारम्भ करके रात्रि के समय पूजन करे और मन्त्र का नित्य १०८ जप करने से २१ दिन में सिद्ध होता है। फिर ४ लौंग अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जाता है—यह बिल्कुल सत्य है ॥ २८ ॥

अथ वेश्यावशीकरणम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ द्राविणि स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सात अंगुल की ओंगा की कील को सात मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके वेश्या के घर में डालने से वेश्या का वशीकरण हो जाता है ॥ २९ ॥

अथ राजवशीकरणम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

हथेलीमें हनुमन्त बसै, भैरूं बसै कपाल। नारसिंहकी मोहिनी,

मोहा सब संसार। मोहन रे मोहन्ता वीर सब वीरनमें तेरा सीर सबकी दृष्टि बांधिदे तोहि तेल सिन्दूर चढाऊ तोहि तेल सिन्दूर कहांसे आया कैलासपर्वतसे आया कौन ल्याया अञ्जनीका हनुमन्त गौरीका गणेश ल्याया कालागोरा तोतला तीनू वसै कपाल बिन्दा तेल सिन्दूरका दुश्मन गया पताल दुहाई कामियां सिन्दूरकी हमें देख सीतल होजाय मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार को नृसिंह का पूजन करके १२१ बार मन्त्र पढ़े। इसी प्रकार सात रविवारों तक करे, तेल का दीपक जोड़े, लोहबान की धूप दे और मोदक चढ़ाये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध मन्त्र से सिन्दूर को अभिमन्त्रित करके मस्तक पर बिन्दी लगाने से राजा का क्रोध शान्त हो जाता है और वह प्रसन्न होता है ॥ ३० ॥

अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार को ऊँगा का फूल लाकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके राजा को खिलाये तो वह वश में हो जायगा ॥ ३१ ॥

अथ मन्त्रिवशीकरणम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

बिस्मिल्ला हदाना कुलू अल्ला हयगाना दिलहै सखू तुम हो दाना हमारे बीच फलानेको करो दिवाना। इति मन्त्रः।

इसका विधान : २१ बिनौले लेकर प्रत्येक बिनौले पर २१ मन्त्र पढ़कर अग्नि में होम करने से २१ दिन में सिद्ध होता है। बाद में ४१ बिनौले लेकर प्रत्येक पर ४१ मन्त्र पढ़कर अर्द्धरात्रि में होम करने से तीन दिन में राजा का मन्त्री वश में हो जायगा ॥ ३२ ॥

अथ सभा मोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

कालूं मुख धोये करूं सलाम मेरी आंखोंमें सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौसुलआजमदस्तगीरकी छू। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढे, फिर उसे पिसवाकर उसके आटे में घी और चीनी मिलाकर हलवा तैयार करे। गौसुल आजमदस्तगीर की नियाज दिलावे और उस हलवे को स्वयं खाकर सिद्ध हो।

तदुपरान्त जब राज दरबार में जाने का काम पड़े तब सुरमें को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नेत्रों में लगाकर जाय तो सम्पूर्ण सभा वशीभूत होकर साधक की हाँ में हाँ मिलायेगी ॥ ३३ ॥

अथ नग्नमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

पद्मनी अञ्जन मेरा नाम इस नगरीमें पैसके मेहेसगरागाम राज करन्ता राजा मोहूं फरस बैठा पञ्चमोहूं पनघटकी पनिहार मोहूं इस नगरीमें पैसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मारमार करन्ता आवै ताहि नारसिंह वाया पगके अंगूठा तरे घेरघेर ल्यावै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

रवि-शनि की रात को धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान सुपारी और लौंग से नृसिंह का पूजन करे और १०८ बार मन्त्र का जप करे। प्रत्येक मन्त्र से पान, सुपारी, शक्कर, घृत और गूगल का हवन करे। इससे सिद्धि प्राप्त हो जाने पर नन्दन वन के कपास की रूई में ओंगा की जड़ लपेटकर बत्ती बनावे और तेल से दीपक भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। उस काजल को सात बार अभिमन्त्रित करके नेत्रों में लगा लेने पर सम्पूर्ण पुरुष, बालक, वृद्ध और तरुण वश में हो जाते हैं। जिस ग्राम में साधक जायेगा वहाँ सब ग्रामवासी उसकी सेवा करेंगे। यह प्रयोग पण्डितों के लिये श्रेष्ठ है ॥ ३४ ॥

अथ शत्रुमोहिनी।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो उच्छिष्टचाण्डालिनि कङ्कालमालाधारिणि साधुसाधु त्रैलोक्यमोहिनि प्रकाण्डक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : यह क्षोभणी देवी का मन्त्र है। इसके जप तथा हवन से शत्रुओं को क्षोभ होता है। यदि बट और शमी वृक्ष की समिधा से घी के साथ एक हजार नित्य हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है—इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३५ ॥

अथाकर्षणमन्त्रप्रकरणम्।

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धि प्रयत्नतः। राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥ १ ॥

अब मैं आकर्षण-विधि की सिद्धि बताऊँगा जिसे ध्यान देकर प्रयत्न-

पूर्वक सुनो। इससे राजा तथा प्रजाओं का यथार्थ रूप से आकर्षण होता है।

तत्रादौ विश्वावसुनामकगन्धर्वमन्त्रप्रयोगः।

३९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिः स्वरूपां सालङ्कारां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा। इत्येकोनचत्वारिंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : कन्यागृहे शालकाष्ठं क्षिपेदेकादशांगुलम्। ऋक्षे तु पूर्वाफाल्गुन्यां स्वयं कन्यां प्रयच्छति ॥ १ ॥ ३६ ॥

इसका विधान : पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दिन ११ अंगुल के शालकाष्ठ को अभिमन्त्रित करके यदि वाञ्छित कन्या के घर में डाल दे तो वह कन्या निश्चित रूप से साधक वरण करेगी ॥ १ ॥ ३६ ॥

अथ मूलीमन्त्रप्रयोगः।

२५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय संक्षोभय उपद्रवेभ्यः स्वाहा। इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : अञ्जलि में जल लेकर इस विद्या का जप करने से एक मास में वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है ॥ ३७ ॥

अथ बीजमन्त्रप्रयोगः।

५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ह्रं ह्रां ह्रां ह्रें ह्रैं। इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : प्रतिदिन ५ हजार मन्त्र जप से १ दिन में सिद्ध हो जाता है। फिर भक्ष्य द्रव्य को अपने हाथ में लेकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसे भक्षण कराये वह साधक का दास हो जाता है और उसे जहाँ ले जाया जाय वहाँ जाता है ॥ ३८ ॥

अथादिरूपमन्त्रः।

२१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा। इत्येकविंश-त्यक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र को गोरोचन और केसर से मनुष्य की खोपड़ी पर लिखकर प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल—इन तीनों समयों में खैर के अङ्गारों पर तपाने से स्त्री, पुरुष, अथवा पशु का आकर्षण होता है, अर्थात वह साधक के पास आ जाता ॥ ३९ ॥

अथ रुद्रमन्त्रप्रयोगः ।

६ अक्षरों का प्रथम मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा । इति षडक्षरो मन्त्रः प्रथमः ।

४१ अक्षरों का दूसरा मन्त्र इस प्रकार है ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय राट्टष्टिलंपिनाहरःस्वाहा दुहाई कंसासुरकी जूटजूट फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा । इत्येकचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रो द्वितीयः ।

इसका विधान : मङ्गलवार से प्रारम्भ कर पहले ६ अक्षरोंवाले मन्त्र का प्रतिदिन १ हजार और दूसरे ४१ अक्षरोंबाले मन्त्र का २१ बार जप करे तो दश दिन में सिद्ध होता है । ग्यारहवें दिन होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराने के बाद मन्त्र के सिद्ध हो जाने की परीक्षा इस रीति से करे : एक सरकण्डे को बीच से चीरकर दोनों भागों को दो मनुष्य पकड़ें और साधक चूहे के बिल की मिट्टी, सरसों और बिनौला—इन तीनों वस्तुओं को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सरकण्डे पर मारे तो दोनों सिरे मिल जायँगे । तब इस मन्त्र को सिद्ध हुआ जानकर जिसका आकर्षण करना हो उसके वस्त्र पर उपरोक्त तीनों वस्तुओं (चूहे के बिल की मिट्टी, सरसों और बिनौला) को अभिमन्त्रित करके मारे तो वह स्त्री या पुरुष जितने दिनों के मार्ग पर होगा उतने ही दिनों में आ जायगा—इसमें सन्देह नहीं है ।४०।

इति वशीकरण मन्त्र प्रकरण ।

अथ मोहनतन्त्रप्रारम्भः ।

दत्तात्रेय तन्त्र में १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सर्वलोकमोहनं कुरुकुरु स्वाहा । इति षोडशाक्षरो मन्त्रः ।

इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके सभी प्रयोगों को सिद्ध करे ।

ईश्वर उवाच । तुलसीबीजचूर्णस्य सहदेवीरसैः सह । तिलकं यो रवौ कुर्यात्स जगन्मोहकृद्भवेत् ॥ ४१ ॥

ईश्वर बोले : तुलसी के बीजों के चूर्ण को सहदेवी के रस के साथ घोंटकर रविवार के दिन उसका तिलक लगाने से साधक संसार का मोहन कर सकता है ॥ ४१ ॥

हरितालाश्वगन्धा तु कदलीरसपेषिता । गोरोचनयुता तस्यास्तिलको लोकमोहनः ॥ ४२ ॥

हरिताल तथा अश्वगन्धा को केले के रस में गोरोचन के साथ पीसकर उसका तिलक लगाना लोक मोहनकारक होता है ॥ ४२ ॥

भृङ्गिचन्दनसंयुक्त वचाकुष्ठेन धूपयेत् । देहं तथा स्ववस्त्रं च मुखं वै साधकस्ततः । पशुपक्षिप्रजाभूपमोहदो दर्शनाद्भवेत् ॥ ४३ ॥

काकड़ाश्रृङ्गी, चन्दन, वचा और कूठ के मिश्रण से अपने शरीर, वस्त्र तथा मुख को धूपित करने से साधक पशु, पक्षी, प्रजा तथा राजा को दर्शन मात्र से मोहित कर लेता है ॥ ४३ ॥

गृहीतमूलताम्बूल तिलको लोकमोहनः ॥ ४४ ॥

पिपरामूल तथा ताम्बूल का तिलक लोकमोहनकारक होता है ॥ ४४ ॥

मनःशिला च कर्पूरं कदलीरसपोषितम् । अनेनैव तु तन्त्रेण तिलको लोकमोहनः ॥ ४५ ॥

मनःशिला तथा कपूर को केले के रस में पीसकर इसी तन्त्र से तिलक लगाना लोकमोहनकारक होता है ॥ ४५ ॥

सिन्दूरं च वचा श्वेता ताम्बूलरसपोषिता । अनेनैव तु तन्त्रेण तिलको लोकमोहनः ॥ ४६ ॥

सिन्दूर, वचा तथा श्वेता को ताम्बूल के रस में पीसकर इसी तन्त्र से तिलक लगाना भी लोकमोहन कारक होता है ॥ ४६ ॥

अपामार्गभृङ्गराजलज्जालुसहदेविकाः । एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ४७ ॥

अपामार्ग, भृङ्गराज, लज्जालु तथा सहदेवी का तिलक करके साधक तीनों लोकों को मोह लेता है ॥ ४७ ॥

गृहीत्वौदुम्बरं पुष्पं वर्ति कृत्वा विचक्षणः । नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं पातयेन्निशि । कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रं मोहनं जगतस्त्विदम् । यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४८ ॥

गूलर के फूल की बत्ती बनाकर रात को मक्खन से जलाकर सुधी साधक काजल पारे । इस काजल को आँख में लगाकर वह संसार को मोहित कर लेता है । यह देवताओं के लिये भी दुर्लभ है, और इसे ऐसे तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये ॥ ४८ ॥

श्वेतगुञ्जारसे पेष्य ब्रह्मदण्डीं च मूलकम् । लेपं शरीरे यः कुर्यात्स जगन्मोहनो भवेत् ॥ ४९ ॥

श्वेत गुञ्जा के रस में ब्रह्मदण्डी तथा पिपरामूल को पीसकर जो मनुष्य शरीर में लेप करता है वह जगत को मोहित कर लेता है ॥ ४९ ॥

श्वेतदूर्वां शुभां मन्त्री हरितालं च पेषयेत् । अनेन तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यमपि मोहयेत् ॥ ५० ॥

साधक शुभ सफेद दूब तथा हरिताल को पीसे ओर उससे तिलक करे। इससे वह तीनों लोकों को मोहित करता है ॥ ५० ॥

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं च कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन वटीं कृत्वा तु धारयेत्। तिलकं यस्तु तं दृष्ट्वा साधकं सकलं जगत्। क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥ ५१ ॥

बेल के पत्तों को लेकर छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध के साथ बटी बनाये। जो उस बटी का तिलक धारण करेगा उसे देखकर सारा संसार प्राण तथा धन से मोहित हो जायगा है ॥ ५१ ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम्। अनेन तिलकं भाले कुर्याद्यो मोहयेज्जगत् ॥ ५२ ॥

श्वेत मदार की जड़ लेकर श्वेत चन्दन के साथ पीसकर उससे जो तिलक लगाता है वह संसार को मोहित करता है ॥ ५२ ॥

सिन्दूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितम्। धात्रीरसेन संयुक्तं तिल-कोऽयं नृमोहनः ॥ ५३ ॥

सिन्दूर, कुंकुम, गेरु तथा गोरोचन को आँवले के रस से पीसकर तिलक लगाने से साधक मनुष्यों को मोहित करता है ॥ ५३ ॥

विजयापत्रमादाय श्वेतसर्षपसंयुतम्। अनेन लेपयेद्देहं यः स विश्व-विमोहनः ॥ ५४ ॥

भाँग के पत्ते लेकर सफेद सरसों के साथ मिलाकर देह पर लेप करने से संसार मोहित होता है ॥ ५४ ॥

गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत्। अश्वगन्धासमायुक्तं विजयाबीजसंयुतम्। कपिलाशुद्धपयसा वटिका टङ्कमानतः। भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ ५५ ॥

तुलसी के पत्तों को लेकर उन्हें छाया में सुखा ले। उसके साथ अश्व-गन्ध तथा भाँग के बीज कपिला गाय के शुद्ध दूध के साथ पीसकर टङ्क के बराबर वटिका बना ले। प्रातःकाल उठकर उस वटिका को खाने से साधक सम्पूर्ण जगत को मोहित कर लेता है ॥ ५५ ॥

पञ्चाङ्गं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेतगुञ्जासमन्वितम्। अनेन तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥ ५६ ॥

अनार के पञ्चाङ्ग को श्वेतगुञ्जा के साथ पीसकर उससे तिलक कर मनुष्य सर्वजगत् को मोहित करता है ॥ ५६ ॥

कटुतुम्बीबीजतैले ज्वालयेत् पटवर्तिकाम् । तत्कज्जलं नेत्रगतं मोहयेत्सकलं जगत् ॥ ५७ ॥

कटुतुम्बी के बीज के तेल में रेशम की बत्ती जलाकर काजल पारे। उस काजल को नेत्रों में लगाकर सकल जगत को मोहित किया जा सकता है ॥ ५७ ॥

अथ वशीकरणतन्त्रम् ।

दत्तात्रेय तन्त्र में १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री सर्वयोगान् साधयेत्। तथा च। ईश्वर उवाच। नृकपाले रविदिने तण्डुलैः पायसं कृतम् । छायाशुष्कं तु तच्चूर्णं खाने पाने च दीयते। यावज्जीवं वशं याति नारी वा पुरुषोपि वा। अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि ।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सभी भोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : ईश्वर बोले : रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में चावल से खीर बनाये फिर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बना ले। उसे खान-पान में देने से चाहे नारी हो या पुरुष वह यावज्जीवन वशीकृत रहता है तथा प्राण और धन सहित दास हो जाता है ।

अन्यत् । पल्लीपुच्छं गृहीत्वा तु वर्तिं ऋतुमतीस्त्रियः । ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत् । ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमिश्रितम् । रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकवशङ्करः ॥ ५८ ॥

एक अन्य प्रयोग : छिपकली की पूंछ को ऋतुमती स्त्री के वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाकर रविवार के दिन उसे जलाकर जिसे दिखाये वह वशीकृत होता है। ब्रह्मदण्डी, वचा तथा कुष्ठ के चूर्ण को ताम्बूल के साथ रविवार के दिन मिश्रित करने से वह सर्वलोकवशङ्कारी होता है ॥ ५८ ॥

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् । विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ५९ ॥

बरगद की जड़ लेकर उसे जल से घिसे। उसकी विभूति के साथ उसका तिलक संसार को वश में करनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि मन्त्रितम् । यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः ॥ ६० ॥

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को सात बार अभिमन्त्रित करके जो अपने हाथ में रखता है वह वधुओं से पूज्य होता है और सबको मोहित करता है ॥ ६० ॥

अपामार्गस्य मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम् । ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ ६१ ॥

अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में पीसकर जो अपने ललाट पर तिलक करता है वह तीनों लोकों को वशीकृत करता है ॥ ६१ ॥

गृहीत्वा सहदेवीं वै छायाशुष्कं तु कारयेत् । ताम्बूले निहितं तस्याश्चूर्णं लोकवशङ्करम् ॥ ६२ ॥

सहदेवी को लेकर उसे छाया में सुखा ले । उसका चूर्ण ताम्बूल में रखकर देने से वह लोकवशङ्कारी होता है ॥ ६२ ॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ६३ ॥

रोचना और सहदेवी का तिलक भी लोकवश्यकारी होता है ॥ ६३ ॥

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकः कृतः । प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः । ताम्बूले वा प्रदातव्यं सर्वलोकवशङ्करम् ॥ ६४ ॥

गूलर की जड़ को लेकर उसका तिलक ललाट पर लगाकर साधक दर्शन मात्र से सर्वप्रिय हो जाता है—इसमें संशय नहीं है । इसे ताम्बूल में देने से भी सर्वलोकों का वशीकरण होता है ॥ ६४ ॥

देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेद्बुधः । मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशङ्करः ॥ ६५ ॥

बुद्धिमान साधक देवदाली तथा सिद्धार्थ (पीली सरसों) की गुटिका बनाकर उसे मुख में डालकर समस्त संसार को वश में कर लेता है ॥ ६५ ॥

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलां । अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत् ॥ ६६ ॥

कुंकुम, तगर, कूठ, हरिताल तथा मैनसिल को अनामिका अंगुली के रक्त से मिलाकर तिलक लगाते ही साधक सभी को वश में कर लेता है ।६६।

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचन्दनम् । एकीकृत्य जपेन्मन्त्रं सर्वलोकवशङ्करम् ॥ ६७ ॥

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु तथा रक्तचन्दन को एकत्र कर मन्त्र का जप करने से साधक सर्वलोकों को वश में कर लेता है ॥ ६७ ॥

गृहीत्वा श्वेतगुञ्जायाच्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ६८ ॥

श्वेतगुञ्जा को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उसका आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर तिलक बनाने से साधक समस्त लोकों को वश में करनेवाला होता है ॥ ६८ ॥

तन्मूलं पत्रताम्बूलं सर्वलोकवशङ्करम्। तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोक-वशङ्करः ॥ ६९ ॥

श्वेतगुञ्जा की जड़ तथा उसके पत्तों को ताम्बूल के साथ खाने से साधक सर्वलोकों को वश में करता है। श्वेतगुञ्जा की जड़ को देह में लेप लगाना भी सर्वलोकवश्यकारी है ॥ ६९ ॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलाक्षीरपेषिताम्। तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्व-लोकवशङ्करः ॥ ७० ॥

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध में पीस ले। इस लेप को लगाकर साधक सर्वलोकों को वश में करता है ॥ ७० ॥

श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलकः सर्ववश्यकृत् ॥ ७१ ॥

सफेद मदार को लेकर छाया में सुखाकर उससे आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर उससे तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है ॥७१॥

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिङ्गं तथैव च। अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्यकृत् ॥ ७२ ॥

बिल्वपत्र तथा बिजौरा नीबू एकत्र करके बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है ॥ ७२ ॥

कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम्। तिलकं धारयेद्भाले सर्व-लोकवशङ्करम् ॥ ७३ ॥

कौमारीकन्द (घिकुआर की जड़) लाकर भाँग के बीजों के साथ भाल पर तिलक धारण करना सर्वलोकवश्यकारी है ॥ ७३ ॥

हरितालं चाश्वगन्धा सिन्दूरं कदलीरसम्। तिलकः क्रियतेऽनेन सर्वलोकवशङ्करः ॥ ७४ ॥

हरताल, अश्वगन्धा, सिन्दूर तथा केले का रस एकत्र पीसकर तिलक करना सर्वलोकवश्यकारी है ॥ ७४ ॥

अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत्। तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्व-लोकवशङ्करः ॥ ७५ ॥

अपामार्ग के बीज को बकरी के दूध के साथ पीसकर लेप बनाये। इस लेप को धारण करने से साधक समस्त लोकों को वश में करता है ॥ ७५ ॥

हरितालं च तुलसी कपिलादुग्धपेषिता। अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशङ्करः ॥ ७६ ॥

हरताल तथा तुलसी को कपिला गाय के दूध से पीसकर ललाट पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करनेवाला है ॥ ७६ ॥

धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगन्धं मनःशिला। अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशङ्करः ॥ ७७ ॥

आँवले के रस में अष्टगन्ध और मैनसिल को पीसकर भाल पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करनेवाला है ॥ ७७ ॥

प्राकृतग्रन्थे। लाय मनुष्यकी खोपडी, बीज धतूरो मेल। शहत कपूर मिलायके, करै तिलकका खेल। पुरुष होय चाहे हो नारी, देखत तिलक होय वस भारी। यह कपालिक योग अनोखो, कह्यो वसिष्ठ होय नहि धोखो ॥ ७८ ॥

अथ राजावशीकरणतन्त्रम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा च : ईश्वर उवाच। कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम्। गोक्षीरघर्षितं तस्य तिलको राजमोहनः ॥ ७९ ॥

इसका विधान : १०८ मन्त्र के जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा गया है : ईश्वर बोले : कुंकुम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल को गाय के घी में घोंटकर तिलक लगाना राजवशीकरण करता है ॥ ७९ ॥

करे सुदर्शनामूलं बध्वा राजप्रियो भवेत् ॥ ८० ॥

हाथ में सुदर्शना की जड़ बाँधकर साधक राजप्रिय हो जाता है ॥८०॥

सिंहीमूलं हरेत् पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः। हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरं च मनःशिला। अजाक्षीरेण तिलको राज्यवश्यकरः परः ॥ ८१ ॥

पुष्य नक्षत्र में सिंही (भटकटैया) की जड़ को कमर में बाँधने से मनुष्य राजप्रिय होता है। हरिताल, अश्वगन्धा, कपूर तथा मैनसिल को

बकरी के दूध से पीसकर तिलक लगाकर साधक राजा को वश में कर लेता है ॥ ८१ ॥

गृहीत्वा सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे। कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्त-वस्त्रके। विष्णुक्रान्तानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके। कज्जलं पातये-द्रात्रौ शुचिः पूर्वं समाहितः। कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राज्यवश्यकरो भवेत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा ॥ ८२ ॥

पुष्य नक्षत्र में सुदर्शना की जड़ को कपूर और तुलसी के पत्र के साथ पीसकर वस्त्र पर उसका लेप करे। विष्णुक्रान्ता के बीजों को उसमें लपेट-कर दीपक में तेल डालकर रात में पवित्र और शान्तचित्त हो उसकी बत्ती जलाकर काजल पारे। उस काजल को आँख में लगाने से साधक राजा को वश में करता है। इससे चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाता है, फिर अन्य लोगों की बात ही क्या ? ॥ ८२ ॥

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे। खाने पाने प्रदेयानि राजवश्य कराणि हि ॥ ८३ ॥

पुष्य नक्षत्र में रविवार को अपामार्ग के बीजों को लेकर उसे खान-पान में देना चाहिये। ये बीज राजा को भी वश में करनेवाले हैं ॥ ८३ ॥

अथ पतिवशीकरणतन्त्रम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनविंश-त्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा च : ईश्वर उवाच। गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्। एभिस्तु तिलकं कृत्वा स्वपतिं वशमानयेत् ॥ ८४ ॥

इसका विधान : १०८ जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है। ईश्वर बोले : गोरोचन और योनिरक्त को केले के साथ मिलाकर तिलक करने से नारी अपने पति को वश में करती है ॥ ८४ ॥

पञ्चाङ्गदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुताम्। योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा ॥ ८५ ॥

अनार के पञ्चाङ्ग को पीसकर श्वेतगुञ्जा तथा सरसों के साथ योनि में लेप करके दुर्भगा नारी भी पति को दास बना लेती है ॥ ८५ ॥

मालतीपुष्पसंयुक्तं कटुतैलेषु पाचितम् । एतल्लिप्तभगा नारी रतौ वै मोहयतेत्पतिम् ॥ ८६ ॥

अनार के पञ्चाङ्ग को मालती पुष्पों के साथ पीसकर कड़ुवा तेल में पकाये । इसे भग में लगाकर नारी रात में अपने पति को मोहित कर लेती है ॥ ८६ ॥

भौमे पूगीफलं भुक्त्वा प्रातर्विष्ठां समाहरेत् । जलप्रक्षालितं खण्डं ताम्बूले पतिवश्यकृत् ॥ ८७ ॥

मङ्गलवार को सुपारी खाकर प्रातःकाल अपनी विष्ठा ले आये । उसमें से सुपारी को धोकर उसके टुकड़ों को ताम्बूल में डालकर अपने पति को खिलाये । इससे पति वश में हो जाता है ॥ ८७ ॥

जिह्वामलं लवङ्गं च खाने पाने प्रदापयेत् । पतिवश्यकरं देव पतिर्दासस्तु जायते ॥ ८८ ॥

जिह्वा का मैल तथा लौंग खान-पान में दे । हे देव ! यह पति को वश में करनेवाला है । इससे पति दासवत हो जाता है ॥ ८८ ॥

प्राकृतग्रन्थे । स्त्री अपने आर्तवमें गोरोचनको भेगाकर मस्तकपर तिलक करै पीछे जिस जिसको देखैगी वहवह निश्चे करके वशमें हो जायगा ॥ ८९ ॥

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग : स्त्री अपने आर्तव में गोरोचन को भिगाकर मस्तक पर तिलक करे । इस प्रकार तिलक करके वह जिसे देखेगी वह निश्चित रूप से उसके वश में हो जायगा ॥ ८९ ॥

स्त्री रविवारको अपने बाये पगकी जूतीके बराबर आटा तोलके उस्की रोटी बना पतिको खवावै तो वह पति स्त्रीके समान होकर उस स्त्रीके आधीन रहैगा ॥ ९० ॥

रविवार को स्त्री अपने बायें पैर की जूती के बराबर आटा तौल कर उसकी रोटी बनाये और उसे पति को खिलाये । इससे वह पति सदा अपनी पत्नी के वश में रहेगा ॥ ९० ॥

अथ स्त्रीवशीकरणतन्त्रम् ।

दत्तात्रेय तन्त्र में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कामाक्षीदेवि अमुकीं मे वश्यां कुरुकुरु स्वाहा । इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि साधयेत् । तथा च : रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूर-

पुष्पकम् । शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च । पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् । तिलकेन वशे कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥ ९१ ॥

इसका विधान : १०८ बार जप से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि रविवार को काले धतूरे का फूल, शाखा, लता, पत्र और मूल लेकर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन समान भाग डालकर पीसे। इस लेप का तिलक लगाकर मनुष्य स्त्री को वश में कर लेता है चाहे वह साक्षात् अरुन्धती ही क्यों न हो ॥ ९१ ॥

काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् । दत्तं तु भोजने बाला श्मशाने सा तु रोदिति ॥ ९२ ॥

काकजङ्घा, वचा और कुष्ठ को शुक्र तथा शोणित मिलाकर भोजन में देने से बाला श्मशान में रोती है ॥ ९२ ॥

चिताभस्म वचा कुष्ठं कुंकुमं च समं समम् । चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९३ ॥

चिताभस्म, वचा, कूठ और कुंकुम समान भाग लेकर चूर्ण करे। इस चूर्ण को स्त्री के सर पर डालने से अद्भुत वशीकरण होता है ॥ ९३ ॥

जिह्वामलं दन्तमलं नासाकर्णमलं तथा । ताम्बूले तु प्रदद्याद्वै वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९४ ॥

जिह्वा का मैल, दाँत का मैल, नासा और कान का मैल इन सबको लेकर पान में मिलाकर खिलाने से अद्भुत वशीकरण होता है ॥ ९४ ॥

भौमवारे लवङ्गं च लिङ्गच्छिद्रे निशि क्षिपेत् । बुधवारे समुद्धृत्य खाने पाने वशा भवेत् ॥ ९५ ॥

मङ्गलवार को रात में लौंग को लिङ्ग के छिद्र में डाल दे। फिर बुधवार को उसे निकालकर खान-पान में देने से स्त्री वश में होती है ॥ ९५ ॥

करपादनखानां च कृत्वा भस्म विशेषतः । खाने पाने प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥ ९६ ॥

हाथ और पैर के नखों को लेकर उनका भस्म बनाकर विशेष रूप से खान-पान में देने से अद्भुत वशीकरण होता है ॥ ९६ ॥

शनिवारे गृहीत्वा तु वनितावामपादगम् । पांसुं पुत्तलिकां कृत्वा तत्केशसंयुतां कृताम् । नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य स्ववीर्यसंयुतं भगम् । सिन्दूरलेपितं कृत्वा निखनेद्द्वारवामके । लङ्घयित्वा वशं याति प्राणैरपि धनैरपि । यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ९७ ॥

शनिवार को स्त्री के बायें पैर की मिट्टी लेकर उससे पुतली बनावे और उसी स्त्री के केश को उसमें लगाये। अपने वीर्य से युक्त सिन्दूर से उसके भग को लिप्त करके नीले वस्त्र में लपेटकर उसे उस स्त्री के द्वार पर बायें ओर गाड़ दे। उसे लाँघकर जाने पर वह स्त्री तन, मन और धन से साधक के वश में हो जाती है। यह देवों के लिये भी दुर्लभ प्रयोग है और इसे ऐसे तैसे को नहीं देना चाहिये ॥ ९७ ॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म यस्याङ्गे निक्षिपेन्नरः। वशा भवति सा नारी नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ९८ ॥

ब्रह्मदण्डी तथा चिताभस्म को लेकर जिस स्त्री के ऊपर डाल दिया जाय वह वश मे हो जाती है। शङ्करजी का यह कथन असत्य नहीं हो सकता ॥ ९८ ॥

पूगीफलं गृहीत्वा तु चन्द्रवारे मृगान्विते। खण्डकं वीर्यसंयुक्तं ताम्बूले वश्यकारकम् ॥ ९९ ॥

सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र में सुपारी लेकर उसके टुकड़े बना लेवे। उन टुकड़ों को वीर्य के साथ ताम्बूल में देना वश्यकारक है ॥ ९९ ॥

ताम्बूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनःशिलाम्। भौमे तु तिलकं कुर्यात्कामिनी वश्यकारकम् ॥ १०० ॥

ताम्बूल के रस में हरताल और मैनसिल को पीसकर मङ्गलवार को तिलक करना स्त्री वश्यकारक है ॥ १०० ॥

सिन्दूरं कदलीकन्दं पेषयेद्भूमिवासरे। अनेन तिलकं कृत्वा सत्यं नारी वशा भवेत् ॥ १०१ ॥

मङ्गलवार को सिन्दूर तथा केले के कन्द को एक में पीसे। इसका तिलक करने से नारी अवश्य वश में होती है—यह सत्य है ॥ १०१ ॥

गोदन्तं नरदन्तं च पिष्ट्वा तैलेन लेपयेत्। एभिस्तु तिलकं कृत्वा कान्तावश्यकरो भवेत्। उलूकमांसं कामिन्यै खाने पाने प्रदापयेत्। सिद्ध योगः परं पथ्यो विना मन्त्रेण सिद्ध्यति ॥ १०२ ॥

गाय का दाँत तथा मनुष्य का दाँत एक साथ पीसकर तेल के साथ लेप बनाये। इससे तिलक करना स्त्री वश्यकारक है। उल्लू का मांस खान-पान में देने से नारी वश में हो जाती है। बिना मन्त्र के ही यह सिद्ध होता है और परम पथ्य है ॥ १०२ ॥

लिङ्गमलं गृहीत्वा तु खाने पाने प्रदापयेत् । वशा भवति सा नारी विना मन्त्रेण सिद्धयति ॥ १०३ ॥

अपने लिङ्ग का मल लेकर खाने-पीने की वस्तुओं में मिलाकर देने से स्त्री वश में होती है । यह बिना मन्त्र के ही सिद्ध प्रयोग है ॥ १०३ ॥

स्वमूत्रसंयुतं कुष्ठं ताम्बूले वश्यकृद्भवेत् ॥ १०४ ॥

अपने मूत्र में कूठ का चूर्ण मिलाकर पान में देने से स्त्री वश में होती है ॥ १०४ ॥

जिह्वामलं जातिफलं ताम्बूले वश्यकारकम् । यवचूर्णं हरिद्रा च गोमूत्रं घृतसंयुता । ताम्बूलरससंयुक्ताऽनया संमर्दयेत्सुधीः । मुखं भवति पद्माभं पादौ पद्मदलोपमौ । प्रियो भवति सर्वेषां स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १०५ ॥

जिह्वा का मैल और जायफल का चूर्ण पान में मिलाकर देने से स्त्री वश में होती है । जौ का आटा, हल्दी का चूर्ण, गोमूत्र घी तथा पान का रस मिलाकर मुख पर मर्दन करने से मुख कमल के समान और पाँव कमल के दल के समान हो जाता है । ऐसा साधक राजकुल में तथा स्त्रियों में सबका प्रिय हो जाता है ॥ १०५ ॥

गोरोचनं पद्मपत्रं पेषयेत्तिलकः कृतः । शनिवारेऽनेन शुभः कामिनी-वशकारकः ॥ १०६ ॥

गोरोचन और पद्मपत्र को पीसकर शनिवार को उसका तिलक करना नारीवश्यकारी होता है ॥ १०६ ॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं पट्टसूत्रेण वर्तिकाम् । भृगौ वै नृकपाले चैरण्ड-तैलस्य कज्जलम् । अनेन चाञ्जयेन्नेत्रं दृष्टिमात्रेण मोहयेत् । विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १०७ ॥

मालती के फूलों को लेकर रेशमी सूतों के साथ बत्ती बना ले । फिर शुक्रवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में एरण्ड के तेल से उस बत्ती को जलाकर काजल पारे । इस काजल को आंखों में लगाये । इससे दर्शन मात्र से मनुष्य सबको मोहित करता है । इससे बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है । शङ्कर का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता ॥ १०७ ॥

प्राकृत ग्रन्थ के प्रयोग :

१. काली कुतिया का उसके द्वारा बच्चों को चूमते समय दूध निकाल-कर उसमें लौंग भिगा दे । तीन दिन बाद लौंग को निकालकर सुखावे । फिर उस लौंग को अपने वीर्य में भिगाकर सुखावे । इससे तन्त्र सिद्ध होता

है। इस लौंग को जिस स्त्री या पुरुष को खिला दिया जायगा वह वश में हो जायगा। इस तन्त्र को करके आनन्द लिया जा सकता है॥ १०८॥

२. रविवार की रात में मरघट की भस्म लाकर अपने थूक और वीर्य में साने। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। फिर जिस स्त्री को उसे खिला दिया जाय वह मोहित होगी। यह हमारा परीक्षा किया हुआ प्रयोग है॥ १०९॥

३. प्रथम शनिवार को अपने बीसो नाखूनों को कतरकर जलावे। फिर काले कौवे की जिह्वा लाकर जलावे। इसके बाद श्मशान की भस्म लावे। फिर इन तीनों वस्तुओं को एकत्र कर उसमें अपना वीर्य, थूक, जिह्वा का मैल, नाक का मैल, कान का मैल, नेत्र का मैल, दाँत का मैल और कनिष्ठा अंगुली का रुधिर मिलाये। इन सब ११ चीजों को एकत्र करके उसकी चने के बराबर गोली बनाये। शुभ दिन में इसमें से एक गोली स्त्री को खिला दे तो वह आश्चर्यजनक रूप से मोहित हो जायगी॥ ११०॥

४. पुष्य नक्षत्र में नदी के किनारे जाकर झाऊ की जड़ नीचे से निकाल लावे। उस जड़ को पीसकर उसमें कुडा की छाल का चूर्ण मिलावे। फिर उस चूर्ण को लेकर श्मशान में जाय और वहाँ की चुटकी भर भस्म उस चूर्ण में मिला दे। इस प्रकार तैयार चूर्ण को जिस स्त्री या पुरुष के सिर पर डाल दिया जाय वह साधक के साथ हो लेगा॥ १११॥

५. जो बैल रविवार के दिन मरा हो उसकी सींघ मँगाकर उसमें स्त्री के बायें पाव के नीचे की मिट्टी भर कर अपने घर में गाड दे। इससे वह स्त्री वश में हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है॥ ११२॥

६. सफेद आक की जड़, कुटकी, मोथा और जीरा—इन चारों को रुधिर में पीसकर तिलक लगाने से जो स्त्री इस तिलक को देखेगी वह वश में हो जायगी॥ ११३॥

७. बुधवार को एक जोंक लाकर उसे सुखाकर और कुमारी कन्या का काता सूत उसपर लपेट कर सफेद तिलों के तेल में उसे जलाकर काजल पारे। इस काजल को आँख में लगाकर साधक जिस स्त्री से अपनी नजर मिलावेगा वह उसके साथ हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है॥ ११४॥

८. प्रथम रजस्वला हुई स्त्री का रक्तवस्त्र लाकर उसकी बत्ती बनावे और रेंड के तेल में उसे जलाकर काजल पारे। साधक इस काजल को लगाकर जिस स्त्री को दिखायेगा वह स्त्री साधक की दीवानी होकर स्वयं ही साधक के पास आ जायगी॥ ११५॥

९. होली या दीवाली की रात को लाल रेंड के वृक्ष को एक झटके से

तोड़ लावे और उसका काजल पार कर २१ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को लगावे वह वश में हो जायगी। इसमें मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो कालाभैरूं कालीरात काला चाला आधीरात काला रे तूं मेरा वीर परनारीसे राखै सीर वेगी जा छाती धर ल्याव सूती होय तो जगाय ल्याव शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॥ ११६ ॥

१०. १० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ द्वारदेवतायै ह्लीं स्वाहा। इति दशाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र का नदी के किनारे २६ हजार जप और गूगल तथा घी से दशांश होम करने से वशीकरण यक्षिणी प्रसन्न होती है। फिर उस होम की भस्म को जिस स्त्री को लगा दे वह वश में हो जायगी ॥ ११७ ॥

११. जो रविवार को मरा हो उसकी तीन मुट्ठी भस्म लाकर शनिवार से उस भस्म पर दीपक रखकर नित्य १४४ मन्त्र का जप करे और धूप-दीप-नैवेद्य से उस दीपक की पूजा करे। ७ दिन तक ऐसा करने से सिद्धि होती है। फिर उस भस्म में से थोड़ी सी लेकर उसे २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के ऊपर उसे डाल दे वह अवश्य चली आयेगी। इसकी परीक्षा भैंस पर कर ले : इसमें मन्त्र यह है :

धूली धूलेश्वरी धूली माता परमेश्वरी धूली च चली जैजैकार इन रनचोप भरै अमुकी छाती छारछार लेन हटै दे तज घरबार मरै तो मसान लोटै जीवै तो पावपलोटै वाचा बाध सूती होय तो जगाय ला माता धूलेश्वरी तेरी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ठः ठः ठः स्वाहा ॥ ११८ ॥

१२. धोई गजी सवा हाथ लेकर उसे बगूले पर डाले। जब बगूला उसे आकाश में उड़ा ले जाय तब उसके पीछे-पीछे जाय। जब वह कपड़ा धरती पर गिरे तो उसे मिट्टी सहित उठा कर बिना पीछे देखे धोबी की शिला पर लाये। वहाँ मिट्टी को अलग करके कपड़े को जलावे। फिर उस कपड़े की राख तथा मिट्टी दोनों को लेकर गूगल की धूनी दे और घर ले आवे। कपड़े की राख लगाने से स्त्री आवेगी और मिट्टी लगाने से चली जायगी। स्त्री को वश में करने के लिये इस तन्त्र से श्रेष्ठ उपाय नहीं है ॥ ११९ ॥

१३. जिस गाय की सींघे मिली हों उन सींघों का छिलका लेकर सफेद गुञ्जासहित उसे पीस कर जिसके मस्तक पर उस चूर्ण को डाल दिया जाय वह निश्चित रूप से वशीभूत होता है ॥ १२० ॥

१४. आक की जड़, धतूरे की जड़, कबूतर की बीट, चौराहे की धूल, गाय के बाल और श्मशान की राख—इन ६ वस्तुओं को मिलाकर जिसके मस्तक पर डाला जाय वह अवश्य ही वशीभूत होता है ॥ १२१ ॥

अथाकर्षणतन्त्रम् ।

दत्तात्रेय तन्त्र में २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरुकुरु स्वाहा । इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं जपेत् । सिद्धिर्भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात् । तथा च । ईश्वर उवाच । आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः । राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे । कहा भी गया है : ईश्वर बोले : मैं आकर्षण-विधि को कहता हूं, प्रयत्नपूर्वक उसे सुनो । इससे राजा तथा प्रजा सबका आकर्षण होता है ।

कृष्णधत्तूरपत्रस्य सरोचनरसेन तु । श्वेतकर्वीरलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेन्मनुम् । यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारतापितम् । शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १२२ ॥

काले धतूरे के पत्ते के रस के साथ गोरोचन को पीस कर उस रङ्ग से सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर उक्त मन्त्र को लिखे । मन्त्र के 'अमुकस्य' पद के स्थान पर साध्य का नाम लिखे । फिर खैर के कोयले पर उसे तपाने पर सौ योजन दूर रहने वाला भी साधक के पास आ जाता है । शङ्कर का यह कथन अन्यथा नहीं होता ॥ १२२ ॥

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके । मध्ये लिखित्वा यन्नाम मधुमध्ये च निक्षिपेत् । आकर्षितः स चायाति सिद्धयोग उदाहृतः । यस्मै कस्मै न दातव्यो देवानामपि दुर्लभः ॥ १२३ ॥

अनामिका के रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र को लिखे । मन्त्र के मध्य में 'अमुकस्य' के स्थान पर साध्य का नाम लिखना चाहिये । फिर उसे मधु में डाल दे । इससे साध्य व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास आ जायगा । यह सिद्ध योग बताया गया है । इसे ऐसे-तैसे को नहीं देना चाहिये और यह देवों के लिये भी दुर्लभ है ॥ १२३ ॥

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं गवां रोचनया च तम् । तापयेत्खदिराङ्गारे

त्रिसन्ध्यं तु प्रयत्नतः। उर्वश्यपि समायाति नान्यथा शङ्करोदितम् । यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ १२४ ॥

मनुष्य की खोपड़ी पर गोरोचन से मन्त्र को लिखे । पुनः उसे खैर के अङ्गारों पर तीनों सन्ध्याओं में प्रयत्न से तपावे । उर्वशी भी हो तो भी इससे साधक के पास चली आयेगी । यह शङ्कर का कथन अन्यथा नहीं होता । देवों के लिये भी दुर्लभ इस योग को ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये ॥ १२४ ॥
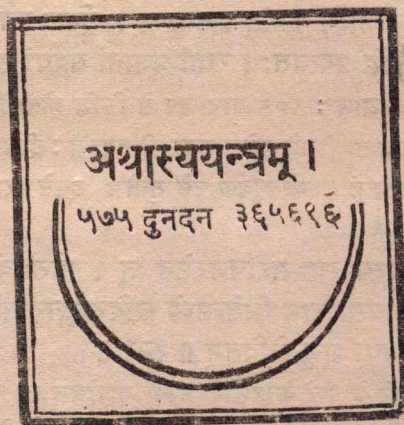
ऊपर दिये यन्त्र को घोड़े के खुर के नीचे लिख कर अग्नि में तपाने से सात दिन में ही परदेस गया व्यक्ति घर आ जाता है ॥ १२५ ॥

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६२	६६

ऊपर दिये यन्त्र को काठ की पटरी पर लिखकर आसन पर रखने से सब पक्षी अकस्मात् वहां ही आ जांयगे ॥ १२६ ॥
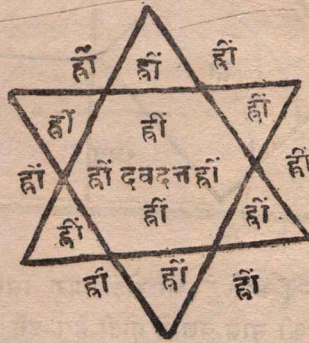
ऊपर दिये यन्त्र को गोरोचन और कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर शराव सम्पुट में रखकर पञ्चोपचार सहित पूजन करके और दूसरे दिन शिखा में बाँधकर मौन होकर जिस फल की चिन्ता करे वही फल इस यन्त्र-राज की कृपा से प्राप्त होगा ॥ १२७ ॥

ऊपर दिये षट्कोण यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर पञ्चों-पचार द्वारा पूजन करके घी के कलश में स्थापन करे और नित्य पूजन करता रहे। साथ ही मन्त्र से महादेवी की प्रार्थना करने से शीघ्र ही आकर्षण होता है। मन्त्र इस प्रकार है :

आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम्। ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥ १२८ ॥
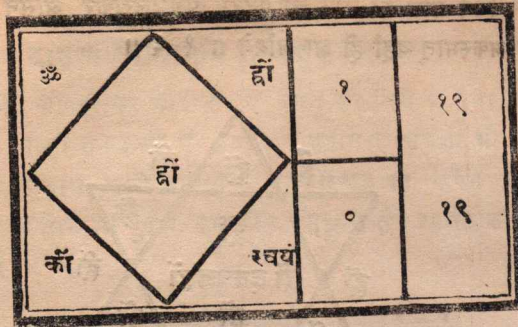
ऊपर दिये यन्त्र को गेहूं की रोटी पर लिखकर काली कुतिया को खिलाने से साधक की सास वश में होती है। इसे ही काले कुत्ते को खिलाने से ससुर वश में होता है ॥ १२९ ॥
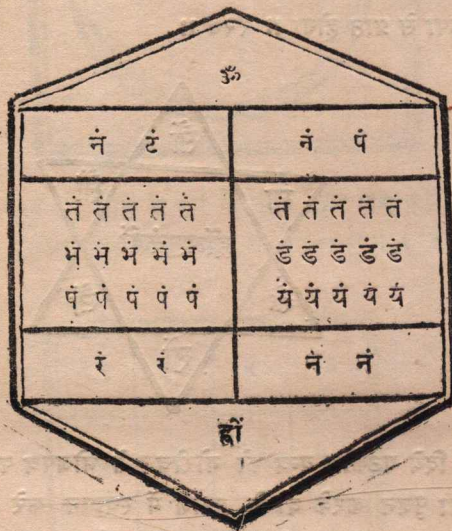
ऊपर दिये यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् पूजन करे। फिर इसे सोने में मढ़वाकर भुजा में बांधने से जो कोई साधक को देखेगा वह वश में हो जायगा ॥ १३० ॥
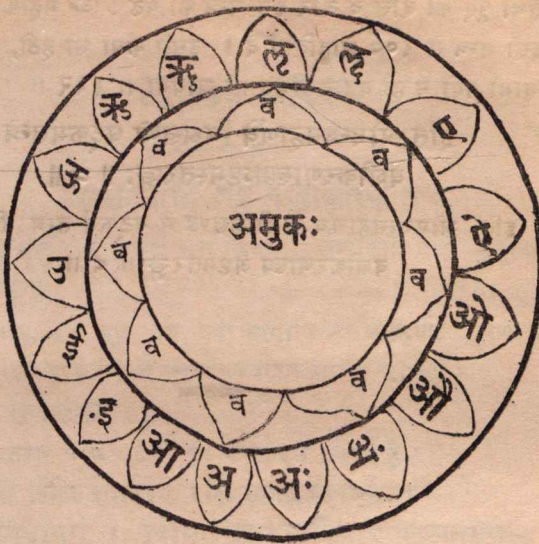
ऊपर दिये यन्त्र को काँसे के पात्र में चमेली की कलम से गोरोचन और चन्दन द्वारा लिखकर चमेली इत्यादि के सफेद फूलों से ही पूजन करे, सुगन्धित द्रव्य चढ़ावे और फिर एक सफेद वस्त्र ओढ़ा दे। इसके बाद इस मोहन नामक यन्त्र को सोने या चाँदी में मढ़वाकर सर, भुजा अथवा गले में बांधे। इससे जिस पुरुष या स्त्री को वश में करने की इच्छा होगी वह दासवत् वशीभूत होगा ॥ १३१ ॥

कालानलयन्त्र : इस यन्त्र में तीन रेखाओं से आवृत्त चतुष्कोण में उतने ही ह्लीं लिखे जितने साध्य के नाम में अक्षर हों। फिर नाम के प्रत्येक अक्षर को ह्लीं के गर्भ में रख देवे। इस प्रकार का यन्त्र गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर एक चाँदी की प्रतिमा के हृदय में रखकर उस मूर्ति का नित्य पूजन
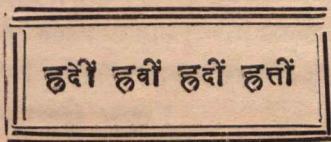
करे और चतुर्दशी की रात को चूहे की बिल में उसे गाड़ दे। बकरे के रुधिर

भात तथा पूए की बलि दे और इस मन्त्र को पढे : 'ॐ महाकालाय स्वाहा ।' फिर इसी मन्त्र से १०८ आहुतियाँ दे । इससे कैसा भी हठी, क्रूर और दुराग्रही स्वामी क्यों न हो वह वशीभूत हो जायगा ॥ १३२ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे षट्कर्मतन्त्रे
वशीकरणाख्योऽष्टमस्तरङ्गः ॥ ८ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णव के मिश्रखण्ड में षट्कर्म तन्त्र विषयक
वशीकरणाख्य अष्टमतरङ्ग ॥ ८ ॥

नवम तरंग

उच्चाटनादि शत्रु पीडाकारक तन्त्र

हृतं येन गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकाः । उच्चाटनं वधं कुर्याद्दुष्टदण्डो विधीयते ॥ १ ॥

जिसने घर, खेत, पुत्र, धन, स्त्री इत्यादि का बलपूर्वक हरण कर लिया है—ऐसे दुष्ट को दण्ड देने के लिये उच्चाटन करना चाहिये ।

तत्रादौ उच्चाटनम् ।

वीरभद्र तन्त्र में ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अंघ्रि अंघ्रि स्वाहा । इति सप्ताक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पूर्वाभाद्रपदायुतार्किवारे पिप्पलमूलस्य कीलकं कृत्वा सप्तवारमभिमन्त्र्य यस्य द्वारे निखनेत्तस्य उच्चाटनं भवति ॥ १ ॥

इसका विधान : पूर्वाभाद्रपद में रविवार के दिन पीपल की जड़ की कील बनाकर इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दे उसका उच्चाटन होता है ॥ १ ॥

अन्य १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं दण्डिन् दण्डिन् महादण्डिन् नमोऽस्तु ते ठः ठः । इति षोडशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : नरास्थिकीलकं चतुरंगुलं गृहीत्वा मन्त्रेणाभिमन्त्र्य यस्य द्वारे निखनेत् अवश्यं तस्योच्चाटनं भवति ॥ २ ॥

इसका विधान : मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील लेकर उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके द्वार पर गाड़ दे उसका अवश्य उच्चाटन होता है ॥ २ ॥

दत्तात्रेय तन्त्र में ५५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रं बान्धवैः सह हनहन दहदह पचपच शीघ्रमुच्चाटयउच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः । इति पञ्चाधिकपञ्चाशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात् ।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

ब्रह्मदण्डीं चिताभस्म शिवलिङ्गं प्रलेपितम्। सिद्धार्थं चैव संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे। उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्रीपुत्रपशुबान्धवैः। विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३ ॥

ब्रह्मदण्डी और चिताभस्म लेकर शिवलिङ्ग पर लेप करे और उसमें सरसों मिलाकर शनिवार के दिन जिसके घर में फेंक दे उसका स्त्री, पुत्र, पशु और कुटुम्बियों सहित उच्चाटन होता है। यह बिना मन्त्र के ही सिद्ध होनेवाला सिद्ध योग कहा गया है ॥ ३ ॥

खरस्य वामपादाधःस्थितां संगृह्य धूलिकाम्। मध्याह्ने भौमवारे च यद्देहे निक्षिपेन्नरः। उच्चाटनं भवेत्तस्य नरस्य मरणान्तिकम्। विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ४ ॥

गदहे के बायें पैर के नीचे की धूल को मङ्गलवार को दोपहर के समय लेकर जिसके घर में फेंक दे उसका जीवनपर्यन्त उच्चाटन हो जाता है। यह बिना मन्त्र के ही सिद्धि देनेवाला सिद्ध योग कहा गया है ॥ ४ ॥

सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः। उच्चाटनं भवेत्तस्य तदुद्धारे पुनः सुखी ॥ ५ ॥

शिव के निर्माल्य को पीली सरसों के साथ जिसके घर में गाड़ दिया जाय उसका शीघ्र उच्चाटन हो जाता है। फिर उसे उखाड़ देने से वह सुखी हो जाता है ॥ ५ ॥

काकपक्षं रवौ वारे यद्गृहे निखनेन्नरः। उच्चाटनं भवेत्तस्य नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ६ ॥

रविवार के दिन कौवे के पङ्ख को जिसके घर में गाड़ दिया जाय उसका निश्चित रूप से उच्चाटन होता है। शङ्कर का यह वचन अन्यथा नहीं होता ॥ ६ ॥

उल्लूपक्षं कुजे वारे यद्गृहे निखनेन्नरः। उच्चाटनं भवेत्तस्य विना मन्त्रेण निश्चितम् ॥ ७ ॥

उल्लू का पङ्ख मङ्गलवार को जिसके घर में गाड़ दिया जाय उसका उच्चाटन हो जाता है। यह मन्त्र के बिना ही निश्चित रूप से सिद्ध होता है ॥ ७ ॥

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धार्थसहसंयुताम्। यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥ ८ ॥

उल्लू की बिष्ठा को लेकर उसमें पीली सरसों मिलाकर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को जिसके अङ्ग पर डाल दिया जाय उसका तत्काल उच्चाटन हो जाता है ॥ ८ ॥

गृहीत्वौदुम्बरं कीलं मन्त्रेण चतुरंगुलम् । तं यस्य निखनेद्गृहे ह्यवश्योच्चाटनं भवेत् ॥ ९ ॥

गूलर वृक्ष के लकड़ी की चार अंगुल प्रमाण एक कील को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके लावे। जिसके घर में इस कील को गाड़ दे उसका अवश्य उच्चाटन होता है ॥ ९ ॥

उलूककाकयोः पक्षान्हुत्वा ज्येष्ठाधिकं शतम् । यन्नाम्ना मन्त्रयोगोऽस्ति तस्योच्चाटनमादिशेत् ॥ १० ॥

कौवे और उल्लू के पङ्ख को जिसके नाम से १०८ बार मन्त्र सहित हवन किया जाय उसका उच्चाटन हो जाता है ॥ १० ॥

नरास्थिजातं कीलं वै निखन्याच्चतुरंगुलम् । मूत्रयुक्तमरिद्वारे तस्य ह्युच्चाटनं भवेत् ॥ ११ ॥

मनुष्य के हड्डी की चार अंगुल प्रमाण कील लेकर मन्त्र सहित जिस शत्रु के द्वार पर गाड़ दे उसका शीघ्र ही उच्चाटन हो जाता है ॥ ११ ॥

अथ शत्रुपीडाकारकमन्त्रः ।

तत्रादौ चौकीस्थापनम् ।

प्रथम मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वीरवीर महावीर सातसमुद्रका सोख्या नीर अमुकाके ऊपर चौकी चढ हियो फोड चोटी चढ सांस न आवै पड्यो रहै काया माहि जीव रहै लाललंगोट तेल सिन्दूर पूजा मांगो महावीर अन्तर कपडापर तेलसिन्दूर हजरतवीरकी चौकी रहै हजरतवीरकी चौकी रहै । इति मन्त्रः प्रथमः ।

द्वितीय मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वीरवीर महावीर महीकील कील बुवुवोल किलकार चुचुकार न चुचुकारै तो न कील करै तो आपका खाया पीया हराम करै । इति मन्त्रो द्वितीयः ।

इन दोनों मन्त्रों का एक ही विधान है। मङ्गलवार के दिन अर्धरात्रि में तेल, सिन्दूर और रक्तवस्त्र मन्त्र द्वारा हनुमानजी को चढ़ावे और भीगे चने की दाल का नैवेद्य रक्खे। फिर एक दूसरे कपड़े में तेल, सिन्दूर लगाकर मन्त्र द्वारा शत्रु के नाम के साथ उसमें सात सूई चुभावे। फिर उस कपड़े को एक मिट्टी की मटकी में डालकर, मटकी का मुख बन्द करके परि-

हीडा अथवा जाजरूल में गाड़ दे तो शत्रु की काया शीतल होवे और चौकी चढ़े। जब उसे अच्छा करना हो तो मटकी को खोलकर उसमें से कपड़ा निकाल ले। फिर सूई निकालकर कपड़े को धो डाले। इससे शत्रु की स्थिति पुनः ठीक हो जायगी ॥ १२ ॥

अथ प्रेतावेशकरणम्।

६३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोर दंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्षभुतेनानेन शङ्कर अमुकं हनहन दहदह पचपच गृह्णगृह्ण हुं फट् स्वाहा। इति त्र्यधिकषष्ट्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य **विधानम् :** निम्बकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः। शत्रु-केशान्समालिप्य ततो नाम समालिखेत् ॥ १ ॥ चिताङ्गारकृतन्नाम धूपं दद्यात्सुरेश्वरि। त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम् ॥ २ ॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरशतं जपेत्। प्रेतो गृह्णाति तं शीघ्रं प्राहुर्मन्त्रविदस्त्विदम् ॥ ३ ॥

इसका विधान : नीम की लकड़ी की चार अंगुल की कील लेकर उसके ऊपर शत्रु की चोटी के केशों को लपेटे और उस कील द्वारा चिता के कोयले से शत्रु का नाम लिखकर धूप दे और मन्त्र का जप करे। कृष्ण-पक्ष की अष्टमी से दूसरे महीने की चतुर्दशी तक नित्य ऐसा ही करने से उस शत्रु को प्रेतग्रहण कर लेते हैं ऐसा मन्त्रज्ञाताओं का कथन है ॥ १३ ॥

अथ दुर्गाऽऽवेशकरणम्।

४५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सिद्धि गुरु आज्ञा अं कं चं टं तं पं यं शं दुर्गं देवि श्रीमति श्रीश्रीश्रीभगवति देवि फट्टाकरस्यान्तं दुरयस्य स्वाहा। इति पञ्चचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : चतुष्पथस्थितखर्परोपरि सप्तवारं मन्त्रं लिखित्वा पुनः ॐ आवेशत्वभयसत्त्वरधचारय हुं फट्। इत्यष्टादशाक्षरमन्त्रद्वारा शत्रुवस्त्रे निधापयेत्। अवश्यमावेशयति अत्यन्तं पीडयति च ॥ १ ॥

इसका विधान : सर्वप्रथम चौराहे के ठीकरे पर सात बार मन्त्र को लिखे। पुनः 'ॐ आवेशत्वभयसत्त्वरधचारय हुं फट्।' इस १८ अक्षरों के मन्त्र द्वारा उस ठीकरे को शत्रु के वस्त्रों में रख दे। इससे निश्चित रूप से शत्रु आवेशित होकर अत्यन्त पीड़ा प्राप्त करता है ॥ १ ॥

अथ भूतवादः ।

भूतवादं प्रवक्ष्यामि यथा रावणभाषितम् । एतस्य ज्ञानमात्रेण शत्रवो यान्ति वश्यताम् ॥ १ ॥ निर्यासं शाल्मली चैव बीजानि कनकानि च । भावयेत्सप्तरात्रेण भक्ष्ये पाने च दापयेत् । ततो भक्षणमात्रेण ग्रहैः संगृह्यते नरः । शर्करादुग्धपानेन सुस्थो भवति नान्यथा ॥ २ ॥

अब भूतवाद कहते हैं जैसा कि रावण ने उसे बताया है । इसके ज्ञान मात्र से शत्रु वश में हो जाते हैं । सेमर के बीजों का काढ़ा करके उसमें धतूरे के बीज को सात दिन तक भावना दे । इसके बाद इन बीजों को खान-पान में देने से इनके भक्षण मात्र से ही प्राणी को ग्रह ग्रहण कर लेते हैं । फिर शक्कर तथा दूध पिलाने से आरोग्य होता है ॥ २ ॥

अथ भूतकरणम् ।

अथ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्व समासतः । भल्लातकरसे गुञ्जाविष-चित्रकमेव च । कपिकच्छुकरोम्णां हि चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः । प्रदाना-त्तस्य नियतं भूताकरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥

अब भूतकरण कहते हैं उसे ध्यानपूर्वक सुनो । भल्लातक (भिलावा) के रस में गुञ्जा, विष, चित्रक और केंवाच के रोयें को महीन पीसकर जिसे दिया जाय उसे भूत ग्रहण कर लेते हैं । फिर खस, चन्दन, काङ्गनी, तगर, रक्तचन्दन और कूट के लेप से वह भूतग्रसित सुखी होता है ॥ ३ ॥

अथ विक्षिप्तकरणम् ।

उल्लूविष्ठां गृहीत्वा त्वेरण्डतैलेन पेषयेत् । यस्याङ्गे निक्षिपेद्बिन्दुं विक्षिप्तो जायते नरः ॥ ४ ॥

उल्लू की बिष्ठा को लेकर उसे रेंड़ के तेल में पीसकर जिसके अङ्ग पर छिड़क दिया जाय वह विक्षिप्त हो जाता है ॥ ४ ॥

एक अन्य २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा । इत्येकत्रिंश-त्यक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : ऊंट की लीद को छाया में सुखाकर उसमें से एक रत्ती लेकर १०८ मन्त्र से अभिमन्त्रित करके पान में खिलाने से शत्रु बावला (पागल) हो जाता है ॥ ५ ॥

अथ ज्वरकरणम् ।

भूतडामर तन्त्र में ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ रांरोंह्रींस्वरेह्रुं क्षीं । इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण गोरोचनमरहठीराजिकापिप्पली-निम्बपत्रमधुघृततैलेन समभागमेकीकृत्य मषिं कृत्वा शत्रुनक्षत्रकाष्ठलोह-योर्वा लेखनीद्वारा निम्बकाष्ठविनायकपृष्ठोपरि साध्य नाम लिखित्वा उपरोक्तधूपं दत्त्वा तस्याग्रे मन्त्रं जपेत्। सद्यो ज्वरेण गृह्यते विलुप्ते शान्तिः ॥ ६ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से गोरोचन, मरहठी, राई, पीपर, निम्ब-पत्र, मधु, घी तथा तेल समभाग लेकर एक में पीसकर रोशनाई बनाये। इस रोशनाई से शत्रु के नक्षत्रवृक्ष के काष्ठ या धातु की कलम से नीम के काठ के गणेश (विनायक) के ऊपर साध्य का नाम लिखकर उपरोक्त धूप देकर उसके आगे मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से साध्य शीघ्र ही ज्वर ग्रसित हो जाता है। विलोप होने पर शान्ति होती है ॥ ६ ॥

एक अन्य ८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ क्षः हुं अमुकं ठं ठः। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण चिञ्चाकाष्ठमयकीलकं अष्टादशांगुलं सहस्रेणाभिमन्त्र्य यस्य नाम्ना भूमौ निखनेत् स ज्वरेण गृह्यते उद्धृते शान्तिः ॥ ७ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से १८ अंगुल की इमली की लकड़ी की कील एक हजार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से भूमि में गाड़ दे वह ज्वरग्रसित होता है। कील को निकाल लेने से शान्ति होती है ॥ ७ ॥

२२ अक्षरों का अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कटुके कटुकपत्रे पीलपादिनि कुरु कुरु ज्वरं कुरु। इति द्वाविंश-त्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : राजिकालवणेन प्रतिदिनं सहस्रं जुहुयात् तदा ज्वरेण गृह्यते न सन्देहः ॥ ८ ॥

इसका विधान : राई तथा नमक से प्रतिदिन १ हजार होम करने से साध्य ज्वरग्रसित हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ८ ॥

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ह्लींनंनांनिनींनुंनूंनेंनैंनोंनौंनंनः हुंहुंठंठः। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन चतुर्दशांगुलमर्कं कीलकं गृहीत्वा सहस्रमभि-मन्त्र्य यस्य गृहे निखनेत् स सकुटुम्बो ज्वरेण गृह्यते उद्धृते शान्तिः ॥९॥

इसका विधान : इसके लिये १४ अंगुल मदार की कील लेकर मन्त्र

से उसे १ हजार बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दे वह सपरिवार ज्वर से ग्रसित होता है। कील निकाल लेने से शान्ति होती है।

कुछ अन्य प्रयोग :

१. रविवार को पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायण की जड़ को लेकर उसमें सोंठ, मिर्च तथा पीपर मिलाकर बकरी के दूध में पीसकर गोली बनावे। इस गोली को धूप देकर जिस शत्रु के मस्तक पर डाले उसको ज्वर ग्रसित कर लेता है। काँजी से स्नान कराने पर शान्ति हो जाती है।

२. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ चामुण्डे हनहन दहदह पचपच अमुकं गृहाण गृहाण स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मन्त्र द्वारा कड़वा तेल और नीम के पत्तों का होम करने से शत्रु ज्वरग्रसित होता है।

३. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ डंडांडिडींडुंडूंडेंडैंडोंडौंडंडः अमुकं गृहाण गृहाण हुंहुंठःठः। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से मनुष्य की अस्थि की कील को एक हजार बार अभिमन्त्रित करके चिता में डालने से शत्रु ज्वर से पीडित होकर नष्ट हो जाता है ॥१०॥

अथ पगच्छेदनम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो गण्डियाभैरो गलत हाथ माथे गघरी मसकदारू जहां भेजूं तहां जाय अमुकाकी गांड मार गांडमें लोही चलाव न चलावै तो लोना-चमारीकी कुण्डमें जाय फुरो मन्त्र फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सवासेर मद्य, सवा पाव काला उड़द, तिल दो पैसे भर—इन सबको भैरव को भेंट देकर सर्प की हड्डी की माला से नित्य ५०० मन्त्र का जप करने से वैरी की गुदा से रुधिर गिरने लगेगा ॥ ११ ॥

एक अन्य ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सूर्यवरण निर्मल तारा साहीका कांटा नींबू मांरा अक्कासते तारा टूटा अमुकिया तेरा पैर छूटा।

इसका विधान : रविवार, शनिवार या मङ्गलवार को अर्धरात्रि के समय कूएं में पैर लटकाकर नङ्गा बैठ जाय और मुख उस ओर करे जिधर वाञ्छित स्त्री का घर हो। बायें हाथ में नीबू और दाहिने में सेहनर (नर साही) का काँटा लेकर आकाश की ओर देखता हुआ मन्त्र पढ़ता रहे।

जब तारा टूटने लगे तब मन्त्र द्वारा उस काँटे को नीबू के भीतर इस प्रकार चुभाये कि काँटा केवल आधे नीबू में चुभे, पार न हो। पार हो जाने पर प्राणनाश का भय होता है। यह कृत्य करने से स्त्री को तत्काल रुधिर गिरने लगेगा, इसमें सन्देह नहीं है। उस नीबू को लाकर जल के समीप शीतल स्थान में रखने से रुधिर गिरता रहेगा। परन्तु उसका शरीर क्षीण नहीं होगा। किन्तु यदि उस नीबू को धूप में रक्खे तो शरीर भी सूखने लगेगा। उक्त प्रकार से तारा टूटने पर ही काँटे को नीबू के बाहर निकालकर नीबू के छिद्र को किसी वस्तु से बन्द करने से रुधिर का निकलना बन्द होकर आराम होगा ॥ १२ ॥

कुछ अन्य प्रयोग :

१. मन्त्र इस प्रकार है :

उलटा पुलटा नारा चलै, अर्जुन मारा बान। अमुकिया तेरा गर्भ चलै, कंसासुरकी आन। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सफेद फूलवाले हुलहुल के १२१ बीजों को १२१ मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके पान में रखकर मुंह में चबाये और पीक थूके। जो स्त्री उस पीक का उल्लङ्घन करेगी उसको (योनि से) रक्त गिरने लगेगा। फिर उस पान की सिट्टी खिला देने से रुधिरस्राव बन्द हो जायगा यह सर्वथा सत्य है ॥ १३ ॥

२. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हकालूं चौंसठ योगिनी हकालूं बावन वीर घस घट लोही झिरै नैर झिरै वानी मरैरे रक्तिया वीर हियो धरै ना धीर रक्तियो रक्तियो रङ्गकी झडी रक्तियो मांगै मासकी बडी चावै चणा चलावै पीड मसाणकी माटी भौराके बिलमें लपेटी जिस्के ऊपर करूं सही स्त्री झरती दीखै शब्द साचा पिण्डकाचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : श्मशान की ७ कङ्कड़ियाँ लेकर कूएं के जगत के ऊपर २१ बार अभिमन्त्रित करके धूप दे और उनसे स्त्री को मारे। इससे उसको रक्तस्राव होने लगेगा—यह सत्य है।

३. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरुको काला कलवां तूं अवधूत हकालूंगा दबाव लाऊ भूत हाड काट चटपटी लगाव छाती छोल पैर चलाव हिये पैठि हूल चलाव चलावचलाव रे कालाभैरूं कालिकाके पूत चलावेगी हुकम साथ न चलावै तो माता चामुण्डाका तीर चूकै। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार के दिन काला चिड़ा पकड़े, रेशम का सवा

दो हाथ का और सुत का दो हाथ का डोरा बनावे। दो दीपक—एक घी का और दूसरा तेल का जलावे। तेल के दीपक में ढाई पाव तेल और घी के दीपक में सवा पाव घी डाले। सवा पैसा भर उड़द घी के दीपक में डाले। सवा पैसा भर उड़द और उक्त सूत का डोरा (धागा) तेल के दीपक में डाले और मन्त्र पढे। रेशम के डोरे से चिड़े को फाँसी लगावे और गला काट डाले। जो रक्त गिरे उसे तेल के दीपक में एकत्र करे। चारों पहरों में सात-सात मन्त्र पढे और गूगल की धूप देता जाय। जब रात व्यतीत होने पर दिन निकल आये तब सिद्ध हुआ जानना चाहिये। फिर तेल के दीपक की १ उड़द सात बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को मारा जाय और रेशम का डोरा स्पर्श कराया जाय उसको रक्तस्राव होने लगेगा। घी के दीपक का उड़द उसे देने से रक्तस्राव शान्त होगा।

४. सत्यानासी का बीज २ माशा और चीनी ४ माशा खिलाने से मासिक धर्म के पूर्व ही रक्तस्राव होने लगेगा इसमें सन्देह नहीं है। यह सिद्ध प्रयोग है।

५. खटमल में दो विशेष गुण हैं। उसे नीचे-ऊपर के दो भागों में विभक्त करके यदि नीचे के भाग को स्त्री को खिला दिया जाय तो तत्काल रक्तस्राव होने लगेगा। फिर ऊपर के भाग को खिला देने से रक्तस्राव रुक जायगा॥ १४॥

६. कौवे की चोंच से रविवार को मार्ग में रेखा खींच दे। यदि स्त्री उस रेखा का उल्लंघन करेगी तो उसको रक्तस्राव होने लगेगा। फिर उसी चोंच को धोकर उसके धोवन को पिलाने से रक्तस्राव बन्द होगा॥ १५॥

अथ शत्रूणां मूत्रावरोधः। भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः। कृकलाया मुखे क्षिप्त्वा कंकवृक्षे च बन्धयेत्॥ १॥ मूत्रबन्धो भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी। विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोगः उदाहृतः।१६

मङ्गलवार को शत्रु द्वारा मूत्रत्याग किये स्थान की मिट्टी लेकर गिरगिट के मुख में डालकर उसे धतूरे के वृक्ष से बाँध दे तो शत्रु का मूत्रबन्धन हो जायगा। उसको खोल देनें से पुनः शान्ति होगी। इसमें बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है यह सिद्ध योग कहा गया है॥ १६॥

दत्तात्रेयतन्त्रे : बुधे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः। शत्रुर्मूत्रयते यत्र कृकलां तत्र निक्षिपेत्। निखनेद्भूमिमध्ये च उद्धृते च पुनः सुखी। नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्॥ १॥

दत्तात्रेय तन्त्र का एक अन्य प्रयोग : बुधवार को या शनिवार को गिरगिट को यत्न से पकड़ ले। शत्रु जहाँ मूतता हो वहाँ गिरगिट को

खोदकर गाड़ दे तो शत्रु का मूत्रबन्ध होगा। गिरगिट को निकाल लेने से सुखी होगा। इससे शत्रु नपुंसक भी हो जाता है—यह शङ्कर का कथन असत्य नहीं हो सकता।

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग : रविवार के दिन मरे हुये छछूदर की खाल में शत्रु के मूत्र की मिट्टी भरकर ऊंचे स्थान में लटकाने से मूत्र बन्द हो जाता है और वह गूंगा तथा पागल हो जाता है। उस मिट्टी को छछूंदर की खाल से निकाल देने से सुख होता है। शत्रु के मूत्र में बिच्छू का डङ्क गाड़ने से भी शत्र को अत्यन्त पीड़ा होती है। फिर डङ्क निकालने से शान्ति होती है ॥ १७ ॥

अथ शत्रुशिरसि पादुकाहननम् ।

चार अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

याकह्हारो। इति चतुरक्षरो मन्त्रः ।

इसका विधान : इस मन्त्र को प्रतिदिन १० हजार जपने और लोहबान का दशांश होम करने से २१ दिन में सिद्ध हो जाता है। फिर निकृष्ट मास के अन्त में मङ्गलवार को नीचे दिये यन्त्र को फौलाद की छुरी से कच्ची

द	स	म	न	म	ल	व	ह	अ
ह	द	थ	ज	य	फ	व	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	न	अनाम	य	न	ग
अ	अ	म	व	त	व	व	ह	ल
य	व	अ	अ	द	य	त	व	त

ईंट के एक ओर लिखकर दूसरी ओर शत्रु का नाम लिखे। फिर अर्द्धरात्रि कें समय घी का दीपक, फूल, मिठाई और अतर चढ़ाकर एक बार 'बिस्मिल्ला-हेर्रहेमानिर्रहीम' यह पढ़कर :

अल्लहुम्मसल्लअलामुहम्मदिनवआला आलमुहम्मदिनववारकवसल्लम।

इस दारूद को ४१ बार पढ़े और फिर :

याकह्हारो या इतराइलो या दौराइलो या अमवाकिलो अमुकेकी समस्त देह और मुहको मेरे जूतीकी चोटसे घायल करो वहक्वयाक-ह्हारो।

इस जूती मारनेवाले मन्त्र को एक हजार बार पढ़ें किन्तु प्रत्येक दश-बार पढ़ने पर उक्त ईंट पर एक-एक जूता मारता रहे। सैकड़े पीछ पाँच बार और जूता मारे और उक्त दारूद को पढे। ऐसा करने से अवश्य ही शत्रु पर जूतों की मार पड़ती है ॥ १८ ॥

कुछ अन्य प्रयोग :

१. मन्त्र इस प्रकार है :

अल्लाहरखजलकीमौजकुतुवकासीरमहम्मदकागजवखुदाईकापाकहर-याजवरमारेमारे फलानेके सिर पैजार। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र को जूते के तले में लिख ले। फिर शत्रु की मूर्ति बनाकर उसका नाम लेकर उस मूर्ति पर जूता मारने से निश्चित रूप से शत्रु पर जूतों की मार पड़ेगी ॥ १९ ॥

२. शनिवार को जलाये हुये तेली या ठाकुर के मुर्दे की कमर के नीचे से एक अङ्गारा लेकर उस पर मद्य का कुल्ला करे। जब अङ्गारा बुझ जाय तब उसे उठा लाये और पीछे मुड़कर नहीं देखे। लाकर उस कोयले को गूगल को धूनी देकर एक बताशा आग पर रखकर फूल चढावे तो भूत प्रसन्न होता है। फिर उस कोयले में हरताल मिलाकर उससे पुराने कपड़े या कफन के कपड़े पर नीचे दिये यन्त्र को लिखकर नीचे की ओर शत्रु का

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५८

नाम लिखकर यन्त्र पर जूता मारे तो निश्चित रूप से शत्रु की देह पर जूते लगेंगे ॥ २० ॥

३. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त माता अञ्जनी पुत्र हलहलन्त आवो चढन्त आवो गढकिला तोडन्त आवो लङ्का जालि वालि भस्मकरि आवो ले लङ्का लंगूरते लपटाय सुमेरते पटकावो चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिलगावो मङ्गलचार जीते राम लक्ष्मण हनूमानजी आवोजी तुम आवो सात पानका वीडा चावत मस्तक सिन्दूर चढावो आवो मन्दोदरीके सिंहासन डुलन्ता आवो यहां आवो हनुमान माया जागते नृसिंह माया आगे भैरूं किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजै दुर्जनको डार दुष्टको मार संहार राजा हमारे सतगुरू हम सतगुरुके बालका गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : मन्त्र की सिद्धि के लिये २१ दिन या ४१ दिन में दश हजार जप करे, पान का बीड़ा तथा मोदक का भोग लगावे, नैवेद्य द्वारा हनुमानजी का पूजन करे और सिन्दूर तथा सुगन्धित पुष्प चढ़ावे। फिर भूमि पर शत्रु की एक प्रतिमा बना कर यथोचित बीजों को लिखे

(देखिये चित्र)। उसके वक्ष पर शत्रु का नाम लिखकर उस पर मन्त्र से

दो जूते मारे। यदि प्रतिमा के सर पर जूता मारा जाय तो शत्रु का सर फूट जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह पागल हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है ॥ २१ ॥

अथ शत्रुपीडनम् ।

४. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव त्रिपुरवीर मम शत्रोरमुकस्य पीडां कुरुकुरु स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर नीचे दिये यन्त्र
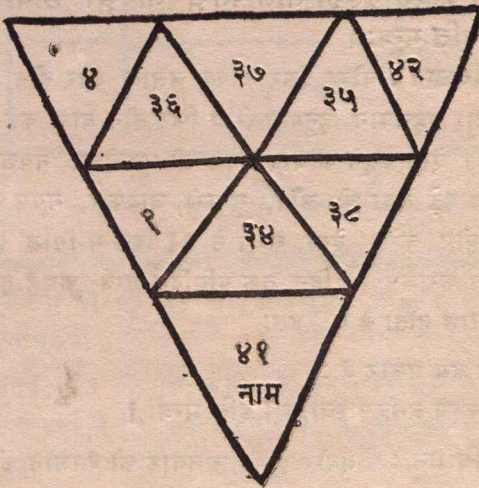
को लिखे। उसमें नीचे शत्रु का नाम और उसकी माता का नाम लिख कर यन्त्र को गूगल की धूप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के चौखट के नीचे या आंगन में अथवा मार्ग में गाड़ दे। जब शत्रु इस यन्त्र का उल्लङ्घन करेगा तो उसे अत्यन्त पीड़ा होगी। अथवा शत्रु के पाँव के नीचे की मृत्तिका को सात करेलियों में भरकर प्रत्येक करेलो के ऊपर सात बार मन्त्र पढकर

चरखे के टेकुये में पिरोये और फिर उन्हें अग्नि में तपाये। इससे वैरी को अवश्यमेव अत्यन्त कष्ट होगा ॥ २२ ॥

५. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कालाभैरूं झङ्कालका तीर मार तोड दुश्मनकी छाती घोर हाथ कलेजो काढ बत्तीस दांत तोड यह शब्द नाचलै तो खडी योगिनी का तीर छूटै गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरुको। इति मन्त्रः।

इसका विधान : कनेर का २१ फूल और गूगल की २१ गोली सरसों के तेल सहित मन्त्र पढ़-पढ़कर होम करे तो ११ दिन अथवा २१ दिन में शत्रु को पीड़ा प्राप्त होगी ॥ २३ ॥

६. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेश गुरूको लाल पलङ्ग औरङ्गी छाया काढ कलेजा तूही चख। इति मन्त्रः।

इसका विधान : चौका देकर दीपक जलावे और तीन बार कहे कि 'आओ महावीर पहलवान हनुमानजी'। फिर तीन बार कहे 'आओ कलुवा वीर रणधीर।' ऐसा कहने के बाद गूगल की धूप देकर नैवेद्य चढ़ावे, नित्य १ हजार मन्त्र पढ़ें तथा घी, लौंग, सुपारी, जायफल, गूगल और मिश्री का १२५ बार होम करे। ऐसा करने से ११ दिन में सिद्धि होती है। फिर ब्राह्मण भोजन कराकर २१ दिन तक प्रतिदिन मन्त्र का १ हजार जप करे तो शत्रु का नाश होता है ॥ २४ ॥

७. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अमुकस्य हनहन स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सोमवार या मङ्गलवार को श्मशान की भस्म लाकर उसमें राई मिलाकर आक की समिधा पर उससे शत्रु के नाम से नित्य २० आहुतियाँ देने से शत्रु अत्यन्त पीड़ा और दुःख प्राप्त करेगा ॥ २५ ॥

८. शनिवार को या रविवार को शत्रु की औंधी हुई जूती को लेकर पानी के साथ गर्म करे तो शत्रु बीमार होकर अत्यन्त दुःख पायेगा ॥ २६ ॥

९. रविवार को श्मशान में जाकर मुर्दे की चिता से एक अङ्गारा निकालकर उस पर मद्य का कुल्ला करे। अङ्गारा जब ठण्डा हो जाय तब उसे लाकर हरताल के साथ घिसकर स्याही बनावे। इस स्याही से लोहे की कलम द्वारा कागज पर नीचे दिया मन्त्र लिखे और उसे धूप देकर
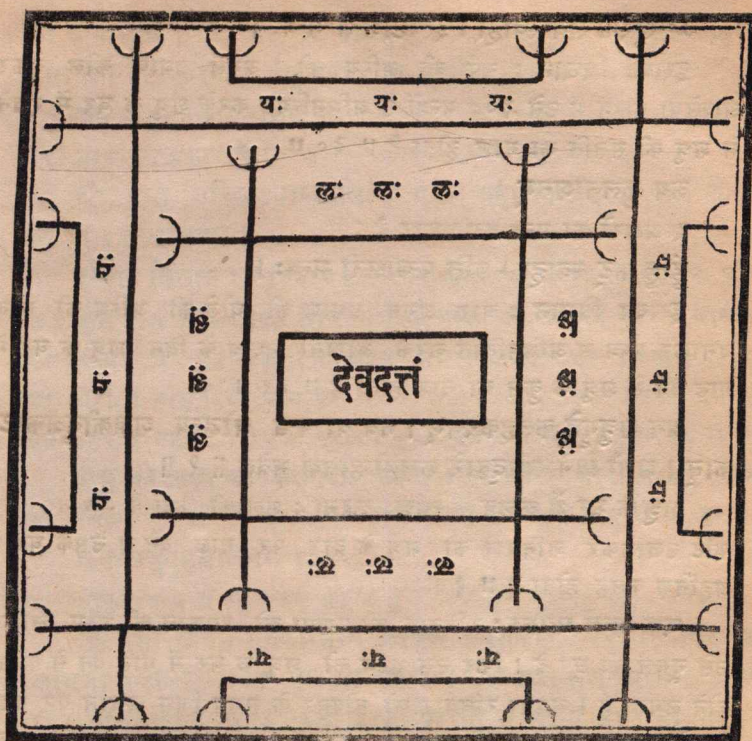
श्मशान में अथवा चौराहे पर गाड़ दे। इससे तीन मास में ही शत्रु का नाश होगा ॥ २७ ॥

१०. पहले नील की एक डली को मृग (हिरन) के मूत्र में भिगाकर प्रातःकाल उसी में एक कपड़ा रँग ले। इस रँगे कपड़े को लेकर श्मशान जाय और वहाँ के कोयले से उस कपड़े पर शत्रु की मूर्ति लिखे। फिर उसमें सात सुइयाँ चुभोकर पुड़िये की तरह लपेट दे। इस प्रकार लिपटे कपड़े को शत्रु के घर के पीछे गाड़ने से शत्रु का घर उजड़ जायगा ॥ २८ ॥

११. हस्त नक्षत्र में सेंधानमक से गणेश की प्रतिमा बनाकर उसका वही नाम रक्खे जो शत्रु का नाम हो। फिर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके उस मूर्ति को जल में स्थापित करे। ज्यों-ज्यों वह मूर्ति छीजेगी त्यों-त्यों शत्रु का नाश होगा ॥ २९ ॥

अथ सन्ततिनाशनम् ।

८ अक्षर का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ खुरेश्वराय स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : सर्प की अस्थि की १ अंगुल प्रमाण कील लेकर आश्लेषा नक्षत्र में उसे १०८ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में रखने से शत्रु की संतति का नाश होता है॥ ३०॥

अथ कुलनाशनम्।

५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

हुं हुं फट् स्वाहा। इति पञ्चाक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : चार अंगुल प्रमाण की घोड़े की अस्थि की कील बनाकर मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अश्विनी नक्षत्र के दिन शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु के कुल का नाश होता है॥ ३१॥

अथ शत्रुगृहे कलहकरणम्। नव वा पञ्च चोद्धृत्य शल्लकीवृक्षकण्टकान्। शनौ दिने खनेद्द्वारे कलहोऽहर्निशं भवेत्॥ १॥

शत्रु के घर में कलह उत्पन्न करना : शल्लकी वृक्ष के नव या पाँच काँटे उखाड़कर शनिवार को शत्रु के द्वार पर गाड़ देने से उसके घर में अहर्निश कलह होता है॥ १॥

एक अन्य प्रयोग : रविवार की पञ्चमी को श्मशान की भस्म लाकर उसे गूगल की धूप दे। फिर उस भस्म को शत्रु के घर में गाड़ देने से कलह होने लगता है। अथवा रविवार को दोपहर के समय जिस स्थान पर गधा या भैंसा लेटा हो वहाँ की धूल इस प्रकार लाये कि मार्ग में कोई टोंके नहीं। उस धूल को गूगल की धूप देकर जिसके सर पर डाल दिया जाय उसके घर में निश्चित रूप से रात-दिन कलह होने लगेगा। इसकी सत्यता की परीक्षा लेकर देखा जा सकता है। अथवा शत्रु के घर में साही का काँटा रखने से भी कलह होने लगता है॥ ३२॥

अथ शत्रोः सर्पदर्शनम्।

नीचे दिये यन्त्र को इन्द्रायण के रस से कागज पर लिखकर नीचे शत्र

४००	५००	११००	६००
१२००	५००	३००	६००
१००	८००	१०००	७००
९००	८००	२००	७००

का नाम लिखे। फिर शत्रु का नामोच्चारण करके इसे साँप की बांबी में डाल दे। ऐसा करने सें शत्रु सर्पों द्वारा भयभीत होगा ॥ ३३ ॥

अथ शत्रुगृहेऽश्मवर्षणम् ।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो उच्छिष्टचाण्डालिनि देवि महापिशाचिनि क्लीं ठः ठः स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : शनिवार को जलते हुये मुर्दे की चिता में मन्त्र द्वारा ७ कङ्कड़ डाल आवे। फिर तीन घण्टे के बाद उन कङ्कड़ों को निकालकर सिन्दूर चढ़ा दे। इन कङ्कड़ों को जिस घर में अथवा घर के पीछे या घर की मोरी में गाड़ दिया जाय उस घर में उसी दिन से पत्थर बरसने लगेंगे—इसमें सन्देह नहीं है। इसकी परीक्षा करके देखा जा सकता है ॥ ३४ ॥

शत्रु की खेती का विनाश करना : ऊटकटेरा और गन्धक दोनों को पीसकर खेत में कई स्थान पर डाल देने से खेत सूख जाता है ॥ ३५ ॥

अथ शत्रुगृहजालनम् ।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरुको नमो अवधूत वज्रशिला वज्रशिलापर बैठी जोगनी वज्रजोगनीका पूत आ गया वैताल मढीमाल मण्डल जालो गांव जालो फौज जालो पक्को जालो पराया जालो न जालै तो सालार-पीरकी आगनाफिफै। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार को गूगल और हरताल की धूप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़ने से सात रातों में मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

एक अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरुको अगिया वीरवैताला फोडो पताला निकासो इस्में झाला भैंसा गूगल लेऊं जहां जलाऊं तहांहीं जलावो जो हमारा मन्त्र पीछा फिरै तो माई हिंगलाजकी सेजपर पग धरै शब्द साचा पिण्डकाचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा ठः ठः ठः स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : रविवार के दिन छछूदरी को पकड़कर मन्त्र पढ़-पढ़कर गूगल खिलावे। फिर रात को जाकर धोबी की शिला पर उस छछूदरी को पटककर सात बार यह मन्त्र पढ़े : 'आई ज्वाला माई ॐ नमो आदेस गुरू को पाताल फोड अगिया वारवैताल।' फिर उस छछूदरी को श्मशान में ले जाकर जलावे, अपने हाथ में नङ्गी तलवार लेकर १०८ मन्त्र पढ़े और धूप दे। उस छछूदरी की राख अपने घर लावे। फिर जिस

दिन 'अगिया' चलाना हो उस दिन २१ बार मन्त्र पढ़कर एक चुटकी राख डाले तो वह जल उठेगी, यह सत्य है ॥ ३६ ॥

एक अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आगिया वैताल पैठ सातवें जाहु पाताल लावो अग्निकी जलती झाल बैठजाहु ब्रह्माके कपाल पहेरो लाल फूलकी माल चडो ठोकके अपनी ताल चलो चलो जलावो आग न जलावो तो माता कालिकाकी आन। इति मन्त्रः।

इसका विधान : होली से आरम्भ करके मन्त्र का १ लाख जप करके मछली का नैवेद्य लगाने और गन्धक का धूप देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर जहाँ आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट होती है।

शत्रुतैलनाशनम्। मधूककाष्ठकीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम्। निखनेत्तैलशालायां तैलं तत्र विनश्यति ॥ १ ॥ तत्र मन्त्रः। ॐ दह ॐ दह स्वाहा ॥ ३७ ॥

शत्रु का तेल नष्ट करना : चित्रा नक्षत्र में महुवे की लकड़ी की चार अंगुल की कील शत्रु की तेलशाला में गाड़ देने से तेल नष्ट हो जायगा। इसमें मन्त्र यह है : 'ॐ दह ॐ दह स्वाहा ॥ ३७ ॥

अथ दुग्धनाशनम्। निक्षिपेदनुराधायां जम्बूकाष्ठस्य कीलकम्। अष्टांगुलं गोशालायां गोदुग्धं प्रविनश्यति ॥ ३८ ॥

दुग्धनाशन : अनुराधा नक्षत्र में जामुन की लकडी की आठ अंगुल की कील गोशाला में गाड़ देने से गायों का दूध नष्ट हो जाता है ॥ ३८ ॥

फलनाशन : मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो मेरुपर्वत वानरवाडा आये हनुमन्त देगये झाडा फूल मुडै फल कीडा पडै न पडै तो हनुमानकी आन। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र को सात बार पढ़कर फलों के बाग में सात कङ्कड़ी फेकने से फल-फूल सभी नष्ट हो जाते हैं ॥ ३९ ॥

अश्वनाशनम्। दत्तात्रेयतन्त्रे : अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्यात्सप्तांगुलं ततः। निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान्। कृष्णजीरकचूर्णेन ह्यञ्जितोऽश्वो विनश्यति। तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः स्वस्थो भवति घोटकः ॥ ४० ॥

अश्वनाशन : दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि अश्विनी नक्षत्र में सात अंगुल लम्बी घोड़े की अस्थि को अश्वशाला में गाड़ने से घोड़ों की मृत्यु हो

जाती है। काले जीरे के चूर्ण से अञ्जन लगाने से घोड़ा नष्ट हो जाता है। फिर मट्ठे से घोड़े की आँख धोने से वह स्वस्थ होता है ॥ ४० ॥

शत्रु को बहरा बनाना : मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अमुकं हनहन स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से कड़वा तेल में त्रिकुटा मिलाकर हवन करने से शत्रु बहरा हो जाता है ॥ ४१ ॥

मन्दाग्निकरण : प्राकृत ग्रन्थ में कहा गया है कि इमली की लकड़ी की एक पाँच अंगुल की कील लेकर मृगशिरा नक्षत्र में शत्रु के घर में रखने से उसकी अग्नि मन्द हो जाती है ॥ ४२ ॥

वस्त्रनाशनम्। होय शतभिषा जब रविवार, शीशा तोला लावै चार। एक कटोरी लेय बनाय, खांड बाजरो चून भराय। ताकूं गाडै धरतीमाहीं, दिना तीन पीछे लेआहीं। गाडै घर बजाजके जाय, कपडा बुगचा सब गलजाय ॥ ४३ ॥

नीचे दिये यन्त्र को गधे के कान के रुधिर से मरघट की ईंट पर लिख-

रूं	एं	श्रीं	ह्लीं	ह्लां	ह्लां
लों	रं	भं	क्षं	कुं	मं
मं	क्षं	ज्यं	चं	च्रों	कुं
क्षं	तें	मं	त्रं	दं	क्षं
पं	वं	लं	टं	रं	क्षं
उं पं	द्रं	पीं	रं	लं	सं

कर शत्रु के घर में डाल देने से उसके घर में कलह होकर उसका नाश हो जाता है ॥ ४४ ॥

बिक्रीरोधन : मन्त्र इस प्रकार है :

भवर वीर तूं चेला मेरा, बांध दुकान कहाकर मेरा। उठै न डण्डी बिकै न माल, भवरवीरसो खेकर जाय। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से काले उड़दों को अभिमन्त्रित करके ३

रविवारों को शत्रु की दूकान में डालने से उसके दूकान की बिक्री बन्द हो जायगी।

अथ मारणम्।

माहेश्वरीतन्त्रे : अथात: कथयिष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम्। सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणुष्वावहितो मुने ॥ १ ॥ मारणं न वृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन। प्राणान्तसङ्कटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥ २ ॥ ब्रह्मात्मानं तु विनतं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा। सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा दोषभाग्भवेत् ॥ ३ ॥ मूर्खेण तु कृतं तन्त्रं स्वस्मिन्नेव समापतेत्। तस्माद्रक्ष्यः सदात्मा वै मारणं न क्वचिच्चरेत् ॥ ४ ॥

माहेश्वरी तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : हे मुने ! अब मैं मारण नमक प्रयोग कहूंगा जो मनुष्यों को शीघ्र फल देनेवाला है। इसे ध्यान देकर सुनो। किसी का भी निरर्थक मारण नहीं करना चाहिये अन्यथा साधक दोषी होता है। मूर्खों द्वारा किया गया यह तन्त्र स्वयं उन्हीं के ऊपर गिर पड़ता है। अत: अच्छे लोगों को सदा अपनी रक्षा करनी चाहिये। कहीं पर मारण का निराधार प्रयोग न करे।

इसमें सर्वप्रथम शत्रुदमन का मन्त्र महोदधि में १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अं कं चं टं तं पं हूं लों ह्रीं हुं सः हुं फट् स्वाहा। इति षोडशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः महापर्वतमहाब्धिमहाग्निमहावायुमहाधरा महाकाशानि षट् देवताः हुं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १। अष्टिच्छन्दसे नमः मुखे २। महापर्वतमहाब्धिमहाग्निमहावायुमहाधरामहाकाशषट्देवताभ्यो नमः हृदि ३। हुं बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रीं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय

वौषट् ५ । ॐ ह्रीं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

ॐ नानारत्नार्चिराक्रान्तं वृक्षाम्भःस्रवणैर्युतम् । व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तं सानु युक्तं गिरिं स्मरेत् ॥ १ ॥ मत्स्यकूर्मादिबीजाढ्यं नवरत्नसमन्वितम् । घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥ २ ॥ ज्वालावलीसमाक्रान्त-जगत्त्रितयमद्भुतम् । पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रुशान्तये ॥ ३ ॥ धरासमुत्थरेण्वौघमलिनं रुद्धभदिवम् । पवनं संस्मरेद्विश्वजीवनं प्राण-रूपतः ॥ ४ ॥ नदीपर्वतवृक्षादिकलिता ग्रामसङ्कुला । आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मन्त्रिणा ॥५॥ सूर्यादिग्रहनक्षत्रकालचक्रसमन्वितम् । निर्मलं गगनं ध्यायेत्प्राणिनामाश्रयप्रदम् ॥ ६ ॥

इससे षट्देवताओं का ध्यान करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः'—इसे पूजन करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे। पूर्वादि आठों दिशाओं में :

ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९ ।

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर 'ॐ ह्रीं सर्व-शक्ति पद्मासनाय नमः'—इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। (शत्रुदमनार्णव पूजनयन्त्र चित्र १७)। पुष्पाञ्जलि लेकर :

संविन्मय परो देव परामृतरसप्रिय। अनुज्ञां देहि मे देव परिवारा-र्चनाय ते ॥ १ ॥

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि दे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे।

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में :

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः[1] । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा[2] । शिरःश्रीपा० २ । ॐ ह्रीं शिखायै

वषट्[3] । शिखाश्रीपा० ३ । ॐ ह्रीं कवचाय[4] हुं । कवचश्रीपा० ४ । ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] । नेत्रत्रयश्रीपा० ५ । ॐ ह्रीं अस्त्राय फट्[6] । अस्त्र-श्रीपा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके :

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥

यह पढ़कर और पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ से जलबिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ॥ १ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों[7-16] और वज्रादि आयुधों[17-26] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे ।

अस्य पुरश्चरणं षोडशसहस्रजपः । षट्द्रव्यैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च : एवं षट्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश । जपेन्मन्त्रं दशांशेन षड्द्रव्यैर्होममाचरेत् । षड्द्रव्याणि यथा : व्रीहयस्तण्डुला आज्यं सर्षपाश्च यवास्तिलाः । एतैर्हुत्वा यथा भागं पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥ २ ॥ अङ्गदिक्पालवज्राद्यैरेवं सिद्धो भवेन्मनुः । शत्रूपद्रवमापन्नो युंज्यात्तन्नष्टये मनुम् ॥३॥

इसका पुरश्चरण १६ हजार जप है । षट् द्रव्यों द्वारा दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है और इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । कहा भी गया है कि 'इस प्रकार छः देवताओं का ध्यान करके १६ हजार मन्त्र का जप करना चाहिये । जप का दशांश षट्द्रव्यों से होम करे । षट्-द्रव्यों के नाम इस प्रकार हैं : धान, चावल, घी, सरसों, जौ तथा तिल । इनमें से प्रत्येक की यथाभाग—यथाभागं सप्तषष्ठ्यधिकं शतद्वयं प्रत्येकं, अर्थात् प्रत्येक की २६७—आहुतियां देकर पूर्वोक्त पीठ पर अङ्ग, दिक्पाल तथा आयुधों का पूजन करना चाहिये । फिर अङ्गपूजा, दिक्पाल एवं वज्रादि आयुधों का पूजन करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । शत्रु के उपद्रवों से त्रस्त व्यक्ति को उस शत्रु के नाश के लिये इस सिद्ध मन्त्र से प्रयोग करना चाहिये ।

अथ प्रयोगमाह। तत्रादौ प्राणायामेन सह वर्णध्यानम्।

अब प्रयोगों को बताते हैं। आरम्भ में प्राणायाम के साथ वर्णों का इस प्रकार ध्यान करे :

अकारं पर्वताकारं धावन्तं शत्रुसन्मुखम्। पतनोन्मुखमत्युग्रं प्राच्यां दिशि विचिन्तयेत् ॥ १ ॥ इति पूर्वे अं ध्यायेत्। ककारं क्षुब्धकल्लोलं प्लाविताखिलभूतलम्। समुद्ररूपिणं भीमं प्रतीच्यां दिशि संस्मरेत् ॥२॥ इति पश्चिमे कं स्मरेत्। वर्णं तदग्रिमं ज्वालासङ्घव्याप्तनभस्तलम्। याम्ये दग्धजगद्दाहं स्मरेत्प्रलयपावकम् ॥ ३ ॥ इति दक्षिणे चं विचिन्तयेत्। तृतीयवर्गप्रथमं प्रकम्पितजगत्त्रयम्। युगान्तपवनाकारमुत्तरस्यां दिशि स्मरेत् ॥ ४ ॥ इति उत्तरे टं स्मरेत्। तुरीयपञ्चमाद्यर्णौ पृथ्वीगगनरूपिणौ। शत्रुवर्गं बाधमानौ चिन्तयेन्नियतात्मवान् ॥ ५ ॥ इति तं पं वर्णं विचिन्तयेत्। तदग्रिमं वर्णयुगं शत्रोर्निःश्वासपद्धतिम्। निरुन्धानं स्मरेन्मन्त्री विदधद्रिपुमाकुलम् ॥६॥ इति हं लं विचिन्तयेत्। मायादिवर्णत्रितयं शत्रोर्नेत्रश्रुती मुखम्। प्रत्येकं तु निरुन्धानं चिन्तयेत्साधकोत्तमः ॥७॥ इति ह्रीं हुं सः विचिन्तयेत्। वर्मसंक्षोभितं त्वस्त्रं रिपोराधारदेशतः। उत्थाप्य वह्निं तद्देहं प्रदहं समनुस्मरेत्। इति हुंफट् स्मरेत्। इति वर्णान् विचिन्तयेत्। एवं वर्णान्स्मरन्मन्त्रं जपेन्मन्त्री सहस्रकम्। मण्डलत्रितयादर्वाङ्मारयत्येव विद्विषम् ॥ ८ ॥ एवं यः कुरुते कर्म प्राणायामजपादिभिः। संशोधयित्वा स्वात्मानं स्वरक्षायै हरिं स्मरेत्। इति शत्रुदमनार्थं षोडशाक्षरीमन्त्रप्रयोगः।

पर्वत के समान आकारवाले, शत्रु की ओर धावमान और उसके ऊपर पतनोन्मुख एवं अति उग्र 'अकार' का पूर्व दिशा में ध्यान करना चाहिये।

समुद्र जैसे रूपवाले, क्षुब्ध तरङ्गों से समस्त भूतल को आप्लावित करनेवाले 'ककार' का पश्चिम दिशा में ध्यान करना चाहिये।

ज्वालाओं से सम्पूर्ण आकाशमण्डल एवं धरती को व्याप्त करनेवाले, समस्त जगत को भस्म करनेवाले तथा प्रलयाग्नि के समान ककार के आगे के वर्ण 'चकार' का दक्षिण दिशा में ध्यान करे।

प्रलयङ्कारी तूफानों से तीनों लोकों को प्रकम्पित करनेवाले तृतीय वर्ग के प्रथम अक्षर 'टकार' का उत्तर में ध्यान करे।

शत्रुवर्ग को बाँधनेवाले, पृथिवी एवं आकाशरूपी चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ग के प्रथम अक्षरों 'तकार' एवं 'पकार' का नियतात्मा साधक ध्यान करे।

शत्रु की श्वास प्रणाली को रोकनेवाले तथा शत्रुओं को व्याकुल करने-वाले अग्रिम दोनों वर्णों 'ह' और 'ल' का ध्यान करे।

फिर श्रेष्ठ साधक शत्रु के नेत्र, मुख एवं कान को अवरुद्ध करनेवाले मायादि तीनों वर्णों 'ह्रीं हुं सः' का ध्यान करे। इसके बाद वर्म (हुं) से संक्षोभित तथा अस्त्र (फट्) से शत्रु को उठाकर अग्नि में उसके शरीर को भस्म करते हुये 'हुं फट्' का चिन्तन करे।

इस प्रकार मन्त्र के सब वर्णों का ध्यान करते हुये मान्त्रिक १ हजार जप करे तो ३ मण्डलों (१४७ दिनों) की अवधि के पूर्व ही शत्रु को मार सकता है। इस प्रकार का प्रयोग करनेवाले साधक को प्राणायाम एवं जप आदि से आत्मशुद्धि करके अपनी रक्षा के लिये हरि का स्मरण करना चाहिये। शत्रुदमन के लिये षोडशाक्षरी मन्त्र प्रयोग समाप्त।

अथार्द्रपटीविद्या।

रावणोड्डीश तन्त्र में १२१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

क्रीं नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रनयने एहि-एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि तज्जीवितापहा-रिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवसाखादिनि मम शत्रून् छेदय-छेदय शोणितं पिबपिब हुं फट् स्वाहा। इत्येकविंशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीआर्द्रपटीमहाविद्यामन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिः गायत्री छन्दः आर्द्रपटेश्वरी कालिका देवता हुं बीजं स्वाहा शक्तिः ममा-मुकशत्रुनिग्रहकाम्यार्थे जपे विनियोगः।

केवलं जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्। कृष्णपक्षाष्टमीतस्तु याव-त्कृष्णा चतुर्दशी ॥ १ ॥ शत्रुनामसमायुक्तं तावत्कालं जपेन्मनुम्। मृदा पुत्तलिकां कुर्याद्रिपुपादतलस्थया ॥ २ ॥ अजापुत्रं बलिं दत्त्वा तद्रक्तेन वस्त्रं संलिपेत् तद्वस्त्रं गृहीत्वा पुत्तलिकोपरि निदध्यात् मन्त्रं जपेत् याव-द्वस्त्रं शुष्यति तावच्छत्रुर्यमालये व्रजति। तथा च : मन्त्र राजप्रभावेन नात्र कार्या विचारणा। यमालये व्रजेच्छत्रुर्मुकुन्दसदृशोपि वा।

इस मन्त्र का केवल जप मात्र करने से ही एक मास मे शत्रु का मरण होता है। अर्थात एक मास तक प्रतिदिन मन्त्र का १०८ जप करे ; अथवा कृष्णपक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त शत्रु के नाम सहित प्रतिदिन सावधान मन होकर मन्त्र का १०८ बार प्रतिदिन जप

करे। जप के अन्तिम दिन शत्रु के पांव तले की मृत्तिका लाकर शत्रु की पुतली बनावे और उसे नीले वस्त्र से लपेटकर मन्त्रपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करके काली का पूजन करे। फिर बकरे का बलिदान देकर उसके रक्त में वस्त्र को भिगाकर उस पुतली को ओढा दे और मन्त्र का जप करने लगे। ज्यों-ज्यों वह वस्त्र सूखेगा त्यों-त्यों शत्रु का प्राण यमपुरी को गमन करेगा। इस आर्द्र-पटेश्वरी विद्या के प्रभाव से मुकुन्द अर्थात कृष्ण के समान भी शत्रु हो तो वह यमपुरी को प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं है। शिवजी ने पार्वती के समीप इस विद्या का वर्णन किया था अतः इसे सर्वथा सत्य जानना चाहिये ॥ २ ॥

अथ भैरवमन्त्रप्रयोगः।

माहेश्वरीतन्त्रे। कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्। शत्रु-पादतलात्पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ॥ १ ॥ गोमूत्रेण च सिञ्चित्वा प्रतिमां कारयेद्द्विषः। निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत्स्थण्डिलोपरि ॥ २ ॥ लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम्। तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥ ३ ॥ एकादश बटूंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत्। अखण्डदीपं तस्याग्रे कटु-तैलेन ज्वालयेत् ॥ ४ ॥ व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे। दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः ॥ ५ ॥ मन्त्रो यथा :

माहेश्वरी तन्त्र में इस प्रकार वर्णन है : जब मारण करना हो तब इस प्रकार कृत्य करे। जहाँ शत्रु ने पांव रक्खा हो वहाँ की धूल मङ्गलवार को लाये और उसे गोमूत्र में सानकर शत्रु की प्रतिमा बनाये। फिर निर्जन वन में नदी तट पर वेदी बनाकर उस प्रतिमा को सीधा लेटा दे। इसके बाद एक अति दारुण लोहे का त्रिशूल बनाकर प्रतिमा की छाती में उसे गाड़ दे और उसके बायें ओर वेदी पर कालभैरव को स्थापित करके प्रतिदिन यथोक्त विधिपूर्वक बलिदान तथा पूजन करे, ११ बालक ब्राह्मणों को वहाँ पर क्षीरान्न द्वारा भोजन कराये तथा भैरव के अग्रभाग में सरसों के तेल से अखण्ड दीपक जलावे। शत्रु की प्रतिमा के दक्षिण भाग में व्याघ्राम्बर के आसन पर स्वयं बैठे तथा दक्षिण मुख होकर रात में आलस्यरहित होकर मन्त्र का जप करे। मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारयमारय पोथय पोथय हुं फट् स्वाहा।

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितः। एकोनविंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम्। इत्येवं मारणं तन्त्रं सद्यः सिद्धिकरं नृणाम् ॥ ६ ॥

प्रतिदिन इस मन्त्र का १० हजार जप रात के समय एकाग्रचित्त होकर करे। इस प्रकार करने से १९ दिन में मारण निश्चित रूप से सिद्ध होगा। इस प्रकार मारण तन्त्र शीघ्र ही सिद्धि देनेवाला है। मारणार्थ भैरव मन्त्र प्रयोग समाप्त ॥ ६ ॥

अथ प्रत्यङ्गिरामन्त्रप्रयोगः।

४१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ गृध्रकर्णि विरूपाक्षि लम्बस्तनि महोदरि। हन शत्रूंस्त्रिशूलेन क्रुद्धाऽस्य पिब शोणितम्। शोषय मारय स्वाहा। इत्येकचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : कृष्णप्रतिपदमारभ्य द्वितीयमासचतुर्दशीपर्यन्तं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत्। तदा महाव्याधितो मरणं न सन्देहः ॥ ३ ॥

इसका विधान : कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ करके दूसरे महीने की चतुर्दशी पर्यन्त मन्त्र का प्रतिदिन १ हजार जप करने से शत्रु महारोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होता है—इसमें सन्देह नहीं है।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में ९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रूं क्षं ह्रीं अमुकं ठं ठः। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण लोहत्रिशूलं कृत्वा विषरुधिरालिप्तमयुतेनाभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना भूमौ निखनेत् तस्य मृत्युर्भवति ॥ ४ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से लोहे का त्रिशूल बना कर विष तथा रक्त से उसे लिप्त करके १० हजार मन्त्रों से अभिमन्त्रित करने के बाद जिसके नाम से उसे भूमि में गाड़ा जाय उसकी मृत्यु हो जाती है ॥ ४ ॥

कुछ अन्य प्रयोग :

१. ३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं महाकाल करालवदन गृह्णगृह्ण भिंधिभिंधि त्रिशूलेन हनहन ठं ठः। इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण विभीतकाष्ठमयं कीलकं एकविंशत्यंगुलं सहस्रेणाभिमन्त्रितं यस्य नाम्ना स्वगृहे निखनेत् तस्य सद्यो निपातः ॥ ५ ॥

इसका विधान : इस मन्त्र से बहेड़े की लकड़ी की २१ अंगुल लम्बी कील बनाकर उसे १ हजार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से अपने घर में गाड़ दे उसकी तत्काल मृत्यु होती है ॥ ५ ॥

२. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रों अमुकस्य हनहन स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : कनेर के १० हजार फूल लेकर राई अथवा सरसों के तेल में भिगा कर होम करने से शत्रु की मृत्यु होती है ॥ ६ ॥

दत्तात्रेय तन्त्र में १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कालरूपाय अमुकं भस्म कुरुकुरु स्वाहा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य तन्त्राणि साधयेत् ।

इसका विधान : १०८ जप से सिद्धि होती है । इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक १०८ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके तन्त्रों को करे ।

ईश्वर उवाच । विषयुक्तं चिताभस्म धत्तूरचूर्ण संयुतम् । यस्याङ्गे निक्षिपेद्भौमे सद्यो याति यमालयम् ॥ ७ ॥

ईश्वर बोले : विषयुक्त चिताभस्म को धतूरे के चूर्ण के साथ मिलाकर मङ्गलवार को जिसके ऊपर फेंक दिया जाय उसकी मृत्यु हो जाती है ॥ ७ ॥

भल्लातकोद्भवं तैलं कृष्णसर्पस्य दन्तकम् । विषं धत्तूरसंयुक्तं यस्याङ्गे निक्षिपेन्मृतिः ॥ ८ ॥

भिलावे का तेल, काले साँप का दाँत तथा विष को धतूरे के चूर्ण के साथ जिसके ऊपर डाल दिया जाय उसकी मृत्यु हो जाती है ॥ ८ ॥

नरास्थिचूर्णं ताम्बूले भुक्तं मृत्युकरं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

मनुष्य के अस्थि के चूर्ण को जो पान में खा ले उसकी निश्चित मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

सर्पास्थिचूर्णं यस्याङ्गे निक्षिपेन्मृत्युमाप्नुयात् ॥ १० ॥

सर्पास्थि के चूर्ण को जिसके शरीर पर डाल दिया जाय उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती है ॥ १० ॥

चिताकाष्ठं गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते । निखनेच्च गृहद्वारे मासे मृत्युर्भविष्यति ॥ ११ ॥

मङ्गलवार के दिन भरणी नक्षत्र में चिता की लकड़ी लाकर जिसके दरवाजे पर गाड़ दिया जाय उसकी एक मास में मृत्यु हो जाती है ॥ ११ ॥

कृष्ण सर्प वसार्द्रात्वक्तद्वर्ति ज्वालयेन्निशि । धत्तूरबीजतैलेन कज्जलं नृकपालके । चिताभस्मसमायुक्तं क्षारपञ्चकसंयुतम् । यस्याङ्ग निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १२ ॥

धतूरे के बीज के तेल में काले साँप की चर्बी की बत्ती बनाकर उससे दीपक जलाकर मनुष्य की खोपड़ी में काजल पारे, फिर उसमें चिता की भस्म तथा पाँचों नमक का चूर्ण मिलाकर जिसके शरीर पर डाला जाय उसकी शीघ्र मृत्यु हो जाती है ॥ १२ ॥

गृहीत्वा वृश्चिकं मांसं कण्टकं चूर्णसंयुतम् । यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं नरो मृत्युं गमिष्यति ॥ १३ ॥

बिच्छू तथा उल्लू के मांस का चूर्ण मिलाकर जिसके शरीर पर डाल दिया जाय उसकी मृत्यु हो जाती है ॥ १३ ॥

पञ्चदश्यां लिखेद्यन्त्रं चिताभूत्या विलोमतः । श्मशानाग्नौ क्षिपेद्यन्त्रं भौमे च म्रियते रिपुः ॥ १४ ॥

चिता के भस्म से विलोम रीति से पञ्चदशी यन्त्र लिखकर मङ्गल के दिन चिता की अग्नि में उसे जला देने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥ १४ ॥

उल्लूविष्ठांगृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्वितम् । यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १५ ॥

उल्लू की विष्ठा को लेकर उसे विष के चूर्ण में मिलाकर जिसके शरीर पर डाला जाय उसकी शीघ्र मृत्यु होती है ॥ १५ ॥

खरविष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् । यस्याङ्गे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालयम् ॥ १६ ॥

गधे की बिष्ठा को लेकर उसमें विष चूर्ण मिलाकर जिसके शरीर पर डाल दिया जाय वह तत्काल यमलोक चला जाता है ॥ १६ ॥

रिपुविष्ठां गृहीत्वा तु नृकपाले हि धारयेत् । उद्याने निखनेद्भूमौ यस्य नाम लिखेत्सति । यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् । यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १७ ॥

शत्रु की बिष्ठा को मरे हुये मनुष्य की खोपड़ी में रखकर उद्यान में गाड़ दे और फिर शत्रु का नाम लिख दे तो बिष्ठा सूखने तक शत्रु निश्चित रूप से मृत्यु को प्राप्त होगा । यह शङ्करजी द्वारा कहा हुआ प्रयोग कभी असत्य नहीं हो सकता । इसे ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं बताना चाहिये ॥ १७ ॥

कृकलासवसातैलं यस्याङ्गे बिन्दुमात्रतः । निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ १८ ॥

गिरगिट की चर्बी का तेल यदि किसी के शरीर पर बूंद मात्र भी डाल दिया जाय तो शङ्कर के रक्षक होने पर भी उसकी मृत्यु हो जाती है ॥१८॥

गृहे दीपं तु निक्षिप्य लवणं विजयायुतम्। यस्य नाम्ना मासतश्च तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ १६ ॥

घर के जलते हुये दीपक में भाँग एवं नमक मिलाकर जिसके नाम से डाल दिया जाय उसकी एक मास के भीतर ही निश्चित रूप से मृत्यु हो जाती है ॥ १६ ॥

मूठचालनमन्त्रः ।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो कालाभैरों मसाणवासा चौसठ जोगनी करै तमासा उडदकी मुठ्ठी रक्तावाण चल रे भैरों कचियामसाण मै कहूं तोसों समझाय सवापहेरमें धुवा दिखाय मूवा मुरदा मरघटवास माता छोडै पुत्रकी आस जलती लकडी धिकै मसाण भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेलोसिङ्गी रुद्रबाण मेरे वैरीको नहीं मारै तो राजारामचन्द्रलक्ष्मणजतीकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : किसी मुर्दे को देखकर श्मशान में जाकर उसकी हड्डी लेकर चिता में खूब लाल करे और उसमें एक मुट्ठी उड़द डाल दे। इन उड़दों में जो जल जाँय उन्हें अलग कर ले और जो खिल जाय उन्हें अलग कर ले। जले उड़दों पर २१ बार मन्त्र पढ़कर प्रातःकाल बिना मुंह धोये शत्रु को मारे तो वह यमलोक चला जायगा।

मारणार्थं भैरवमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ काली कङ्काली महाकालीके पुत्र कङ्कालभैरूं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काज करै मेरा भेजा रक्षा करै आन बान्धूं वान बान्धूं चलते फिरतेके औसान बान्धूं दसोंसुर बान्धूं नौ नाडी बहत्तर कोठा बान्धूं फलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पडै थरथर कांपै हलहल हलै गिरगिर पडै उठउठ भागै बकबक बकै मेरा भेजा सवाघडी सवापहेर सवादिन सवामास सवावरसकूं बावला न करै तो माता कालीकी शय्यापर पग धरै वाचा चूकै तो ऊभा सूखै वाचा छोड कुवाचा करै तो धोबोकी नाद चमारके कुण्डेमें पडै मेरा भेजा बावला न करै तो रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढे सिरकी लटा टूटि भूमिमें गिरै माता पार्वतीके चीरपर चाट पडै विना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कङ्कालभैरू फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः ।

इसका विधान : कालरात्रि अथवा ग्रहण की रात्रि को तिकोना चौका लगाकर दक्षिणमुख बैठे और लाल कनेर के फूल, मोदक, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक रखकर इस मन्त्र का १ हजार जप तथा दशांश हवन करे। जब भयङ्कर स्वरूप में भैरव सम्मुख आवे तब भयभीत न हो और तत्काल फूलों की माला उसके गले में डालकर मोदक अर्पण करे। इससे भैरव प्रसन्न हो जायगा और फिर उससे जो कार्य कहा जाय वह तत्काल कर देगा।

यन्त्रम्।

नीचे दिये यन्त्र को कौवे के पङ्ख द्वारा विष और हरताल से भोजपत्र पर लिखकर श्मशान में गाड़ देने से अकस्मात शत्रु की मृत्यु हो जायगी।
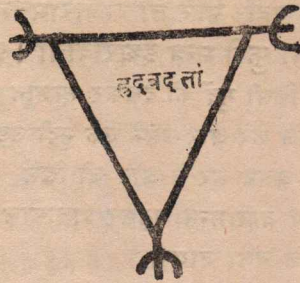
इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे षट्कर्मतन्त्रे
उच्चाटनादिर्नवमस्तरङ्गः ॥ ९ ॥

इति मन्त्र महार्णव के मिश्रखण्ड में षट्कर्म तन्त्र के अन्तर्गत
उच्चाटनादि विषयक नवम तरङ्ग समाप्त ॥ ९ ॥

दशम तरंग

स्तम्भन तन्त्र

तत्रादौ मुख स्तम्भनम् ।

निम्नलिखित यन्त्र को रविवार के दिन नीम के रस और हल्दी से पत्थर के ऊपर लिखे । इस यन्त्र को देखने मात्र से शत्रु का स्तम्भन हो जाता है ।
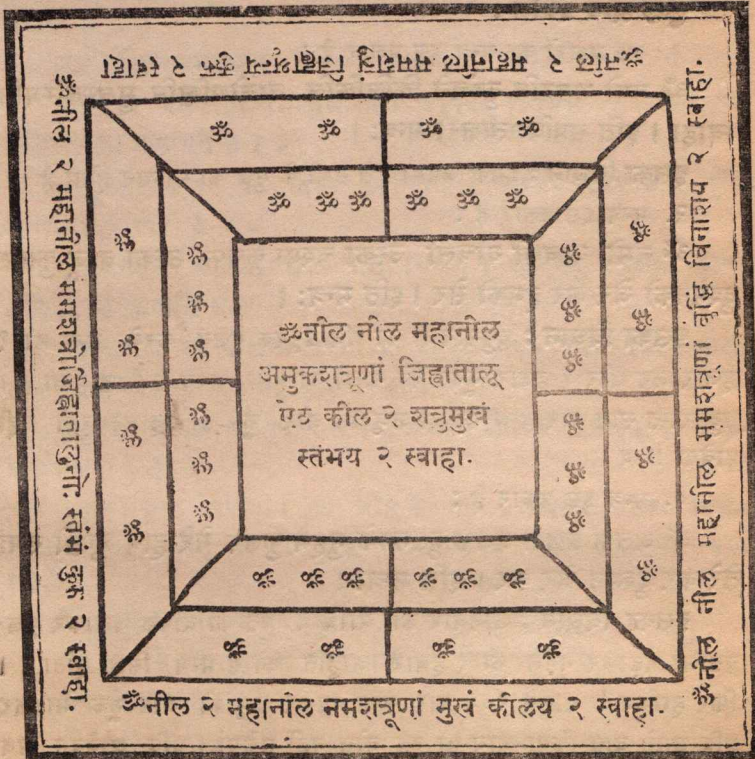
निम्नलिखित वर्तुल यन्त्र को अपने घर की दीवार पर खड़िया मिट्टी से लिखे । बीच में शत्रु का नाम लिखे और सफेद फूल-फल से पूजन करता

रहे तथा सफेद वस्त्र ओढ़ा दे। इससे शत्रु के मुख का स्तम्भन होता है ॥१॥
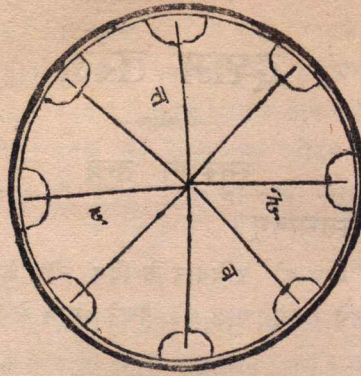
कुछ अन्य प्रयोग :

१. २७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलिकिलि वाचोभञ्जिनि मुखस्तम्भिनि स्वाहा। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

इसका विधान : इसके जपमात्र से सभी के मुख का स्तम्भन होता है।२।

२. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो याचली याचली उस्का चश्मा कुलफ उस्का बाजू कुलफ दुश्मनको जेर कर हमको सेर। इति मन्त्रः।

इसका विधान : हनुमानजी का विधिपूर्वक पूजन करके मन्त्र का १ हजार जप और १ हजार गूगल की गोली का होम करने से सिद्ध होता है। तदुपरान्त सात बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंके तो वह बड़बड़ाने नहीं पावेगा ॥ ३ ॥

३. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अलफ अलफ अलफ दुसमनके मुहमें कुलफ मेरे हाथ कुञ्जी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर। इति मन्त्रः।

इसका विधान : शनिवार की रात्रि में घृत का दीपक जलाकर फूल-बताशा चढ़ाकर गूगल की १ हजार आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारकर यदि उससे बात किया जाय तो वह बोल नहीं सकेगा। यदि आवेदन पत्र पर १०८ बार पढ़कर लोहबान की धूप देकर वह आवेदन पत्र अधिकारी को दे तो निश्चित रूप से मनोरथ सिद्ध होगा ॥ ४ ॥

५. मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं खेतलवीर चौसठयोगिनी प्रतिहार मम शत्रू अमुकस्य मुखबन्धनं कुरुकुरु स्वाहा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : घी, शहद और मद्य की १ हजार आहुतियाँ देकर लोहे की ४ अंगुल की कील श्मशान में गाड़ने से शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता है ॥ ५ ॥

अथ दृष्टिस्तम्भनम् ।

वाराहीकान्तिकामूलं सिद्धार्थस्नेहलेपितम् । मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम् ॥ १ ॥

वाराही (भिलाई कन्द) और कटेरी की जड़ों को पीली सरसों के तेल में घोंटकर जिसके मुख पर छिड़क दिया जाय उसकी दृष्टि बन्द हो जायगी ॥ ६ ॥

अथ बुद्धिस्तम्भनम् ।

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दापयेत् । विष्ठां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते ॥ १ ॥

उल्लू और बन्दर की बिष्ठा को पान में रखकर खिलाने से बुद्धि स्तम्भित हो जाती है ॥ ७ ॥

भृङ्गराजरसे भाव्यं सिद्धार्थं श्वेतनामकम् । एभिस्तु तिलकं कृत्वा बुद्धिस्तम्भं करोति न ।

भृङ्गराज के रस में सफेद सरसों को भावित करके उसका तिलक करने से कोई भी बुद्धि स्तम्भन नहीं कर सकता ।

सहदेवीमपामार्गं लोहपात्रे च निक्षिपेत् । तिलकः सर्वभूतानां बुद्धिस्तम्भकरो भवेत् ।

सहदेवी तथा अपामार्ग को लोहे के पात्र में रखकर उसका तिलक लगाने से समस्त प्राणियों की बुद्धि को स्तम्भित करता है । इसमें मन्त्र यह है :

ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धिस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके योग को सिद्ध करे ॥ ८ ॥

अथ मेघस्तम्भनम् ।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हूं ह्रीं क्षं क्षां क्षि क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हूं फट् ठः ठः ।

इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : पूर्वाभिमुखो भूत्वा लक्षं जपेत्। वैश्वानरसमीपे वेतससमिधा घृताक्तयाऽयुतं जुहुयात्। सिद्धो भवति। पुनः मन्त्रं पठित्वा मेघावलोकनेन सर्वे मेघाः प्रणश्यन्ति। वासवो न वर्षति। नदीं समुद्रगां शोषयति। मेघशब्दो न भवति। उदकमध्ये स्थित्वा जपेत्। अनावृष्टि-काले वृष्टिर्भवति ॥ ९ ॥

इसका विधान : पूर्वाभिमुख होकर एक लाख जप और अग्नि में घी से सिक्त बेंत की समिधा का दश हजार होम करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। पुनः मन्त्र पढ़कर मेघ को देखने से सभी मेघ नष्ट हो जाते हैं और इन्द्र वर्षा नहीं करते। यहां तक कि समुद्रगामिनी नदियों को साधक सुखा देता है और मेघों का गर्जन भी नहीं होता। पानी में खड़े होकर जप करने से अनावृष्टि के समय वर्षा होती है ॥ ९ ॥

१३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मेघानां स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : इष्टकाद्वयमादाय सम्पुटं कारयेन्नरः। श्मशाना-ङ्गारसंलेखाद्भूस्थं स्तभ्नाति वारिदम् ॥ १ ॥

इसका विधान : दो ईंटों को लेकर श्मशान के कोयले से मेघ लिख-कर सम्पुट बनाकर पृथिवी में गाड़ देने और मन्त्र का जप करने से मेघों का स्तम्भन होता है ॥ १० ॥

अथ शस्त्रस्तम्भनम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में ३९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ अहो कुम्भकर्ण राक्षस नैकषागर्भसम्भूत परसैन्यस्तम्भन महा-भगवान् रुद्रस्तापयति स्वाहा। इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् कुर्यात् ॥ ११ ॥

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को करे।

ईश्वर उवाच। पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रान्तासमूलकम्। स्वके शिरसि तद्धार्यं शस्त्रसंहरणं नृणाम् ॥ १२ ॥ वन्ध्यांबुव्याघ्रभूपालचौर-शत्रुभयं जयेत् ॥ १३ ॥ जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शस्त्रस्तम्भनमुत्तमम् ॥१४॥ करे सुदर्शनामूलं स्तम्भं शस्त्रस्य कारयेत् ॥ १५ ॥ केतकीं मस्तके नेत्रे ताडमूलं मुखे स्थितम्। खर्जूरं चरणे हस्ते खड्गस्तम्भं करोत्यपि ॥१६॥ एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृते पिबेत्। अहोरात्रं ततः शस्त्रैर्याव-

जीवं न बाध्यते । आयातं चैकशस्त्रं च समूहं वा निवारयेत् ॥ १७ ॥

ईश्वर बोले : पुष्य नक्षत्र में (रविवार को) विष्णुक्रान्ता को जड़ सहित उखाड़कर उस जड़ को मुख में अथवा शिर पर धारण करने से शस्त्र स्तम्भन होता है । साधक इससे बन्ध्यत्व, जल, व्याघ्र, राजा, चोर तथा शत्रु के भय पर भी विजय प्राप्त करता है । जाती अर्थात चमेली की जड़ को मुख में डालना उत्तम शस्त्र स्तम्भन कारक है । हाथ में सुदर्शना की जड़ को बांधना भी शस्त्र स्तम्भन कारक है । केतकी को मस्तक या नेत्र में धारण करना, ताड़ की जड़ मुख में रखना, खजूर को पैर या हाथ में बांधना खड्ग-स्तम्भन करता है । केतकी, ताड़ और खजूर—इन तीनों की जड़ों को पीसकर घी में मिलाकर रात-दिन पीने से साधक जीवन पर्यन्त शस्त्र से बाधित नहीं होता तथा वह एक शस्त्र या शस्त्रों के समूह का निवारण भी कर सकता है ।

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् । तल्लिप्तं स्वशरीरे च सर्वंशस्त्रनिवारणम् ॥ १८ ॥ खर्जूरी मुखमध्यस्था कटिबद्धा च केतकी । भुजदण्डस्थितश्चार्कः सर्वे शस्त्रनिवारणाः ॥ १९ ॥ पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् । हस्ते काण्डभयं नास्ति संग्रामे तु कदाचन ॥ २० ॥ गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्राणि कोमले । पिष्ट्वा विषसमं सार्धं शस्त्रस्तम्भनलेपनम् ॥ २१ ॥

पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ का सम्पूर्ण शरीर पर लेप करने से सभी शस्त्रों का निवारण होता है । मुख में खजूरी को रखने, केतकी को कमर में बांधने, अथवा मदार को हाथ में बांधने से सभी शस्त्रों का निवारण होता है । पुष्य नक्षत्र में रविवार को सफेद गुञ्जा की जड़ उखाड़कर हाथ में बांधने से संग्राम में कभी भी बाण का भय नहीं रहता । रविवार को कोमल बिल्वपत्रों को लेकर समान भाग विष के साथ पीसकर शस्त्र-स्तम्भक लेपन तैयार होता है ।

अथ शस्त्रे लेपः ।

दत्तात्रेय तन्त्र में ४३ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है ।

ॐ नमो त्रिकरालरूपाय महाबलपराक्रमाय अमुकस्य भुजबलं बन्धय बन्धय दृष्टिं स्तम्भय महीतले हुं । इति त्रिचत्वारिंशदक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतं जपेत् सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री शस्त्राणि लेपयेत् ।

इसका विधान : १०८ बार मन्त्र के जप से सिद्धि होती है । इस

प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक शस्त्रों पर लेप करे।

विष्णुक्रान्तासुबीजानि मन्त्रभावेन ग्राहयेत्। तत्तैलं ग्राहयेद्यन्त्रे विषेण च समन्वितम्। भल्लातकस्य तैलं तु ह्यहिफेनेन संयुतम्। खरमूत्रेण संयुक्तं धत्तूरबीजचूर्णकम्। तालकं चैव संयुक्तं गन्धकं च मनःशिला। गन्धकं चैव संयुक्ता वटिका क्रियते नरः। पञ्चटङ्कप्रमाणा सा तया शस्त्रं तु लेपयेत्। रणे दारुणशस्त्रौघं खण्डंखण्डं प्रजायते। शस्त्रं दृष्ट्वा पलायन्ते यथा युद्धेषु कातराः। वर्षा भवति शस्त्रस्य न भयं विद्यते क्वचित्॥ २२॥

विष्णुक्रान्ता के बीजों को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ग्रहण करके कोल्हू से उसका तेल निकालकर उसमें विष का चूर्ण मिलावे; अथवा भिलावे का तेल, अहिफेन (अफीम) मिले गधे का मूत्र, धतूरे के बीज का चूर्ण, हरताल, पञ्चसुगन्धि (कपूर, कङ्कोल, लौंग, सुपारी और जायफल) तथा गन्धक इन सब को समान भाग लेकर कूट-छानकर गोली बना ले। फिर ५ टङ्क (१ तोला ३ माशा) लेकर शस्त्र पर लेप करे। (कहीं-कहीं अपने शरीर पर भी लेप करने का उल्लेख है)। इस लेप लगे शस्त्रों से टकराकर दारुण शस्त्र भी खण्ड-खण्ड हो जाते हैं। ऐसे शस्त्र को देखकर शत्रु पलायन कर जाते हैं। यदि शस्त्रों की वर्षा भी हो रही हो तो भी ऐसे शस्त्रधारक को कोई भय नहीं रहता।

अथ सेनास्तम्भनम्।

२८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्: अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान: १०८ मन्त्र जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

मन्त्रभावेन गृह्णीयाच्छ्वेतगुञ्जाविधानकम्। निखनेच्च श्मशाने च पाषाणे तानि धापयेत्। अष्टौ योगिन्यः पूज्या ऐन्द्री माहेश्वरी तथा। वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका। लक्ष्मीर्ब्राह्मी च सम्पूज्या गणपो बटुकस्तथा। क्षेत्रपालास्तदा पूज्याः सेनास्तम्भो भविष्यति। पृथक्पृथक् बलिं दत्त्वा दशानामपि भागतः। मांसं मद्यं तथा पुष्पं धूपं दीपं बलिक्रियाम्। यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम्॥२३॥

श्वेत गुञ्जा को मन्त्र पढ़कर ग्रहण करके उसे श्मशान में गाड़ दे और ऊपर से एक पत्थर रख दे। तदनन्तर आठ योगिनियों—ऐन्द्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कुमारिका, लक्ष्मी और ब्राह्मी—का तथा गणेश, बटुक एवं क्षेत्रपाल का पूजन करे। इससे सेना का स्तम्भन होता है। साथ ही सबको दिशा-भेद से बलि देवे। मद्य, मांस, पुष्प, धूप और दीप यही बलि की क्रिया है। इस क्रिया को ऐसे-वैसे को नहीं देना चाहिये। शङ्करजी का यह कहा अन्यथा नहीं हो सकता।

श्मशानभस्मनाऽऽलिख्य मृत्तिकापात्रमध्यतः। रिपुनामसमायुक्तं नीलसूत्रेण बन्धयेत्। गर्तंकुण्डे विनिक्षिप्य पाषाणोपरि दीयते। स्तम्भं करोति सैन्यस्य सिद्धियोग उदाहृतः ॥ २४ ॥

मिट्टी के पात्र के बीच में श्मशान के भस्म से मन्त्र लिखे (मन्त्रः ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रु सैन्यं पलायनं कुरु कुरु स्वाहा) इस मन्त्र का पहले १०८ जप करके सिद्ध कर ले। इसके बाद उसमें शत्रु का नाम लिखकर उसे नीले रङ्ग की रस्सी से बाँधे। फिर उस पात्र को एक गड्ढे में गाड़ दे और ऊपर से एक पत्थर रख दे। ऐसा करने से सैन्य स्तम्भन होता है। यह सिद्ध योग है।

अथ सेनापलायनम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में २९ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकसुपक्षकौ। भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं तस्य नामसमन्वितम्। गोरोचनं गले बध्वा काकोलूकसुपक्षकौ। सेनानीसंमुखं गच्छेन्नान्यथा शङ्करोदितम्। शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्ते तु निश्चितम्। राजा प्रजा गजादिश्च नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ २५ ॥

मङ्गलवार को कौवे और उल्लू के पङ्खों को लेकर भोजपत्र पर गोरोचन से शत्रु के नाम से समन्वित मन्त्र को लिखे। फिर कौवे और उल्लू के पङ्ख के साथ गोरोचन को गले में बाँधकर सेना के सामने

जाय तो सेना भाग जायगी। शङ्करजी का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता। साधक द्वारा सेना के बीच में शब्द (हुंकार) मात्र से राजा, प्रजा, तथा हाथी-घोड़ों सहित सैनिक भाग जाते हैं। यह शङ्करोक्त वचन कभी असत्य नहीं हो सकता।

अथ मनुष्यस्तम्भनम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : गृहीत्वा रजस्वलावस्त्रं गोरोचनसमन्वितम्। यस्य नाम्ना क्षिपेत्कुम्भे सद्यःस्तम्भनकारकम्॥ २६॥

दत्तात्रेय तन्त्र के अनुसार गोरोचन से युक्त रजस्वला का वस्त्र लेकर जिसके नाम से कुम्भ में डाले उसका तत्काल स्तम्भन हो जाता है।

अथ निद्रास्तम्भनम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत्। निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम्॥ २७॥

दत्तात्रेय तन्त्र में लिखा है कि बृहती तथा मधूक के मूलों को लेकर उन्हें पीसकर उस चूर्ण से नस्य लेवे। यह निद्रा का स्तम्भन कारक है। इस मूलयोग को देव ने कहा है।

अथ नौकास्तम्भनम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : भरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चांगुलिं क्षिपेत्। नौकास्तम्भनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम्॥ २८॥

दत्तात्रेय तन्त्र के अनुसार भरणी नक्षत्र में गूलर या पीपल की पाँच अंगुल की कील बनाकर नौका में फेंकने से नौका का स्तम्भन होता है। इसे शङ्करजी ने कहा है।

अथ जलस्तम्भनम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ मन्त्रजप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

पद्मकं नाम यद्द्रव्यं तस्य सूक्ष्म चूर्णं तु कारयेत्। वापीकूपतडागादौ निक्षिप्तं बन्धयेज्जलम्॥ २९॥

पद्माख को लेकर महीन चूर्ण बनाकर उसे वापी (बावली), कूएँ या तालाब में डाल दे तो जलस्तम्भन होता है।

अथाग्निस्तम्भनम्।

निम्नलिखित यन्त्र को भोजपत्र पर पीले द्रव्य से लिखकर पूजा करे। फिर इसे भूमि में गाड़कर पानी की धार डालता रहे। इससे घर में अग्नि का भय नहीं रहता।
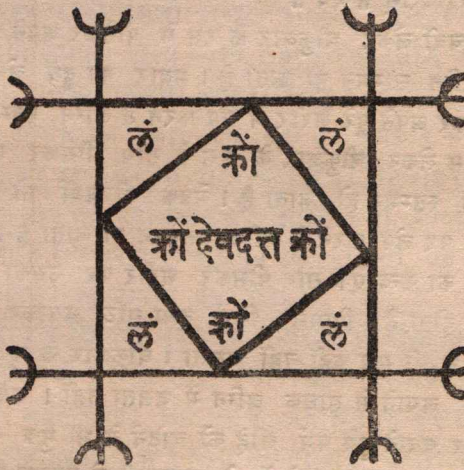
दत्तात्रेय तन्त्र में २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमोऽग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ मन्त्रजप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे :

वसां गृहीत्वा माण्डूकीं कौमारीरसपेषिताम्। लेपयेन्निजगात्राणि वह्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३० ॥ अर्कदुग्धं गृहीत्वा तु कौमारीरसपेषितम्। लेपयेत्सर्वगात्राणि वह्निस्तम्भः प्रजायते ॥३१॥ कदलीरसमादाय कुमारीरसपेषितम्। लेपनात्तु शरीरस्य वह्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३२ ॥ मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कर्पूरेणैव संयुता। लेपात्तस्य तु गात्राणां वह्निस्तम्भः प्रजा-

यते ॥ ३३ ॥ कुमारीकन्दमादाय कदलीकन्दसंयुतम् । लेपनात्तस्य गात्राणामग्निस्तम्भः प्रजायते ॥ ३४ ॥ पिप्पलीं मरिचं शुण्ठीं चर्वयित्वा ततः पुनः । दीप्ताङ्गाराग्नरो भुंक्ते न वक्त्रं दह्यते क्वचित् ॥ ३५ ॥ कौमारीचूर्णसंयुक्तलिप्तदेहो न दह्यते । आज्यशर्करया पीत्वा चर्वयंस्तगरं तथा । तप्तलोहं लिहेत्पश्चात् वक्त्रं न दह्यते क्वचित् । अग्निस्तम्भनयोगोयं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ३६ ॥

मेढक की चर्बी लेकर घीकुआर के रस में पीसकर अपने पूरे शरीर में लेप करने से अग्नि स्तम्भन हो जाता है। मदार का दूध लेकर घीकुआर के रस में पीसकर अपने पूरे शरीर में लेप करने से अग्नि स्तम्भन हो जाता है। केले का रस लेकर घीकुआर के रस के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से अग्नि स्तम्भन हो जाता है। मेढक की चर्बी को कपूर के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से अग्नि स्तम्भन हो जाता है। घीकुआर का कन्द तथा केले का कन्द एक साथ पीसकर शरीर पर उसका लेप करने से अग्नि स्तम्भन होता है। पिप्पली, मिर्च तथा सोंठ चबाकर जलता हुआ अङ्गारा खाने से भी मुख कहीं नहीं जलता। घीकुआर के चूर्ण का सम्पूर्ण शरीर पर लेप लगाने से साधक अग्नि में जलता नहीं। शकर के साथ घी को पीकर तगर चबाते हुये गर्म लोहे को चाटने से भी मुख नहीं जलता। इन अग्नि स्तम्भन कारक योगों को शङ्करजी ने बताया है अतः ये कभी अन्यथा नहीं हो सकते।

गृहीत्वा रविवारेण श्वेतकर्वीरमूलकम् । धारयेद्दक्षिणे हस्ते अग्निबाधाभयं न हि ।

रविवार को श्वेत कनेर की जड़ को लेकर दाहिने हाथ में धारण करने से अग्निबाधा नहीं होती।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

उत्तरस्मिश्च दिग्भागे मरीचो नाम राक्षसः । तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुतस्तम्भः प्रजायते । इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् : अनेन मन्त्रेण सप्ताञ्जलीन जलस्याग्निमध्ये निक्षिपेत् वृद्धिः शाम्यति ।

इसका विधान : इस मन्त्र से ७ अञ्जलि जल अग्नि में डालने से उसका प्रसार शान्त हो जाता है।

अथासनस्तम्भनम् ।

३० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इति त्रिविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे।

चर्मकारस्य कुण्डोत्थमलो ग्राह्यस्तथा रजः। चाण्डालीरुधिरं तद्वद्यस्याङ्गे च विनिक्षिपेत्। तस्य स्थाने भवेत्स्तम्भः सिद्धि योग उदाहृतः। यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम्॥ ३७॥

दत्तात्रेय तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : चर्मकार के कुण्ड से निकले मल तथा रज को ग्रहण कर चाण्डाली के रक्त को मिलाकर जिसके शरीर पर फेंक दिया जाय वह उसी स्थान पर स्तम्भित हो जाता है। इसे सिद्ध-योग कहा गया है। शङ्कर द्वारा कहे गये इस योग को ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये। यह अन्यथा नहीं होता।

श्वेतगुञ्जाफलं क्षिप्त्वा नृकपाले समृत्तिके। बलिं दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेत्तथा। तस्य शाखालतां छित्त्वा यस्याग्रे तु विनिक्षिपेत्। तस्य स्थाने भवेत्स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः॥ ३८॥ श्मशानाग्निं गृहीत्वा तु जुहुयाल्लवणेन च। यस्य नाम्ना भवेत्स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः॥ ३९॥

मनुष्य की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें सफेद गुञ्जा बो दे और उसे गाय के दूध से सींचता रहे। जब उसमें से वृक्ष उग जाय तो उसकी शाखा लता को तोड़कर जिसके आगे डाल दिया जाय उसका स्थान-स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध योग कहा गया है। श्मशान की अग्नि लेकर उसमें जिसके नाम से होम करे उसका स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध योग कहा गया है।

अथ गर्भस्तम्भनम्।

दत्तात्रेय तन्त्र में आठ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो गर्भं स्तम्भय। इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

एरण्डबीजं ऋत्वन्ते भुक्तं गर्भस्य स्तम्भम् ॥ ४० ॥ धत्तूरमूलं कटिबद्धं गर्भस्तम्भनकं परम् ॥ ४१ ॥ सिद्धार्थमूलं शिरसि बध्वा कान्ता रमेत्तु या। न गर्भं धारयेत्सा स्त्री भुक्तं तु लभते पुनः ॥ ४२ ॥ धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भस्तम्भनम् । तण्डुलीमूलतोयेन दातव्यं तण्डुलवारिणा । धूपो योनिरन्ध्रेषु निम्बकाष्ठेन युक्तितः । ऋतौ तु दीयते सा स्त्री गर्भदुःखविवर्जिता ॥ ४३ ॥

ऋतु के अन्त में रेंड का बीज खाने से गर्भस्तम्भन होता है। धतूरे की जड़ को कमर में बांधने से गर्भस्तम्भन होता है। पीली सरसों की जड़ शिर में बांधकर जो स्त्री रमण करती है वह गर्भधारण नहीं करती किन्तु उसे खाने पर गर्भ धारण करती है। धतूरे की जड़ के चूर्ण को योनि में रखने से गर्भस्तम्भन होता है। चौलाई की जड़ को पीसकर चावल के पानी के साथ देने से गर्भस्तम्भन होता है। नीम की लकड़ी से ऋतुस्नाता स्त्री की योनि को धूपित करने से वह स्त्री गर्भ के दुःख से वर्जित रहती है, अर्थात् उसे गर्भ नहीं रहता।

कुछ अन्य प्रयोग :

१. प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वज्रयोगिनी वज्रकिवाड, वजरी बांधू दसूं दुवार। झाडो झडै न लिङ्गी करै, तो वज्रजोगनीका वाचा फुरै।

२. अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरूको चार घाटी चार वटी रक्त चुवै चोरासी घाटी रक्त चुवै भील धीर थांभ थांभ हनुमन्त वीर लङ्कासा कोट समुदरसी खाई इस नारीके रक्त चुवै तो सोषिया वीरकी दुहाई लूणा चमारीकी दुहाई अजैपाल जोगीकी दुहाई। इति मन्त्रः।

उक्त दोनों मन्त्रों का विधान समान है।

कुमारी कन्या का काता हुआ ढाई पूणी सूत लेकर उसका डोरा बनाकर मन्त्र द्वारा सात गांठ देकर उसे कमर में बांधने से गर्भपात रुक जाता है। यह सत्य है।

अथ पदस्तम्भनम् ।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरूको चार आंटी चार वाटी नीर चढे चौरासी घाटी आवै नीर भीजै चीर बांधगया सोखता वीर सोखता वीर लङ्का

वसै सोला कुण्डा रक्तका भषै शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा । इति मन्त्रः ।

इसका विधान : आधी रात को मन्त्र पढ़कर २१ बार लोहबान जलावे । २१ दिन तक ऐसा करने से सिद्धि होती है । फिर कुमारी कन्या द्वारा काते सूत का डोरा बनाकर कमर में बाँधने से पदस्तम्भन होता है ।

भीतस्तम्भनयन्त्रम् ।

निम्नलिखित अक्षरों को लिखकर दीवार के मध्य में चिपकावे । जब तक यह चिपका रहेगा । तब तक दीवार कभी नहीं गिरेगी । इसके बाद कुछ शीरनी बाँटे ।

वहक्वशाहदमारूफकरखीवमानन्दशालहादीवारतरक्वी ।

पशुस्तम्भनम् ।

उष्ट्रास्थीनि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् । गोमहिष्यादिसंस्तम्भे सिद्धयोग उदाहृतः ।

ऊंट की अस्थि की कीलें बनाकर उन्हें चारों दिशाओं में भूमि में गाड़ दे । इससे निश्चित रूप से गाय भैंसों का स्तम्भन होता है । यह सिद्ध योग कहा गया है ।

अन्य प्रयोग :

उष्ट्ररोम गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् । पशूनां हि भवेत्स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ।

१. ऊंट का रोम लेकर पशु पर डाल दे । इससे पशुओं का स्तम्भन हो जाता है । यह सिद्ध योग कहा गया है ।

रविवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकाभाण्डं खरमुखम् । तस्य मध्ये स्थितं कृत्वा ह्यर्ककीलं नवांगुलम् । श्वेतदूर्वासमायुक्ता अश्वगन्धा मन.शिला । ताम्बूलसंयुतं कृत्वा तुलसीपत्रं तथैव च । अपमार्गेण संयुक्तं धात्रीपत्रं तथैव च । वटपत्रं तु तन्मध्ये घृतं मिष्टान्नदुग्धकम् । मुखे वस्त्रेण संवेष्ट्य निखनेत्सस्यमस्तके । तस्योपरि भूर्जपत्रे पञ्चदशीं लिखेच्छशि । शलभामृगयामूषाभृगालाकीलकं तथा । पशुपक्षिनरेचौरकीलनं जायते तदा । वसुन्धरा सस्यपूर्णा न विघ्नैः परिभूयते । यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शङ्करोदितम् ।

२. रविवार के दिन पक्के खरमुखवाले मिट्टी के पात्र को लेकर उसके भीतर नव अंगुल की मदार की कील रक्खे । फिर उसमें श्वेत दूब से युक्त अश्वगन्ध, मैनसिल, तांबूल, तुलसीदल, अपामार्ग, आवले का पत्ता, बरगद

का पत्ता, घी, मिष्ठान्न और दूध, रखकर उसका मुख वस्त्र से बाँधकर अन्न (सस्य) के मस्तक पर गाड़ दे। उसके ऊपर भोजपत्र पर पञ्चदशी लिखे। यह शश, शलभ, मृग, चूहा तथा शृगाल का कीलन कर देता है। यह पशु पक्षियों, मनुष्यों और चोरों का भी कीलन करता है। इससे पृथिवी अन्न से पूर्ण हो जाती है और विघ्नों से पराजित नहीं होती। इसे ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये। शिव द्वारा कहा गया यह अन्यथा नहीं हो सकता।

गन्धकं हरितालं च गोमूत्रं च विषं तथा। सूक्ष्मचूर्णमयं कृत्वा किञ्चित्तर्हि विनिक्षिपेत्। विघ्नाः सर्वे पलायन्ते यथा युद्धेषु कातराः। विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः।

३. गन्धक, हरताल, गोमूत्र तथा विष का चूर्ण तैयार करे। इस चूर्ण में से थोड़ा सा फेंक देने से सभी विघ्न उसी प्रकार भाग जाते हैं जिस प्रकार कायर युद्ध से भाग जाते हैं। इसमें मन्त्र के विना ही सिद्धि होती है। यह सिद्ध योग कहा गया है।

४. मुरगाके सिर तेल लगावै, मुरगा वाङ्गदेन नहि पावै। मुर्गाके गल बांधिये, एकडामलेरांग। कण्ठमुरगका जाय रुक। देन न पावै वांग।

५. घृत अरु तेल मिलाकर भाई, गर्दभ चतड देहु लगाई। जबतक लगा रहे यह तापै, रेंकन गधा नेक नहि पावै।

६. खटमल के रुधिर में तागा भिगाकर पाँव में बाँधने से अथवा दौना (एक पौधा) की पत्ती पलङ्ग पर रखने से खटमल भाग जाते हैं।

७. रात्रि के समय एक पीतल के बर्तन में पानी भरकर एक बूंद सरसों का तेल और एक बूंद मिट्टी का तेल डालकर खाट के नीचे रखने से प्रातःकाल सहस्रों पिस्सू उसमें मरे हुये मिलेंगे।

८. रविदिन होय अमावस जबहीं, बन्दरहाड लाइये तबहीं। कोरे खपरामांहि धरदीजे, धुनी अगर ताहि पुनि दीजे। सीन्दुरको एक टीको काढै, तेलभन्यो एक दीपक वारै। गामसीमपर दीजे गाड, टीडी घुसै न भीतर हाड।

९. मन्त्र इस प्रकार है :

फरीद चले परदेसको, कुत्तक जीके भाव। सांपा चोरां नांहरा, तीनों दांत बंधान। इति मन्त्रः।

जहाँ सोवे या बैठे वहाँ पर मन्त्र द्वारा तीन बार ताली बजाने से चोर, सिंह और सर्प का भय नहीं होता।

अथ पाषाणस्तम्भनम्।

मन्त्र इस प्रकार है :

शेषफरीदकी कांमली अरु अंधियारी निसि, तीनों बीज बराइये आग ओला पानी विष। इति मन्त्रः।

मन्त्र को तीन बार पढ़कर जिधर चाहेगा उधर ही पत्थर जाकर गिरेंगे, साधक पर नहीं आवेंगे।

अथ नौकास्तम्भनम्।

पक्का फल मंगाय बेलका और मैनफल आनै। पीसै दूध डराय गायका, इह विध गोली सानै। पीलासींग मंगाय गायका, भूमिपरा जो लीजै। जमुनवडीं बराबर गोली, बांध छाह सुखकीजे, सींगमाहि भर-राखै गोली, सातदिवस जब वीतै। ऐसा जतन करै जो कोई, राजसभा में जीतै। बहती नाव जाय पानीमें, तहां खेल यह करि देखै, छिद्रनावके पेंदे तहां सोगोली धरिये। बहके चलै न खेवा मानै, रहै हार मल्लाह बिचारा। लीजे काढ छिद्रसे गोली, चलै स्वयं विन खेवनहारा।

नीचे दिये यन्त्र को शिला संपुट पर गोरोचन, हरताल, हल्दी, मैनसिल और कुंकुम से लिखे और फिर फूलों से उसका पूजन करके धूपादि देने के बाद भूमि में गाड़ दे। इससे मनुष्य की यात्रा बन्द हो जायगी।
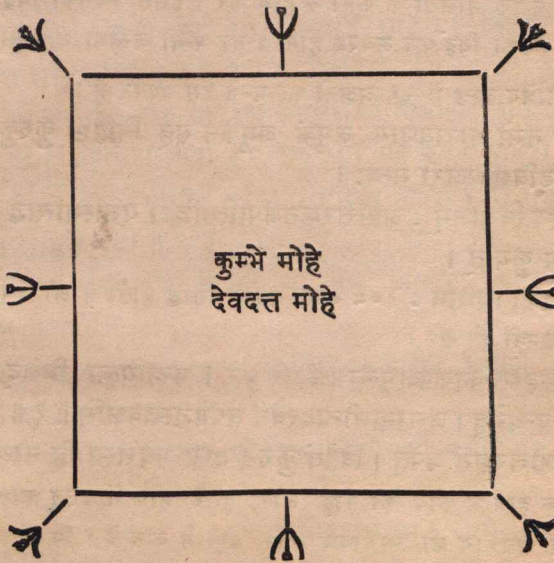
अथ विद्वेषणतन्त्रप्रारम्भः।

तवाग्रे कथयिष्यामि योगं विद्वेषणाभिधम्। महाकौतुकरूपं च

पार्वति शृणु यत्नतः ॥ १ ॥ विद्वेषं नरनारीणां विद्वेषं राजमन्त्रिणोः । महाकौतुकविद्वेषं शृणु सिद्धि प्रयत्नतः ॥ २ ॥

हे पार्वती ! मैं तुम्हारे सामने विद्वेषण का योग कहूंगा। यह महाकौतूहल कारक है, अतः ध्यान से सुनो। स्त्री-पुरुषों के विद्वेषण तथा राजा और मन्त्रियों के विद्वेषण से संबद्ध विद्वेषण के इस महा कौतुक को सुनो और प्रयत्न से सिद्धि करो।

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में ३१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदित्याय गजसिंह वदमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा। इत्येकत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : गृहीत्वा गजकेशं च तथा व्याघ्रकचं पुनः। रिपुपादमृदा कृत्वा पोटलीं निखनेद्भुवि। अग्नि तदुपरि स्थाप्य जुहुयान्मालतीकुसुमैः। विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा ॥ १ ॥

इसका विधान : हाथी तथा व्याघ्र के केश और शत्रु के पैर के नीचे की धूल की पोटली बनाकर भूमि में गाड़ दे। फिर उसके ऊपर अग्नि स्थापित करके मालती के फूलों से होम करे। इससे जिसका विद्वेषण किया जायगा उसका विद्वेषण अवश्य होगा। यह कभी अन्यथा नहीं होता।

दत्तात्रेय तन्त्र में २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्विष्टं कुरुकुरु स्वाहा। इति षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् : अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

इसका विधान : १०८ बार जप से सिद्धि होती है और सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

एकहस्ते काकपक्षमुल्लूपक्षं परे करे। मन्त्रयित्वा मिलेद्द्वन्द्वं कृष्णसूत्रेण बन्धयेत्। जलाञ्जलीन्प्रदत्त्वैवं तर्पयेद्धस्तवक्षसि ॥ १ ॥ एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत्। विद्वेषं कुरुते यस्य भवेत्तस्य हि नान्यथा ॥ २ ॥

एक हाथ में कौवे का पङ्ख और दूसरे हाथ में उल्लू का पङ्ख लेकर दोनों के अग्रभाग को मिलाकर काले डोरे से बाँध दे। फिर इस पङ्ख को अञ्जलि में लेकर सात दिन तक जिसके नाम से १०८ बार नित्य तर्पण करे उसका विद्वेषण होता है। यह अन्यथा नहीं होता।

मार्जारविष्ठामादाय विष्ठामादाय मौषकीम्। पादाधोमृत्तिकायुक्तां

कुर्यात्पुत्तलिकां नरः । नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य मन्त्रयित्वा शतेन च । विद्वेष-स्तत्क्षणाच्चैव भ्रात्रोर्वं तातपुत्रयोः ॥ ३ ॥

बिल्ली एवं चूहे की बिष्ठा को लेकर इन्हें जिन दो में विद्वेषण कराना हो उनके पैर की मिट्टी में मिला दे। फिर उस मिट्टी को बिद्वेषण मन्त्र से १०० बार अभिमन्त्रित करके मनुष्य की प्रतिमा का निर्माण करे और उस प्रतिमा को नीले कपड़े से लपेटकर उक्त दोनों में से किसी के घर में गाड़ दे। इससे पिता और पुत्र तक में भी विद्वेषण हो जाता है फिर औरों की बात ही क्या ?

गृहीत्वा सर्पदन्तं हि गृहीत्वा बभ्ररोमकम् । चिताभस्मसमायुक्तां गुटिकां कारयेन्नरः । उद्याने निखनेद्भूमौ मन्त्रयित्वा सनामकम् । विद्वेष-स्तत्क्षणाच्चैव नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ४ ॥

साँप के दाँत और नेवले के रोम लेकर चिता की भस्म मिलाकर छोटी-छोटी गोली बना ले। फिर नाम सहित अभिमन्त्रित करके बागीचे में गोली को गाड़ दे। इससे तत्काल विद्वेषण होता है—यह शङ्कर का वचन कभी अन्यथा नहीं होता।

बभ्रु रोमं कंचुकी सर्पं सभायां यदि धूप्यते। विद्वेषो जायते सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ५ ॥

नेवले का रोम और साँप की केचुली को मिलाकर सभा में धूप देने से मनुष्य का विद्वेषण हो जाता है। शङ्कर का यह कथन अन्यथा नहीं होता।

गृहीत्वा श्वानरोमाणि मार्जारस्य तथा नखम् । सभायां दीपयेद्धूपं विद्वेषो जायते तदा ॥ ६ ॥

कुत्ते का रोम और बिल्ली का नख मिलाकर सभा में धूप देने से विद्वेषण होता है।

सर्पदन्तं मयूरस्य विष्ठायां पेषयेन्नरः । ललाटे तिलकं कृत्वा विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ ७ ॥

साँप के दाँत और मयूर की बिष्ठा को पीसकर ललाट पर तिलक करने से तत्काल विद्वेषण होता है।

गृहीत्वा गजदन्तं च गृहीत्वा सिंहदन्तकम् । पेषयेन्नवनीतेन तिलको द्वेषकारकः ॥ ८ ॥

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत लेकर मक्खन के साथ पीसकर तिलक करने से विद्वेषण होता है।

अश्वकेशं गृहीत्वा च माहिषं केशमेव तु। सभायां दीपयेद्धूपं विद्वेषो जायते क्षणात् ॥ ९ ॥

घोड़े का बाल लेकर उसमें भैंस का बाल मिलाकर सभा में धूप देने से तत्क्षण विद्वेषण हो जाता है।

गृहीत्वा सिंहिकण्टं तु निखनेद्द्वार भूतले। कलहो जायते नित्यं विद्वेषो जायते तदा।

साही का काँटा लेकर जिसके द्वार पर गाड़ दे उसके घर में निश्चित रूप से कलह होने लगता है तथा सदा विद्वेषण बना रहता है।

यस्यकस्य भवेद्वैरं यावज्जीवं भवेत्तदा ॥ १० ॥ तत्पादमृत्तिकायास्तु रिपुपादस्थसन्मृदा। कृत्वा पुत्तलिकां सम्यक् श्मशाने निखनेद्भुवि। विद्वेषो जायते सत्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ११ ॥

जिस किसी दो में जन्म भर के लिये वैर कराना हो उनके पाँव के नीचे की मिट्टी को लेकर मिलाकर उससे मनुष्य के आकार की पुतलियाँ बनाकर चिता की भूमि में पृथक्-पृथक् नामयुक्त विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गाड़ दे तो निश्चय ही दोनों में विद्वेषण हो जाता है। यह सिद्ध योग है। मन्त्र यह है :

ॐ नारदाय अमुकस्य अमुकेन सहविद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।

१ लाख जप से सिद्धि होती है।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ बारा सरसो तेरा राई यारकी मारी मसाणकी छाई पढके मारू कर दलवार अमुका कढे न देखै अमुकीका द्वार मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

इसका विधान : सरसों, राई और श्मशान की भस्म इन तीनों को मङ्गलवार के दिन आक की लकड़ियों की अग्नि में १०८ बार होम करे। इस होम की भस्म को स्त्री या पुरुष के द्वार पर डाल दे तो दोनों में अवश्य वैर भाव उत्पन्न हो जायगा।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

सत्य नाम आदेस गुरूको आकढाक दोनों वन राई अमुका अमुकी ऐसी करै जैसे कूकर और विलाई। इति मन्त्रः।

इसका विधान : शनिवार से प्रारंभ करके ७ दिन इस मन्त्र को आक के पत्तों पर लिख अर्ध रात्रि के समय प्रत्येक पत्ते को सात मन्त्रों से

अभिमन्त्रित करके ढाक की लकड़ी के अङ्गारों में जलावे तो साध्यों के बीच अवश्य वैर भाव उत्पन्न हो जाता है ।

कुछ अन्य प्रयोग :

वस्त्र पुर्षसिरवालमें हरिया मङ्गलके दिन जारै। तेहिकी राख खवावै उनको वैर बन्धै या मारै ॥ १४ ॥

गधामूत्र लेवै शनिरविदिन, धरतीपडन न पावै। तामें राई रखे तीन दिन, फिरले ताहि सुखावै। रविदिन धूनी दे लेजावै, जहांमित्र दोपावै। उनके मध्य डारकर आवै, वैरभाव होजावै ॥ १५ ॥

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकममुकेन सह विद्वेषय विद्वेषय हनहन पचपच मथमथ हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

इसका विधान : इस मन्त्र से कड़वा तेल में नीम के पत्ते, तिल और चावल मिलाकर होम द्रव्य तैयार करे। फिर श्मशान की अग्नि से खैर की लकड़ियाँ जलाकर उसमें उक्त द्रव्य की १० हजार आहुतियाँ दे। इससे दो साध्यों में अवश्य वैर भाव उत्पन्न हो जाता है ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे षट्कर्मतन्त्रे
स्तम्भनादिर्दशमस्तरङ्गः ॥ १० ॥

इति श्री मन्त्रमहार्णव के मिश्र खण्ड में षट्कर्मतन्त्र के अन्तर्गत
स्तम्भनादि विषयक दशवाँ तरङ्ग समाप्त ॥ १० ॥

एकादश तरंग

यन्त्र प्रकरण

विंशाङ्कयन्त्रविधानम् ।

विश्वलोकतन्त्रे । पार्वत्युवाच । नमस्ते देवदेवेश सर्वशास्त्रविशारद । विंशांकस्य विधिं ब्रूहि भक्तानां हितकारक ॥ १ ॥

विश्वलोक तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : श्रीपार्वती बोलीं : हे देवदेवेश ! हे सर्वशास्त्रविशारद ! भक्तों के लिये हितकारक विंशाङ्क विधि को बताइये ।

श्रीमहादेव उवाच । अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सुन्दरीयन्त्रमुत्तमम् । विंशांकस्य महादिव्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ २ ॥ अद्यप्रभृति कस्यापि न चोक्तो यन्त्रराजकः । तव स्नेहान्मया ख्यातो गोप्यः सर्वत्र सर्वदा ॥३॥ एतां राजवतीविद्यां पिता पुत्रेपि नार्पयेत् । तस्माद्गोप्यं वरारोहे मम वाक्यं न संशयः ॥ ४ ॥ मोहनं स्तम्भनाकर्षं वशीकरणमुत्तमम् । विद्वेषोच्चाटनकरं मारणं प्राणदायकम् ॥ ५ ॥ सर्वार्थजनकं चैव वैरिचित्तस्य शोषणम् । समस्तयन्त्रफलदं महारक्षाकरं सदा ॥ ६ ॥ महाभाग्यैकलभ्यं तु महदैश्वर्यदायकम् । सर्वकल्याणनिलयं दुर्लभं भुवन त्रये ॥ ७ ॥ इन्द्राद्याकर्षणं देवि योषिदाकर्षणं परम् । आकर्षणकरं देवि गन्धर्वोरगरक्षसाम् ॥ ८ ॥ करुणामृतकल्लोलं वाक्कवित्वप्रकाशकम् । भूगतानां निधीनां च सद्यः आकृष्टिकारकम् ॥ ९ ॥ कालसंहारपापघ्नं महामोक्षप्रदायकम् । वश्यकामेन देवेशि सदोपास्यं प्रयत्नतः ॥ १० ॥ मातङ्गा वशगास्तस्य सर्वे तस्य वशङ्गताः । देवकन्याकृष्टिकरं कल्पद्रुममिवापरम् ॥ ११ ॥ योगीशैः पूजितं नित्यं ज्ञानवैराग्यभाजनम् । धनधान्यप्रदं लोके सुतराजवशङ्करम् ॥ १२ ॥ रसायनकरं स्वर्णसिद्धिदायकमुत्तमम् । जगतां सर्वपापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥ १३ ॥ गत्युत्थानास्त्रवाग्वह्निस्तम्भनं भूवशङ्करम् । अमराणां मृत्युकरमुच्चाटनं मरुतामपि ॥ १४ ॥ परसैन्यस्तम्भनं तद्विवादविजयावहम् । दुर्भिक्षे वृष्टिजनकं कृषिवृष्टिकरं परम् ॥ १५ ॥ रत्नवृद्धिकरं सर्वमनोरथसमृद्धिदम् । पुत्रपौत्रप्रदं देहबलवृद्धि-

प्रदायकम् ॥ १६ ॥ शत्रवस्तस्य नश्यन्ति येनेदं साध्यते भुवि । व्याधयो निलयं यान्ति विनौषधिनिषेवणैः ॥ १७॥ राज्यदं भ्रष्टराज्यस्य निर्धनस्य धनप्रदम् । भक्तिदं सन्मुमुक्षाणामगतीनां गतिप्रदम् ॥ १८ ॥ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा । प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं प्राप्यतेऽचिरात् ॥ १९ ॥ ग्रहेभ्यो न भयं तस्य राजचोरभयं नहि । न शस्त्रादिभयं तस्य न भयं देवदानवात् ॥ २० ॥ चमत्कारकरी विद्या धनधान्यसमृद्धिदा । पुत्रपौत्रप्रदा विद्या चान्ते मुक्तिप्रदायिनी ॥ २१ ॥ सर्वेषां यन्त्रराजानां शिरोमुकुटवत्स्थितम् । स्थित्वा पालयते लोकान् सृष्ट्वा सूते जगत्त्रयम् ॥ २२ ॥ संहृत्या संहरेदेतद्यन्त्रं त्रैलोक्यसुन्दरि । यथा ज्ञाते ज्ञानतत्त्वे ज्ञानं परिसमाप्यते ॥ २३ ॥ ततोऽस्मिन् यन्त्रराजे तु नान्यदन्वेषितं भवेत् । बहुना किमिहोक्तेन सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ २४ ॥

श्री महादेव बोले : अब मैं ब्रह्मविष्णुशिवात्मक महादिव्य बीस अङ्कों के उत्तम सुन्दरी यन्त्र को कहूंगा । आज तक मैंने इस यन्त्रराज को किसी को नहीं बताया है । तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण ही मैं इसे तुम्हें बता रहा हूं । तुम इसे सदा गुप्त रखना । इस राजवती विद्या को अपने पुत्र को भी नहीं देना चाहिये । हे वरारोहे ! इस कारण मेरे वाक्य को निःसंशय गुप्त रखना यह यन्त्र उत्तम मोहन, स्तम्भन, आकर्षण, वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण तथा प्राणदायक है । यह सभी अर्थों का जनक, वैरियों के चित्त का शोषण करनेवाला, समस्त यन्त्रों के फलों को देनेवाला तथा सदा महारक्षा-कारक है । यह यन्त्र महाभाग्य तथा महा ऐश्वर्यदायक और समस्त कल्याणों का आयतन है । यह तीनों लोकों में दुर्लभ और इन्द्रादि का भी आकर्षण करनेवाला है । स्त्रियों का यह परम आकर्षण करता है । हे देवि । यह यन्त्र गन्धर्व, उरग तथा राक्षसों का आकर्षण करनेवाला है । यह करुणामृत की लहर तथा वाणी और कविताशक्ति का प्रकाशक है । यह भूमि में गड़े खजानों का शीघ्र आकर्षणकारक, मृत्यु का संहारक, पापों का नाशक और महामोक्षदायक है । वशीकरण चाहनेवालों को प्रयत्न से सदा इसकी उपासना करनी चाहिये । हाथी तथा सभी अन्य इसके साधक के वश में हो जाते हैं । यह देवकन्याओं को आकृष्ट करनेवाला तथा एक दूसरे कल्पवृक्ष के समान है । यह योगीश्वरों द्वारा नित्य पूजित होता रहा है । यह ज्ञान और वैराग्य का भाजन, संसार में धन-धान्य प्रदायक, पुत्रों तथा राजाओं के वश में करनेवाला, उत्तम रसायनकारक, स्वर्ण की सिद्धि करनेवाला, संसार के समस्त पापों का नाशक तथा समस्त रोगों का निवारण करनेवाला है ।

यह गति, उत्थान, अस्त्र, वाणी तथा वह्नि का स्तम्भन करनेवाला है। यह पृथिवी को वश में करनेवाला, देवों का भी मृत्युकारक, मरुतों का उच्चाटक शत्रु की सेना को स्तम्भित करनेवाला, शत्रु के साथ विवाद में विजय दिलानेवाला, दुर्भिक्ष में वृष्टिकारक, कृषि के लिये वृष्टि करनेवाला, रत्नों की वृद्धि करनेवाला और सभी मनोरथों तथा समृद्धियों का दाता है। यह पुत्र-पौत्रों का दाता और देहबल तथा वृद्धि को देनेवाला है। संसार में जिसने इसका साधन कर लिया है उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं। औषधि के सेवन के बिना ही इससे रोग दूर भाग जाते हैं। जिसका राज्य नष्ट हो गया है उसे यह यन्त्र राज्य और जो निर्धन हो गया है उसे धन दिलाता है। मुमुक्षुओं के लिये यह मुक्ति देनेवाला तथा गतिहीनों को गति देनेवाला है। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व तथा वशित्व आदि सिद्धियाँ शीघ्र ही इस यन्त्र से प्राप्त हो जाती हैं। जो इसकी उपासना करता है। उसे ग्रहों से, राजा से, चोर से, शस्त्रादि से, देवों से यथा दानवों से भी भय नहीं रहता। यह चमत्कारी विद्या है। धन-धान्य तथा समृद्धि-दायक, और पुत्र-पौत्र दायक यह विद्या अन्त में मुक्ति देनेवाली है। यह यन्त्र सभी यन्त्रराजों में मुकुट के समान स्थित है। स्थिति कारक के रूप में यह तीनों लोकों का पालन करनेवाला तथा सृष्टिकारक के रूप तीनों लोकों की संहारक है। जिस प्रकार ज्ञानतत्त्व को जान लेने पर ज्ञान समाप्त हो जाता है उसी प्रकार इस यन्त्रराज को जान लेने पर कुछ भी खोजना नहीं पड़ता। यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ ? यह यन्त्रराज समस्त सिद्धियों का दाता है।

तस्योद्धारं प्रवक्ष्यामि समाहितमनाः शृणु। त्वया कुत्रापि नो वाच्यं गोप्याद्गोप्यतरं महत् ॥२५॥ हृदये मम सर्वस्वं मद्भाग्यं मम प्राणवत्। प्राणादपि प्रियतमं न प्रकाश्यं त्वया क्वचित् ॥ २६ ॥ किं यागैः किं मखैस्तीर्थैः किं तपोभिः प्रयासकैः। किं दानैः किं जपैः स्तोत्रैः किं पूजा-यागविस्तरैः ॥ २७ ॥ किमन्यैरशनालापैः किं वान्यैर्देवसंस्तवैः। किं तस्य योगसिद्धया वा कायक्लेशादिभिश्च किम् ॥ २८ ॥ नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य भावना। जपादस्य भवेत्सिद्धो यन्त्रराजस्त्रिवर्गकः ॥ २९ ॥ पूर्वपश्चिमभागे च कृत्वा रेखाचतुष्टयम्। उत्तरे दक्षिणे रेखां चतुष्कोणं तु कारयेत् ॥ ३० ॥ वसुनन्दहुताशननेत्रमुनिप्रमथाधिपवेद-रसैः क्रमतः। रचितं किल विंशतियन्त्रमिदं धनधान्ययशोदयसिद्धिकरम् ॥ ३१ ॥ नवकोष्ठाङ्कितं यन्त्रं स्वर्गपातालसिद्धिदम्। एकाधिकोणविंशत्या

षष्टिरङ्काः प्रकीर्तिताः ॥ ३२ ॥

अब मैं इसका उद्धार बतला रहा हूं, शान्तचित्त होकर सुनो। तुम इसे कहीं भी प्रकट न करना। यह गोप्य से भी गोप्यतर है। हृदय में यह मेरा सर्वस्व, मेरा भाग्य और मेरे प्राण के समान है। यह मुझे प्राणों से भी प्रिय है, अतः तुम इसे कहीं भी प्रकाशित न करना। दान-जप से क्या? स्तोत्र, पूजा तथा योग के विस्तार से क्या? यज्ञों से क्या? महायज्ञों से क्या? तीर्थों और तपों से क्या? अन्य बातों से क्या? अन्य स्तवों से क्या? योग सिद्धि से क्या? शरीर को कष्ट देने से क्या? इसका न ध्यान है, न पूजा है, न न्यास है और न भावना है। जपमात्र से इसकी सिद्धि होती है। यह यन्त्रराज त्रिवर्गात्मक है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दिशाओं में चार-चार रेखायें खींचकर चतुष्कोण यन्त्र बनता है। वसु (८), नन्द (९), हुताशन (३), नेत्र २, मुनि (७), प्रमथ (११), अधिप (१०), वेद (४), रस (६)—इन अङ्कों से क्रमशः यह बीसा यन्त्र धन, धान्य, यश, उदय और सिद्धिदायक होता है। नव कोष्ठों का यह यन्त्र स्वर्ग और पाताल की सिद्धियों को देता है। इसके अङ्कों का योग ६० है; किन्तु एक कोण पर १ अधिक है—अर्थात् एक कोण का योग २१ है।

८	९	३
२	७	११
१०	४	६

आदौ कुर्यात्पुरश्चर्यां साधकः सिद्धिहेतवे। पुरश्चरणहीनस्य यन्त्र-सिद्धिर्न जायते ॥ ३३ ॥ लेखने यन्त्रराजस्य भूरि विघ्ना भवन्ति हि। क्वचिच्चटचटाशब्दस्तालशब्दः क्वचिद्भवेत् ॥३४॥ गानं गन्धर्वपत्नीनां नृत्यमप्सरसामपि। मातुः पितुर्वा पुत्रस्य दर्शनं श्रीगुरोरपि ॥ ३५ ॥ नानासर्पमृगव्यालसिंहव्याघ्रादिदर्शनम्। गात्रस्फुटनमाध्मानं गात्र-गौरवमेव च ॥ ३६ ॥ रोदनं दुःखितानां च महावातो महाग्नयः। पर्वतो-त्पतनं वृक्ष भङ्गो विद्युल्लतागमः ॥ ३७ ॥ क्वचिन्मेघायते भूमिः समुद्रः प्लावयेन्महीम्। क्वचिद्विमानं पतति क्वचिदावर्तते पुनः ॥३८॥ क्वचिच्च-विकृताकारा यान्ति वै भूतनायकाः। एवं नानाविधा विघ्ना जायन्ते

जगदीश्वरि ॥ ३९ ॥ निवार्य दुस्तरांस्तांस्तु समाधाय मनः स्थिरम् । विघ्नान्न गणयेत्तावत्सिद्धिं नैव प्रकाशयेत् ॥ ४० ॥ गात्ररोगान्न गणयेत्पुनर्जन्म न चिन्तयेत् । एवं कृतपुरश्चर्यः साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत् ॥ ४१ ॥ किं तस्य योगसिद्ध्या वा कायक्लेशादिभिश्च किम् । यस्य प्रसन्नो भगवान् यन्त्रराजो जनार्दनः ॥ ४२ ॥ तस्य किं दुर्लभं लोके स्वर्भूपातालमण्डले । विषं निर्विषतां याति पानीयममृतं भवेत् ॥ ४३ ॥ परसैन्यस्तम्भनं स्यात्परकायप्रवेशनम् । यन्त्रराजे वशीभूते किं न सिद्ध्यति भूतले ॥४४॥ खेचरीमेलनं तस्य भूचरीमेलनं भवेत् । श्मशानेपि मृतो याति मोक्षमार्गं सनातनम् ॥ ४५ ॥

साधक पहले पुरश्चरण करे क्योंकि जो पुरश्चरण नहीं करता उसे सिद्धि प्राप्त नहीं होती । इस यन्त्रराज के लेखन में अनेक प्रकार के विघ्न उत्पन्न होते हैं । कहीं पर चटचटा शब्द, कहीं पर तालशब्द और कहीं गन्धर्वपत्नियों का गान सुनाई पड़ता है । कहीं अप्सराओं का नृत्य, कहीं माता-पिता-गुरु या पुत्र का दर्शन होता है । कहीं नाना प्रकार के सर्प, जानवर, व्याल, सिंह तथा व्याघ्र का दर्शन होता है । कहीं शरीर का स्फुटन, आध्मान, शरीर में भारीपन होता है । कहीं दुखियों का रोदन सुनाई पड़ता है । कहीं तीव्र पवन का चलना, अग्निज्वाला, पर्वतों का गिरना, वृक्षों का उखड़ जाना, बिजली का गिरना, भूमि पर मेघों का आ जाना, समुद्र द्वारा पृथिवी को आप्लावित करना, विमान का गिरना और साधक के ऊपर आ जाना आदि उपद्रव होते हैं । कहीं विकृत आकारवाले भूतों के नायक दिखाई पड़ते हैं । हे जगदीश्वरि ! इस प्रकार नाना प्रकार के विघ्न उत्पन्न होते हैं । साधक को चाहिये कि इन दुस्तर दशाओं का समाधान करके मन को स्थिर करे तथा जब तक सिद्धि न मिल जाय तब तक इन विघ्नों पर ध्यान न दे । शरीर के रोगों पर ध्यान न दे और पुनर्जन्म की चिन्ता न करे । इस प्रकार पुरश्चरण समाप्त कर लेने के पश्चात् साधक साक्षात् ब्रह्ममय हो जाता है, फिर उसके लिये योगसिद्धियों का क्या महत्त्व है ? उसे काय-क्लेश से भी क्या प्रयोजन ? जिसपर यन्त्रराज भगवान् जनार्दन प्रसन्न हैं उसके लिये स्वर्ग, भूमि तथा पाताल मण्डल में भी कुछ दुर्लभ नहीं है । उसके लिये विष निर्विष हो जाता है, पानी अमृत हो जाता है, दूसरे की सेना का स्तम्भन हो जाता है और उसे परकाय प्रवेश की शक्ति प्राप्त हो जाती है । इस यन्त्रराज के वशीभूत हो जाने पर इस संसार में सब कुछ सिद्ध हो जाता है । खेचरीमेलन भूचरीमेलनवत् हो जाता है । इससे मनुष्य श्मशान में भी

मरने से सनातन मोक्ष मार्ग को चला जाता है ।

अथास्य साधनं वक्ष्ये तदिहैकमनाः शृणु । यन्त्रराजेन सिद्ध्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ४६ ॥

मैं इसका साधन कहता हूं ध्यानपूर्वक सुनो । यन्त्रराज से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं—इसमें विचार की कोई आवश्यकता नहीं है ।

अथास्य प्रयोगः । तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते सिद्धतीर्थे पर्वते वने वा जपस्थानं प्रकल्प्य नद्यादौ स्नात्वा नित्यनैमित्तिकं विधाय एकाकी कुशासने प्राङ्मुखो उदङ्मुखो वा उपविश्य विश्वरूपं यन्त्रराजं स्वहृदये विचिन्तयेत् । तथा च :

इसका प्रयोग : चन्द्रमा और नक्षत्रादि के बल से युक्त शुभ मुहूर्त में, शुभ तीर्थ स्थान में, पर्वत या वन में जप स्थान बनाकर नदी में स्नान तथा नित्य नैमित्तिक कर्म करके कुशासन पर एकाकी पूर्वाभिमुख था उत्तराभिमुख बैठकर विश्वरूप यन्त्रराज का इस प्रकार अपने हृदय में चिन्तन करे :

मायाबीजान्तरीभूतमज्ञानेन्धनदाहकम् । भावनावशमापन्नः साक्षाद्यन्त्रमयो भवेत् ॥ १ ॥

इससे चिन्तन करके एकाग्रमन, स्थिरासन तथा मौन होकर :

ॐ गुरवे नमः ॥ १ ॥ ॐ गणपतये नमः ॥ २ ॥

इससे प्रजापति को नमस्कार करके से इस प्रकार प्रार्थना करे :

ॐ प्रजानाथ नमस्तेस्तु प्रजापालनतत्पर । प्रसन्नो भव मे देव यन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ ये केचित्प्रेतकूष्माण्डा भैरवा भूतनायकाः । ते सर्वे विलयं यान्तु प्रजानाथ नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ प्रयच्छ सिद्धिमतुलां यन्त्रराजात्सुदुर्लभाम् । त्वत्प्रसादादहं नाथ कृतकृत्यो व्रजे परम् ॥ ३ ॥

इति गिरिशं सम्प्रार्थ्यं प्रसन्नचित्तो मौनी यन्त्रं लिखेत् । तथा च : चन्दनागुरुकस्तूरीरक्तचन्दनकर्पूरकुंकुमदेवदारुकुष्ठैरष्टगन्धाभिधैर्जातीलेखन्या भूर्जपत्रे प्रसिद्धयन्त्रे वा ॐ ह्रीं ॐ इत्युच्चारणपूर्वकं नवकोष्ठाङ्कितं कृत्वा प्रथममष्टौ नव तृतीयं पुनः द्विसप्तैकादशं पुनः दशचतुःषष्ठाः इत्यङ्कान् ॐ ह्रीं ॐ इत्युच्चारणपूर्वकं लिखेत् । एवमेव विधिनाष्टोत्तरशतं यन्त्राणि लिखित्वा नानापुष्पैः सम्पूज्य कृष्णागुरुधूपं च दत्त्वा पुष्पवासिततैलेन दीपं दद्यात् । एवं यन्त्रं सम्पूज्य पुनरपि दीपं प्रज्वाल्य पश्चिमाभिमुखं संस्थाप्य ।

इससे शिवजी की प्रार्थना करके प्रसन्नचित्त और मौन होकर यन्त्र को इस प्रकार लिखे : चन्दन, अगर, कस्तूरी, लाल चन्दन, कपूर, कुंकुम, देवदारु, कुष्ठ (कूठ) और अष्टगन्ध आदि से जाती की लेखनी द्वारा भोजपत्र पर या प्रसिद्ध यन्त्र पर 'ॐ ह्रीं ॐ' के उच्चारण पूर्वक नवकोष्ठाङ्कित करके प्रथम तीन कोष्ठों में ८, ६, ३, दूसरी पंक्ति के कोष्ठों में २, ७, ११ तथा तीसरी पंक्ति के कोष्ठों में १०, ४, ६—इन अङ्कों को 'ॐ ह्रीं ॐ' के साथ लिखे। इस प्रकार विधिपूर्वक १०८ यन्त्रों को लिखकर नाना पुष्पों से पूजा करे, काले अगर की धूप दे और पुष्पवासित तेल से दीपदान करे। इस प्रकार यन्त्र की पूजा करके पुनः दीपक को जलाकर पश्चिमाभिमुख उसे रखकर :

ॐ भोभो जलेशवसन सर्वकार्यप्रसाधक। निर्विघ्नं कुरु मे कार्यं हर विघ्नान्नमोस्तु ते।

इति वरुणं सम्प्रार्थ्य इमं दीपं वरुण तुभ्यमहं प्रददे। इति दीपं दत्त्वा नानापुष्पैः सम्पूज्य यन्त्राग्रे मूलमन्त्रं जपेत्। तथा च :

इससे वरुण की पूजा करे। फिर 'इमं दीपं वरुण तुभ्यमहं प्रददे' इससे दीपदान करके नाना पुष्पों से पूजा करके यन्त्र के सामने मूलमन्त्र का जप करे। १७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम सर्ववांछितं देहिदेहि स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः।

विनियोग : अस्य विंशाङ्कस्य यन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः विंशांका भवानी देवता ॐ बीजं ह्रीं शक्तिः श्रीं कीलकं मम चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। विंशांका-भवानीदेवतायै नमः हृदि ३। ॐ बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। श्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७।

इति विन्यस्य सहस्रसंख्यकं मन्त्रं जपेत्। तद्दशांशेन क्षीरखण्डाज्य-मधुना पञ्चामृतेनाक्तेन पञ्चखाद्यं हुत्वा तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मण-भोजनानि कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं अष्टाशीतिदिनं यावत्। संख्यासमाप्ति-दिवसे पृथक्पृथक्यन्त्रं गोधूमान्नेन वर्टि कृत्वा जले क्षिपेत्। मत्स्यस्य वटिकाभक्षणाद्वरुणस्तुष्यति रात्रौ वरं ददाति। एवं कृते यन्त्रं सिद्धं भवति। एतस्मिन्सिद्धे यन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च :

इससे विन्यास करके मन्त्र का १ हजार जप, जप का दशांश दूध,

शकर, घी तथा मधु से युक्त पञ्चामृत सें सिक्त पाँच खाद्यान्नों से होम करके तत्त-द्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे। इसका पुरश्चरण ८८ दिनों तक करना चाहिये। संख्या समाप्ति के दिन पृथक्-पृथक् यन्त्र की गेहूं के आटे सें गोली बनाकर जल में डाल दे। मछलियों द्वारा गोलियों को खाने सें वरुण देवता प्रसन्न होते हैं और रात के समय साधक को वरदान देते हैं। ऐसा करने सें यन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार यन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

सिद्धतीर्थे गुरौ रम्ये सुसमे भूतले पुनः। नित्यं नैमित्तिकं कृत्वा सर्वसङ्गविवर्जितः ॥ ४७ ॥ कुशासने समासीन एकचित्तः स्थिरासनः। ध्यानादिसंयतो मौनी नमस्कृत्य गुरुं हृदि ॥ ४८ ॥ गणेशानं नमस्कृत्य प्रार्थयित्वा प्रजापतिम्। प्रसन्नचित्तो विलिखेल्लेखन्या जातिजातया ॥४९॥ आदौ[१] भूर्जे सिते पत्रे विलिखेदष्टगन्धकैः। प्रणवं पूर्वमुच्चार्य मायाबीजं तु मध्यतः ॥ ५० ॥ विलिख्य यन्त्रराजं तं पुनरङ्काङ्कितं चरेत्। धूपं दत्त्वा महेशानि कृष्णागुरुसमुद्भवम् ॥ ५१ ॥ पुष्पवासिततैलेन दीपं दद्यात्प्रयत्नतः। पश्चिमाभिमुखं दीपं जलेशाय निवेदयेत् ॥ ५२ ॥ नाना-पुष्पैः प्रपूज्याथ यन्त्रमष्टोत्तरं[२] शतम्। जप्यं सहस्रमेकं च हवनं तद्द-शांशतः ॥ ५३ ॥ क्षीरखण्डाज्यमधुना तथा पञ्चामृतेन च। पञ्चखाद्येन जुहुयादर्धरात्रे तु पार्वति ॥ ५४ ॥ सम्पूर्णतर्पणं चात्र कृत्वा रात्रौ वर-प्रदम्। नास्य ध्यानं न वा पूजा न न्यासो नास्य भावना ॥ ५५ ॥ जपा-दस्य भवेत्सिद्धो यन्त्रराजस्त्रिवर्गदः। तावल्लिखेद्यन्त्रराजं यावत्संख्या समाप्यते ॥ ५६ ॥ अष्टाशीतिदिने देवीं पूजयित्वा विसर्जयेत्। पुनर्गोधूम-चूर्णेन वेष्टयित्वा जले क्षिपेत् ॥ ५७ ॥ मत्स्यैस्तु भक्षणादस्य वरुणस्तेन तुष्यति। मौनं च ब्रह्मचर्यं च भूशय्यां तावदाचरेत् ॥ ५८ ॥ गोधूमचूर्ण-घटितं तैलपक्वं प्रभक्षयेत्। न घृतं भक्षयेत्तावद्यावद्यन्त्रं समाप्यते ॥५९॥ एवं कृतपुरश्चर्यः साक्षाद्ब्रह्ममयो भवेत्। वशीभूते यन्त्रराजे प्रयोगो कुशलो भवेत् ॥ ६० ॥

किसी बड़े सिद्ध तीर्थ में रम्य समतल भूमि पर नित्य नैमित्तिक कर्म करके कुशासन पर एकाग्रचित्त हो स्थिरासन से बैठ मौन ध्यानावस्थित

---

१. तन्त्रान्तरेपि : विलिखेद्यन्त्रराज तं भूर्जे वा कागदेऽथवा। वामादि-क्रममारभ्य नवकोष्ठानि पूरयेत्। २. तन्त्रान्तरेपि : विलिखेद्यन्त्रराजं तं त्रिसहस्रं समांशतः। अनया संख्यया देवि चत्वारिंशद्दिनं लिखेत्।

होकर गुरु तथा गणेश को हृदय में नमस्कार करके प्रजापति की प्रार्थना करे। फिर जाती (चमेली) की लेखनी से यन्त्रराज को अष्टगन्ध से सफेद भोज-पत्र पर लिखे। सर्वप्रथम प्रणव का उच्चारण करे। मायाबीज को मध्य में लिखकर पुनः यन्त्रराज को अङ्कों से अंकित करे। हे महेशानि ! काले अगर का धूप देकर प्रयत्नपूर्वक पुष्पवासित तेल से दीपदान करे। पश्चिमा-भिमुख दीपक वरुण को निवेदित करे। नाना फूलों से १०८ बार यन्त्रराज की पूजा करके मन्त्र का १ हजार जप और तद्दशांश होम करे। हे पार्वति क्षीर, खण्ड, घी तथा मधु से युक्त पञ्चामृत सहित पञ्च खाद्यान्नों की आहुति अर्धरात्रि में दे। सम्पूर्ण तर्पण करने के बाद रात में वह वरप्रद होता है। इसका न ध्यान है, न पूजा है, न न्यास है, और न भावना है। जप से यह तीनों वर्गों का दाता यन्त्रराज सिद्ध होता है। यन्त्रराज को तब तक लिखना चाहिये जब तक संख्या समाप्त नहीं हो जाती। ८८वें दिन देवी की पूजा करके उसका विसर्जन करे। तदुपरान्त गेहूं के आटे में उस यन्त्र को लपेट-कर जल में फेंक दे। मछलियों द्वारा उसके खाये जाने पर वरुण देवता प्रसन्न होते हैं। सदैव मौन होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये और भूशय्या पर सोते हुये सम्पूर्ण कर्म करे। गेहूं के आटे से बनी और तेल में पकी वस्तुओं का भोजन करे तथा जब तक यन्त्र समाप्त न हो तब तक घी का भक्षण न करे। इस प्रकार पुरश्चरण करने से साधक साक्षात् ब्रह्ममय हो जाता है। यन्त्रराज के वशीभूत हो जाने पर प्रयोग सिद्ध होता है।

अथ प्रयोगो यथा : आसने तु पवित्रे च नित्यं सन्ध्यात्रयेषु च। पञ्चशतं च यन्त्राणि कृत्वा वारि विसर्जयेत् ॥ ६१ ॥ अतिमत्स्यं समादाय रक्षणीयं स्वनामतः। सर्वसिद्धिकरः साक्षाद्राजते नात्र संशयः ॥ ६२ ॥

प्रयोग इस प्रकार है : नित्य तीनों सन्ध्याओं में पवित्र आसन पर ५०० यन्त्र लिखकर जल में विसर्जित करे। एक बड़ी मछली लाकर अपने नाम से उसकी रक्षा करे। वह साक्षात् सभी सिद्धियों को करनेवाली है—इसमें कोई संशय नहीं है।

अन्यत्। लिखित्वा यन्त्रराजं तु नूत्ने कुलालखर्परे। आक्रम्य वाम-पादेन कृत्वा तं चाप्यधोमुखम् ॥ ६३ ॥ प्रजपेन्मन्त्रराजं तमष्टोत्तरशतं सुधीः। तत्र मन्त्रः।

अन्य प्रयोग : कुम्हार के नये खपड़े पर यन्त्रराज को लिखकर बायें पैर से आक्रमण करके पुनः उसे अधोमुख कर दे। फिर उसके नाम से मन्त्रराज का १०८ बार जप करे। इसमें मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकमाकर्षय आकर्षय स्वाहा।

चक्रवर्तिनमप्याशु मुहूर्तेन स्वमालयम् ॥ ६४ ॥ आनयेत्प्रहरार्धेन भूचरान्यक्षराक्षसान् । प्रहरैकेन देवेशि पाकशासनमासनात् ॥ ६५ ॥ चालयेन्नात्र सन्देहो वरुणं घननायकम् । दिक्पालान् विदिशापालान् प्रहरैकेन सुव्रते ॥ ६६ ॥ देवकन्या यक्षकन्या अप्सरोमण्डलानि च । ध्रुवमाकर्षयेद्देवि यक्षराक्षसपन्नगान् ॥ ६७ ॥ यावद्धनं लिखेद्यन्त्रे तावदाकर्षणं भवेत् । नगरग्रामभूवापिकूपपर्वतसागरान् ॥ ६८ ॥ वनानि देवदेवेशि सद्य आकर्षयेन्नरः । किमन्यज्जगदाधारे लोकत्रयमिदं पुनः ॥६९॥ विपरीतं कर्तुकामो दिवसैकेन साधयेत् । धनधान्यगजाश्वाङ्गसे नाद्याकर्षणं भवेत् ॥ ७० ॥ आकर्षणे वशीकार एक एव विधिर्मतः । असाधितमपि ह्येतल्लिखेत्तु नित्यदा निशि ॥ ७१ ॥ अष्टोत्तरशतं देवि वशयेदखिलं जगत् । वश्यकामस्तु देवेशि क्षीरेण सह भक्षयेत् ॥ ७२ ॥ यस्य नाम्ना यन्त्रराजं स वश्यो जायते क्षणात् । नृपो नृपेन्द्रो गन्धर्वो देवो देवाङ्गना अपि ॥ ७३ ॥ वशीभूता वशंत्याशु साधकस्य हि किङ्कराः । बहुना किमिहोक्तेन मां विष्णुं वा वशं नयेत् ॥ ७४ ॥

इससे चक्रवर्ती राजा को भी साधक एक मुहूर्त में अपने घर बुला सकता है। एक प्रहरार्ध में भूमिचर यक्ष तथा राक्षसों को बुला लेता है। हे देवेशि ! वह इन्द्र को उनके आसन से बुला लेता है। मेघों के स्वामी वरुण को भी साधक चलायमान कर देता है। हे सुव्रते ! इससे साधक दिक्पालों तथा विदिक्पालों को भी एक पहर में बुला लेता है। देवकन्या, यक्षकन्या, अप्सरामण्डल आदि तथा यक्ष, राक्षस और पन्नगों को भी हे देवि ! वह निश्चित रूप से आकर्षित कर लेता है। साधक यन्त्र में जितना धन लिखता है उतने का आकर्षण होता है। नगर, ग्राम, भूमि, वापी, कूप, पर्वत, सागरों और वनों को हे देवदेवेशि ! शीघ्र ही मनुष्य इस यन्त्र से आकर्षित कर लेता है। हे जगदाधारे ! अन्य क्या, वह तीनों लोकों को आकृष्ट कर लेता है। विपरीत करने की इच्छा से वह कार्य को एक ही दिन मे सिद्ध कर लेता है। इससे धन, धान्य, हाथी, घोड़े, अङ्गवाली सेना आदि का भी आकर्षण हो जाता है। आकर्षण और वशीकरण में इसे एकमात्र विधि माना गया है। असाधित होने पर भी इसे नित्य रात में लिखना चाहिये। मन्त्र से वेष्टित शत्रु के नाम को साधक एक सौ आठ बार जपे। हे देवि ! इससे साधक सारे संसार को वश में कर लेता है। हे देवेशि ! वशीकरण की इच्छावाला क्षीर के साथ भोजन करे। जिसके नाम से यन्त्रराज का साधन किया जाता है वह क्षण में वश्य हो जाता है। चाहे वह राजा, राजेन्द्र, गन्धर्व, देव अथवा देवाङ्गना

ही क्यों न हो। सभी वशीभूत होकर साधक के दास हो जाते हैं। यहाँ बहुत कहने से क्या ? साधक इस यन्त्रराज से मुझे तथा विष्णु को भी वश में कर लेता है।

अन्यत्। लिखित्वा यन्त्रराजं तु शत्रुनाम ततो लिखेत्। मनुना वेष्टितं देवि शत्रुनाम जपेत्सुधीः ॥ ७५ ॥ अग्नौ प्रतापिते रोगो दाहो लूतादिसम्भवः। दग्धे यन्त्रे महेशानि सद्यो मृत्युमवाप्नुयात् ॥ ७६ ॥ इन्द्रोपि किमुतान्यो वा मलमूत्रधरो नरः ॥ ७७ ॥

अन्य प्रयोग : यन्त्रराज को लिखकर शत्रु का नाम लिखे। मन्त्र से उसे वेष्टित करके हे देवि ! साधक शत्रु के नाम का जप करे। अग्नि में यन्त्र को तपाने से शत्रु को रोग तथा लूता आदि से होनेवाला दाह होता है। यन्त्र को जलाने पर हे महेशानि ! तत्काल शत्रु मर जाता है। साधारण मलमूत्रधारी मनुष्य की क्या बात ? चाहे वह इन्द्र ही क्यों न हो मर जाता है।

अन्यत्। उच्चाटनं महादेवि शृणुष्वावाहितानघे। उच्चाटने मरुद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः ॥ ७८ ॥ प्रागाननोऽपि वृद्धौ स्यादन्येष्टीशानदिङ्मुखः। धत्तूररससंमिश्रमषीभिः क्रोधमुद्वहन् ॥ ७९ ॥ वात्यायां निक्षिपेद्यन्त्रं श्मशाने गहने वने। विभीततरुशाखायामथवा बन्धयेच्छिवे ॥ ८० ॥ सद्य उच्चाटयेत्स्थानादिन्द्रेणापि सुरक्षितम् ॥ ८१ ॥

अन्य प्रयोग : हे महादेवि, हे अनघे ! तुम ध्यान देकर उच्चाटन को सुनो। उच्चाटन में वायव्य कोण की ओर मुख करना चाहिये। विद्वेषण में दक्षिण-पश्चिम नैर्ऋत्यकोण की ओर मुख करना चाहिये। वर्द्धन कर्म में पूर्व दिशा की ओर मुख करना चाहिये। अन्य कर्मों के लिये पूर्व-उत्तर ईशान कोण की ओर मुख करना चाहिये। क्रोध करता हुआ धतूरे के रस में मिश्रित मषी से लिखे यन्त्र को साधक श्मशान या गहन वन में वायव्य कोण की ओर फेंक देवे अथवा हे शिवे ! बहेड़े के पेड़ की शाखा में उसे बांध दे तो शीघ्र ही वह इन्द्र से भी सुरक्षित स्थान से साध्य को तत्काल उच्चाटित कर देता है।

अन्यत्। स्तम्भनं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकाग्रचेतसा। हरिद्रारससंमिश्रैर्लवणैर्भूर्जपत्रके ॥ ८२ ॥ लिखित्वा निखनेद्गर्ते सपल्लवमनुं स्मरन्। उपर्यधः शिलां दत्त्वा यदा सन्ताड्य संस्थितः ॥ ८३ ॥ यस्य नाम्ना जपेन्मन्त्रं तं तं स्तम्भयति क्षणात्। रवेर्गतिं स्तम्भयति स्तभयत्येव मारुतम् ॥ ८४ ॥ नदीं च वर्षाकालीनां मेघं सिन्धुं हुताशनम्। नक्षत्रगतिसञ्चारान् विमानं द्युसदामपि ॥८५॥ वाणीस्तम्भं गतिस्तम्भमुत्पात-

स्तम्भनं तथा। शस्त्रसेनास्तम्भनं च शक्तिस्तम्भं दिवौकसाम् ॥ ८६ ॥ प्रकुर्यात्प्राणनिलये मनसः स्तम्भनादिकम्। बहुना किमिहोक्तेन त्रैलोक्यं स्तम्भयेत्क्षणात् ॥ ८७ ॥

अन्य प्रयोग : मैं अब स्तंभन कहूंगा। ध्यान देकर सुनो। हल्दी के रस से मिश्रित नमक से भोजपत्र पर यन्त्र को लिख कर पल्लव सहित मन्त्र को स्मरण करता हुआ गड्ढे में गाड़ देवे। ऊपर-नीचे पत्थर रख कर जब साधक उसे ताडित करके बैठ जाता है तो जिस-जिस के नाम से मन्त्र जपता है उस-उस व्यक्ति को क्षण में स्तंभित कर देता है। साधक सूर्य की गति को स्तंभित कर देता है। वायु को स्तंभित कर देता है। नदी को, मेघ को, समुद्र को, अग्नि को, नक्षत्रों के सञ्चार को और देवों के विमानों को भी स्तंभित कर देता है। वह वाणी का स्तंभन, गतिस्तंभन तथा उत्पात स्तंभन, शस्त्र और सेना का स्तंभन, देवताओं की शक्ति का स्तंभन कर देता है। प्राण विलय में मन का स्तंभन आदि भी कर देता है। यहाँ अधिक कहने से क्या? क्षण में तीनों लोकों का स्तंभन कर देता है।

अन्यत्। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विद्वेषं प्राणवत् शृणु। उलूकपक्ष-लेखन्या श्मशानकर्पटे लिखेत् ॥ ८८ ॥ यन्त्रं कमलपत्राक्षि सपल्लवमनुं जपेत्। आक्रम्य वामपादेन यन्त्रयुग्मं विनायकम् ॥८९॥ इन्द्राग्नि नैर्ऋत-यमवरुणादिकृतामपि। मैत्रीं विनाशयेत्क्षिप्रं किमुतान्यमहीभुजाम् ॥९०॥ लोपामुद्रागस्त्ययोश्च अरुन्धतिवसिष्ठयोः। वाणी विधात्रोरपि वै मैत्री सापि क्षयं व्रजेत् ॥ ९१ ॥ यक्षराक्षसवेतालगन्धर्वोरगरक्षसाम्। द्वेषः स्यान्नात्र सन्देहः स्वर्भूपातालवासिनाम् ॥ ९२ ॥

अन्य प्रयोग : हे प्रिये! अब मैं विद्वेषण कहूंगा उसे सुनो। साधक उल्लू के पङ्ख की लेखनी से श्मशान के कपड़े पर यन्त्र लिखे। हे कमलपत्राक्षि! वह पल्लव सहित मन्त्र का जप करते हुये बाँये पैर से दोनों यन्त्रों को आक्रान्त करके गणेश, इन्द्र, अग्नि, निर्ऋत, यम तथा वरुण आदि द्वारा की गयी मैत्री को भी विनष्ट कर देता है, अन्य राजाओं की तो बात ही क्या है? लोपामुद्रा और अगस्त्य, अरुन्धती तथा वसिष्ठ, सरस्वती तथा ब्रह्मा की मैत्री भी नष्ट हो जाती है। यक्ष, राक्षस, वेताल, गन्धर्व, उरग तथा राक्षसों का तथा स्वर्ग, भूतल या पातालवासियों तक का द्वेष हो जाता है—इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अन्यत्। शान्तिकर्म क्षमाधारे प्रवक्ष्ये जगदीश्वरि। शान्तिकामो लिखित्वाऽमुं यन्त्रराजं त्रिवर्गदम् ॥ ९३ ॥ तत्पल्लव युतं मन्त्रं प्रजपेत्त्रि-

सहस्रकम् । एवं कृते रोगशान्तिः कृत्याद्रोहादिशान्तिकम् ॥९४॥ मनः-शान्तिर्मोहशान्तिः कामक्रोदिशान्तिकम् । कारागारादिमोक्षश्च दुर्भिक्षादिनिवारणम् ॥ ९५ ॥ भवेदेव न सन्देहस्त्रैलोक्यशान्तिकामनाः । प्रोक्तं प्रयोगषट्कं ते सुन्दरि प्राणवल्लभे ॥ ९६ ॥ कल्पनादेव जायन्ते सिद्धयो नात्र संशयः । त्यक्त्वा सर्वफलासङ्गं लभेन्मुक्तिं चतुर्विधाम् ॥ ९७ ॥ नास्य मोहं प्रजनयेद्विभूतिः सर्वसम्पदाम् । अणिमाद्यष्टसिद्धीनां नास्य मोहः प्रजायते ॥९८॥ न तस्य तृट्काममोहक्रोधाहङ्कारसम्भवः । देवैरपि स सेव्यः स्यात्किमुतान्यैर्नराधिपैः ॥ ९९ ॥ दद्यादसाधितोप्येष लेखनाच्छिवमूर्जितम् । अनेकजन्मपुण्येन यन्त्रमेतच्छुचिस्मिते ॥ १०० ॥ सम्प्राप्य साधयेद्यत्नाज्जीवन्मुक्तिमभीप्सुकः । चिन्तामणिर्यथा भूमौ कल्पवृक्षो यथा दिवि ॥ १०१ ॥ रसातले निधिर्यद्वत्तथा यन्त्रमपीश्वरि । अनेन यन्त्रराजेन यदसाध्यं सुरेश्वरि ॥ १०२ ॥ तन्नास्ति जगदीशानि स्वर्भूपातालमण्डले । मनसा भावयेन्मन्त्री यन्त्रराजं त्रिवर्गदम् ॥१०३॥ भावनादेव सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा । इति ते गदितो देवि जीवन्मुक्तिफलक्रमः ॥ १०४ ॥ कामनां प्राप्य निष्कामो मोक्षलक्ष्मीं स गच्छति ॥ १०५ ॥ इति विश्वलोकतन्त्रे नवकोष्ठाङ्कितविंशाङ्कयन्त्रविधानं समाप्तम् । अथ विंशाङ्कयन्त्राणामनेकरूपाणि ।

अन्य प्रयोग : हे क्षमाधारे ! जगदीश्वरि ! अब मैं शान्ति कर्म कहूंगा। शान्ति कामनावाला साधक तीनो वर्गों को देनेवाले इस यन्त्रराज को लिख कर उसके पल्लव सहित मन्त्र का तीन हजार जप करे। ऐसा करने पर रोग की शान्ति, कृत्या तथा द्रोह आदि की शान्ति, मन की शान्ति, मोह की शान्ति, कामक्रोध आदि की शान्ति और कारागार आदि से मोक्ष तथा दुर्भिक्ष आदि का निवारण होता है। तीनों लोकों की शान्ति की कामनाएं शान्त होती हैं। इसमें सन्देह नहीं है। हे सुन्दरि ! हे प्राणवल्लभे ! यह छः प्रयोग मैंने तुम्हें बता दिया। कल्पना से ही सिद्धियां होती हैं। इसमें सन्देह नहीं है। चारो प्रकार के सभी फलों के संग को त्याग कर मुक्ति को प्राप्त करना चाहिये। इससे साधक को समस्त सम्पत्तियों की विभूति भी मोह में नहीं डाल सकती। अणिमा आदि आठ सिद्धियों का भी मोह साधक को नहीं हो सकता। उसे तृषा, काम, मोह, क्रोध तथा अहङ्कार भी नहीं सता सकते। देवताओं से भी वह सेव्य होता है, अन्य राजाओं की तो बात ही क्या ? हे शुचिस्मिते ! विना साधना के भी यह लेखन मात्र से ही शिवमूर्ति की पूजा का फल देता है। अनेक जन्मों के पुण्य से इस मन्त्र को पाकर

जीवन्मुक्ति की इच्छा करनेवाले को इसे सिद्ध करना चाहिये। जैसे भूलोक में चिन्तामणि है, देवलोक में कल्पवृक्ष है तथा रसातल में निधि है वैसे ही हे ईश्वरि ! यह यन्त्र है। हे सुरेश्वरि ! इस यन्त्रराज से स्वर्गलोक, भूलोक तथा पातालमण्डल में कोई पदार्थ असाध्य नहीं है। तीनों वर्गों को देनेवाले इस यन्त्रराज को मन से भावित करना चाहिये। भावना करने से ही सिद्धि हो सकती है। इसमें विचार नहीं करना चाहिये। हे देवि ! जीवनमुक्ति के फल का यह क्रम मैंने तुम्हें बता दिया है। साधक इससे अपनी कामनाओं को प्राप्त करके अन्त में निष्काम होकर मोक्ष को प्राप्त करता है। इति विश्वलोक तन्त्र में नव कोष्ठांकित बीसायन्त्र विधान समाप्त।

विंशांक यन्त्रों के विविध रूप इस प्रकार हैं।

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७
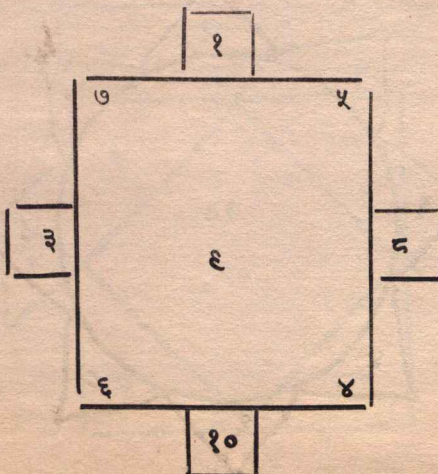
६	८	२	४
४	२	८	६
८	६	४	२
२	४	६	८

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४
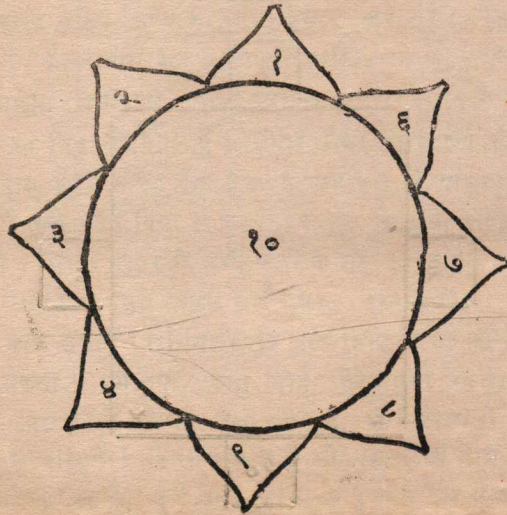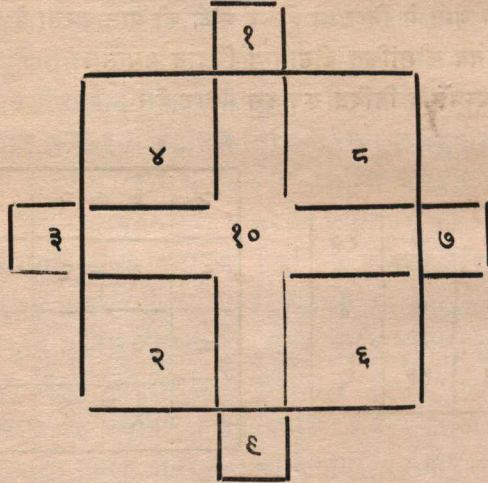
४	२	८	६
६	८	२	४
२	४	६	८
८	६	४	२
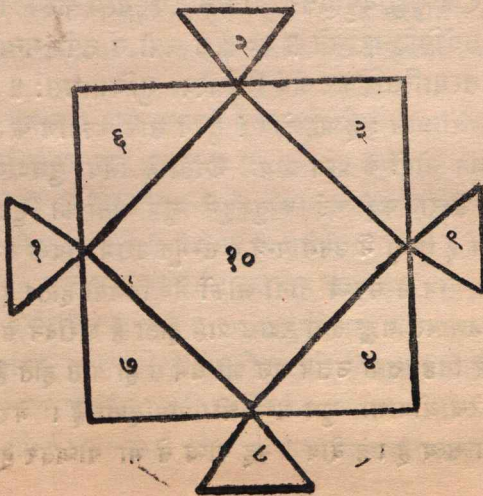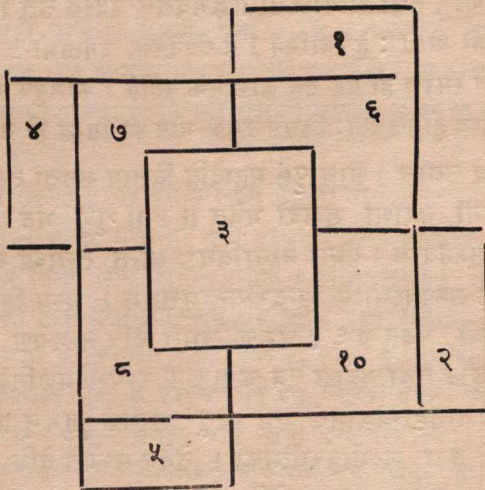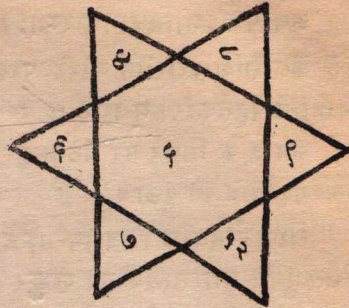
अथ पञ्चदशीविधानप्रारम्भः ।

कैलासशिखरासीनं गौरी पृच्छति शङ्करम् । पञ्चदशविधिं कृत्वा भक्तानां हितकारकम् ॥ १ ॥

कैलास के शिखर पर बैठे शङ्करजी से गौरी ने भक्तों के लिये हितकारक पञ्चदशी विधि को पूछा ।

श्रीपार्वत्युवाच । स्वामिन्भो देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो । यत्किञ्चित्स्मृयते सद्यस्तत्सर्वं वद शङ्कर ॥ २ ॥ कलौ नरा भविष्यन्ति मन्दभाग्या दरिद्रिणः । तेषा भोगादिसंसिद्धिर्भवेद्येन वदस्व तत् ॥ ३ ॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं : हे स्वामिन् ! हे देवदेवेश, जगत्प्रभो ! हे शङ्कर ! जो कुछ आपको स्मरण हो वह सब आप मुझे बतायें । कलियुग में मन्दभाग्य तथा दरिद्र मनुष्य होंगे । अतः जिससे उनके भोग की सिद्धि हो उसे बताइये ।

श्रीमहादेव उवाच । साधु पृष्टं महादेवि हिताय जगतां त्वया । प्रायः प्रश्नो हि साधूनां नराणां सुखदो भवेत् ॥ ४ ॥ शृणु भद्रे शुभां वार्तां कौतुकीं विधिसम्भवाम् । योगा नानाविधाः सन्ति तन्मध्ये यन्त्रसम्भवः ॥ ५ ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सुन्दरीयन्त्रमुत्तमम् । यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥ ६ ॥ धर्मेण लभते देवि न क्रयेण कदाचन । दक्षिणावर्तशङ्खश्च तथा रुद्राक्ष एव च ॥ ७ ॥ रामलक्ष्मणनिष्ठा तु तथैवं सुयशो भवेत् । तादृग्विधमिदं यन्त्रं चतूरेखात्मकं शुभम् ॥ ८ ॥ यस्य तुष्टा भवेद्देवि वरा लक्ष्मीर्वरात्मिका । तेनैव लभ्यते देवि सत्यं सत्यं वचो मम ॥ ९ ॥ गुह्याद्गुह्यतरं देवि न देयं यस्य कस्य चित् । तस्य संग्रहमात्रेण सर्वसिद्धिर्वरानने ॥ १० ॥ न जपो न तपो मन्त्रो न च यज्ञो न पूजनम् । तस्मात्सिद्धिकरं ज्ञेयं लिखित्वा शुचिमानसः ॥ ११ ॥

श्रीमहादेवजी बोले : हे महादेवि ! तुमने लोक-कल्याण के लिये ठीक ही पूछा है । सज्जन लोगों के प्रश्न प्रायः जनता के लिये सुखदायक होते हैं । हे भद्रे ! ब्रह्मा द्वारा कही गई कौतुकपूर्ण शुभ वार्ता को सुनो । योग तो नाना प्रकार के हैं किन्तु मैं उनमें यन्त्र से सम्भूत उत्तम सुन्दरी यन्त्र को कहूंगा जिसके विज्ञान मात्र से मनुष्य तीनों लोकों में विजयी होता है । हे देवि ! धर्म से ही दक्षिणावर्त शङ्ख तथा रुद्राक्ष प्राप्त होता है खरीदने से नहीं । जैसे राम-लक्ष्मण में निष्ठा तथा उत्तम यश भी धर्म से ही प्राप्त होते हैं उसी प्रकार का यह चार रेखाओंवाला शुभ यन्त्र भी प्राप्त होता है । मेरा यह वचन सत्य है, सर्वथा सत्य है । हे देवि ! यह गोप्य से भी गोप्यतर है । इसे ऐसे-

तैसे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये। हे वरानने! इसके संग्रह मात्र से सब सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। इसके लिये न जप है, न तप है, न यज्ञ है और न पूजन ही अपेक्षित है। केवल पवित्र मन से लिखने से ही इसे सिद्धि देनेवाला जानना चाहिये।

सर्वाभीष्टफलं कुर्यात्सूर्यधाम लिखेत्सुधीः। नवग्रहात्मकं यन्त्रं योगिनीनवनाथयोः ॥ १२ ॥ नवखण्डगृहे ज्ञेयं विषमांकं शिवोदितम्। नवखण्डमयी पृथ्वी प्रोच्यते मुनिपुङ्गवैः। तस्माच्च नवकोष्ठेषु यन्त्रं चैव प्रजायते ॥ १३ ॥ मया सङ्कीलिताश्चान्ये यन्त्रमन्त्रा न सिद्धिदाः। इदं सङ्गोपितं सुभ्रु यन्त्रं मे करुणात्मना ॥ १४ ॥ नैतत्तुल्यं जगत्स्वम्ब यन्त्रं मन्त्रः स्वसिद्धिदः। स्वगुह्यमिव सङ्गोप्यं कथयनीयं न कस्यचित् ॥ १५ ॥ तवातिस्नेहबाहुल्यात्कथयिष्ये तवाग्रतः। नाभक्ताय त्वया देयं कृतघ्नाय कदाचन ॥ १६ ॥

सभी अभीष्टों का फल देनेवाले इस सूर्य के धाम, नवग्रहात्मक योगिनी तथा नव नाथों के इस यन्त्र को सुधी साधक लिखे। नवखण्ड गृहों में शिवजी द्वारा कहे गये विषम अङ्क जानने चाहिये। मुनि पुङ्गवों ने पृथिवी को नवखण्डमयी कहा है। इसीलिये नव कोष्ठात्मक यन्त्र बनाया जाता है। मैंने अन्य यन्त्र-मन्त्रों को कीलित कर दिया है, अतः वे सिद्धिदायक नहीं हैं। हे सुभ्रू! करुणामय होने के कारण मैंने इसे अच्छी तरह गुप्त रक्खा है। हे अम्बे! संसार में इसके समान कोई अन्य यन्त्र-मन्त्र स्वयं सिद्धि देनेवाला नहीं है। तुम्हें इसे अपने गुह्येन्द्रिय के समान गुप्त रखना चाहिये और किसी (कुपात्र) को इसे बताना नहीं चाहिये। तुम्हारे प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण ही मैं तुम्हें इसे बताऊंगा। तुम इसे किसी कृतघ्न अथवा अभक्त को कभी न देना।

श्रीपार्वत्युवाच। यथा कथयसे देव करिष्येहं तथा शिव। आज्ञामज्ञानतिमिरच्छिदुष्णकर सत्पते ॥ १७ ॥

श्रीपार्वतीजी बोलीं: हे देव! हे अज्ञानान्धकार नाशक। हे सत्पते! हे शिव! आपने जैसा कहा है मैं वैसा ही करूंगी।

श्रीमहादेव उवाच। सर्वसिद्धिकरं चैव यन्त्रोद्धारं शृणु प्रिये। यन्त्रवर्यमिदं भद्रे पूर्वपुण्येन लभ्यते ॥ १८ ॥ तुर्यरेखाः प्रकर्तव्यास्तिर्यगूर्ध्वं च संख्यया। नवधा कामसङ्केतो नवकोष्ठात्मके प्रिये ॥ १९ ॥ तत्राङ्कगतियोगेन हयमारभ्य पार्वति। गतिमार्गक्रमेणैव नव यन्त्राणि कारयेत् ॥२०॥ एकादिरन्ध्रपर्यन्तं तत्रांकांस्तु प्रवेशयेत्। एतस्य सकलं वाक्यं शृणु यत्नेन

साम्प्रतम् ॥ २१ ॥ अन्यत्रापि : सूर्येन्दुभौमैर्बुधदेवपूज्यशुक्रैः शनौ राहुशिखिक्रमेण । अश्वैर्गजैर्मन्त्रिगतैश्च वामैः पुनश्च रोगैर्गत अश्वभौमे (?) ।

श्रीमहादेवजी बोले : हे प्रिये ! सर्वसिद्धिकारक यन्त्रोद्धार सुनो । हे भद्रे ! यह यन्त्रवर्य पूर्वजन्म के पुण्य से ही मिलता है । ऊपर-नीचे और अगल-बगल चार रेखायें बनानी चाहिये । हे प्रिये ! नव कोष्ठों में तब नव काम संकेत अंकित करने चाहिये । एक-एक कोष्ठों में एक-एक अङ्कों को प्रविष्ट करे, अर्थात् प्रत्येक कोष्ठ में एक-एक संख्या लिखे । इन संख्याओं के संबन्ध में जो नियम है उसे यत्नपूर्वक एकाग्रचित्त होकर सुनो । सर्वत्र यन्त्र के अङ्कों की चाल १ से लेकर ९ बताई गई है परन्तु अन्यत्र यह कहा गया है कि पहले १, फिर ५ और फिर ९ लिखे । तदनन्तर ८-३-४ और उसके बाद २-७-६ इस प्रकार लिखना चाहिये (देखिये नीचे यन्त्र का स्वरूप :

श्रीपार्वत्युवाच । त्वदीयमद्भुतं वाक्यं श्रुतं देवेश शर्मदम् । वदस्व यन्त्रदेवतां कथं कविवरो भवेत् ॥ २३ ॥

पूर्व

ईशान	८	१	६	आग्नेय
उत्तर	३	५	७	दक्षिण
वायव्य	४	९	२	नैर्ऋत्य

वरुण

श्रीपार्वती बोलीं : हे देवेश ! मैंने आपका कल्याणप्रद वचन सुना । अब आप यन्त्रदेवता को बतायें जिसके प्रभाव से मनुष्य कविवर हो सकता है ।

श्रीमहादेव उवाच । पुरा रामायणे रामो रावणं दशकन्धरम् । हन्तुं जगाम जलधेस्तीरेऽतिष्ठत्सवानरः ॥ २४ ॥ जलधेस्तरणे यत्नं चिन्तयामास सर्वदृक् । तदा न कोपि चायातो यत्नो मनसि पार्वति ॥ २५ ॥ भूयः समाधिना चित्तं सन्नियम्य रघूत्तमः । दध्यौ चिरं स्मृतं तस्माद्यन्त्रमेकं शृणुष्व तत् ॥ २६ ॥ यन्मया गोपितं कान्ते यन्त्रं पञ्चदशाख्यकम् । सर्वापत्तारकं सुभ्रु सर्वसिद्धिविधायकम् ॥२७॥ यावन्तोकाश्च लोकेऽस्मिन् यन्त्रेषु परमेश्वरि । तावन्तोऽस्मिन्महायन्त्रे सर्वं एव वसन्ति हि ॥ २८ ॥ सङ्गोपितं स विज्ञाय यन्त्रं ध्यानेन राघवः । यत्साधनादहं जातो विश्वसंहरणक्षमः ॥ २९ ॥ वायुपुत्रं तदा रामः प्रेषयामास सत्वरम् । ममान्ते

स समागत्य मनोजव उदारधी: । प्रार्थयामास रामस्य पाथोधितरणाय वै । तदालिख्य मया यन्त्रं दत्तं वै वायुसूनवे ॥ ३१ ॥ सत्वरं स ददौ यन्त्रं रामाय नररूपिणे । रामस्तदनुभावेन सिन्धौ सेतुं बबन्ध ह ॥ ३२ ॥ सेतुबन्धे शिवं तत्र स्थापयामास राघव: । वर्तते स शिवोऽद्यापि तत्र सर्वाघनाशन: ॥ ३३ ॥ यन्त्रं भूमौ विलिख्याथ वायुसूनुकरे ददौ । स यत्नात्स्थाप्य जलधौ तारयामास पावनि: ॥ ३४ ॥ निस्तीर्य सेतुना तेन सागरं मकरालयम् । परं पारं जगामाथ लङ्केशमहनत्सुधी: ॥३५॥ एतस्माद्धनुमान्देवो जातो यन्त्रस्य पार्वति । रामेणापि वरो दत्तो यन्त्रेशस्त्वं भविष्यसि ॥३६॥ तदा ह्येतस्य यन्त्रस्य ख्यातिर्लोके मनोरमे । विधिं केऽपि न जानन्ति शृणु तस्माच्छिवप्रिये ॥ ३७ ॥

श्रीमहादेवजी बोले : प्राचीनकाल में रामचन्द्रजी रावणवध के लिये बानरों के साथ समुद्रतट पर ठहरे थे । सर्वद्रष्टा श्रीरामचन्द्र समुद्र को पार करने के सम्बन्ध में सोचने लगे । हे पार्वति ! तब उनके मन में कोई उपाय नहीं सूझा । रघुश्रेष्ठ श्रीराम ने पुन: समाधि द्वारा मन को नियन्त्रित करके चिरस्मृत जिस यन्त्र का ध्यान किया उसे सुनो । उसे, हे कान्ते ! मैंने गुप्त कर दिया था । वह पञ्चदशी नामक यन्त्र, हे सुभ्रु ! समस्त आपत्तियों से रक्षा करनेबाला तथा समस्त सिद्धियों को देनेवाला है । हे परमेश्वरि ! इस संसार के यन्त्रों में जितने अक्षर हैं वे सभी अक्षर इस यन्त्र में भी स्थित हैं । श्रीरामचन्द्र ने अपने ध्यान से जान लिया कि इस यन्त्र को, जिसके साधन से ही वे विश्वसंहार में सक्षम हो सकते थे, गुप्त कर दिया गया है । तब उन्होंने श्रीहनुमान को तत्काल मेरे पास भेजा । उन उदारधी मनोवेगवाले हनुमान ने मेरे पास आकर श्रीरामचन्द्र के समुद्रपार कराने के लिये प्रार्थना की । तब मैंने इस यन्त्र को लिख कर उन्हें दे दिया और उन्होंने शीघ्र ही इसे नररूपधारी रामचन्द्र को दिया । श्रीराम ने इसी के प्रभाव से समुद्र पर सेतु का निर्माण कराया और सेतुबन्ध पर उन्होंने वहाँ शिव की स्थापना की । आज भी वहाँ पर सभी पापों को नष्ट करनेवाले शिवजी विद्यमान हैं । यन्त्र को भूमि पर लिखकर श्रीरामचन्द्र ने उसे हनुमान के हाथ में दे दिया और हनुमानजी ने यत्नपूर्वक उसे रखकर सब को समुद्र पार करा दिया । इस प्रकार इस यन्त्र के प्रभाव से सेना सहित श्रीरामचन्द्र मकरालय महासागर के पार पहुंच गये और वहाँ उन्होंने रावण का वध किया । हे पार्वति ! इसी कारण हनुमानजी इस यन्त्र के देवता हो गये । श्रीराम ने भी उन्हें 'यन्त्र का स्वामी होने' का वर दिया । हे मनोरमे ! उसी समय से इस यन्त्र की ख्याति हो

गई है । हे शिवप्रिये ! इसकी विधि कोई नहीं जानता । अब तुम उसे सुनो ।

आदौ कुर्यात्पुरश्चर्यां साधकः सिद्धिहेतवे । पुरश्चरणहीनस्य यन्त्र-सिद्धिर्न जायते ॥ ३८ ॥ जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः । पुरश्च-रणहीनो हि तथा यन्त्रे प्रकीर्तितः ॥ ३९ ॥ पुरश्चर्याविधिः प्रोक्तस्ते पुरैव सुमध्यमे । प्रयोगांस्तु शृणुष्वाथ यन्त्रविद्याविधानतः ।

सिद्धि के लिये साधक को पहले पुरश्चर्या करनी चाहिये । पुरश्चरण-रहित व्यक्ति को इस यन्त्र की सिद्धि नहीं होती । जिस प्रकार जीव से रहित शरीरधारी कोई भी कर्म करने में सक्षम नहीं होता उसी प्रकार पुरश्चरण-हीन यह यन्त्र भी सिद्धिप्रद नहीं होता । हे सुमध्यमे ! पुरश्चर्याविधि पहले ही कह दी गई है । अब यन्त्रविद्या के विधानानुसार प्रयोगों को सुनो ।

अथास्य प्रयोगः । हस्तार्कपुष्यार्कमूलार्कश्रवणयुक्ते स्वकीयवारे सुमुहूर्ते विविक्ते देशे सिद्धपीठादिभूमिं प्रकल्प्य कुशासनोपरि रक्तासनमास्तीर्य रक्तवस्त्रं रक्तमालां च परिधाय प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य भूत-शुद्ध्यादिकं च कृत्वा आचम्य प्राणानायम्य ।

हस्तनक्षत्र के रविवार, पुष्यनक्षत्र के रविवार, मूलनक्षत्र के रविवार या श्रवणयुक्त निजवार को उत्तम मुहूर्त में एकान्त प्रदेश में सिद्ध पीठ की भूमि की कल्पना करके कुशासन के ऊपर रक्तवर्ण का आसन बिछाकर रक्तवस्त्र तथा रक्तवर्ण की माला धारण करके पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर भूत शुद्धि आदि करे । फिर प्राणायाम और आचमन करके :

देशकालौ संकीर्त्य मम पञ्चदशांकयन्त्रलेखनार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं च भूतलिपिमन्त्रजपं करिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करके १०८ बार भूतलिपि का जप करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ।

इति भूतलिपिं जप्त्वा पश्चादौदुम्बरवृक्षस्य पर्णांगुललेखन्या वा ज्ञानवृक्षस्य जास बन्दस्य जातिसंज्ञकस्य पलाशस्य वा लेखन्याष्टांगुल-प्रमाणया क्षीरवृक्षपट्टोपरि कुंकुमेन नवकोष्ठांकितं कृत्वा अंकं पूरयेत् । तथाच पूर्वे १ नैर्ऋत्ये २ सौम्ये ३ वायव्ये ४ मध्ये ५ आग्नेये ६ याम्ये ७ शिवे ८ वरुणे ९ इति क्रमेण ह्येकमारभ्य पूरयेत् । ततः ॐ भद्रेश्वर भद्रं

पूरयपूरय स्वाहा। इति भद्रेश्वरमन्त्रेणावाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य तदग्रेष्टोतरशतवारं भद्रेश्वरमन्त्रं जपेत्। तथाच :

इस प्रकार भूतलिपि का जप करके गूलर के पत्ते की नस की लेखनी से या ज्ञानवृक्ष, जसबन्द या पलाश की लकड़ी की आठ अंगुल लम्बी लेखनी से क्षीरीवृक्ष के लकड़ी की पट्टी पर केसर से नव कोष्ठ बनाकर उनमें इस प्रकार अङ्कों को लिखे : नैर्ऋत्य में २, सौम्य (उत्तर) में ३, वायव्य में ५, आग्नेय में ६, याम्य (दक्षिण) में ७, शैव अर्थात् ईशान में ८, तथा वरुण अर्थात् पश्चिम में ९—इस क्रम से १ से आरम्भ करके ९ तक के अङ्कों को विभिन्न कोष्ठों में लिखकर यन्त्र को पूरा करे। इसके बाद 'ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा' इस भद्रेश्वर मन्त्र से आवाहनादि षोडशोपचारों से पूजन करके उसके (यन्त्र के) आगे भद्रेश्वर मन्त्र का १०८ बार इस प्रकार जप करे :

विनियोग : अस्य भद्रेश्वरमन्त्रस्य स्वर्णाकर्षण भैरव ऋषिः विराट् छन्दः भद्रेश्वरो देवता ह्रीं बीजं भद्रं शक्तिः पूरयेति कीलकं भद्रेश्वर-प्रीतये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ स्वर्णाकर्षणभैरवर्षये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। भद्रेश्वरदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। भद्रं शक्तये नमः पादयोः ५। पूरयेतिकीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ भद्रेश्वर अंगुष्ठाभ्यां नमः १। भद्रं तर्जनीभ्यां नमः २। पूरय मध्यमाभ्यां नमः ३। भद्रेश्वर अनामिकाभ्यां नमः ४। भद्रं कनिष्ठि-काभ्यां नमः ५। पूरय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ भद्रेश्वर हृदयाय नमः १। भद्रं शिरसे स्वाहा २। पूरय शिखायै वषट् ३। भद्रेश्वर कवचाय हुं ४। भद्रं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। पूरय अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके भद्रेश्वर का ध्यान करे।

ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा। इति मन्त्रमष्टोत्तरशतवारं जपेत्। इति जपं कृत्वा एकाद्यङ्कक्रमेण नवदुर्गा नवग्रहान् इन्द्रादीन् वज्रादींश्च सम्पूजयेत्। तथा च :

इस प्रकार न्यास करके भद्रेश्वर का ध्यान करके 'ॐ भद्रेश्वर भद्रं पूरय पूरय स्वाहा' इस मन्त्र का १०८ बार जप करे। इस जप को करने के

बाद १-आदि अङ्क के क्रम से नवदुर्गा, नवग्रहों, इन्द्रादि और वज्रादि का इस प्रकार पूजन करे :

प्रथमाङ्के ॐ शैलपुत्र्यै नमः १। द्वितीयांके ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः २। तृतीयांके ॐ चन्द्रघण्टायै नमः ३। चतुर्थांके ॐ कूष्माण्डायै नमः ४। पञ्चमांके ॐ स्कन्दमात्रे नमः ५। षष्ठांके ॐ कात्यायन्यै नमः ६। सप्तमांके ॐ कालरात्र्यै नमः ७। अष्टमांके ॐ महागौर्यै नमः ८। नवमांके ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः ९।

एवं ॐ आदित्याय नमः १। ॐ चन्द्रमसे नमः २। ॐ भौमाय नमः ३। ॐ बुधाय नमः ४। ॐ जीवाय नमः ५। ॐ शुक्राय नमः ६। ॐ शनैश्चराय नमः ७। ॐ राहवे नमः ८। ॐ केतवे नमः ९।

पुनः ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ निर्ऋतये नमः ४। ॐ वरुणाय नमः ५। ॐ वायवे नमः ६। ॐ कुबेराय नमः ७। ॐ ईशानाय नमः ८। नवमांके ॐ ब्रह्मणे नमः ९। ॐ अनन्ताय नमः १०।

पुनः ॐ वज्राय नमः १। ॐ शक्तये नमः २। ॐ दण्डाय नमः ३। ॐ खड्गाय नमः ४। ॐ पाशाय नमः ५। ॐ अंकुशाय नमः ६। ॐ गदायै नमः ७। ॐ त्रिशूलाय नमः ८। नवमांके ॐ पद्माय नमः ९। ॐ चक्राय नमः १०।

इति पूजयेत्। ततः ॐ भद्रेश्वराय नमः ११। इति भद्रेश्वरं सम्पूज्य कृष्णागुरुधूपं दत्वा सुगन्धतैलेन घृतेन वा दीपं प्रज्वाल्य गुडान्नेन नैवेद्यं समर्प्य नमस्कारं कृत्वा विलेपयेत्। पुनः द्वितीये तदेव लेखनीयं पुनरपि भद्रेश्वरमन्त्रमष्टोत्तरशतं जपेत्। पुनरपि नियमेन लेखनीयं एवं पञ्चदश-सहस्रात्सिद्धिर्भवति। एतस्मिन्सिद्धे यन्त्रे कागदे भूर्जपत्रे वा लिखित्वा तदग्रे भद्रेश्वरमूलमन्त्रं पञ्चदशसहस्रं जपेत्। तद्दशांशेन करवीरपुष्पहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। पश्चाद्यन्त्रं त्रिलोह-मृदङ्गे क्षिप्त्वा कण्ठे वा दक्षिणे करे धारयित्वा ततः प्रयोगान् मनोभी-प्सितान् कुर्यात्।

इससे पूजा करने के बाद 'ॐ भद्रेश्वराय नमः' इससे भद्रेश्वर की पूजा करके काले अगर की धूप दे। फिर सुगन्धित तेल या घी का दीपक जलाकर गुड़ और अन्न का नैवेद्य अर्पित करके नमस्कार और निवेदन करे। पुनः दूसरे दिन उसी लेखनी से वही यन्त्र लिखना और पुनः भद्रेश्वर मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये। इसी प्रकार प्रतिदिन नियमपूर्वक लिखना चाहिये। ५ हजार जप से सिद्ध होती है। इस यन्त्र के सिद्ध होने पर कागज

या भोजपत्र पर इसे लिख कर उसके आगे भद्रेश्वर के मूल मन्त्र का ५ हजार जप तथा उसके दशांश से कनेर के फूलों द्वारा होम करे। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करे। इसके बाद यन्त्र को त्रिलोह के मृदङ्ग में डाल कर कण्ठ में या दाहिने हाथ में धारण करके मनोभिलषित प्रयोगों को करे।

तथा च शिवरहस्ये : हस्तार्कपुष्यमूले तु शुचिर्भूत्वा समाहितः। चम्पकस्य च लेखन्या शुद्धयन्त्रं लिखेत्सुधीः॥ १॥ पञ्चदशसहस्राणि क्षीरवृक्षस्य पट्टके। ततः सिद्धं भवेद्यन्त्रं धारयेत्साधकोत्तमः॥ २॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ प्रयोगानाचरेत्ततः। ततो यथोक्तं लभते फलं यन्त्रस्य निश्चितम्॥ ३॥ पुरश्चर्यां विना चाथ यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति। स चक्षुषा विना रूपं दर्पणे द्रष्टुमिच्छति। पुरश्चरणसम्पन्नः प्रयोगानथ कारयेत्॥ ४॥

शिव रहस्य तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : हस्त, पुष्य तथा मूल नक्षत्र के रविवार को पवित्र होकर समाहित चित्त से चम्पा की लेखनी द्वारा क्षीरी वृक्ष के लकड़ी की पटरी पर साधक ५ हजार बार इस शुद्ध यन्त्र को लिखे। इस प्रकार सिद्ध यन्त्र को तब श्रेष्ठ साधक कण्ठ या दाहिने हाथ में धारण करके प्रयोगों को प्रारम्भ करे। ऐसा करने से साधक निश्चित रूप से यन्त्र का यथोक्त फल पाता है। जो पुरश्चरण के बिना ही सिद्धि चाहता है वह नेत्र के बिना ही दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखनेवाले के समान है। अतः पुरश्चरण से सम्पन्न प्रयोगों को करे।

अथ प्रयोगः। तत्रादौ वर्णभेदेन वारभेदः। गुरौ शुक्रे तु विप्राणां कुजार्कौ क्षत्रियस्य च। बुधो हि शूद्रवर्णस्य सोमो वैश्यस्य कीर्तितः॥५॥ म्लेच्छस्य शनिवारः स्याल्लिखित्वा दीयते यदि। तदा शुभफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥ ६॥ राजा हि रविवारे स्याद्धस्तपुष्यसमन्विते। श्रवणे मूलसंयुक्ते व्यतीपातादिवर्जिते॥ ७॥

प्रयोग : प्रारम्भ में वर्णभेद से वारभेद बताते हैं। ब्राह्मणों के लिये वृहस्पतिवार तथा शुक्रवार; क्षत्रियों के लिये मङ्गलवार और रविवार; वैश्यों के लिये सोमवार और शूद्र के लिये बुधवार तथा म्लेच्छों के लिये शनिवार को यदि यन्त्र लिख कर दिया जाय तो शुभ फलदायक होता है— इसमें कोई संशय नहीं है। हस्त तथा पुष्य नक्षत्र समन्वित रविवार और व्यतीपात आदि से वर्जित मूल संयुक्त श्रवण नक्षत्र का रविवार राजा के लिये उत्तम है।

अथ कार्यंपरत्वेन दीपमाह ।

राजवश्ये धनाप्तौ च स्थापयेदुत्तरामुखम् । उच्चाटने च मारणे दीपं दक्षिण सन्मुखम् ॥ ८ ॥ कर्तव्यं विधिवत्पुंसां प्रयोगाणां च सिद्धये । धनाप्तौ वश्यकार्ये च गोघृतं दीपके न्यसेत् । उच्चाटने मारणे च सार्षपं राजिकाभवम् ॥ ९ ॥

अब कार्यपरत्व दृष्टि से दीपक के मुख को बताते हैं : प्रयोगों की सिद्धि के लिये मनुष्यों को राजा के वशीकरण में तथा धन प्राप्ति के लिये दीपक को उत्तराभिमुख रखना चाहिये । उच्चाटन तथा मारण में दीपक को दक्षिणाभिमुख रखना चाहिये । धन-प्राप्ति तथा वशीकरण में दीपक में गाय का घी डालना चाहिये । उच्चाटन में सरसों का तेल तथा मारण में राई का तेल डालना चाहिये ।

अथ वर्णभेदेन पत्रभेदः । ब्राह्मणो विलिखेद्भूर्जे ताडपत्रे तु भूमिभृत् । वैश्यस्तु विलिखेद्देवि कागदे सर्वसिद्धये ॥ १० ॥ शूद्रो हि विलिखेद्देवि भूमिभागे प्रयत्नतः । यवनस्यापि कथितः कागदस्तु मया तव ॥ ११ ॥

वर्णभेद से पत्रभेद : ब्राह्मण को भोजपत्र पर लिखना चाहिये । राजा को ताडपत्र पर लिखना चाहिये । हे देवि ! सभी सिद्धियों के लिये कागज पर लिखना चाहिये । शूद्र के लिये प्रयत्नपूर्वक भूमि पर तथा यवनों के लिये कागज पर लिखना चाहिये । हे देवि ! यह सब मैंने तुम्हें बता दिया ।

अथ कार्यपरत्वेन लेखनीमाह । अश्वत्थया लिखेच्छान्तौ वैश्ये जातिभवा मता । स्वर्णया विलिखेद्यत्नान्मोहनार्थं स्वसिद्धये । रौप्यया विलिखेद्यत्नात्सर्वाकर्षणसिद्धये । काकपक्षस्य लेखन्या मोहनार्थं लिखेद्विधौ ॥१३॥ स्तम्भनार्थं तु विलिखेल्लेखन्या तु हारिद्रया । विपाशया तु लेखन्या ताम्रया वा विधीयते ॥ १४ ॥ उच्चाटने द्वेषणादौ लोहया संलिखेत्सदा । लेखन्या लक्षणं देवि प्रोक्तमष्टांगुलं यतः । पञ्चतत्वक्रमेणैव पञ्च कार्याणि साधयेत् ॥ १५ ॥

कार्यपरत्व से लेखनी-भेद कथन : शान्ति के लिये पीपल की लेखनी से और वैश्य के लिये जाती (चमेली) की लेखनी से लिखना चाहिये । मोहन के लिये स्वर्ण की लेखनी से और सभी आकर्षणों की सिद्धि के लिये चाँदी की लेखनी से लिखना चाहिये । मोहन के लिये कौवे के पङ्ख से और स्तम्भन के लिये हल्दी, विपाशा या ताँबे की लेखनी से लिखना चाहिये । उच्चाटन तथा द्वेषण आदि में सदा लोहे की लेखनी से लिखना चाहिये ।

हे देवि ! लेखनी की लम्बाई आठ अंगुल कही गई है। पञ्चतत्त्वों के क्रम से ही पञ्चकर्मों को सिद्ध करे।

अथ कार्यपरत्वेन गन्धमाह। आरक्तेनैव विलिखेद्वशीकरणसिद्धये। कस्तूर्या विलिखेद्देवि स्वर्णाकर्षणसिद्धये ॥ १६ ॥ हरिद्रया तु विलिखेत्सर्वस्तम्भनकर्मणि। केसरेण लिखेद्देवि देवतादर्शनाय वै ॥ १७ ॥ धत्तूरस्य रसेनैव मारणार्थं लिखेत्तु वै। प्रेताङ्गारेण विलिखेच्छत्रोरुच्चाटने सदा ॥ १८ ॥ विद्वेषणे तु विलिखेद्विभीतकरसेन वै। चन्दनेन लिखेच्छान्तौ विशेषः कथ्यते शृणु ॥ १९ ॥

कार्यपरत्व से गन्ध-कथन : वशीकरण की सिद्धि के लिये लाल लेखनी से लिखना चाहिये। स्वर्णाकर्षण की सिद्धि के लिये कस्तूरी से लिखना चाहिये। स्तंभन कार्य में हल्दी से लिखना चाहिये। हे देवि ! देवता-दर्शन के लिये केसर से लिखना चाहिये। धतूरे के रस से मारण के लिये लिखना चाहिये। शत्रु के उच्चाटन के लिये सदा श्मशान के कोयले से लिखना चाहिये। विद्वेषण में बहेड़े के रस से लिखना चाहिये। शान्ति के लिये चन्दन से लिखना चाहिये। कुछ अन्य विशेष बातें बता रहा हूं उन्हें सुनो।

अथ कार्यपरत्वेनाङ्कमाह। एकेनांकेन यन्त्रस्य भरणं साधकं परम्। ददाति हनुमानद्धा दर्शनं सुखदायकम् ॥ २० ॥ युग्मेनांकेन भो देवि राजा वश्यो भवेन्नृणाम्। तृतीयांकेन भरणे यन्त्रं व्यापारलाभदम् ॥२१॥ वेदांकेन भरेद्यस्तु शून्यं तच्छत्रुमन्दिरम्। पञ्चांकेन भरणं शत्रूच्चाटनकारकम् ॥ २२ ॥ वसुनन्दरसैश्चैकनेत्रवेदाग्निबाणकैः। मुन्यश्वाभ्यां क्रमाद्धाम मारणे दुर्जने कृते ॥२३॥ इन्दुश्च भौमौ बुधजीवशुक्राः शनिश्च राहुः शिखिसूर्यकौ च। एतांस्तु गत्या क्रमतो लिखित्वा यन्त्रं नृपालं वशगं करोति ॥ २४ ॥ भौमेन्दुराहून् गुरुसौम्यकेतूंश्चार्कश्च शुक्रश्च शनिं क्रमेण। विलिख्य यन्त्रे युवतिश्च वन्ध्या अश्वैर्गजैर्मन्त्रिगतैस्तु चाश्वैः ॥ २५ ॥ लिखित्वा यन्त्रवर्यं तं कण्ठे कट्यां च धारयेत्। वन्ध्या वै लभते पुत्रं मृतवत्सा चिरायुषम् ॥२६॥ वेदाग्निवसुभिश्चैव चन्द्रबाणग्रहैस्तथा। नेत्रर्षिभीरसैश्चैव यन्त्रं निगडभञ्जनम् ॥ २७ ॥ बाणषण्मुनिनेत्रैश्च ग्रहैस्तद्द्व्युगैस्तथा। वह्निवसुस्वरूपैश्च ह्यकष्टेन धनं लभेत् ॥ २८ ॥ अङ्कैश्च सप्तद्विनवाब्धिभिश्च वैश्वानरैर्नागसुधांशुबाणैः। यन्मन्त्रिगैर्भूपतिखेलधामैराकर्षणं मित्ररिपुप्रभूणाम् ॥ २९ ॥ शनिश्च राहुः शिखिचेन्दुजौ च गुरुश्च शुक्रो रविचन्द्रभौमाः। अश्वैर्गतैर्मन्त्रिगतैस्तथाऽश्वैरुच्चाटनं सर्वजनादिकानाम् ॥ ३० ॥

कार्यपरत्व से अङ्क कथन : एक अङ्क से यन्त्र का भरना परम साधक होता है। इससे हनुमानजी अवश्य दर्शन देते हैं। हे देवि ! दो अङ्क से राजा मनुष्यों के वश में होता है। तृतीय अङ्क से भरने से यन्त्र व्यापार में लाभ देनेवाला होता है। जो यन्त्र को चार अङ्क से भरता है उसके शत्रु का गृह खाली हो जाता है। पाँच अङ्क से भरने से शत्रु का उच्चाटन होता है। वसु (८), नन्द (९), रस (६), एक (१), नेत्र (२), वेद (४), अग्नि (३), बाण (५) और मुनि (७)—इन संख्याओं से भरने पर दुर्जन का मारणकारी होता है। इन्दु (२), भौम (३), बुध (४), जीव (५), शुक्र (६), शनि (७), राहु (८), शिखि (९), सूर्य (१)—इनकी क्रमशः गति से लिखा गया यन्त्र राजा को वश में कर लेता है। भौम (३), इन्दु (२), राहु (८), गुरु (५), सौम्य (४), केतु (९), अर्क (१), शुक्र (६), शनि (७)—इन अङ्कों को क्रम से यन्त्र में लिख कर कपड़े में बाँध कर धारण करनेवाली बन्ध्या युवती पुत्र को प्राप्त करती है। अश्व, गज, मन्त्रि और अश्वों से इस मन्त्र वर्य को लिख कर कटि में धारण करनेवाली मृतवत्सा स्त्री चिरायु पुत्र प्राप्त करती है। वेद (४), अग्नि (३), वसु (८), चन्द्र (१), बाण (५), ग्रह (९), नेत्र (२), ऋषि (७), रस (६)—इन अङ्कों से लिखा गया यन्त्र हथकड़ी-बेड़ी को तोड़नेवाला होता है। बाण (५), षट् (६), मुनि (७), नेत्र (२), ग्रह (९), युग (४), वह्नि (३), वसु (८), स्वरूप (१),—इन अङ्कों से बने यन्त्र से मनुष्य बिना कष्ट के ही धन पाता है। अङ्ग (६), सप्त (७), द्वि (२), नव (९), अब्धि (४), वैश्वानर (३), नाग (८), सुधांशु (१), बाण (५) से लिखा गया यन्त्र मन्त्रि, भूपति, खेलधाम मित्र, शत्रु तथा राजा का आकर्षण करता है। शनि (७), राहु (८), शिखि (९), इन्दुज (४), गुरु (५), शुक्र (६), रवि (१), चन्द्र (२), भौम (३)—इन अङ्कों से लिखा गया यन्त्र अश्व, मन्त्रि तथा सभी लोगों का उच्चाटन करता है।

अथ कार्यपरत्वेन संख्यामाह। दश वारं तु विन्यस्य लोकसम्मोहनं भवेत्। विंशत्यावर्त्यं चैतद्धि सर्वाकर्षणकृद्भवेत् ॥ ३१ ॥ त्रिंशद्वारं तु कृत्वेदं पृथिव्यां जयमाप्नुयात्। चत्वारिंशत्समारभ्य शतान्तं परमेश्वरि ॥ ३२ ॥ यः करोति महेशानि पुरश्चर्यायुतो नरः ॥ ३३ ॥ अयुतं विलिखेद्देवि बन्दिमोचनकर्मणि। अयुतद्वितयं कृत्वा गतराज्यमवाप्नुयात् ॥३४॥ अयुतत्रितयं कृत्वा विजयी भुवि जायते। शापानुग्रहसामर्थ्यं भवेद्वेदायुते शिवे ॥३५॥ बाणायुतप्रयोगेण वाक्सिद्धिर्भवति ध्रुवम्। रसायुतं लिखित्वा च जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥३६॥ जलक्षेपणमार्गेण पृथ्वीशं तु वशं नयेत्।

सप्तायुतं लिखेद्देवि साक्षाल्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥३७॥ अष्टायुतं लिखेद्देवि सिद्धकर्म समाप्नुयात् । नन्दायुतं लिखेद्देवि नवनाथसमो भवेत् ॥ ३८ ॥ लक्षमेकं लिखेद्यो हि शिवतुल्यो भवेत्स तु । प्रत्यहं विलिखेद्यो हि शतं वा तत्तदर्धकम् ॥ ३९ ॥ एवं क्रमेण कथिता पुरश्चर्या प्रिये मया । एवं यः कुरुते मर्त्यस्तस्य सिद्धिर्भविष्यति ॥ ४० ॥ इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ४१ ॥

कार्यपरत्व से संख्या कथन : इस यन्त्र को दश बार लिखने से लोकमोहन करता है। २० बार लिखने से सभी का आकर्षण होता है। ३० या ४० से १०० बार इसे लिखने से साधक पृथिवी पर जय प्राप्त करता है। हे महेशानि ! हे देवि ! पुरश्चरणरत मनुष्य बन्दियों की मुक्ति के लिये १० हजार यन्त्र लिखे। २० हजार लिख कर साधक अपने हारे हुये राज्य को पुनः प्राप्त करता है। ३० हजार बार इस यन्त्र को लिख कर साधक पृथिवी पर विजयी होता है। हे शिवे ! ४० हजार बार यन्त्र को लिख कर साधक शाप तथा आशीर्वाद देने में समर्थ होता है। ५० हजार बार लिखने से निश्चित रूप से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। ६० हजार बार लिख कर जल में फेंक देना चाहिये। इससे मनुष्य राजा को वश में कर लेता है। हे देवि ! ७० हजार यन्त्र लिखने से साधक साक्षात् लक्ष्मीपति हो जायगा। हे देवि ! जो ८० हजार यन्त्र लिखेगा वह कर्मसिद्धि को प्राप्त करेगा। ९० हजार लिख कर साधक ९ राजाओं के बराबर हो जाता है। जो इस यन्त्र को १ लाख बार या प्रतिदिन १०० या ५० यन्त्र लिखता है वह शिव तुल्य हो जाता है। हे प्रिये ! इस प्रकार मैंने यन्त्र के लिये क्रमशः पुरश्चरण कहा है। जो ऐसा करेगा उसकी सिद्धि होगी। संक्षेप में मैंने यह सब बता दिया है, अब तुम और क्या सुनना चाहती हो ?

अथ कार्यपरत्वेन प्रयोगमाह। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विधिं यन्त्रस्य सिद्धिदम्। लक्षं यन्त्रं समालिख्य सिद्धपीठे शुभेदिने ॥ ४२ ॥ भूमिमध्ये शुद्धचित्तो भूमिशायी जितेन्द्रियः। हवनादि प्रकर्तव्यं सर्षपैर्घृततण्डुलैः ॥ ४३ ॥ शर्कराभिश्रितैश्चैव वाक्सिद्धिः सम्प्रजायते। देवरूपो भवेन्मर्त्यः सर्वकामार्थसिद्धिदः ॥ ४४ ॥ दुःखदारिद्र्यरहितः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वं चराचरं पश्येच्छतजीवी भवेन्नरः ॥४५॥ भूर्जपत्रे लिखेद्यन्त्र रोचनागुरुकुंकुमैः। समर्प्य पुष्पधूपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ४६ ॥ रात्र्यन्ते लभते स्वप्ने वरं देवीसमीरितत्। जीवन्मुक्तश्च भोगी च सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ ४७ ॥ देवदत्तं महावीर्यं पञ्चदशीययन्त्रकम्। वीरप्रीतिकरं

चैव लक्षजाप्ये कृते सति ॥ ४८ ॥ सदुग्धमाषं सतिलं शर्कराघृतसंयुतम् । कृष्णपक्षे तु चाष्टम्यां बलिं दत्त्वा सुवारके ॥ ४९ ॥ वशे भवन्ति ते वीराः प्राणैरपि धनैरपि । सर्वकर्माणि सिद्धानि भवन्ति नात्र संशयः ॥ ५० ॥ एकयन्त्रसमालेखाद्यस्य कस्यापि कर्मणः । क्षणमात्राद्भवेत्सिद्धिः सत्यं-सत्यं न संशयः ॥५१॥ पुनस्तावन्मितं लेख्यं वह्निबीजेन होमयेत् । देश्या जानपदा ग्राम्या दृष्टिमात्रेण किङ्कराः ॥ ५२ ॥ पुनस्तावन्मितं लेख्यं गर्ते शुद्धभुवि क्षिपेत् । बीजं जपंस्तु तत्सर्वं पूरयेच्छुद्धमृत्स्नया ॥५३॥ तदा सर्व-महीराज्यकर्ता हर्ता स्वयं प्रभुः । अष्टौ महासिद्धयश्च तस्य हस्ततले स्थिताः ॥ ५४ ॥ बन्धयेद्दक्षहस्ते तु लिखेद्रजसि पट्टके । ततस्तं वामहस्तेन लुंचेद्-बीजं च संस्मरन् ॥ ५५ ॥ पाशैश्च निगडैः सर्वैः सद्य एव विमुच्यते ॥५६॥

कार्यपरत्व से प्रयोग कथन : अब मैं यन्त्र की सिद्धि देनेवाला प्रयोग कहूंगा । सिद्ध पीठ पर शुभ दिन भूमि पर १ लाख यन्त्र लिख कर शुद्धचित्त से भूमिशायी और जितेन्द्रिय रह कर सरसों, घी, चावल तथा शकर से होम करे । इससे वाक्सिद्धि होती है और साधक देवरूप तथा समस्त कामनाओं की सिद्धि देनेवाला हो जाता है । वह दुःख-दारिद्रय से रहित होकर सभी पापों से मुक्त हो जाता है । इतना ही नहीं, वह सभी चराचर जगत को देखनेवाला तथा शतजीवी हो जाता है । मनुष्य को भोजपत्र पर गोरोचन, अगर तथा कुंकुम से यन्त्र लिखना चाहिये और फिर उसे पुष्प, धूपादि समर्पित करके जल में डाल देना चाहिये । ऐसा करने पर वह रात्रि के अन्तिम पहर में देवी से वर प्राप्त करता है । ऐसा साधक जीवनमुक्त होकर भोगों को भोगता हुआ समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है । महावीर्य देवदत्त तथा वीर प्रीतिकर पञ्चदशी यन्त्र को १ लाख बार जप करने और कृष्ण पक्ष की अष्टमी को दूध, उड़द, तिल, शकर तथा घी के साथ उत्तम दिन बलि देने से वीर तन-मन-धन से वशीभूत हो जाते हैं और साधक के सभी कर्म सिद्ध हो जाते हैं—इसमें कोई संशय नहीं है । १ यन्त्र को लिखने से क्षण मात्र में किसी भी कार्य की सिद्धि होती है । यह सत्य है, सर्वथा सत्य है—इसमें संशय नहीं है । पुनः उतना ही लिख कर वह्नि बीज (रं) से होम करना चाहिये । ऐसा करने से आस-पास के लोग तथा जनपद के लोग दर्शन मात्र से दास हो जाते हैं । पुनः उतना ही लिख कर उसे शुद्ध भूमि में गड्ढे में डाल देना चाहिये और बीज मन्त्र का जप करते हुये शुद्ध मिट्टी से गड्ढे को भर देना चाहिये । ऐसा करने से साधक सम्पूर्ण पृथिवी के राज्यों का कर्ता, हर्ता और स्वयं प्रभु हो जाता है । साधक को आठों सिद्धियां हस्तगत हो जाती हैं ।

इस यन्त्र को पहले कपड़े में रख कर दाहिने हाथ में बांधे। इसके बाद बीज मन्त्र का स्मरण करते हुये उसे बांये हाथ से तोड़ दे। इससे समस्त पाशों, हथकड़ी तथा बेड़ियों से वह तत्काल मुक्त हो जाता है।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं च महाद्भुतम्। रवौ वारेर्कदुग्धेन श्मशानभस्मना लिखेत् ॥ ५७ ॥ यस्य वर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत्। विक्षिप्तो जायते मर्त्यं अष्टोत्तरशतं जपेत् ॥५८॥ पञ्चदशं बिलोमं च सन्ध्याकाले विशेषतः। यन्त्रं च लिखितं सम्यग्बाहो कण्ठे च धारयेत् ॥ ५९ ॥ राजापि वशमाप्नोति चान्यलोकस्य का कथा ॥ ६० ॥ चन्द्रवारे गृहीत्वा तु नागकेसररोचनम्। सर्षपाणां तु तैलेन लिखेद्यन्त्रं महोत्तमम् ॥ ६१ ॥ वर्तिका क्रियते यस्य चालयेन्मन्त्रभावतः। नृकपाले कज्जलं तु स्वजनमोहनं भवेत् ॥ ६२ ॥ गुरुवारे हरिद्राभ्यां सर्पिस्तगरुरोचनैः। यन्त्रराजं समालिख्य तस्य नाम च मध्यतः ॥ ६३ ॥ आसने निखनेच्चैव सर्वमाकर्षणं भवेत् ॥ ६४ ॥

अब मैं तुम्हें महाद्भुत प्रयोग बताऊंगा। रविवार के दिन मदार के दूध से तथा श्मशान के भस्म से यन्त्र पर जिसके नाम के वर्णों को लिख कर चिता में डाल दिया जाय वह विक्षिप्त हो जाता है। मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये। सायंकाल विशेष रूप से १५ विलोम यन्त्र अच्छी तरह लिख कर बाहु तथा कण्ठ में धारण करने से राजा भी वश में हो जाता है फिर अन्य लोगों की बात ही क्या। सोमवार के दिन नागकेसर, गोरोचन तथा सरसों के तेल से महोत्तम यन्त्र को लिख कर उसकी बत्ती बना कर मन्त्र से भावित करे। मनुष्य की खोपड़ी में उस बत्ती से काजल पारे। यह काजल स्वजन-मोहनकारक होता है। बृहस्पतिवार के दिन हल्दी, घी, तगर तथा गोरोचन से यन्त्रराज को लिख कर मध्य में साध्य का नाम लिख कर आसन के नीचे उसे गाड़ दे। यह सभी का आकर्षणकारक है।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम्। भृगुवारे सकर्पूरं वचाकुष्ठेन संलिखेत् ॥ ६५ ॥ लिखितं यन्त्रराजं तु भूर्जपत्रे सुशोभनम्। दृष्ट्वा स्त्री वशमाप्नोति प्राणैरपि धनैरपि ॥ ६६ ॥ शनिवारे चिताकाष्ठात्पञ्चदशे विलोमके। लिखिते रिपुनाम्ना तु श्मशाने निखनेद्भुवि ॥ ६७ ॥ कुक्कुटस्याक्षिरक्तेन म्रियते नात्र संशयः ॥ ६८ ॥

अब मैं परम अद्भुत प्रयोग बता रहा हूं। शुक्रवार के दिन कपूर, वचा तथा कुष्ठ (कूठ) से यन्त्रराज को भोजपत्र पर लिखे। इस उत्तम यन्त्रराज को देख कर स्त्री प्राण तथा धन सहित वश में हो जाती है। शनिवार को

चिता की लकड़ी की लेखनी से विलोम रूप से लिखित पञ्चदशी यन्त्र में शत्रु का नाम लिख कर मुर्गे की आँख के रक्त के साथ गाड़ देने से शत्रु निश्चित रूप से मर जाता है।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजविधिं तव। यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत् ॥ ६९ ॥ वटवृक्षतले यन्त्रं भूमिमध्ये ततो लिखेत्। वटद्रुशाखालेखन्या कृष्णपक्षे चतुर्दशी ॥ ७० ॥ तत्रारम्भं प्रकुर्वीत नरोऽत्यन्तं समाहितः। कृतेऽयुते धर्मकाममोक्षार्थान्प्राप्नुयाद्ध्रुवम् ॥ ७१ ॥ दाडिमीवृक्षलेखन्या भूमौ यन्त्रसहस्रकम्। लिखितं बन्धमोक्षादिकरं स्वामिवशङ्करम् ॥ ७२ ॥ ब्रह्मवृक्षस्य लेखन्या यन्त्रं पञ्चशतं लिखेत्। भूमिमध्ये तु दारिद्रयनाशनं भवति ध्रुवम् ॥ ७३ ॥ मनःशिला च गोमूत्रं कर्पूरं तगरं तथा। भूर्जे लिखेत्सहस्रं तदश्वत्थवृक्षमूलतः ॥ ७४ ॥ यंयं चिन्तयते काम तंतं प्राप्नोति निश्चितम्। प्राप्नोति विपुलान्भोगानिन्द्रतुल्यो नरो भवेत् ॥ ७५ ॥ मनःशिलाबिल्वरसे हरितालेन यन्त्रकम्। बिल्वशाखासुलेखन्या सहस्रद्वितयं लिखेत् ॥ ७६ ॥ एकान्ते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च। वाक्सिद्धिर्जायते तस्य नान्यथा शङ्करोदितम् ॥७७॥ अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रे समालिखेत्। अष्टोत्तरसहस्रं तु रिपुनामसमन्वितम् ॥ ७८ ॥ किक्करीवृक्षबन्धेन ज्वरादिर्देहशूलकः। जायते नात्र सन्देहो यदि शत्रुः समोऽरिपुः ॥ ७९ ॥ हरिद्रालिखितं यन्त्रं जलेनैव तु घर्षयेत्। अष्टोत्तरशतं चैव मध्यपाषाण स्तम्भनम् ॥ ८० ॥ रिपुद्वारे खनेद्भूमौ सिंहीकण्ठे तु यन्त्रकम्। कलहो जायते नित्यं भ्रातृपुत्रादिबन्धनात् ॥८१॥ अपामार्गरसेनैव लिखेद्यन्त्रं तु भूर्जके एकाह्निकतृतीयाख्यचतुर्थज्वरनाशनम् ॥ ८२ ॥ भृङ्गराजरसेनैव लिखेद्यन्त्रं सुभूर्जके। धारयेद्धृदये बाहौ विवादे विजयो भवेत् ॥ ८३ ॥

अब मैं तुम्हें यन्त्रराज की विधि बताता हूं। इसे ऐरे-गैरे को नहीं देना चाहिये। तुम इसे गुप्त रखना और प्रकाशित न करना। बरगद के वृक्ष के नीचे भूमि पर बरगद की टहनी की लेखनी से इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अत्यन्त शान्त चित्त होकर लिखना आरम्भ करे। १० हजार यन्त्र लिखने पर मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को निश्चित रूप से प्राप्त करता है। अनार की लेखनी से भूमि पर १ हजार यन्त्र लिखने से बन्धन से मुक्ति मिलती है और स्वामी का वशीकरण होता है। पलाश की लेखनी से भूमि पर ५ सौ यन्त्र लिखने से दरिद्रता का नाश होता है। पीपल के जड़ की लेखनी द्वारा मैनसिल, गोमूत्र, कपूर तथा तगर से भोजपत्र पर १ हजार

यन्त्र लिखने से साधक जो-जो चाहता है वह-वह निश्चित रूप से प्राप्त करता है तथा विपुल भोगों को प्राप्त करके वह इन्द्र के समान हो जाता है। बेल के पेड़ की टहनी की लेखनी द्वारा मैनसिल, हरिताल तथा बेल के रस से २ हजार यन्त्र को एकान्त और शुभ स्थान में भूमि पर लिखने से वाक्सिद्धि प्राप्त होती है—शङ्कर का यह वचन अन्यथा नहीं हो सकता। मदार के पत्ते पर मदार के पत्ते के रस से १००८ यन्त्र लिखने और उसे शत्रु के नाम से समन्वित करने से शत्रु को ज्वर तथा हृच्छूल आदि रोग होते हैं और वह (शत्रु) मित्र के समान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। इसमें किक्करी वृक्ष के बन्धक की लेखनी का प्रयोग करना चाहिये। हल्दी से लिखे यन्त्र को जल से धोये तथा १०८ बार जप करे तो इससे मध्य पाषाण का स्तम्भन होता है। शत्रु के द्वार पर भूमि में साही के काँटे में यन्त्र को गाड़ देने से शत्रु के घर और परिवार में नित्य कलह होता है। अपामार्ग के रस से भोजपत्र पर यन्त्र को लिखने से एकाहिक, तिजारी और चौथिया ज्वर का नाश होता है। भृङ्गराज के रस से भोजपत्र पर यन्त्र को लिख कर हृदय तथा बाँह पर बाँधने से साधक विवाद में विजयी होता है।

अथ विषमाङ्कपञ्चदशीविधानम्। दक्षिणामूर्तिरुवाच। शृणुष्वावहिता भूत्वा गिरिजे प्राणवल्लभे। अकथ्यं परमार्थेन तथापि कथयाम्यहम् ॥ ८४ ॥ विषमाण्यनेकयन्त्राणि कथ्यन्ते परमं शृणु। नवकोष्ठात्मके यन्त्रे द्वितीये सप्तमे तथा ॥ ८५ ॥ रससंज्ञेऽथ नवमे पञ्चमे प्रथमे तथा। चतुर्थं च तृतीये च वसुसंज्ञे लिखेद्बुधः ॥ ८६ ॥ तिथ्यङ्कसंख्या जायते षट्कर्माण्यत्र साधयेत्। सुदिने त्वष्टगन्धेन होमपूजापुरःसरम् ॥८७॥ प्रारम्भे नियताहारः कार्यगौरवलाघवात्। लिखेत्सहस्रदशकं न्यूने त्वर्धार्धमानकम् ॥ ८८ ॥ त्रिसप्तदिनमध्ये तु कार्यसिद्धिर्न संशयः ॥ ८९ ॥ षष्ठाद्वा ह्यष्टमाद्वापि चतुर्थाद्वा लिखेत्सुधीः। त्रिगुणं त्रिविभक्तं च नवकोष्ठेषु संलिखेत् ॥ ९० ॥ भूर्जे वा स्वर्णमुद्रायां लिखित्वा देहसङ्गतम्। एतद्दर्शनमात्रेण नश्यन्ति यमकिङ्कराः ॥ ९१ ॥ बहुना किमिहोक्तेन प्रत्ययो ह्यस्य सूचकः। लिखेत्सहस्रसंख्याकं जलेन तु विलेपयेत्। बन्दिमोक्षस्तदा देवि नात्र कार्या विचारणा ॥ ९२ ॥

विषमांक पञ्चदशी विधान : दक्षिणामूर्ति बोले : हे गिरिजे ! हे प्राणवल्लभे ! वस्तुतः यह कथनीय नहीं है फिर भी मैं इसे कह रहा हूं। यहाँ विषमांक अनेक यन्त्र कहे जा रहे हैं उन्हें सुनो। नव कोष्ठवाले यन्त्र में द्वितीय, सप्तम, षष्ठ, नवम, पञ्चम, प्रथम, चतुर्थ, तृतीय तथा अष्टम कोठों में

तिथि-अङ्क की संख्याओं (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९) को लिखे। इस यन्त्र से षट्कर्मों को सिद्ध करे। प्रारम्भ में अच्छे दिन पहले अष्टगन्ध से होम-पूजन करके नियत आहारवान् साधक कार्य की महत्ता और लघुता के अनुसार ५ से १० हजार तक यन्त्रों को लिखे। तीन या सात दिन में कार्य की सिद्धि हो जाती है। इसमें संशय नहीं है। सुधी साधक छठवें, आठवें या चौथे से आरम्भ करके नव कोष्ठों में तीन से विभक्त होनेवाली संख्याओं को भोजपत्र पर या स्वर्ण की मुद्रा पर लिख कर शरीर पर धारण करे। इसके दर्शन मात्र से यमराज के दूत भाग जाते हैं। यहाँ अधिक कहने से क्या—अनुभव ही इसकी प्रामाणिकता को सिद्ध कर देगा। इसे १ हजार लिख कर जल से धोना चाहिये। हे देवि ! ऐसा करने पर बन्दी मुक्त हो जाता है। इसमें विचार नहीं करना चाहिये।

इदं त्रिकोणयन्त्रं प्रथमं २-७-१-२-४-८-५-६-९-इति क्रमेण पञ्चदश-सहस्रं लेखनीयम्। तदा गोधूमपिष्टेन सह मत्स्येभ्यो दीयते चेत्सर्वं-सिद्धिः। तथा च : लिखेत्प्राग्वज्जले क्षेपात्सहस्रतिथिसम्मितात्। अभीष्ट-सिद्धयस्तस्य श्रीर्हस्ततलगोचरा ॥ ९३ ॥

निम्नलिखित त्रिकोण यन्त्र में २-७-१-२-४-८-५-६-९—इस क्रम से पन्द्रह हजार यन्त्र लिखना चाहिये। तदुपरान्त इन्हें गेहूं के आटे में गोलियाँ बनाकर मछलियों को दे देना चाहिये। इससे सर्वार्थ सिद्धि होती है। कहा भी गया है कि जो पूर्ववत् तिथि संमित संख्याओं से यन्त्र को लिख कर उसे जल में डाल देता है, उसकी अभीष्ट सिद्धि होती है और लक्ष्मी उसके हाथ में आ जाती है।
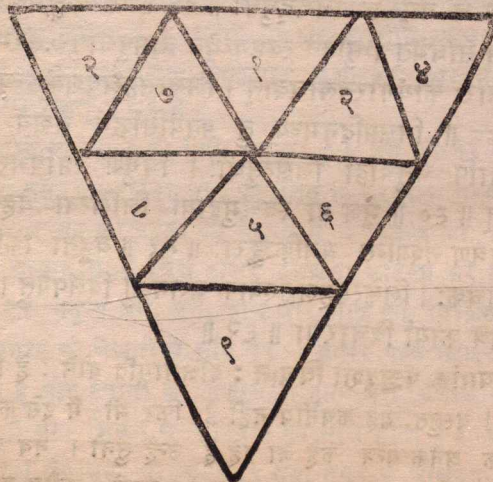
त्रिकोणयन्त्रम्

अथ नवग्रहशान्तियन्त्रम् । रवौ दुष्टे प्रथमात् १ । सोमे दुष्टे द्वितीयात् २ । भौमे दुष्टे तृतीयात् ३ । बुधे दुष्टे चतुर्थात् ४ । गुरौ दुष्टे पञ्चमात् ५ । शुक्रे दुष्टे षष्ठात् ६ । शनौ दुष्टे सप्तमात् ७ । राहौ दुष्टेऽष्टमात् ८ । केतौ दुष्टे नवमात् ९ । एतत् क्रमपूर्वकं लेखनीयम् । ह्रीं आदित्याय नमः । इत्यादि सर्वेषां मध्ये ह्रींकारो लेखनीयः । पिप्पलपत्रे वा सप्तपत्रे लिखित्वा पिप्पलमूले स्थापनीयम् । एवमष्टाविंशतिदिनपर्यन्तं कृते ग्रहाः प्रसन्ना भवन्ति पीडां न कुर्वन्ति ॥ ९४ ॥

नवग्रह शान्ति यन्त्र : रवि के दुष्ट होने पर १ से, सोम (चन्द्रमा) के दुष्ट होने पर २ से, मङ्गल के दुष्ट होने पर ३ से, बुध के दुष्ट होने पर ४ से, बृहस्पति के दुष्ट होने पर ५ से, शुक्र के दुष्ट होने पर ६ से, शनि के दुष्ट होने पर ७ से, राहु के दुष्ट होने पर ८ से और केतु के दुष्ट होने पर ९ से आरम्भ करके क्रमानुसार यन्त्र को लिखना चाहिये । 'ह्रीं आदित्याय नमः'—इसी प्रकार सब के साथ 'ह्रींकार को लिखना चाहिये । पीपल के पत्ते पर या सप्तपर्ण के पत्ते पर लिख कर यन्त्र को पीपल की जड़ में रख देना चाहिये । इस प्रकार २८ दिन तक करने से सभी ग्रह प्रसन्न हो जाते हैं और पीड़ा नहीं देते ।

ग्रहशान्तियन्त्रम्

८	१ ह्रींरवये	६
३	५	७
४	९	२

अथ यन्त्राणां वर्णभेदः । प्राच्यामारभ्य च पुनः पश्चिमायां समाप्यते । सत्त्वयन्त्रं तु विज्ञेयं विपरीतं तु तैजसम् ॥ ९५ ॥ दक्षिणस्यां समारभ्य सौम्यायां च समाप्यते । वायवीयं भवेद्यन्त्रं विपरीतन्तु पार्थिवम् ॥ ९६ ॥ अनुलोमविलोमाभ्यां चत्वारोपि द्विधा द्विधा । अष्ट भेदा भवन्ति स्म चतुर्वर्णाद्विभेदतः । आद्ययन्त्रं शिवमयं ह्यस्यास्ति महिमाऽद्भुतः ॥ ९७ ॥ स्वरूपं यथा । इति पञ्चदशीविधानं समाप्तम् ॥ २ ॥

यन्त्रों के वर्णभेद : जिस यन्त्र को पूर्व से प्रारम्भ करके पश्चिम की ओर लिखना समाप्त किया जाता है उसे सत्त्व यन्त्र कहते हैं और जो यन्त्र इसके

विपरीत होता है उसे तैजस यन्त्र कहते हैं। जो यन्त्र दक्षिण से प्रारम्भ करके उत्तर की ओर लिखा जाता है उसे वायवीय और इसके विपरीत को पार्थिव यन्त्र कहते हैं। अनुलोम और विलोम क्रमसे चारों यन्त्र दो-दो प्रकार के होते हैं। इस प्रकार चार वर्णों के भेद से इनके आठ भेद होते हैं। आद्य यन्त्र शिवमय है और इसकी महिमा भी अद्भुत है। इनके स्वरूप इस प्रकार हैं :

इति पञ्चदशी विधान समाप्त।

८	१	६	६	१	८
३	५	७	७	५	३
४	९	२	२	९	४

२	९	४	४	९	२
७	५	३	३	५	७
६	१	८	८	१	६

४	३	८	८	३	४
९	५	१	१	५	९
२	७	६	६	७	२

६	७	२		२	७	६
१	५	९		९	५	१
८	३	४		४	३	८

बहत्तर के यन्त्र की विधि : आम की लकड़ी के पटरे पर रोली बिछा कर अनार की कलम से ९ कोष्ठ बनाये। इन कोष्ठों में अङ्क भरने की गति इस प्रकार है : ६-१२-१८; पुनः २४-३०-३६; पुनः ४२-४८। इस क्रम से

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

अङ्को को भरे और एक कोष्ठ को रिक्त रहने दे। प्रति कोष्ठ में अङ्क भरने के समय इस मन्त्र का उच्चारण करे :

ॐ पार्श्वनाथाय नमः।

इस प्रकार यन्त्र को लिख कर पञ्चोपचार से पूजन करे तथा यन्त्र के सम्मुख इस मन्त्र को ७२ बार जपे :

ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वरि स्वाहा।

तदुपरान्त यन्त्र को मिटा दे। इस प्रकार २४ यन्त्र नित्य लिखे और २४वें यन्त्र के सम्मुख :

ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभावाय ह्रीं कामेश्वर स्वाहा।

इस मन्त्र को २१ सौ बार जपे। इस प्रकार से ७२ दिन तक कार्य करे। जौ की रोटी तथा बथुये के अलोने (नमक रहित) साग का भोजन करे, पृथिवी पर सोये, ब्रह्मचर्य का पालन करे और असत्य न बोले। ७२ दिन के बाद दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन कराये।

इस प्रकार यह यन्त्र सिद्ध होता है। फिर इस सिद्ध यन्त्र को कागज पर लिख कर उसके पीछे यह लिखे कि 'बाजार में चलनेवाले ७२ टके (रुपये) दे।' तदनन्तर उस यन्त्र को आसन के नीचे रखकर ७२ बार कामेश्वरी के मन्त्र का जप करने से बाजार में चलनेवाले ७२ टके मिलेंगे। इस बात को किसी से न बताये क्योंकि बता देने से टका मिलना बन्द हो जायगा। टके प्राप्त होने के बाद यन्त्र को उठा कर पगड़ी में रख ले और दूसरे दिन गेहूं के आटे को घृत तथा खाँड में सान कर उसमें यन्त्र की गोली बनाकर नदी में बहा दे। एक महात्मा ने, जिसे इस यन्त्र की पूरी सिद्धि थी, इसे मुझे बताया था। वे किसी से कुछ नहीं लेते थे और इस यन्त्र-लेखनक्रिया में प्रतिदिन व्यय होनेवाले २ रुपये भी स्वयं ही लगाते थे। इस यन्त्र के प्रताप से ही उनका निर्वाह होता था।

एक मुसलमान फकीर ने इस यन्त्र की विधि इस प्रकार बताया है : मास के प्रथम बृहस्पतिवार से प्रारम्भ करके सूर्योदय के पहले कागज पर स्याही से यन्त्र लिखे और आटा, घी तथा खाँड के साथ गोली बना ले। सूर्योदय होने पर इन गोलियों को नदी में बहा दे। तदुपरान्त नाभिपर्यन्त जल में खड़ा होकर पहले एक बार :

बिस्मिल्लाहेर्रहेमानिर्रहेमानिर्रहीम।

यह पढ़ कर ७२ बार :

अल्लहुम्मसल्लअलामुहम्मदिनवअलाआलमुहम्मदिनववारकवसल्लम।

इस दारुद को पढ़े क्योंकि दारुद को पढने से पैगम्बर साहब की मदद पहुंचती है। तदनन्तर पश्चिम की ओर मुख करके खड़े-खड़े ४४४४ बार या ३३३३ बार :

याजिवोयाजिब्राईलवहक्वयावासितो।

इस मन्त्र को पढ़े। अन्त में पुनः ७२ बार दारुद को पढ़ कर घर को चला आये। इस प्रकार ७२ दिन तक करने से यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। तदुपरान्त इस सिद्ध यन्त्र को कागज पर लिख कर ७२ बार मन्त्र पढ़ कर तागे में पिरोकर अपने घर के द्वार पर प्रतिदिन टाँगे और दूसरे दिन उतार कर गोली बनाकर नदी में बहा दे। ऐसा नित्य करने से १८ दिन में ही व्यय के अनुरूप धन कहीं से आता रहेगा। ७२ दिन के बाद बाजार में चलनेवाले ७२ टके नित्य आसान के नीचे आया करेंगे।

अथ द्वात्रिंशांकयन्त्रविधानम् ।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

उक्त यन्त्र को हल्दी से कागज पर लिख कर नीचे की ओर अपना मनोरथ लिखा दे। फिर रूई के साथ यन्त्र की बत्ती बनाकर रविवार को दीपक में जलावे और हल्दी की माला से इस मन्त्र का ११ सौ जप करे : मन्त्र यह है : ॐ ह्रीं हंसः । इस प्रकार ७ रविवार तक करनेवाला मनुष्य सर्व दुःखों से मुक्त होकर अत्यन्त सुखों को भोगता है ।

इस यन्त्र का दूसरा विधान इस प्रकार है : रविवार को प्रातःकाल स्नान करके हल्दी से थाली में यन्त्र लिखे और उसके ऊपर फूल बत्ती का चौमुखा दीपक स्थापित करके पञ्चोपचार से पूजन करे। फिर थाली को उठा ले और सूर्य के सम्मुख खड़ा होकर 'ॐ ह्रीं हंसः'—इस मन्त्र का जप करे। जैसे-जैसे सूर्य घूमे वैसे-वैसे स्वयं भी घूमता जाय। सूर्यास्त के बाद अर्घ देकर मिष्ठान्न भोजन करे, भूमि पर शयन करे और ब्रह्मचर्य का पालन करे। इसी प्रकार सात रविवार करने से इस भूतल का कोई भी ऐसा कार्य न होगा जो सिद्ध न हो जाय। अर्थात् सूर्यनारायण की कृपा से सम्पूर्ण कार्यों की अवश्य सिद्धि होती है—इसमें सन्देह नहीं है। मैंने एक अत्यन्त कठिन कार्य की सिद्धि के लिये यह प्रयोग किया था और चार ही रविवारों में मेरा कार्य सुगमतापूर्वक सिद्ध हो गया।

अथापदुद्धारबटुकयन्त्रविधानम् ।

श्रीपार्वत्युवाच । अधुना ब्रूहि मे नाथ आपदुद्धारनामकम् । यन्त्रं यन्त्रविदां श्रेष्ठ श्रोतुं मे लालसा बहु ॥ १ ॥

पार्वतीजी बोलीं : हे नाथ ! अब आप आपदुद्धार नामक यन्त्र बतायें। इसे सुनने की मेरे मन में अत्यधिक लालसा है। आप यन्त्रविद्या के यन्त्रविदों में सर्वश्रेष्ठ हैं।

श्रीमहादेव उवाच । समाधिध्यानयोगेन परमेण महेश्वरि । इदं वै यन्त्रकं दिव्यं प्रादुर्भावितमुत्तमम् ॥ २ ॥ स्वर्णे वा रजते न्यस्य धारयेत् कण्ठदेशतः । दक्षिणे वा तथा बाहावापत्तस्य हि नश्यति ॥ ३ ॥

श्रीमहादेवजी बोले : हे परमप्रिये महेश्वरी ! हमने इस यन्त्र को परम-समाधि और ध्यानयोग से उत्पन्न किया है । जो मनुष्य इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर सोने, चाँदी या ताँबे में मढवा कर गले अथवा दाहिनी भुजा में बाँधता है वह सम्पूर्ण आपत्तियों से छूट कर आनन्द भोग करता है ।

आपदुद्धारवटुकयन्त्रम

ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं

ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं

अमुकं

ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं

ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं
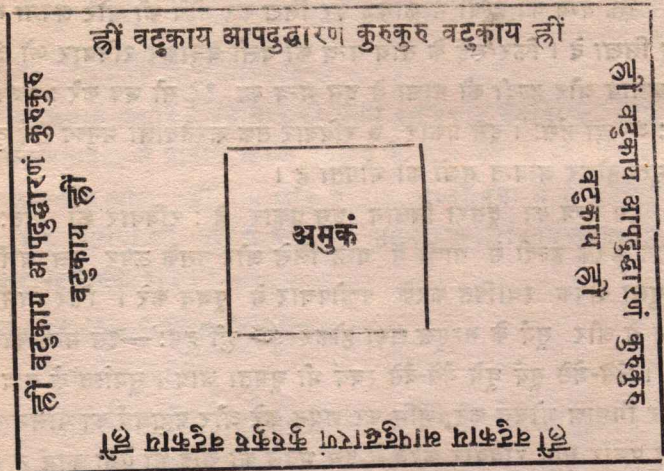
अथ हनुमान यन्त्रविधानम् ।

इस यन्त्र को कागज पर अथवा भोजपत्र पर सवा लाख लिखने से साधक पर हनुमान देवता शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं—इसमें सन्देह नहीं है ।

हनुमानयन्त्रम्

नं०	छं०	जं०	चं०
दं०	दं०	चं०	चं०
जं०	छ०	जं०	वं०
छं०	नं०	जं०	हं०

अथ सर्वकार्यसिद्धिकारकयन्त्रम् ।

नीचे दिये यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिख कर धूप, दीप और नैवेद्य सहित पूजन करके सोना, चाँदी या ताँबे में मढवा कर गले या दाहिने हाथ में बाँधने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं । इस यन्त्र को श्रीशिवजी ने कैलासशिखर पर बैठे हुये पार्वतीजी को बताया था । यह परीक्षण किया हुआ यन्त्र है ।
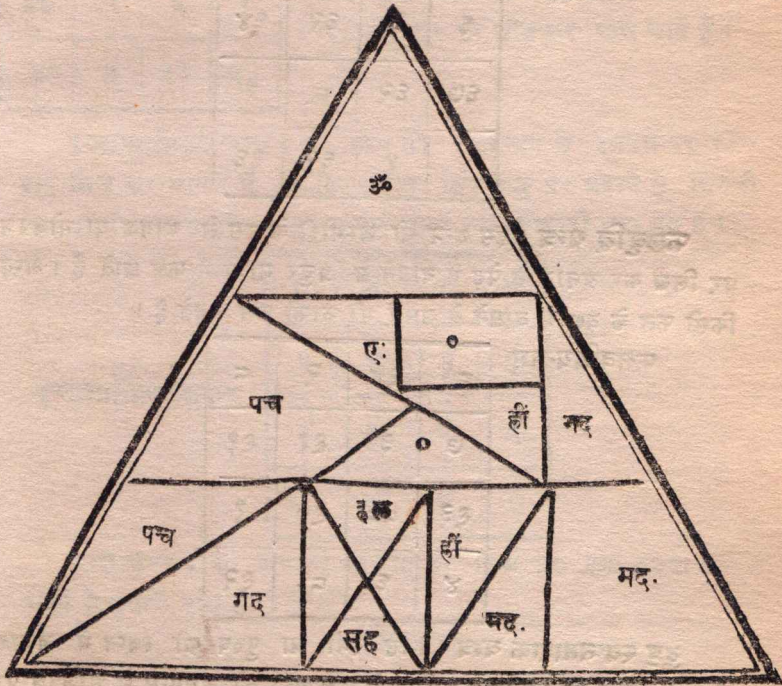
वचन सिद्धि यन्त्र : इस यन्त्र को कुलञ्जन से भोजपत्र पर लिखकर तावीज बनवा कर गले में धारण करने से शिव की कृपा से वचन सिद्ध होता है ।

वचनसिद्धियन्त्र

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

पक्षि आकर्षण यन्त्र : इस यन्त्र को काठ के पटरे पर लिख कर आसन पर रखने से सब पक्षी अकस्मात वहाँ आ जांयगे।

पक्षिआकर्षणयन्त्र

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६२	६६

फलवृद्धि यन्त्र : इस यन्त्र को जम्भीरी के रस से कागज या भोजपत्र पर लिख कर अनार के पेड़ में बांधने से प्रचुर मात्रा में फल आते हैं। अन्य किसी फल के वृक्ष में बांधने से उसमें भी काफी फल लगते हैं।

फलवृद्धियन्त्रम्

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

दुष्ट स्वप्ननाशक यन्त्र : जिस स्त्री या पुरुष को स्वप्न में जंजाल दिखाई पड़ता हो वह दुष्ट स्वप्ननाशक इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर गूगल की धूप देवे और कण्ठ में धारण करे। इससे उसके दुष्टस्वप्नों का निश्चित रूप से नाश हो जायगा।

दुष्टस्वप्ननाशकयन्त्र

गं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	चं
नं	छं	जं	टं

बिच्छूसर्पादिनाशकयन्त्र

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	६	१
४	५	३२	३४

बिच्छू-सर्पादि नाशक यन्त्र : मालकांगनी के रस से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिख कर घर में शुद्ध स्थान पर रख देने से सभी सर्प और बिच्छू घर को छोड़ कर भाग जाते हैं।

इच्छाप्राप्तिकर यन्त्र : इस यन्त्र को रक्तचन्दन से बेलपत्र पर १०८ बार लिख कर श्रावण में ३० दिन पर्यन्त शिवलिङ्ग पर चढ़ाने से शिवजी प्रसन्न होकर धन-सम्पत्ति सहित सम्पूर्ण भोगों का अधिकारी बना देते हैं।

इच्छाप्राप्तिकरकयन्त्र

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

वृद्धि यन्त्र : इसे दीवाली की रात को लिख कर द्रव्य अथवा अन्न में रखने से उसकी वृद्धि होती है।

वृद्धियन्त्रम्
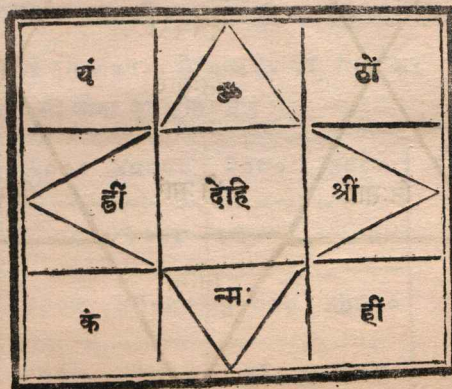
राज्यकोपनिवारक यन्त्र : इसे भोजपत्र पर गोरोचन, केसर, चन्दन और अनामिका के रुधिर को मिलाकर उससे लिखे। फिर अनेक प्रकार के फूल, मिष्ठान्न और मांस द्वारा पूजन करके यथाशक्ति कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन करावे। तदनन्तर योगिनियों को नमस्कार करके इस यन्त्र को मुट्ठी में बन्द कर ले और राजसभा में जाय। इससे तत्काल ही राजा का क्रोध शान्त हो जायगा और वह साधक के वशीभूत हो जायगा।

राज्यकोपनिवारणयन्त्र

ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं
ह्लीं	देवदत्त.		ह्लीं
ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं

वैराग्योत्पत्तिकर यन्त्र : गोरोचन और चन्दन से भोजपत्र पर यन्त्र को लिख कर लोहे की ताबीज में बन्द करके सर पर रखने से उत्तरोत्तर चित्त में वैराग्य होगा। साधक इसके प्रभाव से पुत्र, मित्र, धन और स्त्री के मोह से मुक्त होकर योगी के रूप में इच्छापूर्वक विचरण करेगा।
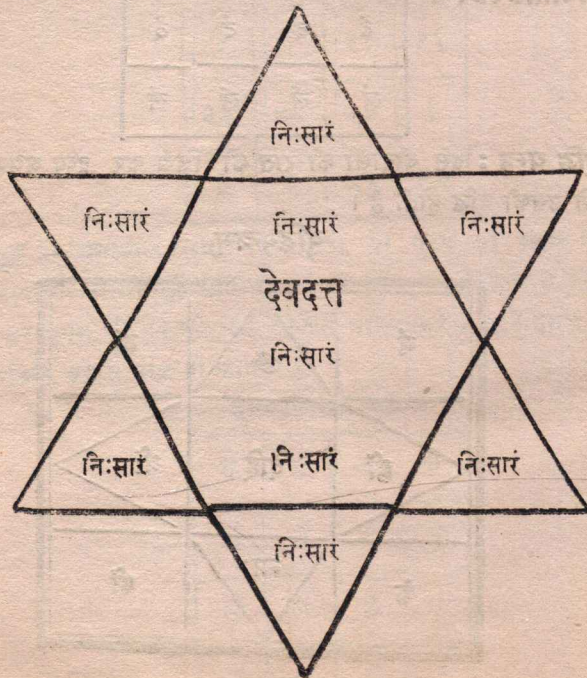
वैराग्योत्पत्तिकरयन्त्रम्

सेना पलायन यन्त्र : इस यन्त्र को शङ्खाहुली, सूर्यमुखी और गुलदौन के रस से नगाड़े के ऊपर लिख कर डंके की चोट देने से सम्पूर्ण शत्रु सेना पलायन कर जायगी । सेनापलायनयन्त्रम्
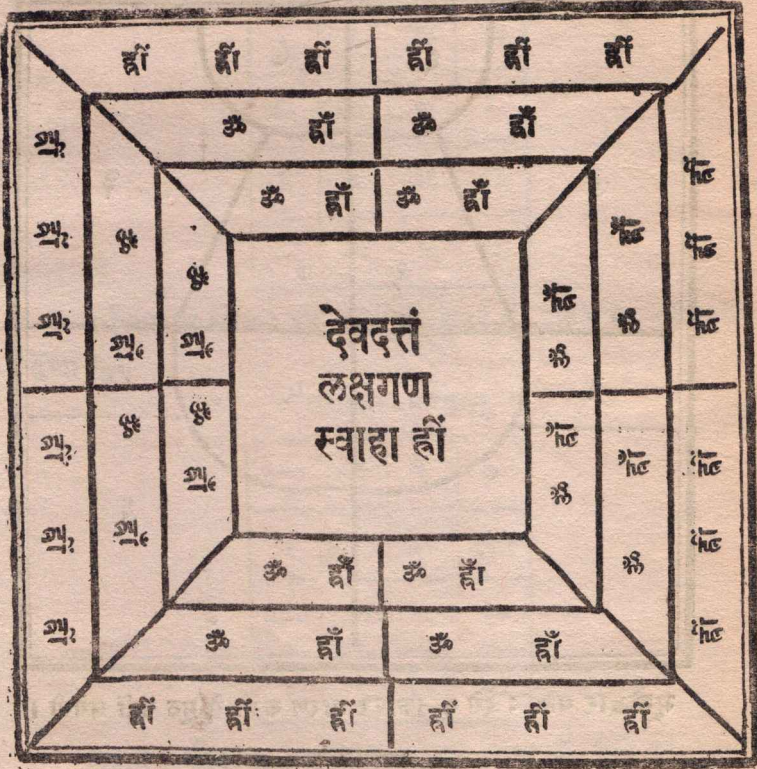
शीतला यन्त्र : इसे अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर सिरहाने रखने से माता (चेचक) की पीड़ा दूर होती है ।

शीतलायन्त्रम्

४२०००	४८०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०००	५॥०००	४४०००	५॥०००
१०००	७०	१६	६०८

मूंठ-उद्धार यन्त्र : होली की रात को नग्न होकर धतूरे के रस से इस मूठ-उद्धारक यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर माथे पर बांध ले तो मूठ नहीं लगेगी।

मूँठ उद्धारयन्त्र.
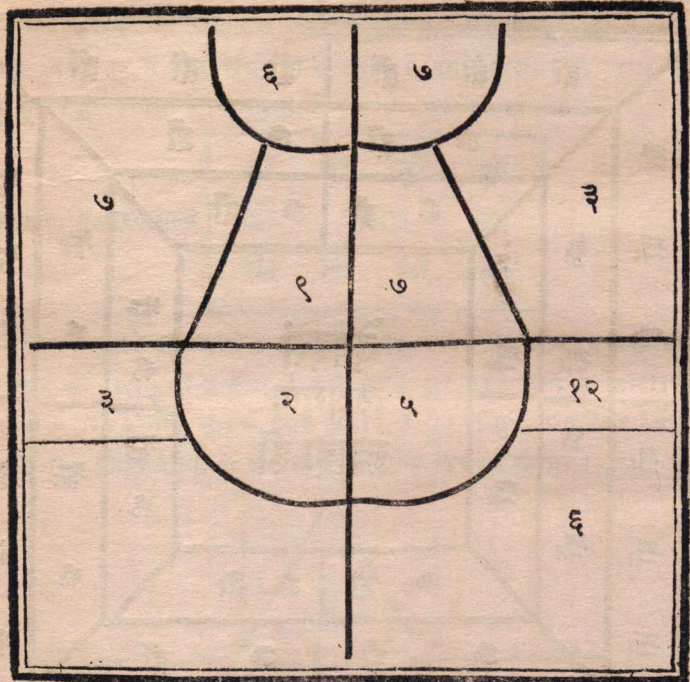
मूठोद्धार यन्त्र : इसे मस्तक पर धारण करने से मूठ नहीं लगेगी।

मूठोद्धारयन्त्रम्
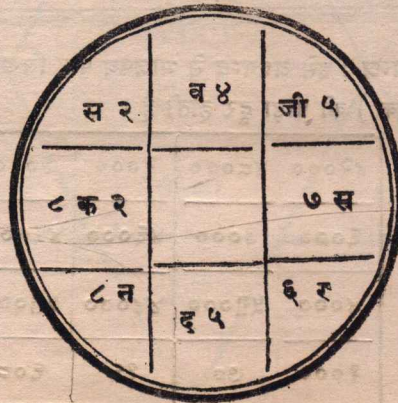
नपुंसक यन्त्र : इस यन्त्र को लिख कर कमर में बांधने से पौरुष उत्पन्न होता है।

नपुंसकयन्त्रम्

४	५	७४	७७
७९	७२	८	१
६	३	७६	९५
७३	३८	२	७

गर्भस्तम्भन यन्त्र : इस यन्त्र को कमर में बाँधने से गर्भ स्तम्भित होता है।

गर्भस्तम्भनयन्त्रम्

१००	९१	२	७
६	३	८४	१०३
८००	११००	८	१०
४	५	१०२	८८

सुहाग (सौभाग्य) वृद्धि यन्त्र : इस यन्त्र को माथे पर रखने से सुहाग बढ़ता है।

सौभाग्यवृद्धियन्त्रम्

५	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४

धरणियन्त्र : इस यन्त्र को कमर में बांधने से धरणि ठिकाने आ जाती है ।

धरणियन्त्रम्

६२३	१स	८६
७सी	५पू	३७
२म	९८	४स

पुत्रोत्पत्तियन्त्रम्

१०	१	१२
८	१५	३
२	२	५

पुत्रोत्पत्ति यन्त्र : बन्ध्या स्त्री इस पुत्रोत्पत्ति यन्त्र को कमर में बांध ले तो उसे पुत्र प्राप्त होगा ।

रोजगार प्राप्ति यन्त्र : शुक्लपक्ष में कांस्यपात्र पर इस यन्त्र को लिख कर पास में रखने से रोजगार मिलता है ।

रोजगारप्राप्तियन्त्रम्

६	७	२
१	५	९
८	३	४

पुरुष वश्य यन्त्र : इस यन्त्र को गले में धारण करने से स्त्री पुरुषों का वशीकरण होता है ।

पुरुषवश्ययन्त्रम्

श्वानविष यन्त्र : इस यन्त्र को माथे पर रखने से पागल कुत्ते का विष दूर होता है।

श्वानविषयन्त्रम्

डाकिनीयन्त्रम्

उत	उत
उत	उत
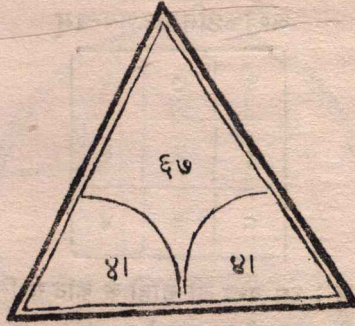
डाकिनी यन्त्र : इसे पास रखने से डाकिनी का भय नहीं होता।

कामला यन्त्र : इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर माथे पर बांधने से पीलिया या कामला रोग दूर होता है।

कामलायन्त्र
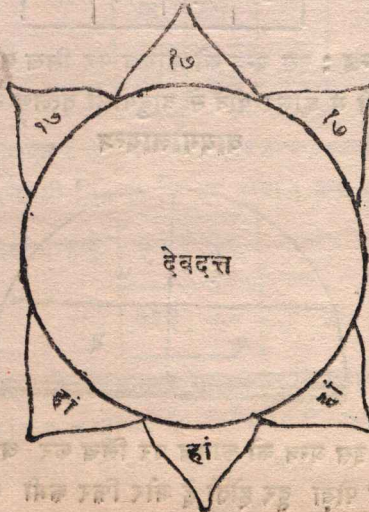
अश्वकष्ट निवारण यन्त्र : घोड़े का पेशाब बन्द हो जाय और पेट में दर्द भी हो तो इस अश्वकष्ट निवारण यन्त्र को लिख कर घोड़े के गले में बांधने से उसके सभी कष्ट मिट जाते हैं। यह सैकड़ों बार का अनुभूत प्रयोग है।

अश्वकष्टनिवारणयन्त्रम्

६	७	२
१	५	९
८	३	४

आकर्षण यन्त्र : इस यन्त्र को साही के कांटे से नित्य १०८ बार लिखने से परदेस गया व्यक्ति घर लौट आता है।

आकर्षणयन्त्रम्

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
४	६	२१	२४

वायुगोला यन्त्र : इस यन्त्र को कागज पर लिख कर रविवार के दिन सूर्य के सम्मुख पानी में धोकर पीने से वायुगोला तत्क्षण समाप्त हो जाता है।

वायगोलायन्त्र
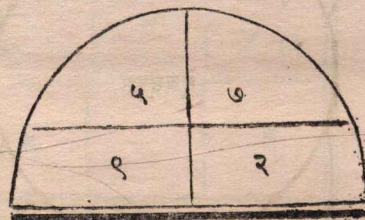
दृष्टि यन्त्र : इस यन्त्र को कागज पर लिख कर अष्टगन्ध द्वारा गले में बांधने से नजर की पीड़ा दूर होती है और फिर कभी नजर नहीं लगती।

इस यन्त्र का अत्यन्त विलक्षण प्रभाव है ।

दृष्टि यन्त्रम्
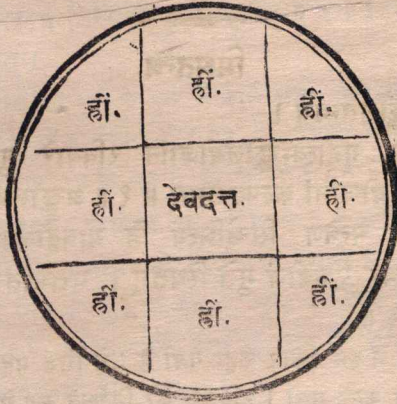
कर्णपीड़ा यन्त्र : इस यन्त्र को कागज पर स्याही से लिख कर कान में बाँधने से कान की पीड़ा निश्चित रूप से शीघ्र दूर होती है । कर्णपीड़ा के लिये यह यन्त्र रामबाण है । **कर्णपीडायन्त्रम्**

भ	ज	व
क	ग	जः
छः	छः	दः

आधासीसी यन्त्र : इस यन्त्र को कागज पर स्याही से लिख कर मस्तक में बाँधने से आधासीसी निश्चयपूर्वक नष्ट होगा । यन्त्र अब तक गुप्त था ।

आधाशीशीयन्त्रम्

५३	४२
३११	७०

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे यन्त्रप्रकरणे एकादशस्तरङ्गः ॥ ११ ॥

इति मन्त्रमहार्णव के मिश्रखण्ड में यन्त्रप्रकरण
नामक एकादश तरङ्ग समाप्त ॥ ११ ॥

द्वादश तरंग

मिश्रतन्त्र

तत्रादौ अङ्कोलतन्त्रम् ।

दत्तात्रेयतन्त्रे : गृहीत्वाङ्कोलबीजानि रविवारे सुनिश्चितम् । शृणु सिद्ध महायोगिन् बीजानां कल्पमुत्तमम् ॥ १ ॥ अङ्कोलबीजं निक्षिप्तं गुरौ गजमुखे शुभम् । मन्त्रेण सिञ्चेन्नित्यं हि यावद्बीजफलोद्भवः ॥ २ ॥ त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा एकबीजं मुखे स्थितम् । मत्तमातङ्गवीर्यस्तु वायु-तुल्यपराक्रमः ॥ ३ ॥

दत्तात्रेय तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : हे सिद्ध महायोगिन् ! अङ्कोल के बीजों का उत्तम कल्प सुनो । रविवार को निश्चित रूप से अङ्कोल के बीजों के लेकर बृहस्पतिवार को हाथी के मुख में डाल कर भूमि में गाड़ दे । उसे नित्य तब तक मन्त्र से सींचता रहे जब तक उसमें फल नहीं आ जाते । फल आ जाने पर उसका एक बीज त्रिलोह में वेष्ठित करके मुख में रखने से मनुष्य उन्मत्त हाथी के समान बल-वीर्यवाला तथा वायु के समान पराक्रमवाला हो जाता है । इसमें मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजाल कौतुकानि दर्शय दर्शय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इसी मन्त्र से इसे तथा आगे के भी सभी कार्य करने चाहिये । १ लाख जप से इसकी सिद्धि होती है ।

हयमुखे च तद्बीजं रविवारे सुनिक्षिपेत् । जायन्ते सफला वृक्षास्त-द्बीजं ग्राहयेत्पुनः ॥ ४ ॥ त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुखमध्येवधारितम् । महाबलो महातेजाः प्रतीक्ष्यश्च तुरङ्गमः ॥ ५ ॥

रविवार के दिन घोड़े के मुख में अङ्कोल के बीज बोये । उसमें से जब वृक्ष होकर फलने लगे तब उसके बीज एकत्र करे । उसमें से एक बीज त्रिलोह में वेष्ठित करके मुख में धारण करने से मनुष्य बहुत बलवान्, अत्यन्त तेजस्वी, और अश्व के समान शक्तिशाली हो जाता है ।

वृषमुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भुवि निश्चितम् । तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहवेष्टितं कुरु ॥ ६ ॥ महद्बलं महत्तेजो जायते वृषभस्य च ।

अङ्कोल के बीज को बैल के मुख में बोकर भूमि में गाड़ दे। उसमें से वृक्ष उत्पन्न होने पर उसके बीज को त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से मनुष्य बैल के समान अत्यन्त बलवान तथा तेजस्वी होता है।

मृगमुखे च तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ॥ ७ ॥ त्रिलोहवेष्टितं बीजं मृगराजसमो भवेत्।

अङ्कोल के बीज को मृग के मुख में डाले और उसे भूमि में निश्चित रूप से गाड़ दे। उसमें से बीज उत्पन्न होने पर उसे त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक मृगराज के समान हो जाता है।

तद्बीजं सिंहवदने निक्षिप्तं च महीतले ॥ ८ ॥ त्रिलोहवेष्टितं बीजं मुखमध्ये च धारितम्। महाबलो महातेजा जायते सिंहरूपकः ॥ ९ ॥

उस बीज को सिंह के मुख में बोकर भूमि में गाड़ दे। उसके फल से बीज लेकर त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक सिंह के समान महाबली और महातेजस्वी हो जाता है।

शुनो मुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम्। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा तु श्वानकम् ॥ १० ॥

कुत्ते के मुख में अङ्कोल के बीज को रख कर भूमि में गाड़ दे। उससे उत्पन्न बीज को त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक कुत्ते के समान दिखाई पड़ता है।

मयूरमुखमध्यस्थं तद्बीजं भुवि निक्षिपेत्। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनैः ॥ ११ ॥

मोर के मुख में अङ्कोल के बीज को रख कर भूमि में उसे गाड़ दे। उससे उत्पन्न बीज को त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक लोगों को मोर के समान दिखाई पड़ता है।

यानि कानि च बीजानि जङ्गमस्थलमेव च। अङ्कोल बीजं निक्षिप्तं मुखे भूमितले ध्रुवम् ॥ १२ ॥ तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहवेष्टितं कुरु। तद्रूपश्च भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १३ ॥

जो भी जङ्गम प्राणी हो उसके मुख में अङ्कोल के बीज को डाल कर भूमि में गाड़ दे। उसमें से फल उत्पन्न होने पर उसके बीज को त्रिलौह में वेष्टित करके अपने मुख में रखने से साधक उसी जीव के समान दिखाई पड़ेगा जिसके मुख से वह बीज उत्पन्न हुआ है। यह सर्वथा सत्य और शङ्कर द्वारा कथित है।

अङ्कोलस्य[1] तु बीजानि तत्तैलं ग्राहयेत्पुनः। धूपं दत्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १४ ॥ पद्मबीजे लिपेत्तैलं निक्षिपेच्च तडागके। तत्क्षणाज्जायते चित्रं तत्क्षणात्कमलोद्भवः ॥ १५ ॥ तत्तैलं चूतबीजे तु निक्षिपेद्बिन्दुमात्रतः। जायन्ते सफला वृक्षा नान्यथा शङ्करोदितम् ॥१६॥

अङ्कोल के बीजों को एकत्र करके उन्हें धूप देकर उनका तेल निकाले। यह तेल सर्वसिद्धिदायक है। पद्म के बीजों (कमलगट्टों) को इस तेल में भिगा कर उन्हें तालाब में डाल दे। इससे तत्काल अद्भुत दृश्य उपस्थित होता है—अर्थात् उन बीजों से तत्काल वृक्ष निकल कर कमल फूलने लगते हैं। इसी प्रकार आम के बीज पर एक बूंद मात्र अङ्कोल का तेल डाल देने से फल सहित आम का वृक्ष उत्पन्न हो जाता है—शङ्कर द्वारा कहा यह वचन अन्यथा नहीं हो सकता।

यानि कानि च बीजानि अङ्कोलतैलेन लेपयेत्। जायन्ते सफला वृक्षाः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १७ ॥

इसी प्रकार जिस-जिस बीज पर अङ्कोक के तेल का लेप करके बोया जाय उससे फल सहित तत्तद वृक्ष उत्पन्न हो जायगा। यह सिद्ध योग बताया गया।

शवानने बिन्दुमात्रं तत्तैलं निक्षिपेन्नरः। एकयामं सजीवः स्यान्नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १८ ॥

शव के मुख में अङ्कोल के तेल का एक विन्दु मात्र डालने से वह दो घड़ी के लिये जीवित हो जाता है—शङ्कर का यह वचन अन्यथा नहीं हो सकता।

पत्रं तु श्वेतगुञ्जायाः प्रथमं भक्षयेन्नरः अङ्कोलतैललिप्ताङ्गो दृश्यते राक्षसाकृतिः ॥ १९ ॥ पलायन्ते नराः सर्वं पशुपक्षिमृगादयः।

पहले मनुष्य श्वेत गुञ्जा की पत्तियों को खाले। तदनन्तर यदि अङ्कोल के बीजों का तेल अपने शरीर पर लगा ले तो वह राक्षस के समान दिखाई

---

१. अकोल का तेल निकालने की विधि :—अंकोल के बीजों को चूर्ण करके आक के पत्तों के रस की सात भावना दे। फिर उस चूर्ण को धूप में रखने से निश्चितरूप से तेल निकलता है।

इसी प्रकार अंकोल के बीजों के चूर्ण को इन्द्रायण के क्वाथ का फुट देने से भी तेल निकलता है।

निस्तुष अंकोल के बीजों का मुख किञ्चित घिस कर काँसे के पात्र में रख कर उनपर चने के चूरे का लेप कर के उसके मुख पर कुछ कुछ सुहागे का लेप करे। फिर उन्हें धुप में रखने से सरलता से तेल निकल आयेगा।

पड़ेगा और उसे देखकर पशु-पक्षी तथा मनुष्य आदि सभी इधर-उधर भाग जांयगे।

अङ्कोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः ॥ २० ॥ रात्रौ पश्यति भूतानि खेचराणि महीतले।

अङ्कोल के तेल से मनुष्य यदि दीपक जलाये तो वह उसके प्रकाश में रात को पृथिवी पर ही आकाशगामी भूतों को देखेगा।

अङ्कोलतैललिप्तं च शस्त्रं यानि च कानि च ॥२१॥ भवन्ति मूर्च्छिता दृष्ट्वा तत्रैव च महीतले। रणे दारुणशस्त्रौघं दृष्ट्वैव हि पलायते ॥ २२ ॥ नरादिजीवजातं वै नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ २३ ॥

किसी भी शस्त्र को अङ्कोल के तेल से लिप्त करने पर उस शस्त्र को देखते ही सभी प्राणी मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ते हैं। भीषण युद्ध के समय ऐसे शस्त्र समूह को देखते ही मनुष्यादि सभी जीव भाग जाते हैं—शङ्कर का यह कथन अन्यथा नहीं है।

अङ्कोलीतैलसंसिक्ता बचा सप्तदिनावधि। त्रिलोहे वेष्टिता तस्या गुटिकां कारयेत्ततः ॥२४॥ अदृश्यकारिणी ख्याता मुखस्था नात्र संशयः।

अङ्कोल के तेल में वचा को सात दिनों तक भिगाकर त्रिलोह में वेष्टित कर उस गुटिका को मुख में रखने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

तत्तैलैः सर्षपाञ्छ्वेतांस्त्रिलोहेन च वेष्टितान् ॥ २५ ॥ गुटिका मुख-मध्यस्था ख्याताऽदृश्यत्वकारिणी।

अङ्कोल के तेल में सफेद सरसों को भावित करके त्रिलोह में वेष्टित करके उस गुटिका को मुख में रखने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

चूर्णंपद्मकपत्राणां सुरभिपत्रसंयुताम् ॥२६॥ धत्तूरस्वरसे पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्दृढाम्। सा लिप्ताङ्कोलितैलेन मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ २७ ॥

पद्माख के चूर्ण को सुरभिपत्र के साथ मिलाकर धतूरे के रस में पीसकर दृढ गुटिका बना ले। उस गोली को अङ्कोल के तेल में भिगा कर मुख में रखने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

काकोलूकस्य पक्षांश्च निजकेशांस्तथैव च। अन्तर्धूमगतं दग्ध्वा सूक्ष्म-चूर्णं तु कारयेत् ॥ २८ ॥ अङ्कोलतैलाद्गुटिकां कृत्वा शिरसि धारयेत्। अदृश्यो जायते क्षिप्रं देवैरपि न दृश्यते ॥ २९ ॥

कौवे तथा उल्लू के पङ्खों तथा अपने केशों को अन्तर्धूम विधि से दग्ध

करके सूक्ष्म चूर्ण बना ले। अङ्कोल के तेल के साथ इस चूर्ण की गुटिका बना कर शिर पर धारण करने से मनुष्य तत्काल अदृश्य हो जाता है और देवता भी उसे देख नहीं सकते।

तालकं कृष्णमहिषीक्षीरमङ्कोलतैलकम्। तल्लिप्ताङ्गो नरोऽदृश्यो जायते शङ्करोदितम् ॥ ३० ॥

हरताल, काली भैंस का दूध तथा अंकोल का तेल मिलाकर देह में लगा लेने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ऐसा शङ्कर ने कहा है।

अङ्कोलतैलसंसिक्तं मलं पारावतोद्भवम्। ललाटे तिलकं तेन कृत्वाऽदृश्यो भवेन्नरः ॥ ३१ ॥

कबूतर के बीट को अंकोल के तेल में भिगा कर उससे ललाट पर तिलक लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

अथ ब्रह्मवृक्षश्वेतपालाशतन्त्रम्।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ब्रह्मवृक्षस्य कल्पनम्। शृणु वत्स विधिं तस्य ब्रह्मवृक्षस्य यत्फलम् ॥ १ ॥ दारिद्र्यदुःखनिर्यासि नराणां बुद्धिवर्द्धनम्। तस्य पुष्पाणि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ॥ २ ॥ अजाक्षीरेण तद्भाव्यं त्रिवारं च पुनः पुनः। वङ्गस्य षोडशांशेन प्रतितापं तु कारयेत् ॥ ३ ॥ तद्वङ्गं शोध्य नागेन पुनस्तेनैव धार्यते। जायते शोभनं तारं शङ्खकुन्दसमप्रभम् ॥ ४ ॥ तस्य वृक्षस्य पुष्पाणि तद्रसे भाव्य तारकम्। त्रिंशांशं वेधयेद्वङ्गं तेन तारं च नान्यथा ॥ ५ ॥ हिमकुन्देन्दुसदृशमष्टदोषविवर्जितम्। जायते नान्यथा वत्स भक्तियुक्तस्य तच्च तु ॥ ६ ॥ ब्रह्मवृक्षफलं दृष्ट्वा गन्धकं भाव्य यत्नतः। शुक्लपत्रप्रलेपेन पुटेनैकेन काञ्चनम् ॥ ७ ॥ तस्य वृक्षस्य तैलेन भावयेद्रसगन्धकम्। नाम हेम भवत्याशु द्वात्रिंशेन तु वेधयेत् ॥ ८ ॥ सव्यभवनमध्ये तु कर्तव्यं तु यथोचितम्। तत्फलस्य रसेनैव स्वर्णं भवति निश्चितम ॥ ९ ॥ पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम्। ऋत्वन्ते तानि पीतानि वन्ध्या भवति गर्भिणी ॥ १० ॥

अब मैं ब्रह्मवृक्ष (श्वेत पलाश) का कल्प कहता हूं। हे वत्स! उस ब्रह्मवृक्ष का जो फल है उसे सुनो। वह मनुष्यों की दरिद्रता को दूर करने वाला तथा बुद्धि को बढ़ाने वाला है। उसके फूलों को लेकर उनका सूक्ष्म चूर्ण बना ले और फिर उसे बकरी के दूध से तीन बार भावना दे। फिर सोलह भाग राँगा गरम करके उसे सीसा से शुद्ध करे। पुनः उसमें उक्त चूर्ण को मिला देने से वह राँगा कुन्द पुष्प और शङ्ख के समान उत्तम चाँदी बन जाता

है। पलाश के फूलों को उसके रस में भावित करके तीस भाग राँगे का वेधन करे। इससे वह चाँदी बन जाता है। यह अन्यथा नहीं होता। इस प्रकार बनी चाँदी हिम तथा कुन्द के फूल के समान सफेद तथा आठ दोषों से रहित होती है। हे वत्स। यह सिद्धि भक्ति से युक्त मनुष्य को ही मिलती है अन्य को नहीं। पलाश के वृक्ष के फल को देख कर उससे यत्नपूर्वक गन्धक को भावित करके उसे चाँदी के पत्र पर लेप करने से एक पुट से ही वह चाँदी सोना बन जाती है। पलाश वृक्ष के तेल से पारा तथा गन्धक को भावित करके बत्तीस बार वेधन करने से सोना बन जाता है। वाम भाग के घर में स्वर्ण निर्माण का यह यथोचित कार्य करना चाहिये। श्वेत पलाश के रस से ही निश्चितरूप से स्वर्ण बनता है। पलाश का एक पत्ता गर्भिणी के दूध के साथ पीसकर ऋतु के अन्त में पीने से बन्ध्या भी गर्भिणी होती है।

अथ रक्तगुञ्जातन्त्रप्रारम्भः।

प्राकृतग्रन्थे। शिव उवाच। गुञ्जाकल्पं प्रवक्ष्यामि गिरिजे शृणु यत्नतः। कल्पानां सारभूतोयं नाना कौतुकरूपत्रान् ॥ १ ॥ भूतप्रेत-पिशाचादिडाकिनीशाकिनीगणः। यक्षभैरववेताला गुञ्जाकल्पे निगद्यते ॥ २ ॥ बहु चरितं वदामि त्वां कल्पानां समुदायिकम्। क्रियते साधकैर्यद्वत् तत्तत्सिद्धं भवेद्ध्रुवम् ॥ ३ ॥ शिवानन्दकरी विद्या रक्तगुञ्जातिगुप्ततः। गुरुणा भेदं संग्राह्य साधयेत्कल्पमुत्तमम् ॥ ४ ॥ उपदेशं प्रवक्ष्यामि यथा साधनकर्मणि। क्वचिन्न चोनं भवति तदा सिद्ध्यति नान्यथा ॥ ५ ॥ रवौ पुष्ये कजे शुक्रे अनुकूले ग्रहे सति। कृष्णाष्टम्यां हस्तऋक्षे चतुर्दश्यां तु स्वातिभे ॥ ६ ॥ पूर्णा शतभिषायुक्ता निशीथे मूलमुद्धरेत्। गृहीत्वा गृहमागत्य निस्सन्देहमनाः सुधीः ॥७॥ दुग्धेन स्नापयेत्पश्चाद् धूपदीपादिकं ततः। सिद्धं भवति तन्मूलं काम्य कर्मणि योजयेत् ॥ ८ ॥ नारीनराणां सर्पादिविषभञ्जनकारणम्। पीत्वा सुखतरं यान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ९ ॥ तेनैव घर्षितं भाले तिलकं यः समाचरेत्। सभायां मानमाप्नोति बहुश्लाघा भवेत्तदा ॥१०॥ मन्यन्ते तद्वचः सत्यं सभायां संस्थिता नराः। गुञ्जाकल्पप्रभावेन नरं नारीं च नर्तयेत् ॥ ११ ॥ सह कज्जलेन वै पिष्ट्वा नरेण क्रियतेञ्जनम्। जगन्मोहनमायाति दृष्ट्या साधकमुत्तम् ॥ १२ ॥ गालिं दत्वाऽनु तस्यैव न त्यजन्ति नराः क्वचित्। यस्मै कस्मै न दातव्यं सिद्धयोग उदाहृतः ॥ १३ ॥

प्राकृतग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन है। शिवजी बोले : हे गिरिजे ! मैं

गुञ्जा कल्प कहूंगा तुम उसें ध्यानपूर्वक सुनो। यह सभी कल्पों का सारभूत तथा अनेक कौतुकों से युक्त है। भूत, प्रेत, पिशाच आदि, डाकिनी, शाकिनी, यक्ष, भैरव, तथा वेताल को गुञ्जा कल्प में कहा गया है। मैं तुम्हें कल्पों के अनेक अद्भुत कार्यों को कहता हूं जिसे यदि साधक करे तो निश्चित रूप सें सिद्धि होती है। रक्त गुञ्जा विद्या कल्याण एवं आनन्दकारी है। यह अत्यन्त गुप्त है। अतः गुरु से इसका ज्ञान प्राप्त करके उत्ताम कृत्य सिद्ध करना चाहिये। साधनकर्म में जो कर्त्तव्य हैं मैं उन्हें कहूंगा। जब कहीं भी कोई न्यूनता नहीं होती तब सिद्धि प्राप्त होती है। किञ्चित् मात्र भी त्रुटि होने पर सिद्धि नहीं मिलती। पुष्य नक्षत्र में रविवार को अथवा रोहिणी नक्षत्र में शुक्रवार को ग्रहों के अनुकूल होने पर, अथवा हस्त नक्षत्र में कृष्ण पक्ष की अष्टमी को अथवा स्वाति नक्षत्र की चतुर्दशी को या शतभिषा नक्षत्र की पूर्णिमा को गुञ्जा की जड़ लेनी चाहिये। सुधी साधक सन्देहरहित होकर उस मूल को लेकर पहले उसे दूध से स्नान कराये। तदनन्तर उसें धूपादि दे। इससे वह मूल सिद्ध हो जाता है और उसे अन्य काम्य प्रयोगों में लगाया जा सकता है। यह स्त्री पुरुषों के लिये सर्पादि के विषों का नाशक होता है। इसें पीकर वे सुखी होते हैं। इसमें विचार नहीं करना चाहिये। उसी से अपने भाल पर तिलक लगाने से व्यक्ति सभा में प्रचुर सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। सभा में उपस्थित व्यक्ति ऐसे व्यक्ति की वाणी को सत्य मानते हैं। गुञ्जा कल्प के प्रभाव से साधक नर नारियों को अपने इशारे पर नचाता है। काजल के साथ इसे पीस कर अंजन लगाने से मनुष्य दर्शन मात्र से संसार को मोहित करता है। यहां तक कि अपशब्द कहने पर भी लोग उसके अनुरक्त बने रहते हैं। इसे ऐसे-तैसे व्यक्ति को नहीं बताना चाहिये। इसे सिद्ध योग कहा गया है।

बिल्वपत्ररसे घृष्ट्वा नयने तेन चाञ्जयेत्। दृष्टिं प्रसारयेद्यत्र तत्र भूतं च पश्यति ॥ १४ ॥ बिल्वार्कैर्यस्तु तिलकं कुर्यात्साधकसत्तमः। भूतप्रेत-पिशाचादि ध्रुवं नश्यति दर्शनात् ॥ १५ ॥ शिवलिङ्गीरसे पिष्ट्वा लेपं कुर्यात्तु यो नरः। भूतप्रेतपिशाचादि दृष्ट्वा रूपं पलायते ॥१६॥ अजामूत्रेण पिष्ट्वा वै करलेपं तु कारयेत्। दूरवार्तां वदेत्तस्य यक्षिणी सहचारिणी ॥ १७ ॥ मधुना योंजनं कुर्याद्वेतालं पश्यति ध्रुवम्। यंयं प्रार्थयते कामं वेतालोऽस्मै प्रयच्छति ॥ १८ ॥ दुग्धसङ्गेन घृष्ट्वा च लेपनं कुरुते बुधः। भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षाश्च योगिनीगणाः ॥ १९ ॥ तत्सङ्गं नैव त्यजन्ति न तत्सांसर्गिको भवेत्। साधकाज्ञां पालयन्ति यावज्जीवं न संशयः ॥२०॥

बेल के पत्ते के रस में इसे घिसकर आंखों में अञ्जन लगाकर मनुष्य जिधर दृष्टि घुमाता है उधर भूत देखता है। बेल और मदार के रस में मिलाकर तिलक करने पर साधक को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच आदि तत्काल भाग जाते हैं। शिवलिङ्गी के रस में इसे पीस कर जो मनुष्य लेप करता है उसके रूप को देख कर भूत, प्रेत तथा पिशाच आदि भाग जाते हैं। बकरी के रस में इसे पीस कर हाथ में लेप करने पर साधक के पास यक्षिणी रह कर दूर-दूर की बातें बताती है। मधु के साथ इसका अञ्जन करने से साधक निश्चित रूप से वेताल को देखता है और साधक जो वस्तु चाहता है उसे वेताल लाकर साधक को देता है। दूध के साथ इसे घिस कर जो बुद्धिमान साधक लेप करता है उसका भूत, प्रेत, पिशाच, यक्ष, और योगिनियाँ आदि कभी साथ नहीं छोड़ते तथा सब जीवन पर्यन्त साधक की आज्ञा का पालन करते हैं—इसमें संशय नहीं है।

शर्करासहितां पिष्ट्वा लिप्त्वा पादतले नरः। नेत्रोन्मीलनमात्रेण सहस्रं क्रोशगो भवेत् ॥ २१ ॥ स्थलकमलेन यः पिष्ट्वा नाभिं लेपयते नरः। चतुष्कलामृतो यश्च जीवो जागृतितामियात् ॥ २२ ॥ अपामार्गस्य तैलेन पिष्ट्वा नेत्राञ्जनं चरेत्। आपातालधनं तस्य दृष्टिगं दिव्यचक्षुषः ॥ २३ ॥ कस्तूर्योषसि नेत्रे यो ह्यञ्जनं कुरुते नरः। नृत्यं पश्यति विश्वस्य कालरूपी भवेत्तदा ॥ २४ ॥ गङ्गाजलेन घृष्ट्वा च ह्यञ्जनं कुरुते नरः। पुष्पवर्षं दर्शयति आश्चर्यं जायते नृणाम्। निजरक्तेन सहसा घृष्ट्वा नेत्रे तु चाञ्जयेत् ॥ २५ ॥ तेन पश्यति त्रैलोक्यं निजनेत्रेण मानवः। ऋतुमत्याः शोणितेन अञ्जनं कुरुते नरः। पलायन्ते नराः सर्वे दृष्ट्वा रूपं भयानकम् ॥ २६ ॥ तिलतैलेन यः पिष्ट्वा मर्दयेच्च शरीरकम्। स दर्शयति सर्वेषां वीर्यं धैर्यं नृणां वरः ॥ २७ ॥

शकर के साथ इसे पीस कर जो साधक अपने पैरों में लगा लेता है वह हजार कोस तक चला जाता है। स्थल कमल के साथ इसे पीस कर नाभि पर जो मनुष्य लेप करता है वह चारों कलामृत से युक्त होकर जागृति को प्राप्त करता है। इसे अपामार्ग के तेल से पीस कर अञ्जन करने से मनुष्य दिव्य दृष्टिवाला हो जाता है और पाताल में गड़े धन को देख लेता है। प्रातः काल कस्तूरी के साथ जो इसका अञ्जन करता है वह सारे संसार के नृत्य को देखता है और कालरूप हो जाता है। जो इसे गङ्गाजल से घिस कर अञ्जन लगाता है वह फूलों की वर्षा दिखाता है जिससे लोगों को आश्चर्य होता है। अपने रक्त से घिस कर इसका नेत्रों में अञ्जन लगाने से साधक

अपने नेत्रों से तीनों लोकों देखता है। जो मनुष्य ऋतुमती स्त्रीके रक्त से इसे घिस कर अञ्जन लगाता है वह भयानक रूपवाला हो जाता है और उसे देखकर सभी लोग भागने लगते हैं। जो तिल के तेल के साथ इसे पीस कर शरीर पर इसकी मालिश करता है वह नरश्रेष्ठ सभी के सामने अपनी शक्ति तथा धैर्य प्रदर्शित करता है।

सिंहिनीदुग्धयुक्तं वै शरीरे लेपयेन्नरः। शस्त्रबाधा न जायन्ते साहसेन जयेद्रणम् ॥ २८ ॥ गोरोचनलवङ्गेन यस्य नाम लिखेन्नरः। वैरिणः स्तम्भनं भूयात्तत्र नायाति निश्चितम् ॥ २९ ॥ पिष्ट्वा कार्पासवर्तिं तु कृत्वा तैलेन दीपकम्। आश्चर्यं जायते तत्र मूर्च्छिता वै सभा भवेत् ॥ ३० ॥ मानं पूजां नुतिं स्तुत्या सर्वं कुर्वन्ति ते नराः। दीपशान्तिः प्रकर्तव्या सर्वाश्चर्यं विनश्यति ॥३१॥ कट्यां बध्वा ताम्रयन्त्रे नारी पुत्रमवाप्नुयात्। वन्ध्यायोगाः पलायन्ते गुञ्जामूलप्रभावतः ॥ ३२ ॥ घृतेन सह पिष्ट्वा वै लिङ्गलेपं तु कारयेत्। न मुञ्चति ततो वीर्यमेकरात्रौ न संशयः ॥ ३३ ॥

सिंहिनी के दूध के साथ मिलाकर जो शरीर पर इसका लेप करता है वह अपने साहस से युद्ध को जीत लेता है तथा उसे शस्त्रों की बाधा नहीं सताती। गोरोचन तथा लौंग के साथ इसे मिलाकर मनुष्य जिस शत्रु का नाम लिखे वह जहाँ होता है वहीं उसका स्तम्भन हो जाता है और वह साधक के पास नहीं आता। इसे पीस कर कपास की बत्ती बनाकर तेल का दीपक जला दे तो सारी सभा मूर्च्छित हो जाती है। सभी व्यक्ति स्तुतिपूर्वक मान, पूजा तथा प्रणाम करते हैं। दीपक को बुझा देने पर सभी आश्चर्य समाप्त हो जाते हैं। इसे यदि ताम्रपत्र की ताबीज में मढ़वाकर स्त्री अपनी कमर में बाँध ले तो वह पुत्र प्राप्त करती है। गुञ्जा की जड़ के प्रभाव से सभी बन्ध्या योग भाग जाते हैं। घी से पीसकर यदि इसका लिङ्ग पर लेप कर लिया जाय तो साधक एक रात पर्यन्त वीर्यत्याग नहीं करता—इसमें संशय नहीं है।

मुखस्य लालया पिष्ट्वा ह्यञ्जनं क्रियते नरैः। बन्धमोक्षो भवेत्तेषां विनायत्नेन गद्यते ॥ ३४ ॥ अलस्या तैलयुक्तेन मधुकूटेन लेपयेत्। स्वर्णवर्णा तनुस्तस्य कुष्ठरोगो विनश्यति ॥ ३५ ॥ निम्बगर्भेण तां पिष्ट्वा भक्षयेद्यः प्रयत्नतः। तस्य कुष्ठं विनश्येत्तु नात्र कार्या विचारणा ॥ ३६ ॥ कुक्कुटस्य च विष्ठायामञ्जनं क्रियते नरैः। सप्तरात्रेणान्धदृष्टिस्तस्मात्तुर्यंगुणी भवेत् ॥ ३७ ॥ गन्धकेन युतं पिष्ट्वा लेपयेन्नखविंशतिम्। कुमार्यपि च तं दृष्ट्वा सद्यः प्राप्नोति वश्यताम् ॥ ३८ ॥ स्वमूत्रेणाञ्जनं कृत्वा स्वरो मधुरतामियात्। गानविद्याप्रवीणश्च भवत्येव न संशयः ॥ ३९ ॥ अनेन

विधिना वामे नरो मानवतां वरः। गुञ्जाकल्पप्रभावेन सर्वे सिद्धयन्ति इच्छयाः ॥४०॥ गुञ्जाकल्पमिदं गोप्यं तवाग्रे कथितं मया। त्वया कुत्रापि नो वाच्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ४१ ॥ इति रक्तगुञ्जातन्त्रं समाप्तम्।

मुख के लार के साथ इसे पीसकर यदि मनुष्य आँख में अञ्जन लगाये तो वह बिना यत्न के ही बन्धन से मुक्त हो जाता है। अलसी के तेल तथा मधुकूट के साथ इसका लेप करने से साधक का शरीर स्वर्णवर्ण हो जाता है और कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है। नीम के बीजों के साथ इसे पीसकर जो प्रयत्न से इसे खाता है उसका कुष्ठ नष्ट हो जाता है—इसमें विचार नहीं करना चाहिये। मुर्गे की विष्ठा के साथ मिलाकर इसका अञ्जन करने से मनुष्य सात दिनों में—यदि वह अन्धा भी हो तो—चौगुना देखने लगता है। गन्धक के साथ पीसकर अपने बीसों नखों पर लगा लेने से कुमार्गगामी भी साधक को देखकर शीघ्र ही वशीभूत हो जाता है। अपने मूत्र के साथ मिलाकर इसका अञ्जन करने से साधक का स्वर मधुर हो जाता है और वह गानविद्या में प्रवीण हो जाता है—इसमें संशय नहीं है। हे वामे ! इस विधि से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ हो जाता है। रक्तगुञ्जा कल्प के प्रभाव से सभी मनोकामनाये पूर्ण हो जाती हैं। जो यह गुञ्जाकल्प मैंने तुम्हारे सामने कहा है वह परम गोपनीय है, अतः तुम इसे किसी से न बताना। यह देवताओं के लिये भी अत्यन्त दुर्लभ है। रक्तगुञ्जा तन्त्र समाप्त।

अथ श्वेतगुञ्जातन्त्रप्रारम्भः।

मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्वेतवर्णे सितपर्वतवासिनि अप्रतिहते मम कार्यं कुरुकुरु ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र द्वारा कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी के दिन श्वेत गुञ्जा के फल मिट्टी सहित लाकर उसी दिन स्वच्छ स्थान में उपरोक्त मन्त्र द्वारा भूमि में बो दे। तदनन्तर :

ॐ श्वेतवर्णे सितवर्णे श्वेतपर्वतवासिनि सर्वकार्याणि कुरुकुरु अप्रतिहते नमोनमः।

इस मन्त्र द्वारा नित्य ही जल से उसे सींचा करे। जब वृक्ष तैयार हो जाय तब उसके नीचे बैठकर इस प्रकार मन्त्र का जप करे :

ॐ श्वेतवर्णे हृदयाय नमः १। ॐ पद्ममुखे शिरसे स्वाहा २। ॐ सर्वज्ञानमये शिखायै वषट् ३। ॐ सर्वशक्तिमति कवचाय हुं ४। सितपर्वत-

वासिनि नेत्रत्रयाय वौषट् ५। भगवति ह्रीं मम कार्यं कुरुकुरु ठः ठः नमः स्वाहा इत्यस्त्राय फट् ६।

इस प्रकार न्यास करके उस वृक्ष की पञ्चोपचार से पूजा करे और :

ॐ श्वेतवर्णे पद्ममुखे सर्वज्ञानमये सर्वशक्तिमति सितपर्वतवासिनि भगवति ह्रीं मम कार्यं कुरुकुरु ठः ठः नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का १० हजार जप करके पुष्य नक्षत्र के दिन मन्त्र द्वारा जड़सहित उस वृक्ष को उखाड़कर छाया में सुखाकर रख ले। फिर सफेद चन्दन के साथ घिसकर :

ॐ नमः श्वेतगात्रे सर्वलोकवशङ्करि दुष्टान् वशं कुरुकुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मस्तक पर तिलक लगाने से उसे देखते ही साध्य वशीभूत हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है; अथवा सफेद सरसों और प्रियंगु के साथ पीसकर उपरोक्त मन्त्र से ही अभिमन्त्रित करके जिसके मस्तक पर डाल दिया जाय वह साधक के साथ-साथ ही चला आवेगा और जीवन पर्यन्त दास के समान रहेगा—इसमें सन्देह नहीं है। श्वेत गुञ्जा का यह विधान एक महात्मा ने हमको आबू पर्वत पर बताया था। श्वेत-गुञ्जा तन्त्र समाप्त।

अथ तिलतन्त्रप्रारम्भः।

पारावतशीर्षमादाय कृष्णमृत्तिकया पूरयित्वा तिलबीजानि वापयेत् क्षीरोदकेन सिञ्चेद्यदा पुष्पिता भवति तदा मुखे संस्थाप्य अदृश्यो भवति ॥ १ ॥ तेषां फलानां चूर्णं कृत्वा तेन चूर्णेन यं स्पृशति स किङ्करो भवति सर्वस्वं ददाति ॥ २ ॥ तानि तिलानि संगृह्य नेत्राञ्जनेन सह पिष्ट्वा कपिलादुग्धेन गुटिकां कारयेत् सप्तरात्रं पाचयेत् तां गुटिकां मुखे निक्षिप्य अदृश्यो भवति देवैरपि न दृश्यते मनुष्याणां का कथा उद्गीर्णे पुरुषो दृश्यो भवति जीवेद्वर्षशतं स्त्रियः सर्वे जनाश्च वश्या भवन्ति ॥ ३ ॥ इति तिलतन्त्रं समाप्तम्।

पारावत (कबूतर) का शिर लाकर उसे काली मिट्टी से भरकर उसमें तिल के बीज बो दे और दूध तथा पानी से उसे सींचता रहे। जब उसमें फूल आ जाय तब उस फूल को मुख में रखकर साधक अदृश्य हो जाता है। उस पौधे में बीज लगने पर उन बीजों का चूर्ण बनाकर उस चूर्ण से जिसे स्पर्श करे वह साधक का दास हो जायगा और अपना सब कुछ दे देगा। उन तिलों को एकत्र कर नेत्राञ्जन के साथ पीसकर कपिला गाय

के दूध के साथ गुटिका बनाकर सात दिन तक उसको पकाये, अर्थात सुखाये। उस गुटिका को मुख में रखने से साधक अदृश्य हो जाता है तथा देवता भी उसे नहीं देख सकते, फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या। गुटिका को मुख से निकाल लेने पर वह पुनः लोगों को दिखाई पड़ने लगता है। वह इसके प्रभाव से सौ वर्ष तक जीवित रहता है और सभी लोग उसके वश में रहते हैं। तिल तन्त्र समाप्त।

अथ सर्ववृक्षाणां मूलतन्त्रम्।

सभी वृक्षों की जड़ो का तन्त्र :

तत्रादौ श्वेतार्कमूलतन्त्रम्। श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचन्दनसंयुतम्। अनेन तिलकं भाले कृत्वा मोहं नयेज्जगत् ॥ १ ॥ पुष्यार्कं च गृहीत्वा तु श्वेतार्कस्य हि मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते सिंह बाधाभयं नहि ॥ २ ॥

श्वेतार्क-मूल तन्त्र : सफेद मदार की जड़ को लाकर श्वेत चन्दन के साथ मिलाकर उसका तिलक लगाने से मनुष्य संसार को मोहित कर लेता है। पुष्य नक्षत्र में मदार की जड़ को खोदकर लाये। उस जड़ को दाहिने हाथ में बांधने से साधक को सिंह की बाधा नहीं होती।

अथ पुनर्नवामूलतन्त्रम्। पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभिमन्त्रितम्। बद्ध्वा सर्वत्र पूज्यः स्यान्मन्त्रस्तत्त्वैः प्रजायते ॥ ३ ॥

पुनर्नवा-मूलतन्त्र : पुष्य नक्षत्र में गदहपुर्ना की जड़ को सात बार अभिमन्त्रित करके हाथ में बांधकर साधक सर्वत्र पूजनीय होता है।

अथ अपामार्गमूलतन्त्रम्। गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम्। लेपमात्राच्छरीराणां सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ ४ ॥ अपामार्गस्य मूलं तु कपिलादुग्धपेषितम्। ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्याजगत्त्रयम् ॥ ५ ॥ गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे कर्णे न वृश्चिक-भयं भवेत् ॥ ६ ॥ रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारेऽभिमन्त्रितम्। भौमे प्रातः समुद्धृत्य कट्यां बद्धं तु वीर्यधृक् ॥ ७ ॥

अपामार्ग-मूलतन्त्र : पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ लाकर शरीर पर लेपमात्र करने से प्राणियों के लिये सभी शस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं। अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दुध के साथ पीसकर उससे ललाट पर तिलक लगाकर मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है। शुभ नक्षत्र में अपामार्ग की जड़ को लाकर दाहिने कान पर धारण करना चाहिये। इससे बिच्छू का भय नहीं रहता। लाल अपामार्ग की जड़ को सोमवार को अभि-

मन्त्रित करके मङ्गलवार को प्रातः उसे उखाड़कर कमर में बांधने से वह वीर्य का स्तम्भन करनेवाला होता है।

अथ गुञ्जामूलतन्त्रम्। पुष्यार्के श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत्। हस्ते काण्डभयं नास्ति संग्रामे तु कदाचन ॥ ८॥ गृहीत्वा श्वेतगुञ्जायाश्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसा कृत्वा तिलकं मोहयेज्जगत् ॥ ९॥ गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जासुमूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत् ॥ १०॥

गुञ्जा-मूलतन्त्र : पुष्य नक्षत्र में सफेद गुञ्जा की जड़ को उखाड़कर हाथ में धारण करने से संग्राम में कटने का भय नहीं रहता। सफेद गुञ्जा की जड़ को छाया में सुखाकर कपिला गाय के दूध से उसका तिलक लगाने से मनुष्य संसार को मोहित कर लेता है। पुष्प नक्षत्र में सफेद गुञ्जा की जड़ लेकर दाहिने हाथ में बांधने से जूए में जीत होती है।

अथ श्वेतकरवीरमूलतन्त्रम्। गृहीत्वा रविवारे तु श्वेत करवीरमूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते अग्निबाधाभयं नहि ॥ ११॥

श्वेत करवीर-मूलतन्त्र : रविवार को सफेद कनेर की जड़ उखाड़कर दाहिने हाथ में बांधने से अग्नि की बाधा का भय नहीं होता।

अथ धत्तूरमूलतन्त्रम्। गृहीत्वा शुभनक्षत्रे धत्तूरमूलकं तथा। धारयेद्दक्षिणे बाहौ व्याघ्रबाधाभयं नहि ॥ १२॥ धत्तूरमूलं कटिबद्धं गर्भस्तम्भनकारकम्। धत्तूरमूलचूर्णं तु योनिस्थं गर्भस्तम्भनम् ॥ १३॥

धतूर-मूलतन्त्र : शुभ नक्षत्र में धतूरे की जड़ को लाकर दाहिने हाथ में धारण करने से व्याघ्र की बाधा नहीं होती। धतूरे की जड़ को कमर में बांधने से, अथवा उसके चूर्ण को योनि में भी रखने से गर्भ का स्तम्भन होता है।

अथ अमृतामूलतन्त्रम्। नरो हि पुष्यनक्षत्रे अमृतामूलकं हरेत्। तन्मालां धारयेत्कण्ठे सर्पबाधाभयं नहि ॥ १४॥

अमृता-मूलतन्त्र : पुष्य नक्षत्र में अमृता की जड़ लाकर उसकी माला बनाकर कण्ठ में धारण करने से सर्पबाधा नहीं होती।

अथ विष्णुक्रान्तामूलतन्त्रम्। पुष्यार्के तु समुद्धृत्य विष्णुक्रान्तासुमूलकम्। वक्त्रे शिरसि धार्यं वै शस्त्रसंहारणं नृणाम् ॥१५॥ वन्ध्याम्बुव्याघ्रभूपालचोरशत्रुभयं जयेत् ॥ १६॥ विष्णुक्रान्तासुमूलं तु पिष्ट्वा महिषदुग्धके। महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भोजयेत्। एवं सप्तदिनं कुर्यात्पुनर्गर्भं समाप्नुयात्।

विष्णुक्रान्ता-मूलतन्त्र : पुष्य नक्षत्र में रविवार के दिन विष्णुक्रान्ता की जड़ को उखाड़कर मुख में या शिर पर धारण करना मनुष्यों के लिये शस्त्रों का संहारकारक और साथ ही बन्ध्यत्व, जल, व्याघ्र, राजा, चोर तथा शत्रु के भय को भी जीतनेवाला होता है। विष्णुक्रान्ता की जड़ को भैंस के दूध में पीसकर भैंस के ही मक्खन के साथ स्त्री को ऋतुकाल में सात दिन खिलाने से वह पुनः गर्भ को प्राप्त करती है।

अथ सुदर्शनमूलतन्त्रम्। करे सुदर्शनामूलं वैरिस्तम्भकरं परम्। करे सुदर्शनामूलं बध्वा राजप्रियो भवेत्॥ १७॥

सुदर्शन-मूलतन्त्र : सुदर्शन की जड़ को हाथ में बाँधना परम शत्रु स्तम्भनकारी है। हाथ में सुदर्शन की जड़ को बाँधकर मनुष्य राजा का प्रिय हो जाता है।

बृहतीमूलतन्त्रम्। मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत्। निद्रा-स्तम्भनमेतद्धि मूलं देवेन भाषितम्।

बृहती-मूलतन्त्र : बृहती की जड़ को शहद में पीसकर नस्य लेना चाहिये। यह निद्रास्तम्भक है—ऐसा देव ने कहा है।

सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कट्यां बध्वा नृपप्रियः॥ १८॥

सिंहीमूल को पुष्य नक्षत्र में लाकर कमर में बाँधने से मनुष्य राजा का प्रिय होता है।

अथ सिद्धार्थमूलतन्त्रम्। सिद्धार्थमूलं बध्वा के कान्तेन रमते तु या। न गर्भं धारयेत्सा स्त्री मुक्ते तु लभते पुनः॥ १९॥

सिद्धार्थ-मूलतन्त्र : सिद्धार्थ (सफेद सरसों) की जड़ को शिर में बाँधकर जो नारी पति के साथ रमण करती है वह गर्भधारण नहीं करती, किन्तु उसे खोल देने पर पुनः गर्भ धारण करती है।

अथ वटमूलतन्त्रम्। गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत्। विभीत्या संयुतं भाले कृत्वा लोकान्वशं नयेत्॥ २०॥

वट-मूलतन्त्र : बरगद की जड़ को जल से घिसे। फिर उसे बहेड़े के साथ मिलाकर ललाट पर तिलक लगाने से मनुष्य सबको वश में कर लेता है।

अथौदुम्बरमूलतन्त्रम्। गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलके कृते। प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः॥ २१॥ ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशङ्करम्॥ २२॥

उदुम्बर-मूलतन्त्र : उदुम्बर (गूलर) की जड़ को घिसकर ललाट पर

तिलक लगाने से मनुष्य दर्शन मात्र से सबका प्रिय होता है—इसमें सन्देह नहीं है। इसे यदि पान में खिला दिया जाय तो वह सभी लोगों का वशीकरण करता है।

अथ सहदेवीमूलतन्त्रम्। गृहीत्वा सहदेव्याश्च छायाशुष्कं तु कारयेत्। ताम्बूले दन्ततश्चूर्णं सर्वलोकवशङ्करम् ॥ २३ ॥

सहदेवी-मूलतन्त्र : सहदेवी की जड़ लाकर उसे छाया में सुखा ले। उसे पान में डालकर देने पर वह चूर्ण सर्वलोकवशंकारी होता है।

अथ कौमारीमूलतन्त्रम्। कौमारीकन्दमादाय विजयाबीजसंयुतम्। तिलकं कुरुते भालेऽनेन लोकवशङ्करः ॥ २४ ॥

कौमारी-मूलतन्त्र : कुमारी (घीकुआर) की जड़ लाकर उसमें विजया (भाँग) के बीज मिलाकर पीसे। उससे भाल पर तिलक करने से लोक वशीकरण होता है

अथ कदलीमूलतन्त्रम्। सिन्दूरं कदलीकन्दं पेषयेद्भौमवासरे। अनेन तिलकं कृत्वा सत्यं नारी वशा भवेत् ॥ २५ ॥

कदली-मूलतन्त्र : केले की जड़ तथा सिन्दूर को मङ्गल के दिन पीसकर तिलक लगाने से नारी वश में होती है—यह सत्य है।

अथ ताम्बूलवल्लीजातिमूलतन्त्रम्। कृतस्तु मूलात्ताम्बूल्यास्तिलको लोकमोहनः। जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शस्त्रस्तम्भकरं परम् ॥ २६ ॥

ताम्बूलवल्लीजाति-मूलतन्त्र : ताम्बूल की जड़ से किया हुआ तिलक संसार को मोहनेवाला होता है। जाती की जड़ को मुख में दबाना शस्त्रस्तम्भनकारक है।

अथाम्रमूलतन्त्रम्। अनुराधायुक्तेऽर्किवारे आम्रवृक्षमूलं गृहीत्वा स्वनिकटे स्थापयेत् गत वस्तुलाभः ॥ २७ ॥ विशाखायुक्तेऽर्किवारे आम्रवृक्षमूलं गृहीत्वा धान्यराशौ स्थापयेत् धान्यवृद्धिः ॥ २८ ॥

आम्र-मूलतन्त्र : अनुराधा नक्षत्रयुक्त शनिवार को आम के पेड़ की जड़ को अपने पास रक्खे तो खोई वस्तु मिल जाती है। विशाखा नक्षत्रयुक्त शनिवार को आम की जड़ अन्न की राशि में रखने से अन्न की राशि में वृद्धि होती है।

अथ पालाशमूलतन्त्रम्। हस्तार्किवारे पलाशमूलं गृहीत्वा निकटे स्थापयेत् अदृश्यो भवति ॥ २९ ॥

पलाश मूलतन्त्र : हस्तनक्षत्रयुक्त शनिवार को पलाश की जड़ को लेकर अपने पास रखने से साधक अदृश्य हो जाता है।

अथैरण्डमूलतन्त्रम् । धनिष्ठार्किवारे एरण्डमूलं गृहीत्वा हस्ते बध्नी-याच्चिन्तितकार्यसिद्धिः ॥ ३० ॥

एरण्ड-मूलतन्त्र : धनिष्ठा नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन रेंड़ की जड़ को लेकर हाथ में बांधने से सोचा हुआ कार्य सिद्ध होता है।

अथ भृङ्गराजमूलतन्त्रम् । अश्विन्यार्किवारे भृङ्गराजमूलं गृहीत्वा हस्ते बध्नीयात्सर्वंजना वश्या भवेयुः ।

भृङ्गराजमूलतन्त्र : अश्विनी नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन भृङ्गराज की जड़ को हाथ में बांधने से सभी मनुष्य वश में होते हैं।

अथ बन्धकचमत्कारतन्त्रम् ।

तत्रादौ बन्धकलक्षणम् । बन्धकंनाम वृक्षोपरि अन्यवृक्षशाखा उत्प-द्यते तस्य बन्धकमिति संज्ञा ।

बन्धक का लक्षण : वृक्षों पर जो अन्य वृक्ष की शाखा उत्पन्न हो जाती है उसे बन्धक या बन्दा कहते हैं।

अथ पिप्पलबन्धकतन्त्रम् । अश्विन्यार्किवारे पिप्पलबन्धकं गृहीत्वा गोमूत्रेण संघृष्य वन्ध्या पानं करोति तस्याःपुत्रो भवेत् भरण्यार्किवारे पिप्पल बन्धकं गृहीत्वा धान्यराशौ स्थापितं चेद्धान्यवृद्धिर्भवति कर्णे बन्धितं चेत्पीडानाशः हस्तेबन्धितं चेन्नेत्ररोगो नश्यति भूतबाधाःनश्यन्ति रेवत्यार्किवारे पिप्पलबन्धकं गृहीत्वा स्त्रियः हस्ते बध्नीयात्पुत्रो भवति ॥ १ ॥

पिप्पलबन्धक तन्त्र : अश्विनी नक्षत्रयुक्त शनिवार को पीपल पर उगे बन्धक को गोमूत्र के साथ पीसकर बन्ध्या स्त्री को पिलाने से उसे पुत्र उत्पन्न होता है। भरणी नक्षत्रयुक्त शनिवार को पीपल का बन्धक लेकर अन्न की राशि में रखने से अन्न की वृद्धि होती है। उस बन्धक को कान में बांधने से कान की पीड़ा दूर होती है तथा हाथ में बांधने से आँख के रोग नष्ट होते हैं और भूत बाधायें भी दूर हो जाती हैं। रेवती नक्षत्रयुक्त शनिवार को पीपल का बन्धक लेकर स्त्री के हाथ में बांधने से उसे पुत्र उत्पन्न होता है।

अथ वटबन्धकतन्त्रम् । अश्विन्यार्किवारे वटबन्धकं गृहीत्वा मस्तके स्थापितं चेददृश्यो भवति मघार्किवारे वटबन्धकमानीय गृहे स्थापितं चेदष्टमा सिद्धिर्भवति ॥ २ ॥

वटबन्धक तन्त्र : अश्विनी नक्षत्रयुक्त शनिवार को बरगद का बन्धक लेकर शिर पर रखने से मनुष्य अदृश्य होता है। मघा नक्षत्रयुक्त शनिवार

को बरगद का बन्धक लाकर घर में रखने से आठवीं सिद्धि प्राप्त होती है।

अथ निम्बबन्धकतन्त्रम्। श्रवणार्किवारे निम्बबन्धकं गृहीत्वा स्वनिकटे स्थापयेत् तस्योपरि कस्यापि न चलति॥ ३॥

निम्बबन्धक तन्त्र : श्रवण नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन नीम के वृक्ष का बन्दा लाकर अपने पास रखने से किसी का वश उस व्यक्ति पर नहीं चलता।

अथ आम्रबन्धकतन्त्रम्। रोहिण्यार्किवारे आम्रबन्धकं गृहीत्वा हस्ते बध्वा सर्वकार्यसिद्धिः॥ ४॥

आम्रबन्धक तन्त्र : रोहिणी नक्षत्रयुक्त शनिवार को आम के पेड़ का बन्धक लेकर हाथ में बाँधने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

अथ जम्बुबन्धकतन्त्रम्। श्रवणार्किवारे जम्बुवृक्षस्य बन्धकं गृहीत्वा हस्ते लेपं कृत्वा स्त्रिया हस्ते धृते वश्या भवति॥ ५॥

जम्बूबन्धक तन्त्र : श्रवण नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन जामुन का बन्धक लेकर उसने हाथ में लेप करके किसी स्त्री का हाथ पकड़ने पर वह वश में हो जाती है।

अथ शिरसबन्धकतन्त्रम्। उत्तरात्रयार्किवारे शिरसवृक्षबन्धकं गृहीत्वा दरिद्रस्य हस्ते बध्नीयाद्धनवान् भवेत्॥ ६॥

सिरसबन्धक तन्त्र : तीनों उत्तरा नक्षत्रों में से किसी से युक्त शनिवार के दिन सिरस का बन्धक लेकर दरिद्र के हाथ में बाँध दे तो वह धनवान हो जाता है।

अथ बिल्वबन्धककतन्त्रम्। मूलार्किवारे बिल्ववृक्षबन्धकं गृहीत्वा हस्ते बध्वा वैरीवश्यो भवति॥ ७॥

बिल्वबन्धक तन्त्र : मूल नक्षत्रयुक्त शनिवार को बेल का बन्दा लेकर हाथ में बाँधने से शत्रु वश में हो जाता है।

अथ बदरीबन्धकतन्त्रम्। अनुराधार्किवारे बदरीबन्धकं गृहीत्वा हस्ते बध्वा जगद्वश्यं भवति। स्वात्यार्किवारे बदरीबन्धकं गृहीत्वा हस्ते बध्वा सर्वकामनासिद्धो भवति॥ ८॥

बदरीबन्धक तन्त्र : अनुराधा नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन बेर का बन्दा लेकर हाथ में बाँधने से संसार वश में हो जाता है। स्वाती नक्षत्रयुक्त शनिवार को बेर का बन्दा हाथ में बाँधने से समस्त कामनायें सिद्ध होती हैं।

अथ शालबन्धकतन्त्रम्। चित्रार्किवारे शालवृक्षबन्धकं गृहीत्वा निकटे स्थापितं चेदवश्यो भवति॥ ९॥

शालबन्धक तन्त्र : चित्रा नक्षत्रयुक्त शनिवार को शालवृक्ष का बन्धक लेकर अपने पास रखने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

शाखोटस्य च बन्धकं नक्षत्रे मृगशीर्षके। गृहीत्वा पानमात्रेण अदृश्यो जायते नरः।

शखोटक वृक्ष का बन्धक मृगशिरा नक्षत्र में लेकर उसे पीने मात्र से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

अथ करञ्जबन्धकतन्त्रम्। चित्रार्किवारे करञ्जबन्धकं गृहीत्वा मस्तके बध्वा अदृश्यो भवति॥ १०॥

करञ्जबन्धक तन्त्र : चित्रा नक्षत्रयुक्त शनिवार को करञ्ज का बन्दा लेकर मस्तक पर बाँधने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

अथ भल्लातकबन्धकतन्त्रम्। अश्विन्यार्किवारे भल्लातकबन्धकं गृहीत्वा दिनत्रयसेवनं क्रियते दद्रुकुष्ठपामा नश्यन्ति॥ ११॥

भल्लातकबन्धक तन्त्र : अश्विनी नक्षत्रयुक्त शनिवार के दिन भल्लातक का बन्धक लेकर तीन दिन तक सेवन करने से दाद, कुष्ठ और पामा रोग नष्ट होते हैं।

अथ महाराष्ट्रभाषोक्तकचोराबन्धकतन्त्रम्। विशाखार्किवारे महाराष्ट्रभाषोक्तकचोराबन्धकं गृहीत्वा धान्यमध्ये स्थापितं चेद्धान्यवृद्धिर्भवेत् तदेव गोतक्रेण संघृष्य हस्ते संलिप्य स्त्रियः हस्ते घृते द्रावणं भवति॥१२॥

महाराष्ट्री भाषोक्त कचोराबन्धकतन्त्र : विशाखा नक्षत्र में शनिवार को मराठी भाषोक्त कचोरा वृक्ष का बन्धक लेकर अन्न की राशि में रखने से अन्न की वृद्धि होती है। उसे गाय के मट्ठे से घिसकर हाथ में लगाकर स्त्री का हाथ पकड़ने पर उसका द्रावण होता है।

अथ महाराष्ट्रभाषोक्त धमोडाबन्धकतन्त्रम्। अश्विन्यार्किवारे महाराष्ट्रभाषोक्तधमोडाबन्धकं गृहीत्वा चूर्णं कृत्वा अजादुग्धेन पानं कुर्यात्पुष्टिर्भवति॥ १३॥

महाराष्ट्र भाषोक्त धमोडाबन्धक तन्त्र : अश्विनी नक्षत्र के शनिवार को मराठी भाषोक्त धमोडा का बन्धक लेकर उसका चूर्ण बनाये। उस चूर्ण को बकरी के दूध से पीने से पुष्टि होती है।

अथ थोहरबन्धकतन्त्रम्। कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षबन्धकं धारयेत्करे। वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं जगत्॥ १४॥

थोहरबन्धक तन्त्र : कृत्तिका नक्षत्र में स्नुही (थूहर) का बन्धक जो

हाथ में धारण करता है उसे वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है। यह महान आश्चर्य है।

कपित्थबन्धकतन्त्रम्। कृत्तिका होय नक्षत्र जब, लाय कैथबन्दक। ताहि शस्त्र लागै नहीं, जो मुखमें ले राख ॥ १५ ॥

कपित्थबन्धक तन्त्र : कृत्तिका नक्षत्र में कैत का बन्धक लाकर मुख में रखने से मनुष्य को शस्त्राघात नहीं लगता।

कुशबन्धकतन्त्रम्। अश्विन्यां कुशबन्धं तु पूजां कृत्वा समाहरेत्। त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा वक्त्रस्थोऽदृश्यकारकः ॥ १६ ॥

कुशबन्धक तन्त्र : अश्विनी नक्षत्र में कुश के बन्धक की पूजा करके उसे लाकर त्रिलोह में वेष्टित करके मुख में रखने से मनुष्य अदृश्य होता है।

अथ रोहितकबन्धकतन्त्रम्। अक्षे चैवानुराधायां बन्धं राक्षसवृक्षजम्। मुखे प्रक्षिप्य च नरोऽदृश्यः स्यान्नात्र संशयः ॥ १७ ॥

रोहितकबन्धक तन्त्र : अक्ष तथा अनुराधा नक्षत्र में राक्षस वृक्ष के बन्धक को लाकर मुख में रखने पर मनुष्य अदृश्य हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

अथ कार्पासबन्धकतन्त्रम्। भरण्यान्तु समागृह्य बन्धं कार्पासं सम्भवम्। हस्ते बध्वा ह्यदृश्यः स्यात् स्वात्यां वा निम्बवृक्षजम् ॥ १८ ॥

कार्पासबन्धक तन्त्र : भरणी नक्षत्र में कपास का बन्दा लाकर हाथ में बांधने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है। स्वाती नक्षत्र में नीम का बन्धक भी ऐसा ही फल देता है।

पिबेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसम्भवम्। बन्धं तदा अदृश्यःस्यादश्विन्यां बिल्ववृक्षजम् ॥ १९ ॥ बन्धकं वा करे धृत्वा अदृश्यो जायते नरः।

उत्तराषाढा नक्षत्र में अशोक वृक्ष का बन्धक पीस कर पीने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है। अश्विनी नक्षत्र में बेल के बन्धक का भी यही फल होता है।

अथ मार्जारीनालतन्त्रम्। दत्तात्रेयतन्त्रे। रविवारे गृहीत्वा तु मार्जारीनालमादरात्। निक्षिपेद्यत्र तद्वस्तु वर्धमानं भवेत्सदा ॥ १ ॥

बिल्ली के नाल का तन्त्र : दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि रविवार को बिल्ली के नाल को आदरपूर्वक लेकर उसे जिस वस्तु में रख दिया जाय वह वस्तु सदा बढ़ती है।

श्वेतमार्जार्याः जारं प्रसूतिजं गृहीत्वा निकटे स्थापनीयम्। ततः कृष्णचतुर्दश्यां सुवर्णरौप्यताम्राणामन्यतमधातुजमुद्रिकामध्ये जारं

संस्थाप्य हस्ते धारणीयं अदृश्यो भवति ॥ २ ॥ इति मार्जारीनालतन्त्रम् ।

सफेद बिल्ली द्वारा बच्चा जनने पर उसके जरायु को अपने पास रखे। इसके बाद कृष्ण चतुर्दशी को सोना, चाँदी तथा ताँबा में से किसी एक धातु की अँगूठी के अन्दर उस जरायु का एक टुकड़ा मढ़वा कर हाथ में उसे धारण करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है। मार्जारी नाल तन्त्र समाप्त।

अथ बालकनालतन्त्रम्। वन्ध्या नारी गृहीत्वा तु बालनालं प्रयत्नतः। भक्षयेत्तेन तस्यास्तु पुत्रो भवति निश्चितम् ॥ १ ॥ इति बालकनालतन्त्रम्।

बालकनाल तन्त्र : बन्ध्या स्त्री बालक के नाल को प्रयत्नपूर्वक लेकर खा जाय तो उसे निश्चित रूप से पुत्र होगा। बालक नाल तन्त्र समाप्त।

अथ बालकदन्ततन्त्रम्। बालकस्य तु दन्तानां प्रथमं खण्डितो भवेत्। वसुन्धरामसंस्पृष्टस्तं लब्ध्वा तु वशा वधूः ॥ १ ॥ तद्रक्षणात्प्रयत्नेन पुत्रं विन्दति निश्चितम्। बालदन्तप्रभावेन मनीषा पूर्यते स्त्रियः ॥ २ ॥ गर्भेच्छा न भवेद्यस्याः सा दन्तं कटिभागके। बध्वा गर्भं न लभते नान्यथा परिकीर्तितम् ॥ ३ ॥ राजकार्यकरो धीरो धृतबालकदंशनः। सर्वकार्याणि तस्यैवं सिद्धिमेष्यन्ति निश्चयात् ॥ ४ ॥ शत्रूणां मुखबन्धादि-स्वच्छा वार्ता प्रवर्तते। सभायां स्थिरतां याति श्रेयभाक् स नरः सदा ॥ ५ ॥ इति बालकदन्ततन्त्रम्।

बालकदन्त तन्त्र : बालक के दाँतों में से जो पहला दाँत टूटे उसे इस ढङ्ग से ग्रहण करे कि उसका भूमि से स्पर्श न हो। इस दाँत को बन्ध्या स्त्री यदि प्रयत्नपूर्वक अपने पास रख ले तो वह निश्चित रूप से पुत्र प्राप्त करेगी। बालक के उस दाँत के प्रभाव से उसकी इच्छा पूर्ण होती है। जिसे गर्भ की इच्छा न हो वह यदि उस दाँत को कमर में बाँध ले तो उसे गर्भ नहीं रहेगा। यह प्रयोग अन्यथा नहीं हो सकता। जो राजकार्य करनेवाला धीरपुरुष बालक के ऐसे दाँत को धारण करता है उसके सभी कार्य निश्चित रूप से अनायास ही सिद्ध हो जाते हैं और शत्रुओं के मुख का स्तम्भन हो जाता है तथा वह साधक के अनुकूल ही वार्ता करता है। ऐसा साधक सभा में स्थिरता को प्राप्त करता है और सदा श्रेय का भागी होता है। बालकदन्त तन्त्र समाप्त।

अथ स्यालनाभितन्त्रम्। सुगोला पुष्पवद्धारा घासोत्पत्तिवनेषु च। करीलमूलदेशे तु क्वचित् कण्टः समीपतः ॥ १ ॥ स्यालनाभीतिविख्याता

केचित्काकगुदां जगुः। विधिं तस्याः प्रवक्ष्यामि सत्यं वै श्रूयतां वरम् ॥२॥ कुडवार्द्धं घृते पाच्य नाभीमेकां प्रयत्नतः। भस्मीभवति सा नाभी आयसेन तु घर्षयेत् ॥ ३ ॥ एकजीवस्तु कर्तव्यस्ततः सिद्धो भविष्यति। घृतेनानेन संग्राह्य काम्यकर्मणि योजयेत् ॥४॥ यद्दंष्ट्राः कृमिभिर्व्याप्तास्तत्कर्णे बिन्दुमात्रतः। द्विघट्यान्ते द्वितीये च कर्णे बिन्दुं क्षिपेद्बुधः ॥ ५ ॥ कीटदुःखं लयं याति म्रियन्ते कृमिजातयः। अवश्यं नात्र सन्देहः सर्वकृमिविनाशकृत् ॥ ६ ॥

स्यालनाभि तन्त्र : 'स्याल नाभि' सर्वथा गोल और पुष्पवत होती है। यह हल्की घास उत्पन्न होनेवाले वनों में करील वृक्ष की जड़ में कहीं कण्टक के समीप होती है। कुछ लोग इसे 'काकगुदा' भी कहते हैं। इसकी श्रेष्ठ तथा सत्य विधि मैं कहता हूं उसे सुनो। आधे कुडव घी में प्रयत्न से एक नाभि को पकावे। जब वह जल जाय तब लोहे से उसे रगड़ दे। सर्वथा एक जीव हो जाने पर यह सिद्ध होता है। इस घी को संग्रह करके रख ले और काम्य कर्मों में प्रयोग करे। जिधर के दाँत में कीड़े लगे हों उधर के कान में एक बूंद इस घी को डाल दे। फिर दो घण्टे के बाद दूसरे कान में एक बूंद डाल दे। इससे कीड़ों का दुःख समाप्त हो जाता है। इससे सभी कीड़े मर जाते हैं। यह सभी कीड़ों को नष्ट कर देता है—इसमें सन्देह नहीं है।

नाभिं तेनैव संघृष्य कर्त्रितं पत्रं कारयेत्। गुटिकाचतुष्टयं कृत्वा गुडयोगेन वै पुनः ॥ ७ ॥ भक्षयेद्गुटिकामेकामुष्णवार्यनुपानतः। यदि शूलं न नश्येत घटिकाद्वयतः परम् ॥ ८ ॥ द्वितीयां गुटिकां दद्यात्क्रम एष पुनर्दिशेत्। सर्वे शूला विनश्यन्ति महाघोरतरा अपि ॥ ९ ॥ इति स्यालनाभितन्त्रम्।

उसी घी से नाभि को घिसकर पतले-पतले टुकड़े करके गुड़ के साथ चार गोलियाँ बना ले। पेट में किसी प्रकार का शूल होने पर एक गोली गर्म पानी से खाने से यदि शूल नष्ट न हो तो दो घण्टे के बाद पुनः एक गोली और खा ले। इसके सेवन का यही क्रम है। इससे सभी प्रकार के महाघोर उदरशूल नष्ट हो जाते हैं। स्यालनाभितन्त्र समाप्त।

अथ वराटकीतन्त्रप्रारम्भः। हंसी वराटकी ख्याता लघुभारा श्वेतरङ्गिणी। उज्ज्वला कोमला ज्ञेया जलोत्तीर्णा तु सा शुभा ॥ १ ॥ हंसपद्या रसे पिष्ट्वा ताम्रपारेण संयुता। अनेन पूरयेद्धंसीं मुखमुद्रां तु कारयेत् ॥ २ ॥ स्वे मुखे करणे तस्याः सर्वसिद्ध्यागमस्ततः। रोगो न जायते तस्य सर्वबाधा विनश्यति ॥ ३ ॥ सर्पदंशादपि विषं वर्द्धते तस्य न

क्वचित् । हंस्या गुटिप्रभावेन काचिद्धानिर्न जायते ॥ ४ ॥

वराटकी तन्त्र : सफेद रङ्ग की कोमल, हल्की और पानी में तैरने वाली शुभ्र कौड़ी को 'हंसी' कहते हैं। हंसपदी के रस में ताँबा तथा पारा को साथ पीसकर उस हंसी के मुख में भर दे और मुख को बन्द कर दे। इस हंसी कौड़ी को मुख में रखने से समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसके धारक को कोई रोग नहीं होता। सभी बाधायें शान्त हो जाती हैं। साँप के काटने पर साधक के शरीर में सर्प-विष चढ़ता नहीं। हंसी की गोली के प्रभाव से उसे कोई हानि नहीं होती।

शिरःपृष्ठमुखे पीता मृगी सा वै वराटिका। उरःपीतसमायुक्ता तद्विधानं वदामि ते ॥ ५ ॥ मृगमूत्र मृदा ग्राह्या रसयुक्ता मृगर्क्षके। मृगी पूरयितानेन मुखे कृत्वा तु वै नरः ॥ ६ ॥ राजादिर्वश्यतां याति सभायां प्राप्यते यदि। नारीसङ्गमकाले वै बहुकामं प्रपद्यते ॥ ७ ॥

जो कौड़ी सिर पर, पीठ पर, मुख पर तथा वक्ष पर पीली हो उसे 'मृगी' कहते हैं। उसका विधान मैं तुम्हें बता रहा हूं। मृगशिरा नक्षत्र में मृग के मूत्र से युक्त मिट्टी लेकर उसमें पारा मिलाकर 'मृगी' कौड़ी के मुख में भर दे। इसे लेकर सभा में जाने से राजा आदि अधिकारी वश में हो जाते हैं। नारी सङ्गम के समय मनुष्य इस कौड़ी को धारण करके बहुत काल तक काममग्न रहता है।

धूम्रवर्णा व्याघ्रिनाम्नी व्याघ्रं कुर्यात्तु सा नरम्। विधिं तस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन वै पुनः ॥ ८ ॥ व्याघ्रौषध्या रसे पिष्ट्वा पारदं सप्रयत्नतः। व्याघ्रीं परयते तेन मुखमुद्रां तु कारयेत् ॥ ९ ॥ गुग्गुलुं धूपयेत्तस्या मुखे धृत्वा तु यो नरः। व्याघ्रवज्जायते रूपं तं दृष्ट्वान्यः पलायते ॥ १० ॥

धूम्र वर्ण की कौड़ी को 'व्याघ्री' कहते हैं। वह मनुष्य को व्याघ्र बना देती है। उसकी विधि मैं कहता हूं, यत्नपूर्वक सुनो। व्याघ्रपदी के रस में पारे को पीसकर उसे 'व्याघ्री' कौड़ी के मुख में भरकर मुख बन्द कर दे। फिर गुग्गुल से उसे धूप देकर जो मुख में रखता है उसका रूप व्याघ्र के समान हो जाता है और शत्रु उसे देखकर पलायन कर जाते हैं।

अन्यत्। सिंहिनीलक्षणं वक्ष्ये स्वर्णवर्णा तु सा भवेत्। तामानयेत्प्रयत्नेन तस्याः कल्पं नरश्चरेत् ॥ ११ ॥ सिंहीरसरसैर्युक्तां सिंहिनीं पूरयेत्ततः। माक्षिकेण मुखं तस्य रुद्ध्वा गुग्गुलधूपितम् ॥ १२ ॥ मुखे धृत्वा तु तां यो वै युद्धे हि जयमाप्नुयात्। सिंहरूपं भवेत्तस्य नरो दृष्ट्वा

पलायते ॥१३॥ करे बध्वा तु यो धीरो द्यूतं कुर्याज्जयस्ततः । राजमानो यशः प्राप्तिः सिंहीकल्पेन लभ्यते ॥ १४ ॥

अन्य प्रयोग : अब सिंही कौड़ी का लक्षण कहते हैं । जो स्वर्ण के समान होती है । ऐसी कौड़ी को यत्नपूर्वक लाकर उसका कल्प सिद्ध करना चाहिये । सिंही कौड़ी के मुख में सिंही का रस भर कर मुख को बन्द करके गुग्गुल से उसे धूपित करके उसे मुख में रख कर युद्ध में जाने पर मनुष्य विजय प्राप्त करता है । उसका स्वरूप सिंह के समान होता है । मनुष्य उसे देखकर भाग जाते हैं । इस कौड़ी को हाथ में बांध कर जूआ खेलने से साधक जीतता है । इस सिंहीं कल्प से राजमान्यता तथा यश की प्राप्ति होती है ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे मिश्रतन्त्रे
द्वादशस्तरङ्गः ॥ १२ ॥

इति मन्त्रमहार्णव के मिश्रखण्ड में मिश्रतन्त्र विषयक द्वादश
तरङ्ग समाप्त ॥ १२ ॥

त्रयोदश तरंग

इन्द्रजाल कौतुक तन्त्र

तत्रादौ सर्वोपरि मन्त्रः ।

प्रारम्भ में सर्वोपरि मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानि दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः। तन्त्राणि सिद्धानि कुरुकुरु स्वाहा ।

१०८ जप से सिद्धि होती है ।

ईश्वर उवाच । इन्द्रजालं विना रक्षां न कुर्यादिति निश्चितम् । रक्षामन्त्रमहामन्त्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः । रक्षामन्त्रो यथा :

ईश्वर बोले : बिना रक्षा किये इन्द्रजाल नहीं करना चाहिये—इस बात को निश्चित रूप से समझ लेना चाहिये । रक्षा का मन्त्र महामन्त्र है और यह सभी सिद्धियों को देनेवाला है । रक्षा मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ परब्रह्मपरमात्मन् मम शरीरं पाहिपाहि रक्षां कुरुकुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र से रक्षा करे ।

अथ इन्द्रजालकौतुककरणोपयोगी मन्त्रः ।

इन्द्रजाल कौतुक करणोपयोगी मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजालकौतुकानि दर्शयदर्शय सिद्धि कुरुकुरु स्वाहा ।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री सर्वकौतुकानि कुर्यात् ।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है । इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक सभी कौतुकों को करे ।

अथ दृष्टिस्तम्भनम् ।

घृणातालकपञ्चाङ्गं वेष्टितं कनके तथा । दृष्टिमात्रं दृष्टबन्धे नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ १ ॥

घृणातालक के पञ्चाङ्ग को स्वर्ण में वेष्ठित करके अपने पास रखने से दृष्टिमात्र से दृष्टिबन्ध होता है—शङ्कर का यह वचन अन्यथा नहीं हो सकता ।

वाराहक्रान्तिकामूलं सिद्धार्थं स्नेहलेपितम् । मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम् ॥ २ ॥ कूर्मंभुक्तं हरीतालं सप्ताहं भोजयेद्ध्रुवम् । तद्विष्ठाकरलेपेन नरा नृत्यन्ति कौतुकात् ॥ ३ ॥ मयूरं च शिलातालं भोजयेद्दिनसप्तकम् । तद्विष्ठां लेपयेद्धस्ते अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ४ ॥

वराहक्रान्तिकामूल, को सरसों के तेल से लिप्त करके मुख में डालने से यह लोगों का दृष्टिबन्ध करता है । कछुए को एक सप्ताह हरिताल पिलाये । उसके बाद उसकी बिष्ठा का हाथ में लेप करने से मनुष्य कौतुक से नाचने लगते हैं । मोर को सात दिनों तक मैनशिल तथा हरिताल खिलावे । इसके बाद जो उसकी बिष्ठा का हाथ में लेप करता है वह अदृश्य हो जाता है ।

अथ नानारूपधारणकौतुकम् ।

भौमवारे सर्पमुखे क्षिप्त्वा कार्पासबीजकम् । उद्भूवं बीजकार्पास-ज्वालयेरण्डतैलके ॥१॥ तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवत् दृश्यते ध्रुवम् ॥२॥

दत्तात्रेय तन्त्र में इस प्रकार वर्णन है : मङ्गलवार के दिन सर्प के मुख में कपास के बीज बो दे । जब उस बीज से पेड़ बन जाय तो उससे रूई निकाल कर बत्ती बना ले । उस बत्ती को रेंड के तेल में रात को जलाने से मनुष्य निश्चित रूप से सर्पवत् दिखाई पड़ता है ।

ऐरण्डतैलजं दीपं सर्पपुच्छाद्विकंचुकम् । मण्डूकवसया दीपे सर्वैर्दृश्यो-हि सर्पवत् ॥ ३ ॥

साँप की पोछ की केचुल, रेंड का तेल तथा मेढ़क की चर्बी से दीपक जलाने से साधक सबको सर्पवत् दिखाई पड़ता है ।

वृश्चिकमुखमध्यस्थं कार्पासं बीजं निक्षिपेत् । तद्वर्तिं ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिको भवति ध्रुवम् । वर्तिं तु शीतलां कृत्वा महाकौतुकनाशनम् ॥४॥

बिच्छू के मुख में कपास का बीज बो दे । उससे जब पेड़ उत्पन्न हो तो उसकी रूई की बत्ती बनाकर रात में रेंड के तेल में उसे जलावे । इससे चारों ओर बिच्छू ही बिच्छू दिखाई पड़ेंगे । किन्तु दीपक से बत्ती निकाल लेने पर यह महाकौतुक शान्त हो जाता है ।

कार्पासानि च बीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् । रवौ वारे कृते योगे नान्यथा शङ्करोदितम् । तद्वर्तिं ज्वालयेत्सन्ध्यां नकुलो दृश्यते ध्रुवम् ।५।

कपास के बीज नेवले के मुख में रविवार के दिन बो दे । फिर पूर्वोक्त रूप से उत्पन्न रूई की बत्ती को जलाने से नेवला दिखाई पड़ता है—यह शङ्कर का कथन अन्यथा नहीं हो सकता ।

चन्द्रवारे विनिक्षिप्य मार्जारस्य मुखे खलु। जायते बीजमैरण्डे मुखे धृत्वा बिडालकः ॥ ६ ॥

सोमवार के दिन बिल्ली के मुख में रेंड के बीज बो दे। उससे जब वृक्ष उत्पन्न हो तो उसमें से एक रेंड़ लेकर मुख में रखने से सर्वत्र बिल्लियाँ दिखाई पड़ती हैं।

गृहीत्वांकोलबीजानि रविवारे सुनिश्चितम्। शृणु सिद्धि महायोगी-बीजानां कल्पमुत्तमम्। अङ्कोलबीजं निक्षिप्य गुरौ गजमुखे नरः। मन्त्रेण सिंचेन्नित्यं तु यावद्वीजफलोद्भवः। त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा एकबीजं मुखे स्थितम्। मत्तमातङ्गवीर्यस्तु वायुतुल्य पराक्रमः ॥ ७ ॥

अङ्कोल के बीज निश्चित रूप से रविवार को एकत्र करके लाये। इन अङ्कोल के बीजों के, हे महायोगिन्! उत्तम कल्प को सुनो। अङ्कोल के बीज को गुरुवार को हाथी के मुख में बोकर नित्य मन्त्र के जल से उसका तब तक सिञ्चन करे जब तक कि उससे वृक्ष न उत्पन्न हो जाय। फिर वृक्ष के फल से एक बीज को लेकर त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने पर साधक मत्त गजराज के समान बलवान् तथा वायु के समान पराक्रमवाला हो जाता है।

हयमुखे च तद्वीजं रविवारे तु निक्षिपेत्। जायन्ते सफला वृक्षास्त-द्वीजं ग्राहयेत्पुनः। त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुखमध्येऽवधारितम्। महाबलो महातेजा जायते च तुरङ्गमः ॥ ८ ॥

रविवार के दिन अङ्कोल के बीज को घोड़े के मुख में बो दे। जब वृक्ष उत्पन्न हो और उसमें फल लगें तब उसमें से एक बीज लेकर त्रिलौह में वेष्टित कर मुख में रखने से साधक महाबलवान् तथा घोड़े के समान तेजस्वी हो जाता है।

वृषमुखे तु तद्वीजं निक्षिपेद्भुवि निश्चितम्। तद्वीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहवेष्टितं कुरु। महाबलो महातेजा जायते वृषभः स च ॥ ९ ॥

बैल के मुख में अङ्कोल के बीजों को बोकर भूमि में गाड़ दे। उससे उत्पन्न फल के बीज को त्रिलौह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक बैल के समान महाबलवान और महातेजस्वी हो जाता है।

मृगमुखे च तद्वीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम्। त्रिलोहे वेष्टितं बीजं मृग-राजसमुद्भवम् ॥ १० ॥

अङ्कोल के बीज को मृग के मुख में बोकर उसे भूमि में गाड़ दे। उससे

उत्पन्न फल के बीज को त्रिलोह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक मृगराज के समान हो जाता है।

तद्बीजं सिंहमुखे च निक्षिप्तं तु महीतले। त्रिलोहे वेष्टितं बीजं मुखमध्ये च धारितम्। महाबलो महातेजास्तेन सिंहसमो भवेत्॥ ११॥

उसी के (अङ्कोल के) बीज को सिंह के मुख में बोकर भूमि में गाड़ दे। उससे उत्पन्न फल के बीज को त्रिलोह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक सिंह के समान महाबली और तेजस्वी हो जाता है।

शुनो मुखे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम्। त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा शुना समः॥ १२॥

अङ्कोल के बीज को कुत्ते के मुख में डालकर उसे भूमि में गाड़ दे। उससे उत्पन्न बीज को त्रिलोह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक कुत्ते के समान हो जाता है।

मयूरमुखमध्यस्थं तद्बीजं भुवि निक्षिपेत्। त्रिलोहे वेष्टितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनैः॥ १३॥

अङ्कोल के बीज को मोर के मुख में डालकर भूमि में गाड़ दे। उससे उत्पन्न बीज को त्रिलोह में वेष्टित करके मुख में रखने से साधक लोगों को मोर के समान दिखाई पड़ता है।

यानि कानि च बीजानि जङ्गमस्थलमेव च। अङ्कोलबीजे निक्षिप्ते मुखे भूमितले ध्रुवम्। तद्बीजं मुखमध्यस्थं त्रिलोहे वेष्टितं कुरु। तद्रूपश्च भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्॥ १४॥

इसी प्रकार जिस भी जीव के मुख में अङ्कोल का बीज बोकर उससे उत्पन्न बीज को त्रिलोह में वेष्टित करके साधक यदि मुख में रखेगा तो वह उसी जीव के समान दिखाई पड़ेगा—यह शङ्कर का वचन अन्यथा नहीं हो सकता।

वर्षाकाले मयूरस्य दापयेत्कीटभोजनम्। तद्विष्ठां गोमययुतां मृत्तिकासंयुतां तथा। गृहीत्वा लेपयेद्देहं खण्डखण्डं प्रदृश्यते। लोके भवति चाश्चर्यं महाकौतुककौतुकम्॥ १५॥

वर्षाकाल में मोर को कीड़े खिलाये। फिर उसकी विष्ठा में मिट्टी तथा गोबर मिला कर लेप तैयार करे। इस लेप को देह में लगा लेने से साधक खण्ड-खण्ड दिखाई पड़ता है। इस महाकौतुक को देख कर संसार में लोग अत्यन्त आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

शिग्रु बीजोत्थितं तैलं पारावतपुरीषकम्। वराहस्य वसायुक्तं गृहीत्वा च समं समम्। गर्धभस्य वसायुक्तं हरितालं मनःशिलाम्।

एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथालङ्केश्वरो नृपः ।

शिग्रु बीज का तेल, कबूतर का बीठ तथा सूअर की चर्बी समान भाग ले । फिर उसमें गधे की चर्बी, हरिताल और मैनशिल लेकर सबको मिला कर तिलक करे । इससे मनुष्य रावण के समान दिखाई पड़ेगा ।

बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु कृष्णसर्पवसासमम् । वृषकेशं गृहीत्वा तु गन्धकं च मनःशिलाम् । एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथा साक्षात्सदाशिवः । यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपितं न प्रकाशयेत् ॥ १६ ॥

काले साँप की चर्बी के बराबर बेल के पत्ते लेकर उसमें बैल का बाल, गन्धक तथा मैनसिल मिलाकर एक में घोंट कर उसका तिलक लगाने से मनुष्य साक्षात् सदाशिव के समान दिखाई पड़ता है । इसे ऐरे-गैरे व्यक्ति को नहीं देना चाहिये और न इसे प्रकाशित ही करना चाहिये ।

विषवृक्षस्य पुष्पं तु श्वेतं ग्राह्यं प्रयत्नतः । पेषयेन्नवनीतेन चाश्वगन्धां मनःशिलाम् । एभिस्तु तिलकं कृत्वा यथा साक्षात् पितामहः ।१७।

विषवृक्ष के सफेद फूल प्रयत्नपूर्वक लाना चाहिये । उसे अश्वगन्धा, मैनसिल तथा मक्खन के साथ पीसकर तिलक करने से मनुष्य साक्षात् ब्रह्मा के समान हो जाता है ।

पयस्विनीमृतो बालो यत्र तन्निखनेन्नरः । हरिद्रा ग्रन्थिसंयुक्तमजादुग्धेन सेचयेत् । यावद्वृक्षस्तु सफलस्तं हरिद्रासमं हरेत् । श्वेतदूर्वारिनालैश्च हरिद्रातः प्रदापयेत् । तल्लिप्तदेहपुरुषः पञ्चधा दृश्यते नरः ॥ १८ ॥ यस्य नामाङ्कितं तन्त्रे नृकपाले लिखेत्सति । भौमे चितायां निक्षिप्ते पिशाचो दृश्यते नरः ॥ १९ ॥

गाय के मृत बछड़े को जहाँ गाड़ा गया हो वहाँ हल्दी की एक गाँठ बो दे और उसे बकरी के दूध से सदा सींचता रहे । जब उससे सफल वृक्ष उत्पन्न हो जाय तो उसमें से एक हल्दी की गाँठ लेकर श्वेत दूब तथा आरनाल को मिलाकर एक में पीसकर लेप बनाये । उस लेप को देह पर लगा लेने से साधक पाँच प्रकार का दिखाई पड़ने लगता है । इसी हल्दी से रविवार को मनुष्य की खोपड़ी में जिसका नाम लिख कर चिता में डाल दे वह मनुष्य पिशाच के समान दिखाई पड़ने लगता है ।

सिन्दूरं गन्धकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् । तल्लिप्तवस्त्रः शिरसि अग्निवत् दृश्यते ध्रुवम् ॥ २०॥

सिन्दूर, गन्धक, हरिताल तथा मैनसिल समान भाग लेकर पीस ले ।

फिर उसका वस्त्र पर लेप करके वस्त्र को यदि सर पर रक्खा जाय तो निश्चित रूप से साधक लोगों को अग्निवत् दिखाई पड़ेगा।

पत्रं तु श्वेतगुञ्जायाः प्रथमं यस्तु भक्षयेत्। अङ्कोलतैललिप्ताङ्गो दृश्यते राक्षसाकृतिः। पलायन्ति नराः सर्वं पशुपक्षिमृगादयः॥ २१॥

सफेद गुञ्जा के पत्ते पहले खाकर बाद में अङ्कोल का तेल शरीर में लगा लेने पर साधक राक्षस के समान दिखाई देगा। उसे देख कर मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सभी भागने लगेगें।

अङ्कोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः। रात्रौ पश्यति भूतानि खेचराणि महीतले॥ २२॥

अङ्कोल के तेल से दीपक जलाकर साधक रात्रि के समय आकाशचारी भूतों को पृथिवी पर देखने लगता है।

प्राकृत ग्रन्थ के प्रयोग:

कड़ुवी तुम्बीतेल ले, बीट कबूतर लाय। हड्डी गधा मंगाय के, सब को ले पिसवाय। माथे पर याको तिलक, जो कोई लेय लगाय। रावण सो दीखन लगै, यामें संशय नाहि॥ २३॥

तेल सहिजन बीजको, बीट कबूतर लाय। सूअर चरबी शिखीजड, सब समभाग मंगाय। जो काढ़े सिर पर तिलक, सो दीखे मुखपांच। इन्द्रजालको खेल यह, बात सभी है सांच॥ २४॥

घुघूको सिर काट मंगावे, तामें बीज धतूरा बोवे। जब असाढ वदी चौदस आवे, धूप दीप कर भैरो ध्यावे। सिरको गाड भूमिमें देवे, जूठा पानी उसमें देवे। दिनप्रति दीपक देय जलाई, बत्ती सूत घीवको भाई। उगै पेड़ जब करै उपाई, जड फल फूल छाल मंगवाई। पीस तिलक माथे पर दीजे, सहस्र आंख को रूप धरीजे॥ २५॥

ल्याय मनुज की खोपडी, लाल चिरमठी बोय। फल उसके मुख धारिये, नारी रूप जु होय॥ २६॥

उगै आवरे वृक्ष पर, करिये नीम तलास। लाय फूलफल मूल अरु, कर चूरण रख पास। बत्ती मांहि लपेट के, तेल नीम को डार। जेहिपर चांदनी दीप की, सोहोकानेराय॥ २७॥

अथान्यकौतुकम्।

दत्तात्रेय तन्त्र के अनुसार।

सिन्दूरं गन्धकं तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम्। तल्लिप्तवस्त्रं धृत्वासौ रात्रौ दृश्योऽग्निवद्भवेत्॥ १॥

सिन्दूर, गन्धक, हरताल तथा मनःशिला को समान भाग लेकर पीस ले। उसका वस्त्र पर लेप करने से वह वस्त्र अग्नि के समान दिखाई पड़ेगा।

त्रिदिनं भोजनं कृत्वा तिलसर्षपसंयुतम्। तन्मूत्रज्वालिताद्दीपान्महा-कौतुककौतुकम् ॥ २ ॥

तिल और सरसों मिलाकर तीन दिन तक भोजन करने के बाद साधक अपने मूत्र से दीपक जलाये तो यह महान कौतुक होता है।

प्राकृत ग्रन्थ के प्रयोग :

सिरका स्वच्छ मंगाय के, भरिये शीशी मांहि। डारत ही हरताल तप, किया होय चांदनो जाहि ॥ २ ॥ शीशी में स्प्रिट भर दीजे गन्धक, तनिक ताहि में दीजे। धरिये ताहि अन्धेरे मांहीं, अग्नि भरा शीशा दिखलाहीं ॥ ३ ॥

लोहे के प्याले में गन्धक लगाकर उसमें ताम्र का चूर्ण बुरका देवे तो यह गन्धक अन्धेरे में दीपक सा चमकेगा ॥ ४ ॥

बीस मासे स्प्रिट लाकर एक पात्र में रखे पीछे एक मासा स्कोरेट औफ पोटास मिला दे। पीछे अट्ठाईस मासा सल्फूरिक एसिड डालते ही बहुत सी छोटी छोटी नीले रङ्ग की गोल बत्तियां बाहर अग्नि की लौ के समान निकलने लगेगीं ॥ ५ ॥

फासफोरस को रात्रि के समय अन्धेरे में धरने से दीपक के माफिक प्रकाश हो जाता है ॥ ६ ॥

एक साफ बोतल में फासफोरस धरके पानी भर दे। पीछे उस शीशी को दीपक की लौ पर गरम करने से उसमें आग जलती मालूम पड़ेगी ॥ ७ ॥

चूना विना बुझाही लावे, फासफोरस उसमें मिलवावे। फिर उसको कपडे में नाखै, पीतल के बर्तन पर राखै। तापर छिडके थोडा पानी, आग जलेगी विना जलानी ॥ ८ ॥

नोनी गन्धक अरु नौसादर, बांध पोटली लावे। जल की बून्द डार कर मसले, अग्नि बले दृष्टि आवे ॥ ६ ॥ ऊंट के मेगने को सुलगावे, जब निधूम अङ्गारा हो जावे। उस वखत शहद में बुझाय कर डब्बी में धरले। तमाशा दिखाने के समय इसको फोड़कर धरने से पवन लगते ही अग्नि प्रगट हो जायगी ॥ १० ॥ खैर कोयला लाय कर, ताको खूब पिसाय। गन्धक शोरो राल सम, चारहु देय मिलाय। टङ्क चार गुटिका

करे, तामधि छिद्र कराय। फूल मलैठी चाबकर, मुख में ताहि धराव। गुटिका मुख के छिद्र पर, दीजे अग्नि लगाय। तापर उलटी फूंक दे, निकले अग्नि भभकाय ॥ ११ ॥ राल तोला १० लोह चूर्ण तोला २ गन्धक तोला १ कपूर मा० ६ महीन पिसा कर कपडे में पोटली बांधे पीछे उस पोटली को पीपल के वृक्ष पर लटका कर अग्नि लगा दे तो पीपल के पत्र-पत्र पर दीपक की रोशनी हो जायगी ॥ १२ ॥

कपडो लेकर ताहि को, दीजे मद्य भिगोय। इँढीकर सिर पर धरे, तामे अग्नी जोय। आला वस्त्र जलतो रहे, सूखे अग्नि बुझ जाय। आंच न आवे तनिक हूं, यह कौतुक अतिभाय ॥ १३ ॥ ज्वार मांहि अङ्कोल को, दीजे तेल लगाय। धूप दिखाय हिलाइये, फूला सब हो जाय ॥१४॥ पहले ज्वारहि तीन दिन, भेवे पानी मांहि। आकरु थोहर दूध में, एक-एक दिन ताहि। छाया सूख कराइये, करे तमासो कोय। घडी एक मूठी दबे, सबही फूला होय ॥ १५ ॥ थोहर दूध में ज्वार जो भेवे, छाया ताहि सुखाय के लेवे। पुनि वस्तर पर धामहि मेले, गर्म होय जब हांथ न ठेले। भुने जोंधरी फूला होवे, यह अचरज सब कोई जोवे ॥ १६ ॥ बिना बुझा चूना एक हांडी, में ले चावल चूना सांधी। पानी गेरे फदक न लागे, भात रन्धे सबके ही आगे ॥ १७ ॥ मद्य फूल जो लाइये, तामे वस्तर भेय। पीछे आग लगाइये जले न वस्तर केह ॥१८॥ स्प्रिट मांहि कपूर मिलावे, तामे कपडा भेय सुखावे। पुनि कपडे में आग लगावे, जले नहीं वैसा ही पावे ॥ १९ ॥ लेय सफेदी अण्डे की, अरु फिटकवडीचूर। मल कपडे को धोइये, लूण के पानी में खूब। तब अग्नी में नांखिये, जले नहीं तूं जान। इन्द्रजाल के खेल यह, सबही सांचे जान ॥ २१ ॥

जिह्वा पर पहले अच्छी तरह से लिकिडष्टोरेकस लगावो और बेखटके मुख से गर्म लोहा छू लो कभी मुह नहीं जलने पायेगा ॥ २२ ॥

नोट को बढिया सिरकेमें भिगाकर जलाये भीगा रहेगा जलता रहेगा सूख जाने पर अग्नि बुझ जायगी नोट ज्यों-का-त्यों रहेगा ॥ २३ ॥

पहले नमक के पानी में सूत को भिगाकर सुखाले पीछे उसमें अंगूठी लटका कर सूत को जला दे तो सूत के जलने पर भी अंगूठी नहीं जलेगी। कोई कोई इसके भीतर लोहे का तार लपेट देते हैं परन्तु कुछ आवश्यकता नहीं ॥ २४ ॥

पहले सूत के एक सिरे में जरासा गुड लगाकर अङ्गारे पर धरे तो वह गुड पिघल कर बल जायगा और कच्चे सूत का डोरा उस अङ्गारे में चिपका रहेगा। पीछे चाहे जहां लटका दो देखनेवालों को कच्चे सूत में अग्नि बंधी हुई लटकती दीखेगी ॥ २५ ॥

सङ्खिया पांच तोले, पारा ढाई तोले, कपूर सवा तोले अलग-अलग पीसकर मिलाये और अंगुली पर लगाकर गले हुये गर्म शीशे में अंगुली डुबाये तो जलेगी नहीं ॥ २६ ॥

अकलकरा और सीतल मिर्च को चबाकर छोटी-छोटी अग्नि की चिनगारियों को मुख में डालने से मुख नहीं जलेगा ॥ २७ ॥

एक सूत की रस्सी को तेल में भिगाकर लटकाओ और नीचे के सिरे को जला दो। जब उसमें से गरम-गरम जलती हुई तेल की बूंदें टपकने लगे उस समय पिसा लूण पानी के साथ हाथों में खूब चुपड कर उन बूंदों को हाथ में पडने दो और हांथो को उलटपुलट कर खूब मलते रहो जिसमें हाथ तर होता रहे तो उन तेल की बूंदों द्वारा हाथ से अग्नि की लौ सी निकलती दिखाई पडेगी ॥ २८ ॥

सुम घोडे का वेंतजड, दोनों भट्टी डाल। अग्नि जले ना तनिक हू, निकले धूआं काल ॥ २९ ॥

तुलसी और सालकाष्ठ को जलाकर गधे के मूत्र में बुझा ले। इसको चूल्हे में डालने से कढाई नहीं तपती ॥ ३० ॥

जाकर प्रातः मसाण में, जहजह ढेरी होय। मदिरा राल बिखेरिये, जान न पावे कोय। पहर रात को जाइये, सात पांच ले साथ। अग्नि लगाये ताहि में, होन लगे उत्पात। जागे मसाण अति ही घनो, थरथर कांपे लोग। भागे कछू न संभालही, मिटे मनुज का खोज ॥ ३१ ॥

सूत हाथ दस लीजिये, तामें दारू लाय। सिरा एक दीपक तले, तामें गन्धक लगवाय। बत्ती पास लगाय के, सिरा दूसरा वार। दृष्टि बचा सब मनुष की, ताहि लगावे आग। वह दीपक जब बल उठे, खोल किवाडे देख। चित सबका क्षुभित होवे, अजब तमासा देख ॥ ३२ ॥

ले गन्धक अरु राल, नाह्नों खूब पिसाइये। दीपक गुलपर डाल सो, दीपक पुनि जल उठे ॥ ३३ ॥

समुद्र फेन और गन्धक को रुई में मिला कर बत्ती बना कर उसका दीपक जलाने से वह आंधी और मेह में भी नहीं बुझता ॥ ३४ ॥

रूई की बत्ती बनाकर नमक मिले पानी में भिगाये। फिर सुखा कर स्प्रिट भरे लैम्प में बत्ती की जगह लगाकर जलाने से उत्तम पीली रोशनी होगी। इसे यदि नीले चश्मे से देखे तो बैगनी रोशनी दीखेगी परन्तु पीले चश्मे से देखने पर केवल बत्ती ही बत्ती दिखाई देगी ॥३५॥

टीन की एक ऐसी नली बनाये जिसका एक मुह चौडा हो। उसे एक बहुत छेदवाले टीन के टुकडे से बन्द करके पिसी हुई राल भर दे और मसाल की लौ से जलाकर नली को इधर-उधर करे तो विजली सी चमकेगी ॥ ३६ ॥

चरबी काले सांप की, लेय जुगत सो कोय। ताहि दिया में बालिये, जो तज बाहर होय ॥ ३७ ॥

अथ जलकौतुकम्।

अर्कक्षीरं वटक्षीरं तथौदुम्बरसम्भवम्। गृहीत्वा पात्रकं लिप्तं जलपूर्णं करोति चेत्। दुग्धं सञ्जायते तत्र महाकौतुककौतुकम् ॥ १ ॥

मदार का दूध, बरगद का दूध और गूलर का दूध मिलाकर किसी पात्र में लेप कर दे। फिर जब कौतुक दिखाना हो तब उस पात्र में पानी भर दे। वह सब का सब पानी दूध हो जायगा। यह महाकौतुक है।

कोरे घडे के भीतर, अरण्ड बीज का लेप। जल पडते ही दूध हो, करे तमासो देख ॥ २ ॥

लेय हाथ दो कापडा, अति महीन जो होय। दस पुट दीजे दूध को, छाया सूखे सोय। तेहि पट में जल छानिये, दूध होय यह जान। सबही आन दिखाइये, साचो जी में ठान ॥ ३ ॥

जलभरे बरतन में लाइकोपोडियम डाल दो। पीछे उस बरतन में हाथ डालने से भीगेगा नहीं बल्कि सूखा ही निकलेगा ॥ ४ ॥

एक बोतल में पानी भरकर काग लगा दो और उस काग में होकर एक कांच की ऐसी नली लगाओ जो पेंदेको न छुये। फिर उसमें जोर से फूंक मार कर छोड दो तो फुहारा चलने लगेगा ॥ ५ ॥

एक थाल में पानी भरके उसमें एक इंट रखो जो पानी से कुछ ऊंची हो। पीछे उस इंट पर खडी हुई एक मोटी बत्ती का दीपक जला कर उस दीये के ऊपर एक घडा इस तरीके से औंधा कर दो कि दीया और इंट उस घडे के भीतर आ जाय। ऐसा करने से जब घडे में धूआँ भरेगा तो सब पानी घडे में ऊपर की तरफ चढ जायगा और जल का पात्र जल से खाली हो जायगा। इसे देखनेवाले आश्चर्य करने लगेंगे,

दीया बुझने के साथ ही पानी नीचे उतर आयेगा और जल का पात्र भरा हुआ दिखाई पडने लगेगा ॥ ६ ॥

कलसे के मुख पर ढकने योग्य टीन के टुकडे में बहुत से छिद्र करके पानी भरे हुये कलसे पर धरो और आटे से सन्धि बन्द कर दो। पीछे एकदम उलटा करने से पानी नहीं निकलेगा। इसी तरह पानी भरे हुये लोटे के मुखपर कपडा लगाकर एकदम उलटा करने से भी पानी नहीं निकलता ॥ ७ ॥

साफ कपडे के एक तरफ मोम दूसरे तरफ गन्धक लगाकर अग्नि की झाल दिखाओ जिससे एक जीव हो जाय। पीछे इसकी बत्ती बनाकर तेल के बदले पानी भरकर जला दोगे तो पानी का ही दीपक जलेगा।८।

तेल पानी एक में मिलाकर कितना ही हिलाओ झुलाओ पर कभी आपस में न मिलेंगे परन्तु यदि कहीं थोडा-सा नौसादर डाल दिया जाय तो चट मिलकर साबुन-सा जम जायगा ॥ ९ ॥

ससास्यार की मेंगनी, ले आये रविवार। गुठली बेर मिलाय के, पीस करे तैयार। पत्थर ऊपर लेप कर, जल में देय बहाय। सो पत्थर तैरत रहे, नेक न डूबन पाय ॥ १० ॥

मृगछाला को आठ पुट, लेहे सवा की देय। ऊपर जल के डालकर, पद्मासन बैठेय। अथवा तूम्बा दोय में, दीजे रस्सा बांध। तारसे पर बैठिये, कबहूं डूबै नाहि ॥ ११ ॥

होय सर्प जो दो मुहां, ताको लोही लाय। तामें वस्त्र भिगोय के, धरिये धूप सुखाय। फिर ताको गोला करे, मुखमें राखे मैल। दरिया में धसके करे, जल भीतर की सैल। विद्या कौतुक अति भलो, कोऊ करके देख। गुरू बिना नहि पाइये, गुप्त बात को भेद ॥ १२ ॥

अथ वृक्षोत्पत्तिकौतुकम्।

दत्तात्रेयतन्त्रे : अङ्कोलस्य तु बीजेभ्यस्तत्तैलं ग्राहयेत्पुनः। धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १ ॥ पद्मबीजे लिपेत्तैलं निक्षिपेच्च तडागक। तत्क्षणाज्जायते चित्र तत्क्षणात्कमलोद्भवः ॥ २ ॥ तत्तैलं चूतबीजे तु निक्षिपेद्बिन्दुमात्रतः। जायन्ते सफला वृक्षा नान्यथा शङ्करोदितम् ॥ ३ ॥ यानि कानि च बीजानि अङ्कोलतैललेपनात्। जायन्ते सफला वृक्षाः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ४ ॥

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि अङ्कोल के बीज का तेल लेकर उसे धूप देने से वह सर्वसिद्धिदायक होता है। इस तेल में कमलगट्टे को भिगाकर

उस बीज को तालाब में छोड़ देने से तत्काल कमल का वृक्ष उत्पन्न होकर फूलने लगेगा। उसी तेल की १ बूंद मात्र आम के बीज में डाल दे तो तत्काल आम का वृक्ष फल सहित उत्पन्न हो जायगा। यह शङ्कर का वचन अन्यथा नहीं होता। इसी प्रकार जिस किसी के बीज को अङ्कोल के तेल से लिप्त करके बो दिया जाय उससे तत्काल फल सहित वृक्ष उत्पन्न हो जायगा। यह सिद्ध योग कहा गया है।

प्राकृत ग्रन्थ के प्रयोग :

आम्रबीज को दीजिये, थोहर पुट इक्कीस। ताहि बोय पर दो करे, मिनट बीस पच्चीस। जल डाल्यां वह उग उठे, आवे पत्र सुजान। घडी चार के भीतर, फल अति सुन्दर खान ॥ ५ ॥

अर्कदुग्ध पुट सात दे, सिरस्यूं सूखी ल्याय। छायाशुष्क कराइये, नही सूर्य को ताव। भरिये मंठी रेतस्यूं, सिरस्यूं जाके माहि। जल सींच्या ऊंचोबधे, यामें संशय नाहि ॥ ६ ॥

सिरस्यूं कुतिया दूध में, देय भावना सात। छाया ताहि सुखाइये, पुनि मट्टी जल साथ। बोयां सं घडी चार में, लगे वृक्ष यह जान। कर-देखे निश्चय यदि, होवे अचरज मान ॥ ७ ॥

कुसुम बीज के तेल में, तुलसी आदि सुजान। छोटे वृक्ष के बीज ले, बडे वृक्ष के नाहि। भेवे मृत्तिका पात्र में, दिना एक तूं जान। पीछे पृथ्वी में तिन्हें, गाडे जलविन मान। दिनों आठ पीछे उन्हें, लीजे तुरत निकाल। तेहि बोयां घडी चार में, होय वृक्ष तत्काल ॥ ८ ॥

नमक मिले पानी विखै, फूल डुबोवै कोय। बहुत दिना तक फूल वह, कबहु न सूखै सोय ॥ ९ ॥

बना फूल गुलदस्ता लेवे, कार्बोनेट ऑफ सोडा जल भेवे। तेहि पानी गुलदस्ता नितही, छिडकत रहे न सूखा कितही। बहुत दिनोतक वैसा ही देखो, सूखे नहीं सत्य यह पेखो ॥ १० ॥

आम लेकर शहत में, राखे ताहि डुबोय। सो कबहूं बिगड़े नहीं, विना फसल फल जोय ॥ ११ ॥

कूकरझिल्ली लायके, छाया माहि सुखाय। सूंठ मिरच पीपल सहित, चारो खूब पिसाय। मेंहदी सम पुनि घोल नीर में, बायें हाथ लगावे। ताही हाथसूं छुवे वृक्ष को, तब यह खेल दिखावे। फल अरु फल पात अरु कोपल, सब झड पडहि जो धरणी। धन्य विधाता कौतुक तेरे, धन्य गुरु की करणी ॥ १२ ॥

अथ अक्षरोत्पत्तिकौतुकम् ।

सिग्रेट औफ एमोनिया और तूतिया दोनो समान भाग लेकर इन दोनोंसे कागज पर लिखे तो अक्षर नहीं दीखेंगे परन्तु अग्नि में तपाने से पीले अक्षर दीखने लगेंगे और कागज के ठण्डे होते ही फिर गायब हो जांयगे ॥ १ ॥

स्प्रिट औफ कोबाल्ट में बराबर का पानी मिलाकर कागज पर लिखोगे तो अक्षर नहीं दीखेंगे परन्तु अग्नि में तपाने से हरे अक्षर दीखने लगेंगे और कागज के ठण्डा होनेपर फिर गायब हो जांयगे ॥ २ ॥

जवाखार, एसिड, एक्साइड औफ कोबाल्ट इन तीनों को बराबर मिलाकर कागज पर लिखने से अक्षर नहीं दीखते परन्तु अग्नि में तपाने से गुलाबी अक्षर प्रकट हो जांयगे ॥ ३ ॥

लिखिये प्याज के अर्कसूं, अक्षर प्रगट न होय। अग्नि तपाये दीखहीं, पीत वर्ण सो होय ॥ ४ ॥

अर्कदूधसूं मांडिये, कागज ऊपर अङ्क। दिया तपायें दीखही, यह जानो निःशङ्क। अथवा गन्धकधूनी दियां, सबी प्रगट हो जाय। कर देखे जब खेल सूं, साचो देहि लखाय ॥ ५ ॥

नौसादर अरु दूधसूं, अक्षर लिखिये कोय। अग्नि तपाये दीखहीं, पीतवर्ण सब होय ॥ ६ ॥

मलमल के एक कपडे पर नाइट्रेट औफ सिलवर से कुछ अक्षर लिख लो। सूर्य के प्रकाश में अथवा अन्धेरे में भी देखने से कुछ नहीं दिखाई देगा परन्तु ज्योंही लंप की तेज रोशनी में देखोगे तो काले अक्षर दीखने लगेंगे ॥ ७ ॥

दरपन पर फरासीसी खडिया से कुछ लिख दो, पीछे रुमाल से पोंछ डालो तो लिखा हुआ कुछ भी दिखाई न देगा। अगर मुह की भाप दर्पण पर फूकोंगे तो अक्षर दीखने लगेंगे। भाप के सूखने पर फिर गायब हो जायगे, फूंकने पर फिर दिखाई देने लगेंगे इसी तरह चाहे जब तक करते रहो ॥ ८ ॥

अर्कदूधसूं मांडिये, कछू हथेली माहिं। राख हथेली में धरे, अक्षर प्रगट कराहिं ॥ ९ ॥ चूनेसूं अक्षर लिखै, दीजे ताहि सुखाय। जल में गेरै श्वेतरङ्ग, अक्षर सबहि पढाय ॥ १० ॥

अर्कदूध सो वस्त्र पर, लिखिये अक्षर कोय। जल में डालै श्वेतरङ्ग सब ही परगट होय ॥ ११ ॥

सिरस पुष्प रस काढिये, अथवा चना जान। अथवा नींबू फिटकरी, इनके अक्षर मांड। जल में डाले प्रगट हो, अजब तमासो होय। जो कर देखे सांच ही, सांच सांच सच होय ॥ १२ ॥

जडबूईकी लायकर, ताको रस कढवाय। तेहि के अक्षर तीन दिन, पढे कभी ना जाय। चौथे दिन सब आपही, प्रगट दिखाई देत। श्याम रङ्ग अति सथरे, यह कौतुक कर देख ॥ १३ ॥

अथ नानारङ्गकौतुकम्।

प्राकृत ग्रन्थे : लाल फूल ले दीजिये, गन्धक धूओं ताहि। सबके देखत देखत हीं, श्वेतरङ्ग हो जाय। जब ठण्ढ जल में पड़े, लालरङ्ग पुनि होय। देख अचम्भो करे सब, यामें फरक न कोय ॥ १ ॥

नौसादर अरु चूना-पानी, फूल लगाकर देख। आश्चर्य रूप से फूल का, कई रङ्ग तू देख ॥ २ ॥

सङ्खिया और गुड इन दोनों को भूरे पेठे के रस में पीसकर घोडे के लाल और काले बालों पर लगाने से सब बाल सफेद होकर घोडे का रङ्ग सफेद दिखलाई पडने लगता है ॥ ३ ॥

पतङ्ग की लकडी पीस कर पानी में भिगोने से लाल रङ्ग होता है अगर सिरका लगे गिलास में डाला जाय तो पीला हो जायगा, फिटकरी के पानी में डाला जाय तो काला रङ्ग बन जायगा, पुनः यदि लोहे का टुकडा सिरके में भिगाकर इस ग्लास में डाला जाय तो फिर लाल रङ्ग होकर असली सूरत पर आ जायगा ॥ ४ ॥

पांच ग्लास मंगाकर नम्बरवार रख दो। पहले ग्लास में सोल्यूशन औफ आयोडाइन औफ पुटैसियम भर दो, दूसरे ग्लास में सोल्यूशन औफ कौरासिबस बलाईमेंट अर्थात् रसकपूर का अर्क भर दो, तीसरे ग्लास में आयोडाइड औफ पुटैसियम के तेज अर्क में औक्सेलेट औफ एमोनिया डाल कर भर दो, चौथे ग्लास में म्यूरियेट औफ लाइम का अर्क भर दो, पांचवें ग्लास में हाइड्रोसलफेट औफ एमोनिया भर दो तो पांचों ग्लास स्वच्छ पानी से भरे हुये दिखलाई पडेंगे। पीछे इन्हों का रङ्ग इस तरह बदल कर दिखाओ जैसे पहले ग्लास को दूसरे ग्लास में डालने से पहले जरद फिर तत्काल ही किरमजी लाल रङ्ग हो जायगा। पीछे दूसरे

ग्लास को तीसरे ग्लास में डालने से फिर साफ और स्वच्छ हो जायगा तीसरे ग्लास को चौथे ग्लास में डालने से दूधसा सफेद रङ्ग हो जायगा। चौथे ग्लास को पांचवे ग्लास में डालने से गहरा काला रङ्ग हो जायगा। इस तरह करने से स्वच्छ साफ रङ्ग पांच रीत से पलटेगा ॥ ५ ॥

एक पानी भरे कांच के ग्लास में प्रूशियेट औफ पोटास की थोडीसी बूंदें डाल दो, दूसरे पानी भरे ग्लास में सलफेट औफ आयरन का हलका अर्क डाल दो। इन दोनों ग्लासों में निर्मल बिना रङ्ग का पानी दीखेगा। फिर इन दोनों ग्लासों के जल को किसी तीसरे बर्तन में मिलाओगे तो चमकीला गहरा नीला रङ्ग हो जायगा ॥ ६ ॥

चुकन्दर के जड़ का अर्क जो बहुत लाल होता है, उसमें थोड़ासा चूने का पानी डालते ही जल का सा रङ्ग हो जायगा। उसमें एक सफेद कपड़ा रंग कर तत्काल सुखा लो तो सूखते ही कपड़ा लाल हो जायगा ॥ ७ ॥

अथ मिष्टकौतुकम् ।

पातचिरमठी श्वेत मंगावे, अंधियारे में ताहि सुखावे। नजर छिपाकर चाबे ताही, माटी खाय स्वाद गुड़ आही ॥ १ ॥

अजवायन को चाव के, पत्ती नींम जु खाय। तो कडुई लागे नहीं, कैसा सहज उपाय ॥ २ ॥

नाइट्रेट औफ सिलवर और हाईपोसलफेट औफ सोडा यह दोनों चीज अलग-अलग चखने से बहुत ही कडुई होती है परन्तु इन दोनों को मिला देनें से निहायत ही मीठापन हो जाता है ॥ ३ ॥

अथ काचकुप्पीकौतुकम् ।

बोतल के टुकड़े आग में लाल करके अदरख के रस में बुझा दे। पीछे इन टुकड़ों को चबाने से मुख में किसी प्रकार की बाधा नहीं होती ॥१॥

अदरख का चौखुन्टा टुकड़ा लेकर उसके एक तरफ पारे की कलई करो। पीछे उसपर कागज चिपकाकर बोतल के भीतर उतार दो तो बोतल के भीतर शीशा देखकर लोग आश्चर्य मानेंगे ॥ २ ॥

एक बोतल में कई रङ्गदार कांच के छोटे-छोटे टुकड़े चार पांच अंगुल तक भर दो। उसके ऊपर नीले रङ्ग का पानी उसके ऊपर मट्टी का तेल तथा उसके ऊपर गन्धक का नीला तेजाब डाल दो। उनके चारों रङ्ग अलग-अलग चमकेंगे। नीचेवाले कांच के टुकड़े पृथ्वी के समान, नीला

पानी समुद्र के समान, मट्टी का तेल हवा के समान और तेजाब आकाश के समान चमकेगा। देखनेवालों को पाचों तत्व बोतल में दीखेंगे ॥ ३ ॥

एक बोतल में पावभर पानी भरकर उसमें तीस दाने फासफोरस के डाल दो पीछे उसको दीपक की लौ पर गर्म करो तो पानी में से आग की गेंदसी निकल कर अत्यन्त चमकेगी और बोतल में गेंद दीखेगी ॥४॥

एक अण्डे को सिरके में भिगो दो। जब नरम हो जाय तब बोतल में उतार दो पीछे ठण्ढा पानी भरने से अण्डा कड़ा होकर असली सूरत पर आ जायगा देखनेवाले आश्चर्य करेंगे ॥ ५ ॥

एक शीशी में नींबू का रस भरकर पीली कौड़ी की भस्म डाल कर काग बन्द कर दो तो शीशी हाथ से छूट कर आकाश को उड़ जायगी ॥ ६ ॥

अथ बन्दूककौतुकम्।

शीसे की गोली को भीतर से पोली करके चांदी की बारूद भर दो और लकड़ी की डाट लगा दो। फिर इस गोली को बन्दूक में भरकर चलावो तो एक आवाज मामूली होगी दूसरी आवाज गोली के निशाने पर लगने के बाद होगी इस प्रकार एक फायर से दो आवाज आवेगी ॥ १ ॥

बन्दूक में गोली के जगह पारा भर कर कपड़े की ओट में निशाना लगाओ तो पक्षी मर जायगा और कपड़े पर दाग न आवेगा ॥ २ ॥

एक भोडल की तह देकर सांचे में गोली ढाल लो पीछे इस गोली को बन्दूक में भर दो और निशाने के सामने एक छुरी खड़ी करके गोली चलावो तो गोली के दो टूक हो जायगें। देखनेवालों को मालूम होगा कि छुरी से गोली के दो टूक हो गये। छुरी भी भोडल की होने से परदा छिपा रहता है ॥ ३ ॥

लोहे का तार दो हाथ लेकर उसके दोनों सिरों में गोली चिपकाकर पिण्डीसी करके बन्दूक में भर दो और सुई के ऊपर चावल रख कर निशाना लगाओ तो चावल नीचे जा पड़ेगा ॥ ४ ॥

अथ युद्धकौतुकम् ॥

एक मुरगे की आंख में, चुंबुक पीस अंजाय। दूजे कुक्कुट आंख में, लोहचन लगवाय ॥ जब छोडे मैदान में, करे लडाई घोर। नहीं हटाये से हटे. हटे घटेपै जोर ॥ १ ॥

रवि या मंगल के दिन काले कुत्ते के दो दांत और काली बिल्ली के

दो दांत चारों पर सिंदूर लगाकर एक प्याले में रख कर बीच में रख दे उसके ऊपर कोई दूसरा पात्र ढकदे पीछे दो दांत भेंडके लेकर सिंदूर लगावे और एक पात्र में रख कर चार दांतों वाले प्याले के दक्षिण के तरफ रख दे। फिर दो दांत बकरे के लेकर एक पात्र में रखकर चार दांत वाले प्याले के उत्तर की तरफ धर दे। उत्तर दक्षिण वाले पात्रों को चमडे की धूनी देने से दोनों पात्र हट हट कर एक दूसरे से टक्कर लगावेंगे और बीच वाला चार दांत का पात्र दोनों में बीच बिचाव करावेगा ॥ २ ॥

अथ चित्रकौतुकम्।

देखे सींग गाय के सिर पर, एक नींचा एक ऊंचा। लावे काटा दोऊ अंगल भर, छोडे सींग समूचा। नींच सींग घिसे पानी में, कुच तिरिया के लावे। लगत ही यह अंग तिरिया के, कुच अलोप हो जावे। ऊंचा सींग जबहि घस पानी, तन कामिनि के लावे। लागत ही कामिनि के अस्तन, जैसा ही हो जावे ॥ १ ॥

लज्जावन्ती पत्र ले, हांथन सूं मललेय। हांथ देखाकर नारकूं, मुट्ठी बंद करेह। कुच नीरीके दोनहू, गायब सो हो जाय। फिर मुट्ठी के खोलत हीं, प्रगट होय समभाय ॥ २ ॥

जल में बडी गोह जो होय, ताकी चरबी लावय कोय। सो चरवी हांथन में लावे, हाथ लगा चित्रहि दिखरावे। मूंठी बांधे सुनिये भाई, ततक्षण चित्रलोप हो जाई ॥ ३ ॥

तमाशा करने के कमरे में आधे में एक परदा लगावो जिसके बाहर तमाशा देखने वालों को बैठा दो। पीछे तमाशा करने वाला एक दीपक बालकर कुछ दूर पर अपने पीछे रखदे तो उस बाजीगर की छाया उस परदे पर पडेगी जो सबको दिखाई देगी। बाजीगर जब हटता हुवा पीछे को जायगा तो उसकी परछाही बढती जायगी जब दीपक के ऊपर खडा होकर जल्दी जल्दी उठे बैठेगा तो देखने वालों को मालूम होगा मानों कोई चढता और गिरता है अगर बाजीगर तरह तरह हाथ मूंह चलावेगा तो लोगों को बडा कौतुक जान पडेगा काठ की पुतलियों से भी यह छाया बाजी हो सकती है ॥ ४ ॥

जनै गर्भिणी बालक जब हीं, इतना छल जा कीजे। झिल्ली जो बालक के ऊपर, सो मंगाय कर लीजे। धरे सुखाय कोउ नहि जाने,

चित्रशाल में जावे । सूरत लिखी चित्रशाला में ताही धूनी दीजे । झिल्ली जरे धुआं जब लागै, दृष्टि सबनकी आवे । रोवे चित्र जहां लग जेते, आंसू नैन बहावे ॥ ५ ॥

वीरवहोटी गंधक साने, धर अग्नी पर खेल दिखाने । अथवा बाती बना जरावे, हंसे पूतरी जिय भरमावे ॥ ६ ॥

डुपट्टो ले दो हाथ को, तामें मंडाय । दोऊ रुख इकसारिसो, स्त्रीरूपहि बन जाय । ले पट बांधे द्वार में, भीतर दीया दोय । मोमबत्ती को कीजिये, यह विध वनीसो होय । प्रथम बत्ती में मोम ले, दस तोला परमान । सिंगरफ तोला दोय ले, मासा दो हरताल । दूजी बत्ती में सुनो, दश तोला ले मोम । दश तोला हरताल हूं, इस विध बत्ती दोम । पुनि बाहर हीं बालिये, दीवो बत्ती दोय । इह विध ताहि बनाइये, फरक पड़े नहि कोय । दस तोला ले मोम को, दो तोला जंगाल । मासा चार सिंदूर हू, छः मासा ले राल । वाती एक इनकी करे, दूजी इस विध जान । मोम लेय दश तोल का, आल तीन भर मान । इन विध दीयो चार सब बाहर भीतर जोय । नाचे पूतली चित्र की, अजब तमासो होय । सब ही को सांचो जचे, यह बत्ती को खेल । थर थर कापें लोग सब, भागे वस्तर मेल ॥ ७ ॥

अथ जीवोत्पत्तिकौतुकम् ।

एक घडे में गधे का मूत भरकर भैंस का गोबर डाल दो । थोडा सा दही और बूरा भी डालकर मुख बंद कर दो । उसको पृथ्वी में गाडने से दो दिन में ही लाखो लिच्छू पैदा हो जायंगे ॥ १ ॥

भादो में रविवार को, पीला मेढक लाय । उसके माथे दही का, दीजे तिलक कढाय । धूनी गूगल ताहि दे, हंडिया में भरवाय । रखिये अपने पास में, सूखे पे पिसवाय । वरसा ऋतु आवे जबे, वरसन लागे नीर । थोडीसी वह राख ले, गेरो जल के तीर । दो घण्टा के बीच में अद्भूत दीखे खेल । लाखन डोलें मेंडका, मचे रेल अरु पेल ॥ २ ॥

भल्लाततैलं मत्स्यस्य गात्रे सर्वत्र लेपयेत् । निक्षिप्य जल मध्ये तु मीनो जीवति तत्क्षणात् ॥ ३ ॥

अथाण्डकौतुकम् ।

कृकलाण्डं समादाय छिद्रेण पारदं क्षिपेत् । भास्कराभिमुखं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अंडे में पारा भरकर गर्म कर लो और उसे एक गर्म की हुई कांच की रकाबी में रक्खो तो अण्डा उछलने लगेगा ॥ २ ॥

नमक के तेजाब में अंडा डालते ही पहले तो डूब जायगा परन्तु फिर तैरने लगेगा और डूबता और तैरता रहेगा ॥ ३ ॥

अण्डे के नीचे एक छिद्र करके खूब हिलावो पीछे कांच के ऊपर खड़ा कर दो तो ठीक खड़ा रहेगा ॥ ४ ॥

अण्डे का रेत छेद करके निकाल डालो पीछे खाली अंडे को नल के चलते हुये जल पर अधर में छोड़ दो तो अंडा अधर में नाचता रहेगा और नीचे न गिरेगा। यह खेल ऐसी जगह करना चाहिये जहां हवा न हो ॥ ५ ॥

अथ नृत्यकौतुकम् ।

पीतल की खोखली उंगली बनावो। उसमें पारा भर कर बन्द कर दो। थोड़ी देर गर्म करने से वह नाच उठेगी ॥ १ ॥

तृण मूंजको लीजिये, ताके बल लगवाय। तृण गाडीजे भूमि पर, कौडो दे अटकाय। जल सिर डले ताहि के, प्रगट तमासो होय। जब देखे कौडी फिरे, तृण को फिरता सोय ॥ २ ॥

चिडी बनावे काठ की, जल ऊपर धरि ताहि। ताके पगमें सूक्ष्य अति, लोह तारको बांध। अथवा बार ले अश्वको, बांधै कूणा एक। प्याले में पुनि छिद्र करि, तार पिरोवे फेर। सिरा दूसरा तारका, खंजडी मांहि बंधाय। खंजडी जबहि बजावहीं, चिडिया नृत्य कराय ॥ ३ ॥

सूक्ष्य तार मंगाय, हांथ पांच को लीजिये। ताको सिरो बंधाय, ईंट जो सन्मुख में लिये। सिरो दूसरो लेय, खंजडी माहि बंधाइये। रातहि करिये खेल खडे, जो देखे लोग सब। कागज पुतली पीठ, पहले मोम लगाइये। तारमांहि दे चीप, खंजडी तबहि बजाइये। नांचे पुतली खूब, सुखी होय सब देखिके। झटको दीजे खूब, न्यारी होकर जा पडे। इनविध कौडी चूड, सबही नाच नचाइये। तेहि ऊपर धरतूर, एक एक सब जोडि के। तार उठावे खूब, बंगलो देखि लुभाइये। हिचल-मिचल कर खूब, झटके सेती जा पाडे ॥ ४ ॥

अथ नानाकौतुकानि ।

बदामके भीतर की गिरी फोडना ।

ले बदाम अतिवजनी, तापर वस्त्र लपेट। पृथ्वी में जब पटकना,

ताकी लगे चपेट। फटजाय बादाम की, गुठली न ऊपर घाव। होय अचम्भो अति भलो, काहू नहीं लखाय ॥ १ ॥

मट्टी का भैसा बोले। भैसो कीजे गारिको, पोलो पेट बनाय। गरम लग्यां उस पेट में, शब्द होय अकुलाय ॥ २ ॥

पीरका हुक्का। हुक्को रीतो लेयकर, तामे चूनो मेल। जल डाले वह बोलही, अजब दिखायो खेल ॥ ३ ॥

चित्रकी पुतली हंसे: वीरबहोटी लाइये, गंधक मांहि मिलाय। नाचे पुतली चित्रकी, धूनी दे अकुलाय ॥ ४ ॥

हनुमान के पसीना आवे। सोरो टंक ले चार, जल में ताहि पिसाइये। नान्हो खूब कराय, अंगलेप हनुमान के। स्वेद चले बहुताय, वर्षा में जो कीजिये। वीर युद्ध के माय, अबे आप ठाढे भये ॥ ५ ॥

हनुमान के मुख से फूल झरे। कर तलास कहु लाइये, वनमाही भूफोड। ताकूं जल में भेइये, खुलजावे सब जोड। पुनि तामें भर दीजिये, चमेली के फूल। छायामाहिं सुखाइये, पडे नहीं कुछ भूल। लेकर पुनि हनुमान के, मुख से देय बंधाय। ताऊपर जल छोडिये, रेखा सब फटिजाय। फूल झडे हनुमान के देख अचम्भो होय। मन मोहित हो सबही का, ऐसो अचरज जोय ॥ ६ ॥

नारियलमें बदाम छुहारा निकले। गंधक अर्क मंगायके, नारियल लीक कढाय। दोय टूक न्यारा भये, गोलो लेय कढाय। पुनि तामें वस्तू भरे, पींदो दे चिपकाय। ताकूं जल में राखिये, ज्यूंको त्यूं बंध जाय। ताही फोड दिखाइये, निकले सारी चीज। ऐसो अचरज देखके, खुसी होय सब जीव ॥ ७ ॥

छुहारे के भीतरसे लौंग इलायची निकालना। पुष्ट छुहारो लेय कर, ताको राखि भिगोय। प्रात फूल मोटो भयो, ताको बीज कढाय। तामें लौंग इलायची, धरके संधि मिलाय। जबे छुहारो सूखही, ज्यों का त्यूं दिखलाय ॥ ८ ॥

चासनी बिगडे। बंदर विष्ठा नाखिये, भरी कढाई मांहि। बिगड जाय सब चासनी, कोऊ खावे नाहि ॥ ९ ॥

धान सीझे नहीं। धान को थोहर अथवा आकके दूध से चुपड कर कितना पकावो परन्तु नहीं पकेंगे ॥ १० ॥

माली की डलिया में से फूल फल बाहर निकल पडे। रविवार के दिन मरे हुये मेढक को लाकर गूगल खिलावे और चिकनी मट्टी उसके मुंह

में भरे, पीछे मूंगों का पूजन करक मेढक के मुख में डाल दे और ऐसी जगह गाडे जहां किसी का पैर न पडने पावे। उसे जल से खींचता रहे। जब पेड होकर उसमें फल आवे तो उसके पहले फल को लेकर धूप दे। उसमें से मूंग का एक दाना जिस माली की डलिया में डाल दोगे उस डलिया के फूल फल ऊछलने लगेंगे और डलिया से बाहर जा-जाकर पड़ेगे। देखने वालों को अचम्भा होगा ॥ ११ ॥

घर में सर्प दीखे। सर्पकांचली लीजिये, बत्ती करिये चार। ताम्रपात्र में ताहि के, दीपक बार जलाय। दीपक मुख चारिहु दिसा, जो कोई चांदने जाय। होय सर्प सो जानिये, देखन वाले के भाय ॥१२॥

विना खूंटी की खडाऊ पर चलना। अति ही काठ की, करे खडाऊं कोय। श्वेतचिमिटी लेप करि, ताहि सुखावे जोय। पैर धोयकर तास पर चिपकावे सुधि राखि। बडो जुगत सू चालिये, भरे खिलाडी साखि। इन विध बडके दूध सूं, करिये खेल जरूर। बहेलिया के लासे सूं खेल होय भरपूर ॥ १३ ॥

तेल का घृत बने। अंडी तेल मंगाइये, तामें जल ले डार। हाथ लगाकर मसलिये, बने घीव नहिं वार ॥ १४ ॥

पैसे को रुपिया बनाना। दो पैसे लेकर उनमें दो पैसे चिपकाले दिखाने के समय एक रुपिया के तरफ दूसरा पैसे की तरफ से दोनों हांथों में धरले, पीछे दिखा कर मुट्ठी बंद करके फलट दो तो रुपये के हाथ में पैसा और पैसे के हाथ में रुपया हो जायगा इसी तरह फिर मुट्ठी बंद करके उलट दो तो अपने-अपने हाथ में आ जांयगे। कोई बाजीगर हाथ की हथेली में दबाकर चालाकी से दिखाते हैं। यह अभ्यास करने से हो जाता है ॥ १५ ॥

जीमता हंसे। रविवार को लाइये, खरलोटन की धूल। थाली नीचे ताहि धर, हसे जीमतो खूब ॥ १६ ॥

जीमतो वमन करे। बगुला की विष्ठाको जो नर, मस्तक तिलक करे। जीमता नर जो वाको देखे, देखत वमन करे।

ओठ सपेद करना। गंधक धरके पान में, जो कोई नर खाय। हो तत्काल ही, होठ कोढ दरसाय। जब आछो करनो होय, कांजी कुल्ला कीन। इस विध आछो होइ है, वचन कह्यो परवीन ॥ १७ ॥

धूआं निकले। धूआं घर में ना रहे, तिसका यही उपाय। घडे चार औंधे धरे, धुवां उन्हीं में जाय ॥ १८ ॥

पक्षी पकड़ना।

हींग के जल में गेहूं भिगावे सो, पक्षी को लेय चुगावे। बेसुध होवे पक्षी जब ही, पकड़ लेय पुनि जाकर तबही। शहद माहि गुण ऐसोइ गावे, थोहरदूध पक्षी पकड़ावे।

जलबंधे-खुले। फलचूरण लेहसवा, जल नाखे बंध जाय। डाले सेंधालूण जब, तुरतहि जल दरसाय ॥ १९ ॥

निज रूप कुरूप दीखे। सूअर छेरी ऊंट पुनि, अश्व बन्दर हु जान। खुर पांचों के लीजिये, सबही एक समान। हण्डी में धर मोचरस, तापर खुर धरवाय। तापर चरन सोंठ को, मुखमुद्रा करवाय। बाले अग्नी ताहि जब, मेढक चरबी लेय। ताकी राख मिलाइये, दरपन लेप करेहि। तेहि दरपन में वायकर, जो देखे मुख कोय। होय कुरूप सुरूप वह, मन में चिन्ता होय ॥ २० ॥

सभा के लोग दरिया की सैर करते दीखें। कछुवे की चरबी विषे, लूण पापड़ी घाल। लेप कीजिये वस्त्र पर, बत्ती करे सम्भाल। दीपक नया मगाइ के, ता बीच पारो मेल। धरबाती दीपक करे, तब देखे यह खेल। जो बैठे जा चांदने, उसको सब यह जान। नाव चढ़े दरियाव की, सैर करत ही मान ॥ २१ ॥

अङ्ग में सुई छेदना। मन्त्रो यथा : ॐ नमो आदेस गुरू को कामरू देस कामाक्षा देवी जहां बसै इसमाइल जोगी के चार सुई लोहा की सार की तांबा की सीसा की से लोहू आवै तो गुरू गोरखनाथ की आन। इति मन्त्रः।

अन्यत्। ॐ नमो सारकि सुई सबद का धागा प्रेम की सुई को लोहू न लागा दुहाई हनुमान की। इति मन्त्रो द्वितीयः।

अन्यत्। ॐ धारधार महाधार धार बांधूं सातबार अनी बांधूं तीन बार पके न फूटे करे न पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीरा। इति मन्त्रस्तृतीयः।

इसका विधान : सात बार पढ साख लगावे पीछे चुटकी से पकड़ मास ऊँचा उठाकर छेद देवे तो रक्त निकले नहीं न पीड़ा अधिक होय। निकालने से जगह बराबर हो जाती है सत्यमेव न सन्देह ॥ २४ ॥

चरित्र दीखे। मूल चिंमिठी रूई सङ्ग, बाती देय जलाय। काली गौ के घृत सहित, चौके पर धर जाय। गूगल खेबे ताहि को, अरु सिन्दूर चढाय। पाछे दृष्टिसूं देखिये, कछु चरित्र दरसाय ॥ २५ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मिश्रखण्डे इन्द्रजालकौतुकतन्त्रे त्रयोदशस्तरङ्गः॥१३॥

यन्त्र
चित्रावली

चित्र १ : स्वप्नवाराही पूनज यन्त्र (पृ. ३)

चित्र २ : वाराही वशीकरण यन्त्र (पृ. ६)

चित्र ३ : स्वप्नेश्वरी पूजन यन्त्र (पृ. ७)

चित्र ४ : वटयक्षिणी पूजन यन्त्र (पृ. २७)
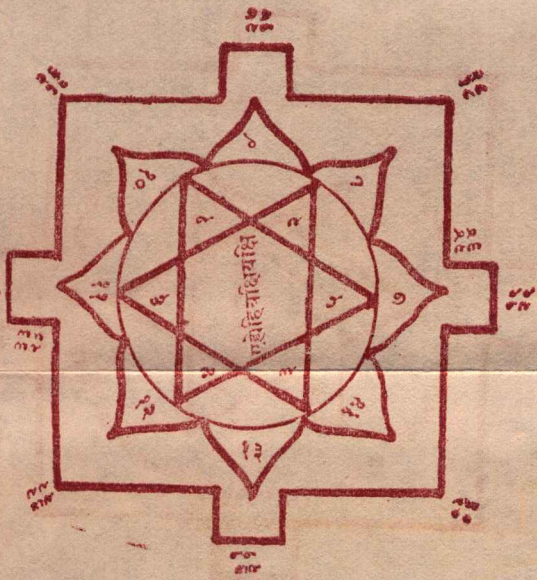
चित्र ५ : प्रमदायक्षिणी पूजन यन्त्र (पृ. ४४)
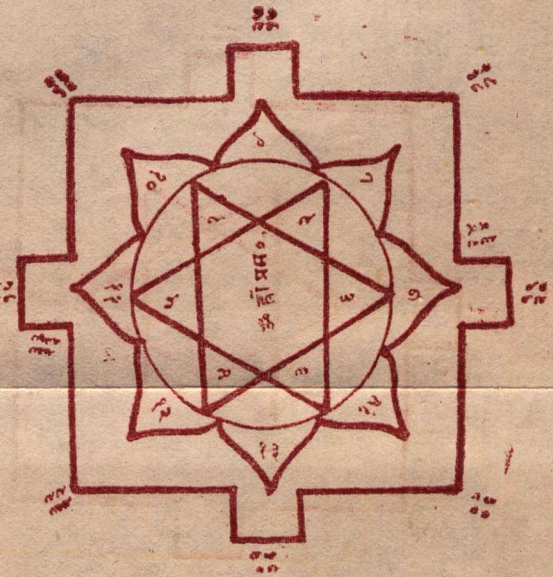
चित्र ६ : रतिप्रिया धनदायक्षिणी पूजन यन्त्र (पृ. ५५)
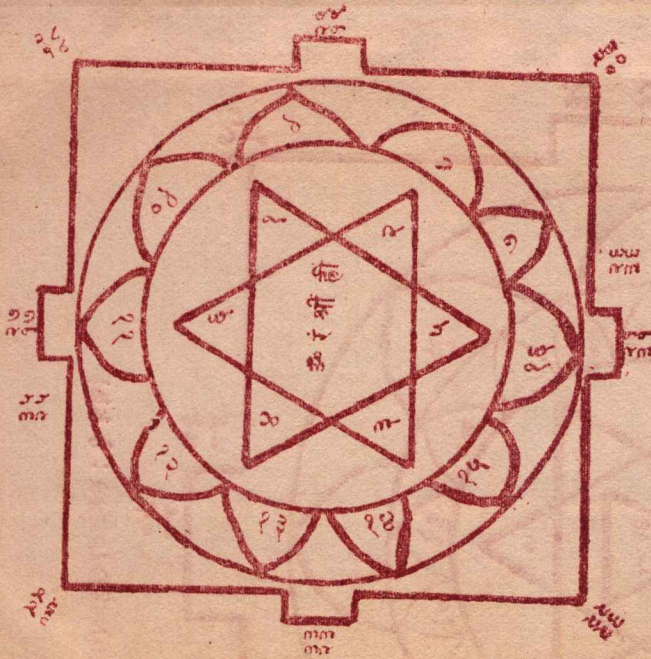
चित्र ७ : बन्दी पूजन यन्त्र (पृ. ८२)
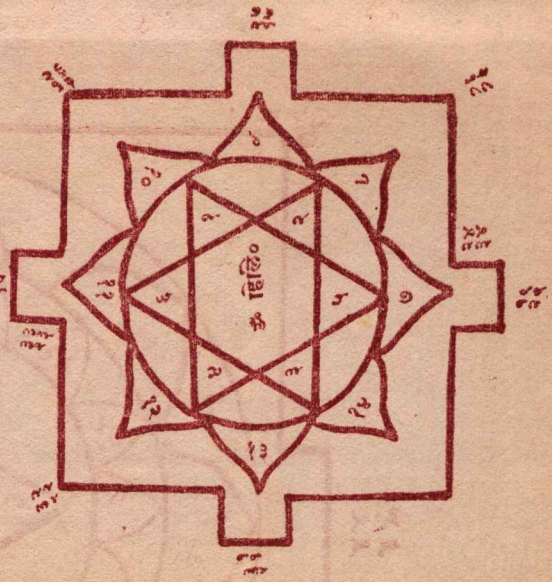
नारदपंचरात्रम्

मूल एवं प्रथम बार हिन्दी टीका सहित

सम्पादक - अनुवादक : राम कुमार राय

नारद पञ्चरात्र, संस्कृत में वैष्णव तन्त्र का यदि सर्वप्रथम नहीं तो भी प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक है। जहाँ तक विषयवस्तु का प्रश्न है, इसकी तुलना में अथवा इससे प्राचीन केवल श्रीमद्भागवत का ही उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। इन दोनों ग्रन्थों का ही वैष्णव सिद्धान्तों के प्रचार में सर्वप्रमुख महत्व है।

हिन्दी अनुवाद सहित इसे पहली बार अब छापा गया है।

आकर्षक जैकेट सहित सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य : १००.००

वाराणसी तान्त्रिक टेक्सट्स सिरीज नं० ३

साधकचूडामणि श्रीमत् कृष्णानन्द आगमवागीश कृत

वृहत् तन्त्रसारः

(मूलमात्र)

इस ग्रन्थ में जितने देवी देवताओं की साधना-विधियों का उल्लेख है उतना अन्यत्र एकत्र कहीं नहीं मिलता। साथ ही अभिचार, षट्कर्म, वीरसाधन, शवसाधन आदि पर भी अत्यन्त विस्तृत वर्णन मिलता है।

फिर भी इस श्रेष्ठ और आकर ग्रन्थ का नागरी लिपि में आज तक कोई संस्करण प्रकाशित नहीं हो सका था। अतः अनेक विद्वानों और साधकों के आग्रह तथा परामर्श पर हम अत्यन्त व्ययसाध्य होते हुए भी इस ग्रन्थ को नागरी लिपि में प्रस्तुत कर रहे हैं। मूल्य १००/-

वाराणसी तान्त्रिक टेक्स्ट्स सिरीज नं०४

श्री विद्यारण्ययति विरचित

श्रीविद्यार्णव तन्त्रम्

(मूलमात्र)

शाक्त तन्त्रों के अनुसार सर्वोच्च सत्ता का नाम महात्रिपुरसुन्दरी है जो ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र से सम्बद्ध तीन महाशक्तियों—महासरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली का सारतत्त्व है। महात्रिपुर सुन्दरी न केवल तीनों लोकों की सुन्दरी है वरन् ब्रह्मलोक, विष्णुलोक और रुद्रलोक की अधिष्ठातृ देवी है।

प्रस्तुत महाग्रन्थ में प्रत्यक्ष और परोक्षरूप से इसी महात्रिपुरसुन्दरी देवी की उपासना के विभिन्न पक्षों का विषद वर्णन है। यह महात्रिपुरसुन्दरी देवी की विभिन्न विद्यायों का सर्वश्रेष्ठ संकलन है।

ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध का प्रकाशन आरम्भ हो चुका है और आशा है यह अत्यन्त शीघ्र ही उपलब्ध हो जायेगा।